

तरह आग में गिर रहे हैं और मैं उनकी कमर पकड़ कर उन्हें आग में गिरने से रोक रहा हूँ। (मुस्नद अहमद)

रसूल की इस तस्वीर की शकल में हक के दाजी की तस्वीर हमेशा के लिए बता दी गई है। इससे मालूम होता है कि इस्लाम के दाजी के अंदर दो ख़ास सिफात नुमायां तौर पर होनी चाहिए। एक यह कि उसका भरोसा सिर्फ एक अल्लाह पर हो। दूसरे यह कि मदऊ (संबोधित व्यक्ति) के लिए उसके दिल में सिर्फ मुहब्बत और ख़ैरख्वाही का जब्बा हो, इसके सिवा और कुछ न हो। अगरचे मदऊ की तरफ से तरह-तरह की शिकायतें पेश आती हैं। उसके और दाजी के दर्मियान कौमी और मादूदी (सांसारिक) झगड़े भी हो सकते हैं। इन सबके बावजूद यह मल्लूब है कि दाजी (आह्वानकर्ता) इन तमाम चीजों को नजरअंदाज करे और मदऊ के लिए रहमत व राफ़त (हमददी) के सिवा कोई और जब्बा अपने अंदर पैदा न होने दे।

दाजी को रूदेअमल की नफ़िसयात से बुलन्द होना पड़ता है। उसे एकतरफ़ा तौर पर ऐसा करना पड़ता है कि वह मदऊ का ख़ैरख्वाह बने, चाहे मदऊ ने उसके खिलाफ कितना ही ज्यादा काबिले शिकायत रवैया क्यों न इस्त्रियार किया हो। दाजी खुदा के लिए जीता है और मदऊ अपनी जात के लिए।

इब्तदाए इस्लाम में जिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साथ दिया उनके लिए आपका साथ देना अपनी बनी बनाई जिंदगी को उजाड़ देने के हममअना बन गया। इससे कुछ लोगों के अंदर यह ख़्याल पैदा हुआ कि रसूल हमारे लिए मुसीबत बनकर आया है। मगर यह वही बात है जो ऐन मल्लूब है। हक की दावत इसीलिए उठती है कि लोगों को बताया जाए कि उनकी कुव्वतों और सलाहियतों का मसरफ आखिरत की दुनिया है न कि मौजूदा दुनिया। इसलिए अगर रसूल का लाया हुआ दीन इस्त्रियार करने में दुनियावी नक़शा बिगड़ता हुआ नजर आए तो इस पर आदमी को मुतमइन रहना चाहिए। क्योंकि इसका मतलब यह है कि उसकी मताअ (सम्पत्ति) को खुदा ने आखिरत के लिए कुबूल कर लिया।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
الرَّتِّلِكَ اَيْتُ الْكِتَابِ الْحَكِيمِ
اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَا اِلَى رَجُلٍ مِنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِينَ اٰمَنُوْا اَنْ لَهُمْ قَدْ مَرَّصَدُ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنْ هٰذَا اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ

(मक्का में नाज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० रा०। ये पुरहिक्मत (तत्वदर्शितामय) किताब की आयतें हैं। क्यों लोगों को इस पर हैरत है कि हमने उन्हीं में से एक शख्स पर 'वही' (प्रकाशना) की कि लोगों को डराओ और जो ईमान लाएं उन्हें खुशख़बरी सुना दो कि उनके लिए उनके रब के

पास सच्चा मर्तबा है। मुंकिरों ने कहा कि यह शख्स तो खुला जादूगर है। (1-2)

पैगम्बर का कलाम इतिहाई मोहकम (ठोस) दलाइल पर आधारित होता है। वह अपने ग़ैर मामूली अंदाज की बिना पर खुद इस बात का सबूत होता है कि वह खुदा की तरफ से बोल रहा है। इसके बावजूद हर जमाने में लोगों ने पैगम्बर का इंकार किया। इसकी वजह इंसान की जाहिरपरस्ती है। पैगम्बर अपने समकालीन की नजर में आम इंसानों की तरह बस एक इंसान होता है। उसके गिर्द अभी अज्मत की वह तारीख जमा नहीं होती जो बाद के जमाने में उसके नाम के साथ वाबस्ता हो जाती है। इसलिए पैगम्बर के जमाने के लोग पैगम्बर को महज एक इंसान समझ कर नजरअंदाज कर देते हैं। वे पैगम्बर को न खुदा के भेजे हुए की हैसियत से देख पाते और न मुस्तक़बिल में बनने वाली तारीख के एतबार से इसका अंदाजा कर पाते जबकि हर आदमी उसकी पैगम्बराना अज्मत को मानने पर मजबूर होगा।

पैगम्बर का कलाम सरापा एजाज (मोजिजा) होता है जो सुनने वालों को वेदलील कर देता है। मगर मुंकिरीन इसकी अहमियत को घटाने के लिए यह कह देते हैं कि यह अदबी जादूगरी है। वे दलील के मैदान में अपने आपको आजिज पाकर उसके ऊपर ऐब लगाने लगते हैं। इस तरह वे पैगम्बर के कलाम की सदाकत को मुशतबह (संदिग्ध) करते हैं। पैगम्बर का कलाम जिन लोगों को मफतूह (विजित) कर रहा था उनके बारे में यह तअस्सुर देते हैं कि वे महज सादगी में पड़े हुए हैं, वर्ना यह सारा मामला अल्फ़ाज के फ़रेब के सिवा और कुछ नहीं। यह ज़बान की जादूगरी है न कि कोई वाकई अहमियत की चीज।

पैगम्बर का अस्ल मिशन इंजार व तब्शीर है। यानी खुदा की पकड़ से डराना और जो लोग खुदा से डर कर दुनिया में रहने के लिए तैयार हों उन्हें जन्नत की खुशख़बरी देना। पैगम्बर इसलिए आता है कि लोगों को इस हकीकत से आगाह कर दे कि आदमी इस दुनिया में आजाद और खुदमुखार नहीं है और न जिंदगी का किस्सा आदमी की मौत के साथ ख़त्म हो जाने वाला है। बल्कि मौत के बाद अबदी जिंदगी है और आदमी को सबसे ज्यादा उसी की फ़िक्र करना चाहिए। जो शख्स ग़फ़लत बरतेगा या सरकशी करेगा वह मौत के बाद की दुनिया में इस हाल में पहुंचेगा कि वहां उसके लिए दुख के सिवा और कुछ न होगा।

जहिरपरस्त इंसान हमेशा यह समझता रख है कि इज्जत और तरक्की उस शख्स के लिए है जिसके पास दुनिया का इस्तेदार है, जो दुनिया की दौलत का मालिक है। पैगम्बर बताता है कि यह सरासर बेख़ा है। यह इज्जत व तरक्की तो वह है जो मौजूदा आरजे जिंदगी में इंसानों के दर्मियान मिलती है। मगर इज्जत और तरक्की दरअसल वह है जो मुस्तक़बिल जिंदगी में खुदा के यहाँ हसिल हो। वही इज्जत व तरक्की हकीकी है और इसी के साथ दाइमी भी।

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ۗ مَا مِنْ شٰفِعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ذٰلِكُمْ اللّٰهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۚ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝ۙ النَّبِيُّ مَرْجِعُكُمْ جَمِيعًا ۚ وَعَدَ اللّٰهُ حَقًّا ۚ اِنَّهٗ

يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ لِيَجْزِيَ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ بِالْقِسْطِ
وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ شُرَكَاءُ مِنْ حَمِيمٍ وَعَذَابٌ أَلِيمٌ بِمَا كَانُوا يَكْفُرُونَ ①

बेशक तुम्हारा रब अल्लाह है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों (चरणों) में पैदा किया, फिर वह अर्श पर कायम हुआ। वही मामलात का इतिजाम करता है। उसकी इजाजत के बगैर कोई सिफारिश करने वाला नहीं। यही अल्लाह तुम्हारा रब है पस तुम उसी की इबादत करो, क्या तुम सोचते नहीं। उसी की तरफ तुम सबको लौट कर जाना है, यह अल्लाह का पक्का वादा है। बेशक वह पैदाइश की इत्तिदा करता है, फिर वह दुबारा पैदा करेगा ताकि जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक काम किए उन्हें इंसफ के साथ बदला दे। और जिन्होंने इंकार किया उनके इंकार के बदले उनके लिए खोलता पानी और दर्दनाक अजाब है। (3-4)

कायनात में मुखलिफ किस्म की चीजें हैं। इल्मी मुताला बताता है कि इन चीजों का जूह एक ही वक्त में नहीं हुआ बल्कि तदरीज (क्रम) के साथ एक के बाद एक हुआ है। कुरआन इस तदरीजी तख्खीक को छः अदवार (Periods) में तक्सीम करता है। यह दौरी (चरण बद्ध) तख्खीक साबित करती है कि कायनात की पैदाइश शुऊरी मंसूबे के तहत हुई है। फिर कायनात का मुताला यह भी बताता है कि उसका निजाम हद दर्जा मोहकम नियमों के तहत चल रहा है। हर चीज ठीक उसी तरह अमल करती है जिस तरह सामूहिक तक्वाजे के तहत उसे अमल करना चाहिए। यह वाक्या इस बात का वाजेह सुबूत है कि इस निजामे कायनात का एक जिंदा मुदबिर (संचालक) है जो हर लम्हा उसका इतजाम कर रहा है।

कायनात का यह हैरानकून निजाम खुद ही पुकार रहा है कि उसका मालिक इतना कामिल और इतना अजीम है जिसके यहां किसी सिफारिशी की सिफारिश चलने का कोई सवाल नहीं। कायनात अपनी खुसूसियात के आइने में अपने खालिक की खुसूसियात को बता रही है।

सारी कायनात में 'किस्त' (न्याय) का निजाम कायम है। यहां हर एक के साथ यह हो रहा है कि जो कुछ वह करता है उसी के मुताबिक नतीजा उसके सामने आता है। हर एक को वही मिलता है जो उसने किया था और हर एक से वह छिन जाता है जिसके लिए उसने नहीं किया था। जमीन का जो हिस्सा रात के असबाब जमा करे वहां तारीकी फैल कर रहती है और जमीन का जो हिस्सा रोशनी के असबाब पैदा करे उसके ऊपर रोशन सूरज चमक कर रहता है।

यह मादूदी (भौतिक) नताइज का हाल है। मगर अख्बाकी नताइज के मामले में दुनिया की तस्वीर बिल्कुल मुखलिफ नजर आती है। इंसान नेकी करता है और उसे नेकी का फल नहीं मिलता। इंसान सरकशी करता है मगर उसकी सरकशी अपना नतीजा दिखाए बगैर जारी रहती है। खालिक की जो मर्जी उसकी दूसरी मख्बूत (जीवों) में चल रही है उसकी वही मर्जी इंसान के मामलात में क्यों जाहिर नहीं होती।

इसका जवाब यह है कि इंसान की जिंदगी में खुदाई इंसफ के जूह को खुदा ने बाद को आने वाली दुनिया के लिए मुवाख्खर (लंबित) कर दिया है। पहली जिंदगी इंसान को अमल के लिए दी गई है, दूसरी जिंदगी उसे अपने अमल का नतीजा पाने के लिए दी जाएगी। और दूसरी जिंदगी का जूह यकीनन इतना ही मुमकिन है जितना पहली जिंदगी का जूह।

هُوَ الَّذِي جَعَلَ الشَّمْسُ ضِيَاءً وَالْقَمَرَ نُورًا وَقَدَرَهُ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابَ مَا خَلَقَ اللَّهُ ذَلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَعْلَمُونَ ② إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللَّهُ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِقَوْمٍ يَتَّقُونَ ③

अल्लाह ही है जिसने सूरज को चमकता बनाया और चांद को रोशनी दी और उसकी मंजिलें मुकर्र कर दीं ताकि तुम वर्षों का शुमार और हिसाब मालूम करो। अल्लाह ने ये सब कुछ बेमक्सद नहीं बनाया है। वह निशानियां खोल कर बयान करता है उनके लिए जो समझ रखते हैं। यकीनन रात और दिन के उलट फेर में और अल्लाह ने जो कुछ आसमानों और जमीन में पैदा किया है उनमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो डरते हैं। (5-6)

सूरज हमारी जमीन से निहायत दुरुस्त फसले पर कायम है, यही वजह है कि वह हमारे लिए रोशनी और हरायत जैसी नेमतों का खजाना बना हुआ है। अगर इस अंदाजे में फर्क हो जाए तो सूरज हमारे लिए सूरज न रहे बल्कि आग का जहन्नम बन जाए, वह जिंदगी के बजाए मौत का पैगाम साबित हो। चांद एक हददर्जा रियाजियाती (गणितीय) हिसाब के मुताबिक अपने मदार (कक्ष) पर ठीक-ठीक गर्दिश करता है। इसी बिना पर यह मुमकिन होता है कि चांद बजाते खुद बेनूर होने के बावजूद हमारे लिए न सिर्फ ठंडी रोशनी दे बल्कि महीने और साल की कुदरती तक्वीम (कलेंडर) भी फराहम करे। ये फल्कियाती (आकाशीय) निशानियां साबित करती हैं कि इस कायनात में गहरी मक्सदियत है, और मक्सदियत वाली कायनात का आखिरी अंजाम बेमक्सद नहीं हो सकता।

फिर हमारी दुनिया में रात के बाद दिन का आना मादूदी तमसील (भौतिक प्रक्रिया) की जवान मेइस अख्बाकी हकीकत को बता रहा है कि मौजूदा दुनिया में यह कसून नाफिज है कि तारीकी के बाद रोशनी फेले, अंधेरे के बाद उजाले का जूह हो। यहां हुक्क की पामाली के बाद हुक्क की अदायगी का निजाम आने वाला है। इंसान की सरकशी की जगह खुदाई इंसफ को गलब मिलने वाला है। यहां उस वक्त का आना सुनिश्चित है जबकि धांधली खत्म हो और हक के एतराफ का माहिल चारों तरफ कायम हो जाए।

आखिरत की हकीकतों को खुदा ने निशानियों के अंजाम में जाहिर किया है। बअत्फजे दीगर, खुदा मौजूदा दुनिया में दलील के रूप में जाहिर होता है न कि महसूस मुशाहिदे (अवलोकन)

के रूप में। फिर खुदा जिस रूप में अपना जलवा दिखाता है उसी रूप में हम उसे पा सकते हैं न कि किसी और रूप में।

खुदा ने इस दुनिया में हिदायत के रास्ते खोल रखे हैं मगर यह हिदायत उन्हीं का मुकद्दर है जो खुदाई नक्शे के मुताबिक उसकी पैरवी करने के लिए तैयार हों। यहां वही लोग सही रास्ते पर चलने की तौफ़ीक पाएंगे जो दलील की जवान में बात को समझने और मानने के लिए तैयार हों। जो लोग सच्ची दलील के आगे न झुकें वे गोया खुदा के आगे नहीं झुके। उन्होंने खुदा को नहीं माना। ऐसे लोगों को अपने लिए जहन्नम के सिवा किसी और चीज का इतिजार् न करना चाहिए।

जमीन व आसमान में अगरचे बेशुमार निशानियां फैली हुई हैं मगर वे उन्हीं लोगों के लिए सबक बनती हैं जो डर रखने वाले हैं। डर या अदेशा वह चीज है जो आदमी को संजीदा बनाता है। जब तक आदमी किसी मामले में संजीदा न हो वह उस मामले पर पूरा ध्यान नहीं देगा और न उसके पहलुओं को समझेगा। पूरी कायनात एक जबरदस्त तख्तीकी तवाजुन (संतुलन) में जकड़ी हुई है। यह इस बात का खुला हुआ इशारा है कि कायनात का मालिक ऐसा मालिक है जो इंसान को पकड़ने की ताकत रखता है। इसी तरह पहली जिंदगी जिसका हम तजर्बा कर रहे हैं वह इसका यकीनी सबूत है कि दूसरी जिंदगी भी मुमकिन है। मौजूदा दुनिया में मादूदी नताइज का निकलना मगर अख़्लाकी नताइज का न निकलना तकाज़ा करता है कि एक और दुनिया बने जहां अख़्लाकी नताइज अपनी पूरी सूरत में जाहिर हों। ये सब इतिहाई मोहकम बातें हैं मगर इनका मोहकम होना वही शख्स जानेगा जो अदेशे की नपिसयात के तहत जिंदगी के मामले को देखता हो।

إِنَّ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا وَرَضُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنَّنُوا بِمَا
الَّذِينَ هُمْ عَنْ آيَاتِنَا غَفْلُونَ ۚ أُولَٰئِكَ مَاؤُهُم النَّارُ بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۚ
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ تَجْرِي
مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ ۖ دَعْوُهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَ
تَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ ۚ وَأُخْرَدُ عَنْهُمْ لَوْلَا الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝

बेशक जो लोग हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते और दुनिया की जिंदगी पर राजी और मुतमइन हैं और जो हमारी निशानियों से बेपरवा हैं, उनका ठिकाना जहन्नम होगा इस सबब से कि जो वे करते थे। बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक काम किए, अल्लाह उनके ईमान की बदौलत उन्हें पहुंचा देगा। उनके नीचे नहरें बहती होंगी नेमत के बागों में। उसमें उनका कौल होगा कि ऐ अल्लाह तू पाक है। और मुलाकात उनकी सलाम होगी। और उनकी आखिरी बात यह होगी कि सारी तारीफ अल्लाह के लिए है जो सब है सारे जहान का। (7-10)

जहन्नम किसके लिए है। उन लोगों के लिए जो उस दिन को भूले हुए हों जबकि खुदा से उनका सामना होगा। जो आखिरत की अबदी (चिरस्थायी) नेमतों के मुकाबले में दुनिया की आरजी (क्षणिका) चीजों पर राजी हो गए हों। जिनका यह हाल हो कि दुनिया में जो कुछ उन्हें इन्तेहान के तौर पर मिला है उसी पर वे मुतमइन हो जाएं। जो ग़ैर खुदाई चीजों में इतना दिल लगा लें कि खुदा की तरफ से जहिर की जानी वाली हकीकतों से ग़ाफ़िल हो जाएं। यह सब खुदा के नजदीक जहन्नमी रास्तों में चलना है, और जो लोग जहन्नमी रास्तों पर चल रहे हों वे आखिरकार जहन्नम के सिवा और कहां पहुंचेंगे।

‘अल्लाह उन्हें उनके ईमान की वजह से जन्नत की मंजिल तक पहुंचाएगा’ इससे मालूम हुआ कि ईमान आदमी के लिए रहनुमाई है। वह आदमी को ग़लत राहों से बचा कर सही रास्ते पर चलाता रहता है, यहां तक कि उसे हकीकी मंजिल तक पहुंचा देता है।

ईमान खुदा की दरयाफ्त (खोज) है। जिस आदमी को ईमान हासिल हो जाए उसे इल्म का सिरा हाथ आ जाता है, वह इस काबिल हो जाता है कि हर मामले में सही मकाम से अपनी सोच का अज़ाज कर सके। वह फ़िक्री (वैचारिक) बेराहरवी से बचकर फ़िक्री सेहत का मालिक बन जाए। मजीद यह कि खुदा को मानना किसी किताबी फ़तसफे को मानना नहीं है। यह एक जिंदा खुदा को मानना है जो बिलआखिर तमाम इंसानों को अपने यहां जमा करके उनका हिसाब लेने वाला है। इस तरह ईमान आदमी के अंदर अपने अंजाम के बारे में अदेशे की कैफियत पैदा करके उसे इतिहाई संजीदा इंसान बना देता है। वह अपने को मजबूर पाता है कि अपनी तमाम कारवाइयों को सही और ग़लत की रोशनी में देखे और सिर्फ सही रुख पर चले और ग़लत रुख पर चलने से हमेशा परहेज करे।

इस तरह ईमान आदमी को सही फ़िक्र (सोच) भी देता है और इसी के साथ वह कुव्वते तमीज (सही ग़लत की पहचान) भी जो उसके लिए मुस्तक़िल अमली रहनुमा बन जाए।

आखिरत की जन्नत उन लोगों के लिए है जिन्होंने दुनिया में अपने आपको उसका मुस्तहिक साबित किया हो। आखिरत खुदा के बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) जलवों में सरशार होने का मकाम है, वहां बसने का मौका सिर्फ उन लोगों को मिलेगा जो दुनिया में खुदा के बिलवास्ता (परोक्ष) जलवों से सरशार हुए थे। आखिरत में लोगों के दिल एक दूसरे के लिए सलामती और ख़ैरख़्वाही के जब्बात से भरे हुए होंगे, इसलिए वहां की आबादी में वही लोग जगह पाएंगे जिन्होंने दुनिया में इस बात का सबूत दिया था कि दूसरों के लिए उनके दिल में सलामती और ख़ैरख़्वाही के सिवा कोई दूसरा जब्बा नहीं।

وَلَوْ يَعْلَمُ اللَّهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتَعْجَلَهُمْ بِالْخَيْرِ لَفُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ فَبُذِّرَ
الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا فِي طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُونَ ۚ وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ^١
دَعَا الْغَنِيَّ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَائِمًا ۖ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ غُصْرَهُ وَوَجَدَ مَرْكَانَ لَمْ يَذْكُرْنَا إِلَى
خُذْ مَسَّةَ كَذَلِكَ نَرِي الْمُسْرِفِينَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

अगर अल्लाह लोगों के लिए अजाब उसी तरह जल्दी पहुंचा दे जिस तरह वह उनके साथ रहमत में जल्दी करता है तो उनकी मुद्दत खत्म कर दी गई होती। लेकिन हम उन लोगों को जो हमारी मुलाकात की उम्मीद नहीं रखते उनकी सरकशी में भटकने के लिए छोड़ देते हैं। और इंसान को जब कोई तकलीफ पहुंचती है तो वह खड़े और बैठे और लेटे हमें पुकारता है। फिर जब हम उससे उसकी तकलीफ को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है गोया उसने कभी अपने किसी बुरे वक्त पर हमें पुकारा ही न था। इस तरह हद से गुजर जाने वालों के लिए उनके आमाल खुशनुमा बना दिए गए हैं। (11-12)

खुदा का कानून यह है कि कोई शख्स कबिले इनाम अमल करे तो उसका अमल फौरन उसके आमालनामे में शामिल कर दिया जाता है। लेकिन अगर कोई शख्स कबिले सजा फेअल करता है तो खुदा उसे ढील देता है ताकि वह किसी न किसी मोड़ पर सचेत होकर अपनी इस्लाह कर ले। खुदा का यह कानून इंसान के लिए बहुत बड़ी नेमत है, वरना इंसान इतना जालिम है कि वह हर वक्त बुराई करने पर आमादा रहता है, और अगर लोगों को उनकी बुराइयों पर फौरन पकड़ा जाने लगे तो उनकी मोहलते उम्र बहुत जल्द खत्म हो जाए और जमीन की पुश्त चलने वाले इंसानों से खाली हो जाए।

दुनिया की जिंदगी में सरकश वे लोग बनते हैं जो दुनिया में यह समझ कर रहें कि मरने के बाद उन्हें खुदा का सामना नहीं करना होगा। जो पकड़ के अदेशे से खाली होकर जिंदगी गुजारते हैं। जो समझते हैं कि वे आजाद हैं कि जो धांधली चाहें करें और जो फसाद चाहें फैलाएं। हकीकत यह है कि लोगों के दर्मियान सच्चाई और इंसाफ के साथ मामला करने का एक ही हकीकी मुहर्रिक है। और वह यह कि आदमी यह समझे कि सब ताकतवरों के ऊपर एक ताकतवर है। हर आदमी उसके आगे बेबस है। वह एक दिन तमाम इंसानों को पकड़ेगा और हर एक मजबूर होगा कि अपने बारे में उसके फैसले को तस्लीम करे।

दुनिया का निजाम इस तरह बना है कि आदमी बार-बार किसी न किसी तकलीफ या हादसे की जद में आ जाता है, आदमी महसूस करने लगता है कि खारजी (वाहय) ताकतों के मुकाबले में वह बिल्कुल बेबस है। उस वक्त आदमी बेइस्त्रियार होकर खुदा को पुकारने लगता है। वह खुदा की कुर्रत के मुक़बले में अपने इज्ज का एतराफ कर लेता है। मगर यह हालत सिर्फ उस वक्त तक रहती है जब तक वह मुसीबतों की गिरफ्त में हो, मुसीबत से नजात पाते ही वह दुबारा वैसा ही ग़ाफिल और सरकश बन जाता है जैसा वह पहले था। ऐसे लोगों के इन्हारे बंदगी को खुदा तस्लीम नहीं करता। क्योंकि इन्हारे बंदगी वह मलूब है जो आजादाना हालात में की जाए, मजबूराना हालात में जाहिर की हुई बंदगी की खुदा के नज़्दीक कोई कीमत नहीं।

आदमी एक तौजीहपसंद मख़्लूक है। वह हर अमल का एक जवाज (औचित्य) तलाश करता है। अगर आदमी सरकशी को अपने लिए पसंद कर ले तो उसका ज़ेहन भी उसी तरफ मुड़ जाएगा। वह अमलन सरकशी करेगा और उसका ज़ेहन उसकी सरकशी को दुरुस्त साबित

करने के लिए उसे ख़ूबसूरत अल्फ़ाज़ फ़ाहम करता रहेगा। इसी का नाम तज्हीन आमाल है। आदमी अपनी ग़लतियों को खुशनुमा अल्फ़ाज़ में बयान करके अपने को मुत्तमइन कर लेता है कि वह हक पर है। मगर यह ऐसा ही है जैसे कोई शख्स आग का अंगारा अपने हाथ में ले ले और समझे कि वह उसे नहीं जलाएगा क्योंकि उसका नाम उसने सुर्ख फूल रख दिया है।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُونُ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوا وَجَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ وَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا كَذَلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِينَ ۖ ثُمَّ جَعَلْنَاكُمْ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ مِنْ بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُونَ ۝

और हमने तुमसे पहले कौमों को हलाक किया जबकि उन्होंने जुल्म किया। और उनके पैग़म्बर उनके पास खुली दलीलों के साथ आए और वे ईमान लाने वाले न बने। हम ऐसा ही बदला देते हैं मुजरिम लोगों को। फिर हमने उनके बाद तुम्हें मुल्क में जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया ताकि हम देखें कि तुम कैसा अमल करते हो। (13-14)

पैग़म्बर अपनी कौमों के पास बय्यिनात के साथ आए मगर उन्होंने न माना। बय्यिनह बहुवचन बय्यिनात के मअना दलील के हैं, इससे मालूम होता है कि खुदा का दाअी हमेशा बय्यिनात की बुनियाद पर उठता है। लोगों को उसे दलाइल की सतह पर पहचानना पड़ता है। जो लोग जाहिरी अज्मतों और अवामी इस्तक़्वालियों में खुदा के दाअी को पाना चाहें वे कभी उसे नहीं पाएंगे, क्योंकि खुदा का दाअी वहां मौजूद ही नहीं होता। नबी मोजिजा दिखाता है। मगर मोजिजा आखिरी मरहले में इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) के लिए आता है, दावती मरहले में सारा काम दलाइल की बुनियाद पर होता है।

किसी शख्स या गिरोह का जालिम होना यह है कि वह दलील के रूप में जाहिर होने वाली दावते खुदावंदी को न पहचाने और अपने खुदसाख़्ता मेयार पर न पाने की वजह से उसका इंकार कर दे। ऐसे लोग अपनी इस रविश की वजह से खुदाई कानून की जद में आ जाते हैं

माजी की जिन कौमों पर इंकारे नुबुव्वत के जुर्म में खुदा का अजाब नाजिल हुआ वे सिरे से नुबुव्वत की मुकिर न थीं। ये तमाम कौमों किसी न किसी साबिक (पूर्ववर्ती) पैग़म्बर को मानती थीं। अलबत्ता उन्होंने वक्त के पैग़म्बर को मानने से इंकार कर दिया था। पिछले पैग़म्बर का मामला यह था कि उसकी पुश्त पर तारीख की तस्दीकात (पुष्टियाँ) कायम हो गई थीं और कौमी अस्बियतें उसके साथ वाबस्ता हो चुकी थीं। जबकि मुआसिर (समकालीन) पैग़म्बर अभी इस किस्म की इजाफी ख़ुसूसियात (अतिरिक्त विशिष्टताओं) से खाली था। उन्होंने उस गुजरे हुए पैग़म्बर का इक़रार किया जो नस्लों की रिवायतों के नतीजे में उनका कौमी पैग़म्बर बन चुका था, जिसके साथ अपने को मंसूब करना तारीखी अज्मत के मीनार से अपने को मंसूब करने के हममअना था। उन्होंने अपने कौमी पैग़म्बर को पैग़म्बर माना मगर उस पैग़म्बर का इंकार कर दिया जिसे सिर्फ दलील और बुरहान (सुस्पष्ट तक) के जरिए जाना जा सकता था।

यह जुर्म खुदा की नजर में इतना शदीद था कि वे लोग नबी के मुकिर करार देकर हलाक

कर दिए गए।

‘फिर हमने इसके बाद तुम्हें मुल्क में खलीफा बनाया।’ खलीफा के अरल मअना हैं बाद को आने वाला। यह लफज जानशीन (उत्तराधिकारी), खास तौर पर, इक्तेदार (सत्ता) में जानशीन के लिए बोला जाता है। यह जानशीनी ईसान की होती है न कि खुदा की। कोई ईसान इक्तेदार में खुदा का जानशीन नहीं हो सकता। ईसान हमेशा किसी मखूक का जानशीन होता है। कुरआन में जहां भी खिलाफत का लफज आया है वह मखूक की जानशीनी के लिए है न कि खुदा की जानशीनी के लिए।

किसी को खलीफा (जानशीन) बनाना एजाज के लिए नहीं बल्कि सिर्फ इस्तेहान के लिए होता है। जानशीन बनाने का मतलब एक के बाद दूसरे को काम का मौका देना है, एक कौम के बाद दूसरी कौम को इस्तेहान के मैदान में खड़ा करना है। जैसे हिंदुस्तान में देसी राजाओं की जगह मुगलों को इख्तियार दिया गया। फिर उन्हें हटाकर अंग्रेज उनके जानशीन बनाए गए। इसके बाद उन्हें मुल्क से निकाल कर अक्सरियती फिरके के लिए जगह खाली की गई। इनमें से हर बाद को आने वाला अपने पहले का खलीफा (उत्तराधिकारी) था।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا بَيِّنَاتٍ قَالَ الَّذِينَ لَا يَرْجُونَ لِقَاءَنَا أُمْتُ يَقْرَأِينَ غَيْرُ
هَذَا أَوْ بَدَّلَهُ أَتَىٰ أَكْثَرُ النَّاسِ تَبَدُّلاً ۚ وَمَا يَكُونُ لِي أَنْ أَبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَائِي نَفْسِي إِنْ أَشَاءُ إِلَّا
مَآ يُوْحَىٰ إِلَيْنَا ۚ إِنِّي أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّي عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝ قُلْ لَوْ
شَاءَ اللَّهُ مَا تَلَوْتُمْ عَلَيْهِمْ قُرْآنًا وَلَا أَدْرَاكُمْ بِهِ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهِ
أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِآيَاتِهِ
إِنَّهُ لَا يَفْقَهُ الْجُرْمُونَ ۝

और जब उन्हें हमारी खुली हुई आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने का खटका नहीं है वे कहते हैं कि इसके सिवा कोई और कुरआन लाओ या इसको बदल दो। कहो कि मेरा यह काम नहीं कि मैं अपने जी से इसको बदल दूं। मैं तो सिर्फ उस ‘वही’ (ईश्वरीय वाणी) की पैरवी करता हूं जो मेरे पास आती है। अगर मैं अपने ख की नाफरमानी करूं तो मैं एक बड़े दिन के अजाब से डरता हूं। कहो कि अगर अल्लाह चाहता तो मैं इसको तुम्हें न सुनाता और न अल्लाह इससे तुम्हें बाख़बर करता। मैं इससे पहले तुम्हारे दर्मियान एक उग्र बसर कर चुका हूं, फिर क्या तुम अकल से काम नहीं लेते, उससे बढ़कर जालिम और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बोहतान बांधे या उसकी निशानियों को झुठलाए। यकीनन मुजरिमों को फलाह हासिल नहीं होती। (15-17)

मक्का के कुरैश खुदा और रसूल को मानते थे। वे अपने को मिल्लते इब्राहीम का पैरोकार

कहते थे। यहां तक कि इस्लाम की बहुत सी दीनी इस्तिलाहें (शब्दावलियां) मसलन सलात, सोम, जकात, हज वगैरह वही हैं जो पहले से उनके यहां राइज थीं। इसके बावजूद क्यों उन्होंने कहा कि दूसरा कुरआन लाओ या इस कुरआन में कुछ तर्फीम (संशोधन) कर दो तब हम इसको मानेंगे।

इसकी वजह यह थी कि कुरआन में खुदा के खालिस दीन का एलान था। जबकि कुरैश खुदा के दीन के नाम पर एक मिलावटी दीन को इख्तियार किए हुए थे।

कुरआन की तौहीद (एकेश्वरवाद) से उनके मुश्रिकाना अक्रीदा-ए-खुदा पर जद पड़ती थी। कुरआन के तसव्वुरे इबादत की रोशनी में उनकी इबादतें महज खेल तमाशा मालूम होती थीं। वे पैगम्बर को अपने कौमी फख्र का निशान बनाए हुए थे और कुरआन उनसे एक ऐसे पैगम्बर को मानने का मुतालबा कर रहा था जो उनकी अमली जिंदगी में रहनुमा का दर्जा हासिल कर ले। उन्होंने काबे की खिदमत को अपनी दीनदारी का सबसे बड़ा सुबूत समझ रखा था जबकि कुरआन ने बताया कि दीनदारी यह है कि आदमी खुदा से डरे और जो कुछ करे आखिरत को सामने रखकर करे।

आदमी कुछ अल्मजज बेलकर हक को नजरअंदाज कर देता है। इसकी वजह यह है कि उसके दिल में ‘खटका’ नहीं होता। अगर आदमी के दिल में यह खटका लगा हुआ हो कि वह अपने कौल व फेअल के लिए खुदा के यहां जवाबदेह है तो वह फौरन संजीदा हो जाएगा। और जो शख्स संजीदा हो वह मामले को हकीकतपसंदी की नजर से देखेगा, वह सरसरी तौर पर उसे नजरअंदाज नहीं कर सकता।

وَيَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ
شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ قُلْ أَتَنْتَبُونَ ۚ اللَّهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي
الْأَرْضِ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّا أُمَّةً
وَاحِدَةً فَاخْتَلَفُوا وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَفُضِّضَ بَيْنَهُمْ فِيمَا
فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝

और वे अल्लाह के सिवा ऐसी चीजों की इबादत करते हैं जो उन्हें न नुक्सान पहुंचा सकें और न नफा पहुंचा सकें। और वे कहते हैं कि ये अल्लाह के यहां हमारे सिफारिश हैं। कहो, क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज की खबर देते हो जो उसे आसमानों और जमीन में मालूम नहीं। वह पाक और बरतर है उससे जिसे वे शरीक करते हैं। और लोग एक ही उम्मत थे। फिर उन्होंने इख़लेफ किया। और अगर तुम्हारे ख की तरफ से एक बात पहले से न ठहर चुकी होती तो उनके दर्मियान उस अग्र (मामले) का फैसला कर दिया जाता जिसमें वे इख़लेफ कर रहे हैं। (18-19)

हमारी दुनिया में जो वाक़ेयात हो रहे हैं वे बजाहिर माददी असबाब के तहत हो रहे हैं। मगर हकीकत यह है कि तमाम वाक़ेयात के पीछे खुदा का तसर्फ (नियति) काम कर रहा

सूरह-10. यूनुस

547

पारा 11

है। इस दुनिया में किसी को कोई जाती इख्तियार हासिल ही नहीं। तौहीद यह है कि आदमी जहरी चीजों से गुजर कर पैर में छुए हुए खुदा को पा ले। इसके मुकबले में शिर्क यह है कि आदमी जहरी चीजों में अटक कर रह जाए। वे चीजों ही को चीजों के ख़ालिक का मक़म देदे।

इस दुनिया में खुदा के सिवा किसी के पास नफ़ा देने या नुस्सान पहुंचाने की ताक़त नहीं। जो आदमी इस हकीक़त को पा लेता है उसकी तमाम तवज़ोह खुदा की तरफ़ लग जाती है। वह खुदा ही की परस्तिश करता है। वह उसी से डरता है और उसी से उम्मीदें कायम करता है। वह अपना सब कुछ एक खुदा को बना लेता है। इसके बरअक्स जो लोग चीजों में अटके हुए हों वे अपने-अपने ज़ौक के लिहाज़ से किसी ग़ैर खुदा को अपना खुदा बना लेते हैं और उन ग़ैर खुदाओं से वही उम्मीदें और अंदेशे वाबस्ता कर लेते हैं जो दरहकीक़त खुदा-ए-वाहिद के साथ वाबस्ता करना चाहिए। इसी की एक सूत शफ़ाहत का अकीदा है। लोग यह फ़र्ज़ कर लेते हैं कि इंसानों या ग़ैर इंसानों में कुछ ऐसी बरतर हस्तियां हैं जो खुदा की नज़र में मुक़द्दस हैं। खुदा उनकी सुनता है और उनकी सिफ़ारिश पर दुनियावी रिक्क या उख़्तवी नज़ात के पैसले करता है। मगर इस किस्म का अकीदा बातिल है। वह खुदा की खुदाई का कमतर अंदाज़ है।

खुदा इस किस्म के हर शिर्क (ईश्वरत्व में साझीदारी) से पाक है। खुदा अपनी सिफ़ात का जो तआरुफ़ अपनी अज़ीम कायनात में करा रहा है उसके लिहाज़ से इस किस्म के तमाम अकीदे बिल्कुल बेजोड़ हैं। ऐसे किसी अकीदे का मतलब यह है कि खुदा वह नहीं है जो बजाहिर अपनी तख़्वीकी सिफ़ात के आइने में नज़ आ रहा है या फिर खुदा की सिफ़ातों में तजद (अन्तर्विधि) है। जाहिर है कि इन दोनों में से कोई चीज़ मुमकिन नहीं।

खुदा ने इंसानियत का आज़ाज देने फ़ितरत से किया था। उस वक़्त तमाम इंसानों का एक ही दीन था। इसके बाद लोगों ने फ़र्क़ करके दीन के मुख़ालिफ़ रूप बना लिए। इसकी वजह उस आज़ादी का ग़लत इस्तेमाल है जो लोगों को इस्तेहान की ग़रज से दी गई है। अगर खुदा जाहिर हो जाए तो उसकी ताक़तों को देखकर लोगों की सरकशी ख़त्म हो जाए और अचानक इख़्तेलाफ़ की जगह इत्तेहाद पैदा हो जाए। क्योंकि शिद्दे ख़ौफ़ राय के दअदुद (मत-भिन्नता) को ख़त्म कर देता है। मगर खुदा कियामत से पहले इस सूरतेहाल में मुदाख़लत (हस्तक्षेप) नहीं करेगा। मौजूदा दुनिया को खुदा ने इस्तेहान के लिए बनाया है और इस्तेहान की फ़िज बाक़ी रखने के लिए ज़रूरी है कि हकीक़त छुपी रहे और लोगों को मैय़ हों कि वे अपनी अक्ल को सही रुख़ पर भी इस्तेमाल कर सकें और ग़लत रुख़ पर भी।

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝ وَإِذَا أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِنْ بَعْدِ غَظٍّ مَسْتَهْزِمَةٍ ۝ إِذَا هُمْ مَكْرُوفٌ فِي آيَاتِنَا قُلْ اللَّهُ أَسْرَعُ مَكْرًا إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُونَ مَا مَكْرُوفٌ ۝

और वे कहते हैं कि नबी पर उसके ख़ब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी

पारा 11

548

सूरह-10. यूनुस

गई, कहो कि ग़ैब की ख़बर तो अल्लाह ही को है। तुम लोग इंतज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतज़ार करने वालों में से हूँ। और जब कोई तकलीफ़ पड़ने के बाद हम लोगों को अपनी रहमत का मजा चखाते हैं तो वे फ़ौरन हमारी निशानियों के मामले में हीले बनाने लगते हैं। कहो कि खुदा अपने हीलों में उनसे भी ज्यादा तेज़ है। यकीनन हमारे फ़रिश्ते तुम्हारी हीलाबाजियों को लिख रहे हैं। (20-21)

मक्का के लोग जब मुसलसल इंकार की रविश पर कायम रहे तो खुदा ने उन पर कहत भेजा जो सात साल मुसलसल रहा और बिलआख़िर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ के बाद ख़त्म हुआ। यह एक निशानी थी जिससे उन्हें यह सबक लेना चाहिए था कि रसूल का इंकार करने के बाद वे खुदाई पकड़ की जद में आ जाएंगे। मगर उनका हाल यह हुआ कि जब तक कहत रहा विनती-विलाप करते रहे और जब कहत रुख़्त हुआ तो कहने लगे कि यह तो जमाने की गर्दिशें हैं जो हर एक के साथ पेश आती हैं। इसका रसूल को मानने या न मानने से कोई तअल्लुक नहीं।

पैग़म्बर से लोग निशानी मांगते हैं। मगर अस्ल सवाल निशानी के जुहूर का नहीं बल्कि उससे सबक लेने का है। क्योंकि निशानी सिर्फ़ देखने के लिए होती है वह मजबूर करने के लिए नहीं होती। निशानी जाहिर होने के बाद भी यह आदमी के अपने इख़्तियार में होता है कि वह उसे माने या झूठी तौजीह निकाल कर उसे रद्द कर दे।

ताहम जब खुदा की आख़िरी निशानी जाहिर होती है तो उसके मुकाबले में इंसान को कोई इख़्तियार नहीं होता। यह आख़िरी निशानी इतमामे हुज्जत (आद्वान की अति) के बाद खुदा की अदालत बनकर आती है और वह मुख़ालिफ़ पैग़म्बरों के लिए मुख़ालिफ़ सूतों में आती है। पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के लिए मुख़ालिफ़ मस्लेहतों के बिना पर यह निशानी इस सूत में जाहिर हुई कि मुंकिरीन को मग़लूब करके मोमिनीन को उनके ऊपर ग़ालिब कर दिया गया। शाह अब्दुल कादिर साहब इस सिलसिले में मूजिहुल कुरआन में लिखते हैं 'यानी अगर कहें कि हम कैसे जानें कि तुम्हारी बात सच है। फरमाया कि आगे हक़ तआला इस दीन को रोशन करेगा और मुख़ालिफ़ जलील और बर्बाद हो जाएंगे। सो वैसा ही हुआ। सच की निशानी एक बार काफ़ी है। और हर बार मुख़ालिफ़ जलील हों तो फैसला हो जाए। हालांकि फैसले का दिन दुनिया में नहीं।'।

आदमी जब सरकशी करता है और इसकी वजह से उसका कुछ बिगड़ता हुआ नज़र नहीं आता तो वह और भी ज्यादा दीठ हो जाता है। वह समझता है कि वह खुदा की पकड़ से बाहर है। हालांकि यह ऐन खुदा की तदबीर होती है। खुदा सरकश आदमी को ढील देता है ताकि वह बेफ़िक़्र होकर ख़ूब सरकशी करे। और इस सरकशी के दौरान खुदा के कारिदे पर्दे में रहकर ख़ामोशी के साथ उसके तमाम अक़वाल व अफ़आल (कथनी-करनी) को लिखते रहते हैं। यहां तक कि जब उसका वक़्त पूरा हो जाता है तो अचानक मौत का फ़रिश्ता जाहिर होकर उसे पकड़ लेता है कि उसे उसके आमाल का हिसाब देने के लिए खुदा के सामने हाज़िर कर दे।

هُوَ الَّذِي يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ حَتَّى إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلِكِ وَجَرِينَ بِحَمْلِهِ
طَبَقَ لَكُمْ فَجْوَاحِلَ لَكُمْ رِيحًا عَاصِفٌ وَجَاءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَظَنُوا
أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ دَعَوُا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ فَلَمَّا نَجَّيْنَا أَمْرَهُمْ مِنْ هَذِهِ لَكُونُوا
مِنَ الشَّاكِرِينَ ۝ فَلَمَّا أَنْجَاهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ يَأْتِيهَا النَّاسُ
إِثْمًا يَبْغِيهِمْ عَلَى أَنْفُسِهِمْ قَتْلًا حَيَوتِ الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُونَ ۝

वह अल्लाह ही है जो तुम्हें खुशकी और तरी में चलाता है। चुनांचे जब तुम कश्ती में होते हो और कश्तियां लोगों को लेकर मुवाफिक हवा से चल रही होती हैं और लोग उससे खुश होते हैं कि यकायक तुंद हवा आती है और उन पर हर जानिव से मौजें उठने लगती हैं और वे गुमान कर लेते हैं कि हम घिर गए। उस वक्त वे अपने दीन को अल्लाह ही के लिए ख़ालिस करके उसे पुकारने लगते हैं कि अगर तूने हमें इससे नजात दे दी तो यकीनन हम शुक्रगुजार बंदे बनेंगे। फिर जब वह उन्हें नजात दे देता है तो फ़ौरन ही जमीन में नाहक की सरकशी करने लगते हैं। ऐ लोगो तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही ख़िलाफ है, दुनिया की ज़िंदगी का नफ़ा उठा लो, फिर तुम्हें हमारी तरफ लौट कर आना है, फिर हम बता देंगे जो कुछ तुम कर रहे थे। (22-23)

इंसान एक बेहद हस्सास (संवेदनशील) वज़ूद है। वह तकलीफ को बर्दाश्त नहीं कर सकता। यही वजह है कि इंसान पर जब तकलीफ का कोई लम्हा आता है तो वह फ़ौरन संजीदा हो जाता है। उस वक्त उसके ज़ेहन से तमाम मस्नूई (बनावटी) पर्दे हट जाते हैं। फ़िर के लम्हात में आदमी उस हकीकत का एतराफ कर लेता है जिसका एतराफ करने के लिए वह बेफिक्री के लम्हात में तैयार न होता था।

इसकी एक मिसाल समुद्र का सफर है। समुद्र में सुकून हो और कश्ती मंजिल की तरफ रवां हो तो उसके मुसाफिरों के लिए यह बड़ा खुशगवार लम्हा होता है। उस वक्त उनके अंदर एक झूठा एतमाद पैदा हो जाता है। वह समझ लेते हैं कि उनका मामला दुरुस्त है, अब उसे कोई बिगाड़ने वाला नहीं।

इसके बाद समुद्री हवाएं उठती हैं। पहाड़ जैसी मौजें मुसाफिरों को चारों तरफ से घेर लेती हैं। उनके दर्मियान बड़े से बड़ा जहाज भी मामूली तिंके की तरह हिचकोले खाने लगता है। बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि अब हलाकत के सिवा दूसरा कोई अंजाम नहीं। उस वक्त ख़ुदा के मुक़िर ख़ुदा का इकरार कर लेते हैं। देवताओं को पूजने वाले ख़ुदाए वाहिद को पुकारना शुरू करते हैं। अपनी कुव्वत और अपनी तदबीर पर भरोसा करने वाले हर दूसरी चीज

को छोड़कर सिर्फ ख़ुदा को याद करने लगते हैं। यह एक तजर्बाती सुबूत है कि तौहीद एक फितरी अक्रीदा है। तौहीद के सिवा दूसरे तमाम अक्रीदे बिल्कुल बेबुनियाद हैं।

यह तजर्बा बताता है कि ख़ुदा को न मानने के लिए आदमी चाहे कितने ही फलसफे पेश करे, हकीकतन इस किस्म की तमाम बातें बेफिक्री की नजरियासाज हैं। इंसान अगर जाने कि दुनिया के मैके महज वक्ती तौर पर उसे इम्तेहान के लिए दिए गए हैं तो वह फ़ौरन संजीदा हो जाए। उसके ज़ेहन से तमाम मस्नूई दीवारें गिर जाएं और एक ख़ुदा को मानने के सिवा उसके लिए कोई चारा न रहे।

वह वक्त आने वाला है जब इंसान ख़ुदा के जलाल को देखकर कांप उठे और तमाम ख़ुदाई बातों का इकरार करने पर मजबूर हो जाए। मगर अकलमंद वह है जो मौजूदा ज़िंदगी के तजर्बात में आने वाली ज़िंदगी की हकीकतों को देख ले और आज ही उस बात को मान ले जिसे वह कल मानने पर मजबूर होगा। मगर कल का मानना उसके कुछ काम न आएगा।

إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا كَمَاءٍ أَنْزَلْنَاهُ مِنَ السَّمَاءِ فَاخْتَلَطَ بِهِ نَبَاتُ الْأَرْضِ
مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ حَتَّى إِذَا أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ
أَهْلُهَا أَنَّهُمْ قَدِرُونَ عَلَيْهَا أَتَاهَا أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فْجَعَلْنَاهَا حَصِيدًا
كَانَ لَمْ تَعْنِ بِالْأَمْرِ كَذَلِكَ نَقُصِّلُ الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल ऐसी है जैसे पानी कि हमने उसे आसमान से बरसाया तो जमीन का सब्जा ख़ूब निकला जिसे आदमी खाते हैं और जिसे जानवर खाते हैं। यहां तक कि जब जमीन पूरी रौनक पर आ गई और संवर उठी और जमीन वालों ने गुमान कर लिया कि अब यह हमारे काबू में है तो अचानक उस पर हमारा हुक्म रात को या दिन को आ गया, फिर हमने उसे काट कर ढेर कर दिया गोया कल यहां कुछ था ही नहीं। इस तरह हम निशानियां खोल कर बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (24)

दुनिया की ज़िंदगी इम्तेहान के लिए है। इसलिए यहां इंसान को मुकम्मल आजादी और हर किस्म के खुले मैके दिए गए हैं। बजाहिर ऐसा मालूम होता है कि इंसान आजाद है कि जो चाहे करे और जिस किस्म का मुस्तकविल चाहे अपने लिए बनाए। मगर इन्हीं हालात के दौरान ऐसे वाक़ेयात भी रख दिए गए हैं जो सोचने वालों के लिए नसीहत का काम करते हैं, जो इस हकीकत की निशानेदेही कर रहे हैं कि यह सब कुछ महज वक्ती है और बहुत जल्द उससे छिन जाने वाला है।

इन्हीं में से एक जमीन की सरसब्जी का वाक़या है। जब बारिश होती है तो जमीन हर किस्म की नबातात से लहलहा उठती है। आदमी उन्हें देखकर खुश होता है। वह समझने लगता है कि मामला पूरी तरह उसके काबू में है और बहुत जल्द वह तैयार फसल का मालिक

सूरह-10. यूनुस

551

पारा 11

बनने वाला है। ऐन उस वक्त अचानक कोई आफत आ जाती है। मसलन बगीला आ गया, ओले पड़ गए, टिड्डी दल पहुंच गया और एक लम्हे में सारी फसल का खात्मा कर दिया।

यही हाल इंसानी जिंदगी का है। आदमी एक उम्दा जिस्म लेकर पैदा होता है। दुनिया के असबाब उसका साथ देते हैं और वह अपने लिए एक कामयाब और शानदार जिंदगी बना लेता है। अब उसके अंदर एक एतमाद पैदा हो जाता है। वह समझता है कि उसका मामला उसके अपने इस्त्रियार में है। इसके बाद किसी दिन या किसी रात में अचानक उसकी मौत आ जाती है। अपने आपको बाइस्त्रियार समझने वाला यकायक अपने को इस हाल में पाता है कि मजबूरी और बेइस्त्रियारी के सिवा उसके पास और कोई सरमाया नहीं। आदमी अगर इस हकीकत को सामने रखे तो वह दुनिया में कभी सरकश न बने, वह कभी किसी के साथ जुम व बेइस्त्रियारी का तरीका इस्त्रियार न करे।

وَاللَّهُ يَدْعُو إِلَى دَارِ السَّلَامِ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۝ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا الْحُسْنَىٰ وَزِيَادَةٌ ۖ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوهَهُمْ قَتَرٌ وَلَا ذِلَّةٌ ۚ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ وَالَّذِينَ كَسَبُوا السَّيِّئَاتِ جَزَاءُ سَيِّئَةٍ نَّجِسَتْ لِجَنَّتِهَا وَتَرَهَّقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ مَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ عَاصِمٍ ۖ كَانِمًا ۚ أَغْشِيَتْ وَجُوهَهُمْ قُطْعَانِ النَّيْلِ ۖ مُظْلِمًا ۖ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝

और अल्लाह सलामती (शांति) के घर की तरफ बुलाता है और वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और उससे अधिक भी। और उनके चेहरों पर न स्याही छाएगी और न जिल्लत। यही जन्नत वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। और जिन्होंने बुराइयां कमाई तो बुराई का बदला उसके बराबर है। और उन पर रुस्वाई छाई हुई होगी। कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न होगा। गोया कि उनके चेहरे अंधेरी रात के टुकड़ों से ढांक दिए गए हैं। यही लोग दोजख वाले हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (25-27)

दुनिया के जहिरी हालात से आदमी धोखा खा जाता है। वह वक्ती चीज को मुस्तकिल चीज समझ लेता है। उसका ख्याल यह हो जाता है कि खुशियों और राहतों की जिंदगी जो वह चाहता है वह उसे इसी मौजूदा दुनिया में हासिल हो सकती है। मगर इंसानी आरजुओं की दुनिया दरअसल आखिरत में बनने वाली है और उसे वही शख्स पाएगा जो खुदा के बताए हुए तरीके के मुताबिक उसे हासिल करने की कोशिश करे।

दुनिया में आदमी बिलफर्ज सब कुछ हासिल कर ले तब भी वह इस पर कादिर नहीं कि अपनी जिंदगी को दुख और गम से पाक कर सके। यहां हर खुशी के साथ कोई अंदेशा लगा हुआ है। यहां की हर कामयाबी बहुत जल्द किसी दुख की नज़ हो जाती है। दुख और रंज से

पारा 11

552

सूरह-10. यूनुस

खाली जिंदगी एक ऐसी अनोखी जिंदगी है जो सिर्फ जन्नत के माहौल में आदमी को हासिल होगी। जो लोग इस राज को पा लें वही वे लोग हैं जो जन्नत का रास्ता इस्त्रियार करेंगे और बिलआखिर खुदा की अबदी जन्नतों में पहुंचेंगे।

राहत और खुशी की जिंदगी जो इंसान को बेहद मरगूब (प्रिय) है वह खुदा के वफादार बंदों को कामिल तौर पर जन्नत में मिलेगी। मगर राहत और खुशी का एक और दर्जा है जो मारुफ राहतों और खुशियों से बहुत बुलन्द है। यह मालिके कायनात का दीदार है जो अहले जन्नत को खुसूसी तौर पर हासिल होगा। जो खुदा राहतों और लज्जतों का खालिक है वह यकीनी तौर पर तमाम राहतों और लज्जतों का सबसे बड़ा खजाना है। हदीस में आया है कि जब जन्नत वाले जन्नत में और दोजख वाले दोजख में दाखिल हो चुके होंगे तो एक पुकारने वाला पुकारेगा। ऐ जन्नत वाले, तुम्हारे लिए खुदा का एक वादा बाकी है जिसे अब वह पूरा करना चाहता है। जन्नत वाले यह सुनकर कहेंगे कि वह क्या है। क्या हमारे पलड़े भारी नहीं कर दिए गए। क्या हमारे चेहरों को रोशन नहीं कर दिया गया। क्या खुदा ने हमें जन्नत में दाखिल नहीं कर दिया और हमें आग से नहीं बचा लिया। इसके बाद उनके ऊपर से हिजाब उठा लिया जाएगा और वे अपने रब को देखने लगेंगे। पस खुदा की कसम कोई नेमत जो खुदा ने उन्हें दी है वह उनके लिए खुदा को देखने से ज्यादा महबूब न होगी और न उससे ज्यादा उनकी आंखों को ठंडी करने वाली होगी। (तफसीर इब्नेकसीर)

आदमी के लिए इससे ज्यादा सख्त हालत और कोई नहीं कि वह एक ऐसी बेवसी से दो चार हो जो अबदी है। वह अपने आपको एक ऐसी नाकामी में पड़ा हुआ पाए जो दुबारा कामयाबी में तब्दील नहीं हो सकती। जो लोग आखिरत में जहन्नम के बाशिदे करार दिए जाएंगे वह इसी हालत से दो चार होंगे। उनके चेहरे शदीद मायूसी की वजह से ऐसे काले हो जाएंगे गोया कि वे तह-ब-तह अंधेरे में डूब गए हैं। आदमी को अगरचे उसकी बुराई का बदला इतना ही दिया जाएगा जितना उसने बुराई की है। मगर अबदी महरूम का एहसास उसके लिए इतना सख्त होगा कि उसका चेहरा तक इसकी वजह से स्याह पड़ जाएगा।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا ثُمَّ نَقُولُ لِلَّذِينَ أَشْرَكُوا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَاءُكُمْ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَاءُهُمْ إِنَّا نَكُنُّمُ إِيَّانَا تَعْبُدُونَ ۖ فَكُنِيَ بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغْفِيلِينَ ۖ هُنَالِكَ تَبْلُو كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ ۚ وَرُدُّوْا إِلَى اللَّهِ مَوْلَاهُمُ الْحَقُّ وَصَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝

और जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे, फिर हम शिर्क करने वालों से कहेंगे कि ठहरो तुम भी और तुम्हारे बनाए हुए शरीक भी। फिर हम उनके दर्मियान तफरीक (विभेद) कर देंगे और उनके शरीक कहेंगे कि तुम हमारी इबादत तो नहीं करते थे। अल्लाह हमारे दर्मियान गवाही के लिए काफी है। हम तुम्हारी इबादत से बिल्कुल बेखबर थे। उस वक्त हर शख्स अपने उस अमल से दो चार होगा जो उसने किया था

और लोग अल्लाह अपने मालिके हकीकी की तरफ लौटाए जाएंगे और जो झूठ उल्टे गढ़े थे वे सब उनसे जाते रहेंगे। (28-30)

शिक का पूरा कारोबार झूठी उम्मीदों पर कायम होता है, वे वाक्यात जो खुदा के किए से हो रहे हैं उन्हें आदमी झूठे माबूदों की तरफ मंसूब कर देता है और इस तरह खुदसाखा तसखुर के तहत उन्हें अपनी अकीदत व परस्तिश का मर्कज बना लेता है, अपने इन माबूदों के ऊपर उसका एतमाद इतना बढ़ता है कि वह समझ लेता है कि आखिरत में भी वे जरूर खुदा के मुकाबले में उसके मददगार बन जाएंगे। और उसे खुदा की पकड़ से बचा लेंगे।

ये सरासर झूठी उम्मीदें हैं। मगर दुनिया की जिंदगी में उनका झूठ होना जाहिर नहीं होता क्योंकि यहां इत्तेहान की वजह से हर चीज पर गैब का पर्दा पड़ा हुआ है। यहां आदमी को मय्य है कि वह वाक्यात को अपने फर्जी माबूदों की तरफ मंसूब करे और इस तरह उनकी माबूदियत पर मुतमइन हो जाए। मगर आखिरत में सारी हकीकतें खुल जाएंगी। वहां मालूम होगा कि इस कायनात में एक खुदा के सिवा किसी को कोई जोर हासिल न था।

मौजूदा दुनिया में आदमी इस खुशफहमी में जी रहा है कि वह अपने बड़ों या अपने माबूदों की मदद से आखिरत के मरहले में कामयाब हो जाएगा। मगर आखिरत में अचानक उस पर खुलेगा कि उसका एतमाद सरासर झूठ था। यहां किसी को सिर्फ वही मिलेगा जो उसने खुद किया था। फर्जी सहारे वहां इस तरह गायब हो जाएंगे जैसे कि उनका कोई वजूद ही न था।

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَتَنْبِلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُدِيرُ الْأَمْرَ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ۝ فَذَلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ الْحَقُّ فَبَآذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلَلُ فَأَنَّى تُصْرَفُونَ ۝ كَذَلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِينَ فَسَقُوا أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ۝

कहो कि कौन तुम्हें आसमान और जमीन से रोजी देता है। या कौन है जो कान पर और आंखों पर इख्तियार रखता है। और कौन बेजान में से जानदार को और जानदार में से बेजान को निकालता है। और कौन मामलात का इतिजाम कर रहा है। वे कहेंगे कि अल्लाह। कहो कि फिर क्या तुम डरते नहीं। पस वही अल्लाह तुम्हारा परवरदिगार (पालनहार) हकीकी है। तौफ़ीक के बाद भटकने के सिवा और क्या है, तुम किधर फिरे जाते हो, इसी तरह तेरे रब की बात सरकशी करने वालों के हक में पूरी हो चुकी है कि वे ईमान न लाएंगे। (31-33)

इंसान को रिज्क की जरूरत है। यह रिज्क इंसान को कैसे मिलता है। कायनात के मज्बूह अमल से। सारी कायनात हददर्जा हमआहंगी (सामंजस्य) के साथ एक खास रुख पर अमल करती है। तब यह मुमकिन होता है कि इंसान के लिए वह रिज्क फराहम हो जिसके बगैर उसका वजूद इस जमीन पर मुमकिन नहीं। खुदाई के मफरूजा शरीक या देवी देवता खुद मुश्कीन के अक्दी के मुताबिक, इंसान के लिए रिज्क फराहम नहीं कर सकते। क्योंकि हर मफरूजा (काल्पनिक) शरीक किसी जुज का माबूद है, और जुज (अंश) का माबूद कभी ऐसे वाक्ये को जूर में नहीं ला सकता जो कुल अज्ज की मुवाफिकत से जूर में आता हो।

इसी तरह मसलन इंसान के अंदर कान और आंख जैसी हैरतअंगेज सलाहियतें हैं। वे भी किसी देवता की दी हुई नहीं हो सकतीं। देवी देवता या तो खुद इन सलाहियतों से महरूम हैं या अगर किसी मफरूजा (काल्पनिक) माबूद के अंदर ये सलाहियतें हों तो वह उनका खालिक नहीं। यहां तक कि खुद उससे ये सलाहियतें वैसे ही छिन जाती हैं जैसे आम इंसानों से छिन जाती हैं। इसी तरह बेजान चीजों में जान डालना और जानदार को बेजान कर देना भी मफरूजा माबूदों के लिए मुमकिन नहीं। न इसका कोई सुबूत है और न कोई पूजने वाला इनके बारे में इस किस्म का अकीदा रखता है। फिर कैसे मुमकिन है कि ये चीजें उन माबूदों से इंसान को मिलें।

कैसी अजीब बात है कि इंसान एक बड़े खुदा को मानता है। इसके बावजूद वह खुदा की तरफ ऐसी बातें मंसूब करता है जो उसकी तमाम आला सिफात को नकार दें। इसकी वजह यह है कि उसे खुदा का डर नहीं। झूठे ख्यालात के जरिए उसने अपने आपको यह तसल्ली दे ली है कि खुदा उससे बाजपुर्स (पूछगछ) करने वाला नहीं। और अगर बाजपुर्स की नौबत आई तो उसकी मदद पर ऐसी हस्तियां हैं जो खुदा के यहां सिफारिश करके उसे बचा लें। डर आदमी को संजीदा बनाता है। जब किसी के दिल से डर निकल जाए तो उसे गैर मुसिफाना (अन्यायपूर्ण) रवैया इख्तियार करने से कोई चीज रोक नहीं सकती। ऐसा आदमी सरकश हो जाता है। और सरकश आदमी कभी सच्चाई का एतराफ नहीं करता।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ قُلْ اللَّهُ يَبْدَأُ الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيدُهُ فَأَنَّى تُؤْفَكُونَ ۝ قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَائِكُمْ مَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ قُلْ اللَّهُ يَهْدِي لِلْحَقِّ أَفَمَنْ يَهْدِي إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُتَّبَعَ أَمْ مَنْ لَا يَهْدِي إِلَّا أَنْ يُلْهِيَ فَمَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُونَ ۝ وَمَا يَنْبَغِي أَكْثَرُهُمْ إِلَّا طَائِفًا إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِي مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ۝ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا يَفْعَلُونَ ۝

कहो, क्या तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई है जो पहली बार पैदा करता हो फिर वह दुबारा भी पैदा करे। कहो, अल्लाह ही पहली बार भी पैदा करता है फिर वही दुबारा भी पैदा करेगा। फिर तुम कहां भटके जाते हो। कहो, क्या तुम्हारे शरीकों में कोई है

जो हक की तरफ रहनुमाई करता हो, कह दो कि अल्लाह ही हक की तरफ रहनुमाई करता है। फिर जो हक की तरफ रहनुमाई करता है वह पैखी किए जाने का मुस्तहिक है या वह जिसे खुद ही रास्ता न मिलता हो बल्कि उसे रास्ता बताया जाए। तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा पैसला करते हो। उनमें से अक्सर सिर्फ गुमान की पैखी कर रहे हैं। और गुमान हक बात में कुछ भी काम नहीं देता। अल्लाह को खूब मालूम है जो कुछ वे करते हैं। (34-36)

अल्लाह के सिवा जिनको खुदाई का मकाम दिया जाता है, चाहे वे इंसान हों या गैर इंसान, कोई भी यह ताकत नहीं रखता कि वह किसी गैर मौजूद को मौजूद कर दे। यह सिर्फ अल्लाह है जिसके लिए तख्नीक का अमल साबित है। और जब तख्नीक का अमल एक बार अल्लाह के लिए साबित है तो इसी से यह भी साबित हो जाता है कि वह इसे दुबारा कर सकता है और करेगा। फिर जब वजूदे अव्वल और वजूदे सानी दोनों का इख्तियार सिर्फ एक अल्लाह को है तो दूसरे शरीकों की तरफ तवज्जोह लगाना बिल्कुल अबस (व्यर्थ) है। इनसे आदमी न अपनी पहली जिंदगी में कुछ पाने वाला है और न दूसरी जिंदगी में।

यही मामला रहनुमाई का है। 'अल्लाह रहनुमाई करता है' यह चीज पैगम्बरों की हिदायत से साबित है। पैगम्बरों ने जिस हिदायत को खुदाई हिदायत कह कर इंसान के सामने पेश किया वह मुसल्लम तौर पर एक हिदायत है। इसके बरअक्स शरीकों का हाल यह है कि वे या तो सिर से इस कबिल नहीं कि वे इंसान को हक और नाहक के बारे में कोई इल्म दें (मसलन बुत) या वे अपनी कमियों और महदूदियों की वजह से खुद रहनुमाई के मोहताज हैं, कुजा कि वे दूसरों को वाकई रहनुमाई फराहम करें (मसलन इंसानी माबूद)। जब सूरतेहाल यह है तो इंसान को सिर्फ एक खुदा की तरफ रुजूध करना चाहिए न कि फर्ज शरीकों की तरफ।

शिरक का कारोबार किसी वाकई इल्म पर कायम नहीं है बल्कि वह मफरूजत और कयासात (अनुमानों) पर कायम है। कुछ हस्तियों के बारे में बेबुनियाद तौर पर यह राय कायम कर ली गई है कि वे खुदाई सिफात के हामिल हैं। हालांकि इतनी बड़ी राय किसी हकीमी इल्म की बुनियाद पर कायम की जा सकती है न कि महज अटकल और कयास की बुनियाद पर।

وَمَا كَانَ هَذَا الْقُرْآنُ أَنْ يُفْتَرَىٰ مِنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ تَصْدِيقُ
الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلُ الْكِتَابِ لَا رَيْبَ فِيهِ مِنَ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَمْ يَقُولُونَ
افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ وَادْعُوا مَنِ اسْتَفَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ
كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۚ بَلْ كَذَّبُوا بِآيَاتِهِمْ يُحِطُوا بِعَلَمِهِ وَلَكِنَّا إِنَّا تَوَلَّيْنَا
كَذَلِكَ كَذَّبَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظَّالِمِينَ ۚ

और यह कुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह के सिवा कोई इसको बना ले। बल्कि यह तस्की (पुष्टि) है उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की जो इसके पहले से मौजूद हैं। और किताब की तफ्सील है, इसमें कोई शक नहीं कि वह खुदावन्द आलम की तरफ से है। क्या लोग कहते हैं कि इस शख्स ने इसको गढ़ लिया है। कहो कि तुम इसकी मानिंद कोई सूरह ले आओ। और अल्लाह के सिवा तुम जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। बल्कि ये लोग उस चीज को झुठला रहे हैं जो उनके इल्म के इहाते में नहीं आई। और जिसकी हकीकत अभी उन पर नहीं खुली। इसी तरह उन लोगों ने भी झुठलाया जो इनसे पहले गुजरे हैं, पस देखो कि जालिमों का अंजाम क्या हुआ। (37-39)

कुरआन अपनी दलील आप है कुरआन का मोमैक (विशिष्ट) अंदाजे कलाम इतिहाई तौर पर नाकबिले तस्कीद (अअनुकरणीय) है, और यही वाकया यह साबित करने के लिए काफी है कि कुरआन एक गैर इंसानी कलाम है। अगर वह किसी इंसान का कलाम होता तो यकीनन दूसरे इंसानों के लिए भी यह मुमकिन होना चाहिए था कि वे अपनी कोशिश से वैसा ही एक कलाम बना लें।

कुरआन के कलामे इलाही होने का दूसरा सुबूत यह है कि वह उन पेशीनगोइयों (भविष्यवाणियों) की तस्दीक है जो उसके बारे में पहले से आसमानी सहीफों में मौजूद हैं। आसमानी तालीमात की हामिल कौमें पहले से एक आखिरी हिदायतनामा की मुंतजिर थीं। कुरआन उसी इंतजार का जवाब बनकर आया है, फिर इसमें शक करने की क्या जरूरत। मजीद यह कि वह 'किताब' की तफ्सील है। यानी वह इलाही तालीमात जो तमाम आसमानी किताबों का खुलासा हैं उन्हीं को वह सही और बेआमेज (विशुद्ध) रूप में पेश करता है। यह एक वाजेह करीना (स्मिंत) है जिससे जहिर होता है कि कुरआन उसी खुदा की तरफ से आया है जिसकी तरफ से पिछली आसमानी किताबें आई थीं।

जब कोई शख्स कहता है कि कुरआन एक इंसानी तस्नीफ (रचना) है तो वह अपने दावे को एक ऐसे मैदान में लाता है जहां उसे जांचना आसान हो। क्योंकि वह अपनी या दूसरों की इंसानी सलाहियों को काम में लाकर कुरआन जैसी एक किताब या उसके जैसी एक सूरह तैयार कर सकता है। और इस तरह अमली तौर पर इस दावे को रद्द कर सकता है कि कुरआन खुदाई जेहन से निकली हुई किताब है। मगर कुरआनी चैलेन्ज के बावजूद किसी का ऐसा न कर सकना आखिरी तौर पर साबित कर रहा है कि कुरआन को इंसानी किताब कहने वालों का दावा दुरुस्त नहीं।

कुरआन की सदाकत के ये दलाइल ऐसे नहीं हैं कि आदमी उन्हें समझ न सके। अस्त यह है कि कुरआन को झुठलाने के नताइज से वे बेखोफ हैं। उन्हें यह डर नहीं कि कुरआन का इंकार करके वे किसी अजाब की पकड़ में आ जाएंगे। उनकी मुखालिफाना रविश की वजह वह गैर संजीदगी है जो उनकी बेखोफी की वजह से पैदा हुई है न कि किसी किस्म का अक्ली और इस्तदलाली (तर्कपूर्ण) इल्मीनान।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُؤْمِنُ بِهِ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَا يُؤْمِنُ بِهِ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِينَ ۚ
وَإِنْ كَذَّبُوكَ فَقُلْ إِنِّي عَلَىٰ وَلَكُم عِمَّا كُنْتُمْ بَرِيكُونَ مَّا أَغْلُوْا وَأَن بَرِيْ
وَمِمَّا تَعْمَلُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَسْتَعِزُّونَ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوا
لَا يَعْقِلُونَ ۝ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَنْظُرُ إِلَيْكَ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُصَىٰ وَلَوْ كَانُوا لَا
يُحْصِرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَلَكِنَّ النَّاسَ أَنفُسُهُمْ يَظْلِمُونَ ۝

और उनमें से वे भी हैं जो कुरआन पर ईमान ले आएंगे और वे भी हैं जो उस पर ईमान नहीं लाएंगे। और तेरा ख मुफ्सिदों (उपद्रवियों) को खूब जानता है। और अगर वे तुम्हें झुठलाते हैं तो कह दो कि मेरा अमल मेरे लिए है और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए। तुम उससे बरी हो जो मैं करता हूं और मैं उससे बरी हूं जो तुम कर रहे हो। और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे जबकि वे समझ से काम न ले रहे हों। और उनमें से कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ देखते हैं तो क्या तुम अंधों को रास्ता दिखाओगे अगरचे वे देख न रहे हों। अल्लाह लोगों पर कुछ भी जुल्म नहीं करता मगर लोग खुद ही अपनी जानों पर जुल्म करते हैं। (40-44)

ईमान न लाने वाले खुदा की नजर में मुफ्सिद (उपद्रवी) हैं। क्योंकि अपनी फितरत को बिगाड़ कर ही किसी के लिए यह मुमकिन होता है कि वह हक को कुबूल करने से बाज रहे। ऐसा आदमी अपने जमीर की आवाज को दबाता है, वह अपने सोचने की सलाहियत को इस्तेमाल नहीं करता, वह खुले खुले दलाइल को झूठे अल्फाज बोल कर नजरअंदाज कर देता है, वह सुनकर नहीं सुनता और समझने के बावजूद समझने की कोशिश नहीं करता, वह हक के मुकाबले में अपने तसस्सुबात (विद्वेष) और अपने मफादात (स्वार्थों) को तरजीह देता है।

बहस व मुनाजिरा करने वाले लोग आखिर वक्त तक अपनी बहस जारी रखते हैं। 'मेरा मामला मेरे साथ है और तुम्हारा मामला तुम्हारे साथ' इस किसम का जुमला कहना उन्हें अपनी शिकस्त नजर आता है, मगर दाओ फताह व शिकस्त की नफिसयात से बुलन्द होकर काम करता है, इसलिए जब वह देखता है कि मुखातब जिद और हठधर्मी पर उतर आया है और मज्जीद बात करने का कोई फायदा नहीं तो वह यह कह कर अलग हो जाता है कि अस्ल फैसला अल्लाह के यहां होना है। खुदा की मीजान (तुला) में जो शख्स जैसा निकलेगा वैसा ही उसका अंजाम होगा।

हक को न मानने वालों में एक तबका वह है जो शुरू से अपना मुँक़िर होना जाहिर कर देता है। मगर ज्यादा होशियार किस्म के लोग यह करते हैं कि बजाहिर वे बातों को इस तरह सुनते हैं गोया कि वे सचमुच समझना चाहते हैं। हालांकि उनके दिल में यह होता है कि इसको

समझना नहीं है। वे दाओ की सदाकत की निशानियों को इस तरह देखते हैं जैसे वे खुले दिल से उनका मुशाहिदा करना चाहते हैं। हालांकि उनका जेहन पहले से यह तै किए हुए होता है कि उसे देखना और मानना नहीं है। ऐसे लोगों की जाहिरी सादगी से दाओ इस खुशगुमानी में पड़ जाता है कि वे कुबूलियते हक के करीब हैं। मगर खुदा की नजर में वे ऐसे लोग हैं जो कान रखते हुए बहरे और आंख रखते हुए अंधे बन जाएं। ऐसे लोगों को कभी खुदा की तरफ से कुछ हक की तैफिक नही मिलती।

खुदा ने इंसान को बेहतरीन सलाहियतें दी हैं। अगर वह इन सलाहियतों को इस्तेमाल करे तो वह कभी गुमराह न हो। मगर इंसान अपने को आजाद पाकर गलतफहमी में पड़ जाता है। वह बेजा सरकशी करने लगता है। ऐसा इसलिए होता है कि उसने खुदा की स्कीम को नहीं समझा, जो चीज उसे आजमाइश के तौर पर दी गई थी उसे उसने अपना हक समझ लिया।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَن لَّمْ يَلْبَثُوا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُونَ بَيْنَهُمْ قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ وَمَا كَانُوا مُهْتَدِينَ ۝ وَإِنَّا لَنَرِيكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ تَتَوَقَّعُكَ وَاللَّيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللَّهُ شَهِيدٌ عَلَىٰ مَا يَفْعَلُونَ ۝ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُولٌ فَإِذَا جَاءَ رُسُلُهُمْ فَوُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

और जिस दिन अल्लाह उन्हें जमा करेगा, गोया कि वे बस दिन की एक घड़ी दुनिया में थे। वे एक दूसरे को पहचानेंगे। बेशक सज़ा घाटे में रहे वे लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वे राहेरास्त (सन्मार्ग) पर न आए। हम तुम्हें उसका कोई हिस्सा दिखा दें जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं या तुम्हें वफात (मौत) दे दें, बहरहाल उन्हें हमारी ही तरफ लौटना है, फिर अल्लाह गवाह है उस पर जो कुछ वे कर रहे हैं। और हर उम्मत के लिए एक रसूल है। फिर जब उनका रसूल आ जाता है तो उनके दर्मियान इंसाफ के साथ फैसला कर दिया जाता है और उन पर कोई जुल्म नहीं होता। (45-47)

आज आखिरत इंसान के सामने नहीं है। आज एक देखने वाले को उसे तसखुर की निगाह से देखना पड़ता है। इसलिए जो शख्स आखिरत के मामले में संजीदा न हो उसे आखिरत बहुत दूर की चीज मालूम होगी। मगर जब आखिरत सबसे बड़ी हकीकत की हैसियत से इंसान के ऊपर टूट पड़ेगी और वह उसे उसकी तमाम संगीनियों के साथ अपनी आंख से देखने लगेगा, उस वक्त वह अपनी मौजूदा सरकशी को भूल जाएगा, उस वक्त उसे दुनिया के वे लम्हात बहुत हकीर (तुच्छ) मालूम होंगे जिनकी वजह से वह गफलत में पड़ गया था और आखिरत के बारे में सोचने पर तैयार न होता था।

आखिरत किसी अजनबी दुनिया में वाकेअ (घटित) नहीं होगी बल्कि हमारी जानी

पहचानी दुनिया में वाकेअ होगी। वहां आदमी अपने आपको उसी माहौल में पाएगा जिस माहौल में उसने इससे पहले हक का इंकार किया था, वह अपने आपको उन्हीं लोगों के दर्मियान देखेगा जिनके बल पर वह सरकशी करता था मगर उस दिन वे लोग उसके कुछ काम न आएंगे। उस वक्त हर बात उसके जेहन में इस तरह ताजा होगी गोया उस पर कोई मुद्दत गुजरी ही नहीं।

दाजी और मदऊ का मामला आसमान के नीचे पेश आने वाले तमाम मामलात में सबसे ज्यादा नाजुक मामला है। दाजी (आख्यानकृती) अगर फित्तावाकअ हक को लेकर उठ्य है तो वह इस दुनिया में खुदा का नुमाईदा है। उसका इकरार खुदा का इकरार है और उसका इंकार खुदा का इंकार है। ऐसा एक वाक्या अंजाम से खाली नहीं हो सकता। हक के दाजी के जुहूर के बाद लाजिमन ऐसा होता है कि उसकी जवान से जारी होने वाले रब्बानी कलाम के सामने तमाम लोग बेदलील होकर रह जाते हैं। यह बातिल के ऊपर हक की पहली फतह है। दूसरी फतह आखिरत में होगी जबकि उसके मुखलिफीन खुदा के इज्म (इच्छा) से उसके मुक़बले में बेजोर होकर रह जाएंगे। पहला वाक्या लाजिमी तौर पर इसी दुनिया में पेश आता है और दूसरा वाक्या भी जुजई (आंशिक) तौर पर मौजूदा दुनिया में जाहिर होता है अगर खुदा उसे मौजूदा दुनिया में जाहिर करना चाहे।

यह मामला हर गिरोह के साथ पेश आना लाजिमी है जबकि वह बराहरेस्त खुदा के सामने खड़ा होने से पहले मौजूदा दुनिया में बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर खुदा के नुमाईदे के सामने खड़ा किया जाए। इस तरह खुदा देखता है कि कौन है जो इस वक्त अपने आपको खुदा के हवाले कर देता है जबकि खुदा अभी गैब में है और कौन है जो ऐसा नहीं करता। पहली किस्म के लोगों के लिए जन्नत है और दूसरी किस्म के लोगों के लिए दोख़।

وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ قُلْ لَا أَمْلِكُ لِنَفْسِي حَتَّىٰ
وَلَا نَفْعًا لِلْمَآسَاءِ اللَّهُ لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ إِذَا جَاءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَخِرُونَ
سَاعَةً ۚ وَلَا يَسْتَقْدِرُونَ ۝ قُلْ إِنِّي نَذَرْتُ لِأَبَائِي بَيْتًا أَنُحَارًا مَّا
ذَٰلِكَ يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ النَّاجِرُونَ ۝ ثُمَّ إِذَا مَآ وَقَعَ أَمْنٌ مِّنْهُ ۖ لَنُفِئَنَّ
تَسْتَعْجِلُونَ ۝ ثُمَّ قِيلَ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا ذُوقُوا عَذَابَ الْخُلْدِ ۖ هَلْ تُجْزَوْنَ
إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُونَ ۝

और वे कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा अगर तुम सच्चे हो। कहो मैं अपने वास्ते भी बुरे और भले का मालिक नहीं, मगर जो अल्लाह चाहे। हर उम्मत के लिए एक वक्त है। जब उनका वक्त आ जाता है तो फिर न वे एक घड़ी पीछे होते और न आगे। कहो कि बताओ, अगर अल्लाह का अजाब तुम पर रात को आ पड़े या दिन को आ जाए

तो मुजरिम लोग इससे पहले क्या कर लेंगे। फिर क्या जब अजाब वाकेअ (घटित) हो चुकेगा तब उस पर यकीन करेंगे। अब कयल हुए और तुम इसी का तक्का करते थे, फिर जालिमों से कहा जाएगा कि अब हमेशा का अजाब चखो। यह उसी का बदला मिल रहा है जो कुछ तुम कमाते थे। (48-52)

इंसान मौजूदा दुनिया में अपने को आजाद पाता है। वह बजाहिर देखता है कि वह जो चाहे करे, कोई उसे पकड़ने वाला नहीं, कोई उसे सजा देने वाला नहीं। यह सूरतेहाल उसे भुलावे में डाल देती है। यहां तक कि खुदा का दाजी जब उसे उसके अमल के अंजाम से डराता है तो वह खुदा के दाजी का मजाक उड़ाने लगता है। वह कहता है हमारी सरकशी पर तुम जिस अजाब की धमकी दे रहे हो वह कब पूरी होगी।

इस किस्म की बातों का सबब नादानी के सिवा और कुछ नहीं। क्योंकि यह पकड़ खुद हक के दाजी की तरफ से आने वाली नहीं है बल्कि खुदा की तरफ से आने वाली है। और खुदा हर आन अपनी दुनिया में बता रहा है कि उसका तरीका जल्दी का तरीका नहीं।

कश्ती में सुराख हो और कोई मल्लाह उसकी परवाह न करते हुए अपनी कश्ती को दरिया में डाल दे तो खुदा का लाजिमी कानून है कि ऐसी कश्ती पानी में डूब जाए। मगर ऐसी कश्ती फौरन पानी में नहीं डूबती बल्कि खुदा की सुन्नत के मुताबिक अपने मुक़रर वक्त पर डूबती है। इस किस्म की मिसालें दुनिया में फैली हुई हैं जो इंसान को खुदाई सुन्नत का तआरुफ करा रही हैं मगर उन्हें देखने के बावजूद वह कहता है कि अगर इन आमांल पर खुदा का अजाब है तो वह अजाब जल्द क्यों नहीं आ जाता। इसकी वजह यह है कि इंसान खुदा की पकड़ के बारे में संजीदा नहीं।

जलजले और तूफ़ान खुदाई वाक़ेयात हैं। ये वाक़ेयात बताते हैं कि जब मामला खुदा और इंसान के दर्मियान हो तो पैसले का इख्तियार तमामतर सिर्फ फरीके अवल (प्रथम पक्ष) को होता है। मगर इंसान इस पहलू पर ग़ौर नहीं करता। वह सिर्फ यह देखता है कि खुदा का कानून फौरन हरकत में नहीं आ रहा है और चूँकि वह फौरन हरकत में नहीं आता इसलिए वह ग़फलत में पड़ा रहता है। मगर जब खुदा का पैसला आएगा तो उस वक्त इंसान अपने को बेबस पाकर सब कुछ मान लेगा। हालांकि उस वक्त का मानना कुछ काम न आएगा। क्योंकि वह अमल का अंजाम पाने का वक्त होगा न कि अमल करने का।

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقُّ مَوْ قُلْ إِنِّي وَرَبِّي إِنَّهُ حَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۚ وَلَوْ
أَنَّ كُلَّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَآ فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۚ وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ
لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ إِلَّا إِنَّا لِلَّهِ
مَآ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِلَّا إِنَّا وَعَدُ اللَّهُ حَقٌّ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝
هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَالْإِلَٰهُ يُرْجَعُونَ ۝

وَيَسْتَنْبِئُونَكَ أَحَقُّ مَوْ قُلْ إِنِّي وَرَبِّي إِنَّهُ حَقٌّ ۖ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۚ وَلَوْ أَنَّ كُلَّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَآ فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهِ ۚ وَأَسْرُوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْقِسْطِ ۚ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝ إِلَّا إِنَّا لِلَّهِ مَآ فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ إِلَّا إِنَّا وَعَدُ اللَّهُ حَقٌّ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ وَالْإِلَٰهُ يُرْجَعُونَ ۝

और वे तुमसे पूछते हैं कि क्या यह बात सच है। कहो कि हां मेरे रब की कसम यह सच है और तुम उसे थका न सकोगे। और अगर हर जालिम के पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है तो वह उसे फिदये (आर्थिक दंड) में दे देना चाहेगा और जब वे अजाब को देखेंगे तो अपने दिल में पछताएंगे। और उनके दर्मियान इंसाफ से फैसला कर दिया जाएगा और उन पर जुल्म न होगा। याद रखो जो कुछ आसमानों और जमीन में है सब अल्लाह का है, याद रखो अल्लाह का वादा सच्चा है मगर अक्सर लोग नहीं जानते। वही जिंदा करता है और वही मारता है और उसी की तरफ तुम लौटाए जाओगे। (53-56)

अरब के लोगों से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि अगर तुमने अपनी इस्लाह न की तो तुम्हें आखिरत का अजाब पकड़ लेगा। इसके जवाब में वे आपकी बात का मजाक उड़ाने लगे। इसका मतलब यह नहीं है कि वे लोग आखिरत के मुकिर थे। वे दरअसल पैगम्बरे इस्लाम की तंबीह (चेतावनी) को बेवजन समझ रहे थे न कि खुद आखिरत को। पैगम्बरे इस्लाम की अज्मत उस वक्त तक मुसल्लम न हुई थी। उस वक्त आपके मुखातबीन आपको एक मामूली इंसान के रूप में देखते थे। उनकी समझ में न आता था कि ऐसे मामूली इंसान की बात न मानने से उन के ऊपर खुदा का अजाब कैसे आ जाएगा। उन्हें आपके खुदा के नुमाइंद होने पर शक था न कि खुद खुदा और आखिरत पर।

यह तकाबुल (तुलना) हकीकतन इकारे आखिरत और इंकारे आखिरत के दर्मियान था। वे माजी के मशहूर बुजुर्गों के साथ अपने को मंसूब करते थे। वे अपने आपको मुसल्लमा (सुस्थापित) शख्सियतों के दीन पर समझते थे। इसके मुकाबले में जब वे सामने के पैगम्बर को देखते तो वह उन्हें एक मामूली इंसान के रूप में नजर आता। उनकी समझ में न आता था कि तारीख की जिन बड़ी-बड़ी शख्सियतों के साथ वे अपने को वाबस्ता किए हुए हैं, उनसे वाबस्तगी उनके लिए बाइसे नजात (मुक्ति का साधन) न हो। बल्कि नजात के लिए यह जरूरी हो कि वे अपने आपको उस शख्स के साथ वाबस्ता करें जिसे बजाहिर कोई तकद्दुस और अज्मत हसिल नहीं। यही वह नपिसयात थी जिसकी वजह से उन्हें यह जुरअत हुई कि वे आपका मजाक उड़ाएं।

आदमी एक हस्सास मख्बूक है। वह तकलीफ को बर्दाश्त नहीं कर सकता। दुनिया में जब तक उसे अजब का सामना नहीं है वह हक का मजाक उड़ाता है। वह उसे बेनियाजी के साथ ठुकरा देता है। मगर जब आखिरत का अजाब सामने होगा तो उस पर इतनी घबराहट तारी होगी कि सब कुछ उसे हकीर (तुच्छ) मालूम होने लगेगा। सारी दुनिया की दौलत और तमाम दुनिया की नेमत भी अगर उसके पास हो तो अजाब के मुकाबले में वह इतनी बेकीमत नजर आएगी कि वह चाहेगा कि सब कुछ देकर सिर्फ इतना हो जाए कि वह इस तकलीफ से नजात पा जाए।

मगर आखिरत का मसला कोई सौदेबाजी का मसला नहीं। वह तो अपने किए का अंजाम भुगतने का मसला है। जिंदगी और मौत के बारे में खुदा का जो मंसूबा है उसका यह लाजिमी जुज है। खुदाई इंसाफ का तक्ज है कि वह हो। और खुदाई कुदरत इस बात की

जमानत है कि वह बहरहाल होकर रहेगा।

उसके पेश आने में जो कुछ देर है वह सिर्फ उस मुकर्ररह वक्त के आने की है जबकि मौजूदा इस्तेहान की मुद्दत खत्म हो और सारे इंसान खुदा के यहां अपने आखिरी अंजाम का फैसला सुनने के लिए हजिर कर दिए जाएं।

يَا أَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمْ مَوْعِظَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَشِفَاءٌ لِمَا فِي الصُّدُورِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ قُلْ يَفْضِلُ اللَّهُ وَبِرَحْمَتِهِ فَبِذَلِكَ فَلْيَفْرَحُوا ۖ هُوَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ ۝ قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْزَلَ اللَّهُ لَكُمْ مِنْ رِزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِنْهُ حَرَامًا وَحَلَالًا قُلْ اللَّهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللَّهِ تَفْتَرُونَ ۝ وَمَا ظَنُّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝

ऐ लोगो, तुम्हारे पास तुम्हारे रब की जानिब से नसीहत आ गई और उसके लिए शिफा (निदान) जो सीनों में होती है और अहले ईमान के लिए हिदायत और रहमत। कहो कि यह अल्लाह के फजल और उसकी रहमत से है। अब चाहिए कि लोग खुश हों, यह उससे बेहतर है जिसे वे जमा कर रहे हैं। कहो, यह बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो रिज्क उतारा था, फिर तुमने उसमें से कुछ को हराम ठहराया और कुछ को हलाल। कहो, क्या अल्लाह ने तुम्हें इसका हुक्म दिया है या तुम अल्लाह पर झूठ लगा रहे हो। और कियामत के दिन के बारे में उन लोगों का क्या ख्याल है जो अल्लाह पर झूठ लगा रहे हैं। केशक अल्लाह लोगों पर बड़ा फजल फरमाने वाला है, मगर अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते। (57-60)

इंसान एक नपिसयाती (मनोवैज्ञानिक) मख्बूक है। नपिसयात के बनने से वह बनता है और नपिसयात के बिगड़ने से वह बिगड़ जाता है। खुदा की किताब की सूरत में जो हिदायत उतरी है वह इंसान के लिए सरासर रहमत है। इसमें इंसान के लिए बेहतरीन नसीहत मौजूद है। मगर इस नसीहत को पाने के लिए जरूरी है कि आदमी ने अपनी रास्तफिक्री न खोई हो। जो शख्स अपनी रास्तफिक्री (सद्इच्छा) की सलाहियत को बिगाड़ ले, उसके लिए खुदा का नसीहतनामा बेअसर रहेगा।

मौजूदा दुनिया की चीजें और उसकी रैनकें आदमी के सामने 'नक्द' होती हैं। आदमी हर आन उनकी लज्जत और खूबी का तजर्बा करता है, इसके मुकाबले में आखिरत की नेमतें सिर्फ 'वादे' की हैसियत रखती हैं। आदमी सिर्फ उनके बारे में सुनता है, वह उनका तजर्बा नहीं करता। इस बिना पर अक्सर लोग दुनिया की नक्द चीजों पर टूट पड़ते हैं। मगर जो शख्स गहराई के साथ सोचेगा वह इस बात पर खुश होगा कि खुदा ने अपनी हिदायत उतार कर उसके

लिए अबदी (चिरस्थायी) नेमतों के हुसूल का दरवाजा खोल दिया है।

अल्लाह ने जो कुछ इंसान को दिया है, चाहे वह जरई (कृषि) पैदावार की सूरत में हो या दूसरी सूरत में, सबका सब रिज्क है। आदमी अगर इन चीजों को खुदा का दिया हुआ समझे और खुदा के बताए हुए तरीके के मुताबिक उनमें तसरूफ़ करे तो उसके अंदर खुदा के शुक्र का जज्बा उभरेगा। मगर शैतान हमेशा इस कोशिश में रहता है कि वह इस निस्बत को बदल दे, ताकि इस 'रिज्क' के इस्तेमाल के वक्त आदमी को खुदा की याद न आए बल्कि दूसरी-दूसरी चीजों की याद आए। कदीम ज़माने में शैतान ने पैदावार में मफ़रूज देवी देवताओं के मरासिम (रिति-रिवाज) मुकर्रर किए ताकि आदमी उन्हें लेते हुए खुदा को याद न करे बल्कि देवी देवताओं को याद करे। मौजूदा ज़माने में यही मक़सद शैतान मादूदी तौजीहात (भौतिक तर्कों) के जरिए हासिल कर रहा है। वह खुदा की तरफ से मिलने वाली चीज को मादूदी अवामिल (भौतिक कारकों) के तहत मिलने वाली चीज बनाकर लोगों को दिखा रहा है ताकि लोग जब इन नेमतों को पाएं तो वे उसे खुदा का रिज्क न समझें बल्कि सिर्फ़ मादूदे का करिश्मा समझें।

وَمَا تَكُونُ فِي شَأْنٍ وَمَا تَتْلُوا مِنْهُ مِنْ قُرْآنٍ وَلَا تَعْمَلُونَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا
كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُودًا إِذْ تُفِيضُونَ فِيهِ وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَبِّكَ مِنْ مِثْقَالٍ
ذَرَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ وَلَا أَصْغَرَ مِنْ ذَلِكَ وَلَا أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتَابٍ
مُبِينٍ ۝ الْآرَاءَ أُولَئِكَ لَاخَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ۝ الَّذِينَ آمَنُوا وَ
كَانُوا يَتَّقُونَ ۝ لَهُمُ الْبُشْرَىٰ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ لَا تَبْدِيلَ
لِكَلِمَاتِ اللَّهِ ذَلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ۝ وَلَا يَحْزَنُكَ قَوْلُهُمْ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلَّهِ
جَمِيعًا هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝

और तुम जिस हाल में भी हो और कुरआन में से जो हिस्सा भी सुना रहे हो और तुम लोग जो काम भी करते हो, हम तुम्हारे ऊपर गवाह रहते हैं जिस वक्त तुम उसमें मशगूल होते हो। और तैरे ख से जर्ग बराबर भी कोई चीज छुपी नहीं, न ज़मीन में और न आसमान में और न इससे छोटी न बड़ी, मगर वह एक वाजेह किताब में है। सुन लो, अल्लाह के दोस्तों के लिए न कोई ख़ौफ़ होगा और न वे ग़मगीन होंगे। ये वे लोग हैं जो ईमान लाए और डरते रहे, उनके लिए खुशख़बरी है दुनिया की ज़िंदगी में भी और आख़िरत में, अल्लाह की बातों में कोई तब्दीली नहीं, यही बड़ी कामयाबी है। और तुम्हें उनकी बात ग़म में न डाले। जोर सब अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला जानने वाला है। (61-65)

दावत (आहवान) इस दुनिया के तमाम कामों में मुश्किलतरीन काम है। दाजी (आहवानकती) अपने पूरे वजूद को दावती अमल में शामिल करता है, इसके बाद ही यह मुमकिन होता है कि वह किसी पैग़ाम का दाजी बन सके। इससे भी ज्यादा सख़्त मरहला वह है जो मुखातबीन (संबोधित वर्ग) की तरफ से पेश आता है।

दाजी जब खुदा के दीन को बेआमेज (विशुद्ध) सूरत में पेश करता है और उसे खुले दलाइल की जवान में सुस्पष्ट कर देता है तो वे तमाम लोग बिफर उठते हैं जो खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) दीन को खुदा का दीन बताकर दीनदार बने हुए हों या दीनी पेशवाई का मक़ाम हासिल किए हुए हों। वे दाजी को ज़ेर करने की कोशिश करते हैं। बेबुनियाद प्रोपेगंडा, साजिशें, यहां तक कि जाहिराना (आक्रामक) कारवाइयां, हर चीज को वे अपने लिए जाइज कर लेते हैं। मौजूदा दुनिया में मिली हुई आजादी उन्हें मौका देती है और वे दाजी के ख़िलाफ़ जो कुछ करना चाहते हैं करते चले जाते हैं। ये सूरतेहाल यहां तक पहुंचती है कि दलील की ताक़त तमामतर एक तरफ़ हो जाती है और भौतिक ताक़त तमामतर दूसरी तरफ़।

यह सूरतेहाल बिलाशुबह बेहद सख़्त है। इसके बाद एक तरफ़ यह होता है कि मुख़ालिफीने हक के हौसले बढ़ते चले जाते हैं। वे अपने को कामयाब समझने लगते हैं। दूसरी तरफ़ दाजी पर भी यह ड़्याल गुजरता है कि क्या खुदा इस मामले में ग़ैर जानिबदार है। क्या वह मुझे हक व बातिल के इस मअरके में ड़ाल कर खुद अलग हो गया है।

मगर ऐसा नहीं है। यह मुमकिन नहीं है कि खुदा हक का साथ न दे। मुख़ालिफीन का बेदलील हो जाना और दलील की कुव्वत का तमामतर दाजी की तरफ़ होना यही इस बात का सबूत है कि खुदा दाजी के साथ है न कि दूसरे गिरोह के साथ। क्योंकि दलील मौजूदा दुनिया में खुदा की नुमाइंदा है। जिसके साथ दलील है उसके साथ गोया खुदा है। हक के मुख़ालिफीन को जाहिरियत का मौज़ सिर्फ़ उस आजादी की वजह से मिल रहा है जो इस्तेहान की ख़ातिर उन्हें दी गई है। इस्तेहानी दुनिया के ख़त्म होते ही यह सूरतेहाल बदल जाएगी। उस वक्त इज्जत व बरतरी उसके लिए होगी जो दलील की बुनियाद पर खड़ा हुआ था। जो लोग दलील से ख़ाली थे वे वहां की दुनिया में रुसवा और नाकाम होकर रह जाएंगे। अल्लाह के सच्चे दाजियों का गिरोह खुदा के दोस्तों का गिरोह है। अल्लाह उन्हें आख़िरत में एक ऐसी आला ज़िंदगी की खुशख़बरी देता है जहां न उन्हें पिछली ज़िंदगी के लिए कोई पछतावा होगा और न अगली ज़िंदगी के लिए कोई अदेश।

الْآرَاءَ لِلَّهِ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَمَا يُتَّبِعُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ
دُونِ اللَّهِ شُرَكَاءَ إِنْ يَتَّبِعُونَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ۝ هُوَ الَّذِي
جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يَسْمَعُونَ ۝

सुनो, जो आसमानों में हैं और जो जमीन में हैं सब अल्लाह ही के हैं। और जो लोग अल्लाह के सिवा शरीकों को पुकारते हैं वे किस चीज की पैरवी कर रहे हैं, वे सिर्फ गुमान की पैरवी कर रहे हैं और वे महज अटकल दौड़ा रहे हैं। वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम सुकून हासिल करो। और दिन को रोशन बनाया। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (66-67)

जमीन व आसमान के पीछे कौन है जो इसको संभाले हुए है और इसको चला रहा है। यह सवाल हर जमाने में इंसान की तलाश का मर्कजी नुक्ता रहा है। मगर इस सवाल का सही जवाब पाना उसी वक्त मुमकिन है जब आदमी मावराए तबीइयात (अलौकिक) दुनिया तक देख सके और इस दुनिया तक देखने वाली आंख किसी को हासिल नहीं। यही वजह है कि हर वह जवाब जो वह बतौर खुद कायम करता है वह महज कयास व गुमान की बुनियाद पर होता है न कि हकीकी इल्म की बुनियाद पर।

इस दुनिया में हकीकी इल्म की बुनियाद पर बोलने वाले सिर्फ वे लोग हैं जिनको पैगम्बर कहा जाता है। ये वे मख्सूस लोग हैं जिनका रब्त आलमे बाला से बराहेरास्त कायम होता है। खुदा खुद उन्हें अपनी तरफ से हकीकत की खबर देता है। इसलिए इस दुनिया में पैगम्बर का इल्म ही वाहिद इल्म है जिस पर यकीनी तौर पर भरोसा किया जा सकता है।

पैगम्बरों के दावे की सदाकत को जांचने के लिए अगरचे हमारे पास कोई बराहेरास्त जरिया नहीं है। ताहम एक बिलवास्ता (परोक्ष) जरिया यकीनी तौर पर मौजूद है। और वह कायनात की आयात (निशानियां) हैं। ये निशानियां पैगम्बरों के बयानकर्दा मअनवी हकाइक की अमली तस्दीक कर रही हैं।

मिसाल के तौर पर हम देखते हैं कि हमारी जमीन पर रात के बाद दिन आता है और दिन के बाद रात आती है। यह गर्दिश एक इतिहाई मोहकम निजाम की वजह से वजूद में आती है जो रियाज्याती (गणितीय) सेहत की हद तक मुजम्म है। मजीद यह कि यह गर्दिश हैतनाक हद तक हमारी जिंदगी के मुवाफिक है। इसके पीछे वाजह तौर पर एक बामक्सद मंसूबा काम करता हुआ नजर आता है। यह सूरतेहाल यकीनी तौर पर एक ऐसे कादिर मुतलक और रहमान व रहीम के वजूद का सुबूत है जिसकी खबर पैगम्बर देते हैं।

जो लोग अपने ख्याल के मुताबिक 'शरीकों' की पैरवी कर रहे हैं, वे शुरका (साझीदार) चाहे कदीम इलाहियाती (पुरातन दैवीय) शुरका हों या जदीद माददी (आधुनिक भौतिक) शुरका वे किसी वाकई हकीकत की पैरवी नहीं कर रहे हैं। बल्कि सिर्फ अपने कयास व गुमान की पैरवी कर रहे हैं। पैगम्बरों के जरिए जाहिर होने वाली हकीकत की तस्दीक सारी कायनात कर रही है मगर 'मुशिकीन' जिस चीज के दावेदार हैं उसकी तस्दीक करने वाला कोई नहीं।

قَالُوا اتَّخَذَ اللَّهُ وَلَدًا سُبْحَنَهُ هُوَ الْغَنِيُّ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ اِنْ عِنْدَ كُوفٍ سُلْطٰنٍ يَهْدٰۤى اَتَقُولُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝ قُلْ اِنَّ الدِّينَ

يَقْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ۝ مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ۝ ثُمَّ نُنْزِلُهُمْ الْعَذَابَ الشَّدِيدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝

कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। वह पाक है, बेनियाज (निस्पृह) है। उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है। तुम्हारे पास इसकी कोई दलील नहीं। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात गढ़ते हो जिसका तुम इल्म नहीं रखते। कहो, जो लोग अल्लाह पर झूठ बांधते हैं वे फलाह नहीं पाएंगे। उनके लिए बस दुनिया में थोड़ा फायदा उठा लेना है। फिर हमारी ही तरफ उनका लौटना है। फिर उनको हम इस इंकार के बदले सज़ा अजाब का मजा चखाएंगे। (68-70)

खुदा के लिए बेटा बेटियां मानना खुदा को इंसान के ऊपर कयास करना है। इंसान कमियों और महदूदियतों (सीमितताओं) का शिकार है, इसलिए उसे औलाद की जरूरत है ताकि उनके जरिए वह अपनी कमियों और महदूदियतों की तलाफी करे मगर खुदा के मामले में यह कयास बिल्कुल बेबुनियाद है।

मख्सूस का निजाम खुद ही इस किस्म के खलिक की तरदीद (खंडन) है। मख्सूस का आलमी निजाम जिस खुदा की शहादत दे रहा है वह यकीनी तौर पर एक ऐसा खुदा है जो अपनी जात में आखिरी हद तक कामिल (पूर्ण) है। वह हर किस्म के ऐवों और कमियों से पाक है। खुदा अगर अपनी जात में कामिल न होता, अगर वह ऐवों और कमियों वाला खुदा होता तो कभी वह मौजूदा कायनात जैसी कायनात को नहीं बना सकता था और न उसे इस तरह चला सकता था जिस तरह वह इतिहाई मेयारी सूरत में चल रही है।

इसका मतलब यह है कि पैगम्बर जिस खुदाए वाहिद का तसब्वुर पेश कर रहा है उसका वजूद तो जमीन व आसमान की तमाम निशानियों से साबित है। मगर मुशिकीन ने खुदा का जो तसब्वुर बना रखा है, उसका कोई सुबूत इस कायनात में मौजूद नहीं। अब जाहिर है कि बेसुबूत खुदा को मानना खुद ही इस बात का सुबूत है कि ऐसे लोग कभी कामयाब नहीं हो सकते। क्योंकि जो खुदा सिरे से मौजूद न हो वह कैसे किसी की मदद पर आएगा और कैसे किसी को बामुगद करेगा। जो खुदा हकीकी तौर पर मौजूद है, मुशिकीन उसे मानते नहीं, और जिस खुदा को मानते हैं उसका कहीं वजूद नहीं। ऐसी हालत में मुशिकीन मौजूदा कायनात में क्योंकर कामयाब हो सकते हैं। उनके लिए जो वाहिद अंजाम मुकददर है वह सिर्फ यह कि बिलआखिर वे बेवस और बेसहारा होकर रह जाएं और हमेशा के लिए जिल्लत व नाकामी में पड़े रहें।

मौजूदा दुनिया में इंकार या शिर्क का रवैया इख्तियार करने से किसी का कुछ बिगड़ता नहीं। इससे आदमी ग़लतफहमी में पड़ जाता है। मगर यह सूरतेहाल सिर्फ इस्तेहान की मोहलत की बिना पर है। मौजूदा दुनिया में इंसान को इस्तेहान की वजह से अमल की आजादी दी गई है। जैसे ही इस्तेहान की मुद्दत खत्म होगी मौजूदा सूरतेहाल भी खत्म हो जाएगी। उस

वक्त आदमी देखेगा कि उसके पास उन चीजों में से कोई चीज नहीं है जिसका वह अपने आपको मालिक समझ कर सरकार बना हुआ था।

हदीस में आया है कि अल्लाह ने अकल से कहा : 'ऐ अकल, इस कायनात में मैंने तुझसे अफज़ल, तुझसे हसीन और तुझसे बेहतर मख़्कूफ़ पैदा नहीं की।' इंसान को ऐसी अजीम नेमत देने का यह तमज़ है कि उसकी जिम्मेदारी भी अजीम हो। यही वजह है कि खुदा के नज़दीक सच्चाई का इंकार सबसे बड़ा जुर्म है। सच्चाई को जब दलील से साबित कर दिया जाए तो आदमी के ऊपर लाजिम हो जाता है कि वह उसे माने। अकली तौर पर साबितशुदा हो जाने के बाद अगर वह सच्चाई का इंकार करता है तो वह नाकाबिले माफी जुर्म कर रहा है। खुदा ने जब इंसान को ऐसी अकल दी जिससे वह हक़ का हक़ होना और बातिल का बातिल होना जान सके तो इसके बाद क्या चीज होगी जो खुदा के यहां उसके लिए उज बन सके।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ يٰقَوْمِ إِن كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِي وَتَذَكِّرُنِي بِآيَاتِ اللَّهِ فَعَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجِئُكُمْ وَشُرَكَاءِكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُونِ ۖ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاءَ لَكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجِرِيَ إِلَّا عَلَى اللَّهِ وَامْرَأَتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۖ فَكَذَّبُوهُ فَجَبَّيْنَاهُ وَمَنْ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنَاهُمْ خَلِيفَ وَأَعْرَفْنَا الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِينَ ۝

और उनको नूह का हाल सुनाओ। जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि ऐ मेरी कौम, अगर मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों से नसीहत करना तुम पर गिरा (भार) हो गया है तो मैंने अल्लाह पर भरोसा किया। तुम अपना मुतफिक़ा फैसला कर लो और अपने शरीकों को भी साथ ले लो, तुम्हें अपने फैसले में कोई शुबह बाकी न रहे। फिर तुम लोग मेरे साथ जो कुछ करना चाहते हो कर गुजरो और मुझको मोहलत न दो। अगर तुम एराज (उपेक्षा) करोगे तो मैंने तुमसे कोई मजदूरी नहीं मांगी है। मेरी मजदूरी तो अल्लाह के जिम्मे है। और मुझको हुक्म दिया गया है कि मैं फरमांबरदारों में से हूँ। फिर उन्होंने उसे झुठला दिया तो हमने नूह को और जो लोग उसके साथ कश्ती में थे नजात दी और उन्हें जानशीन (उत्तराधिकारी) बनाया। और उन लोगों को गर्क कर दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। देखो कि क्या अंजाम हुआ उनका जिन्हें डराया गया था। (71-73)

हज़रत नूह कदीमतरीन ज़माने के रसूल हैं। वह जब तक ख़मोश थे तब तक उनकी इज्जत करती रही। मगर जब आप हक़ के दाजी बनकर खड़े हुए और लोगों को बताने लगे कि ऐसा

करो और वैसा न करो तो वह कौम की नज़र में एक नापसंदीदा शख्स बन गए। यहां तक कि कौम ने एलान कर दिया कि तुम अपनी तब्तीश व नसीहत से बाज़ आओ वरना हम तुमको अपनी जमीन में नहीं रहने देंगे।

हज़रत नूह ने कहा कि तुम लोग मेरे मामले को एक इंसान का मामला समझते हो, इसलिए ऐसा कह रहे हो। मगर यह मामला खुदा का मामला है। मुझसे लड़ने के लिए तुम्हें खुदा से लड़ना पड़ेगा। तुमको अगर यकीन न हो तो तुम इस तरह तजर्बा कर सकते हो कि अपने साथियों और शरीकों को मिलाकर मेरे खिलाफ कोई मुतफिक़ा मंसूबा बनाओ और अपनी तमाम ताकत के साथ उसकी तामील कर गुजरो। तुम देखोगे कि मेरे मुक़ाबले में तुम्हारा हर मंसूबा नाकाम है। मौजूदा दुनिया में हक़ के दाजी की सदाकत (सच्चाई) को जांचने का मेयार यह है कि वह हर हाल में अपना काम पूरा करके रहता है। कोई भी उसे जेर (परास्त) करने में कामयाब नहीं होता।

जो शख्स खुदा की तरफ से हक़ की दावत लेकर उठे वह हमेशा निशानी (दलील) के जेर पर उठता है। दलील चूँकि एक ज़ेहनी चीज है इसलिए ज़ाहिरपसंद इंसान उसकी अजमत को समझ नहीं पाता। वह ज़ेहनी तौर पर लाजवाब होने के बावजूद उसके आगे झुकने से इंकार कर देता है।

हक़ के दाजी को जिन आदाबे दावत का लाजिमी तौर पर लिहाज़ करना है उनमें से एक यह है कि दाजी अपने मदऊ से किसी भी किस्म का मआशी और माद्दी (सांसारिक) मुतालबा न करे। चाहे इस एकतरफ़ा दस्तबदारी की वजह से उसे कितना ही नुकसान उठाना पड़े। ऐसा करना इसलिए जरूरी है कि दोनों के दर्मियान आखिरी वक्त तक दाजी और मदऊ का तअल्लुक बाकी रहे वह किसी भी हाल में कैसी हरीफ और माद्दी रकीब (प्रतिपक्षी) का तअल्लुक न बनने पाए।

हज़रत नूह ने जब इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) की हद तक हक़ का पैगाम पहुंचा दिया, फिर भी उनकी कौम सरकारशी पर कायम रही तो सरकारों को सैलाब में गर्क करके जमीन उनसे ख़ाली करा ली गई और मोमिनीने नूह को मौक़ा दिया गया कि वे जमीन के वारिस बनकर उस पर आबाद हों। इसी को कुरआन की इस्तिलाह में 'ख़िलाफ़त' कहा जाता है। सैलाब से पहले कौम नूह जमीन की ख़लीफ़ा बनी हुई थी, सैलाब के बाद मोमिनीने नूह जमीन के ख़लीफ़ा बने।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِ رُسُلًا إِلَىٰ قَوْمِهِمْ فَجَاءَهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَمَا كَانُوا لِيُؤْمِنُوا بِهَا كَذَّبُوا بِهَا مِنْ قَبْلُ كَذَلِكَ نَطْبَعُ عَلَىٰ قُلُوبِ الْمُعْتَدِينَ ۝

फिर हमने नूह के बाद कितने रसूल भेजे। वे उनके पास खुली खुली दलीलें लेकर आए, मगर वे उस पर ईमान लाने वाले न बने जिसे पहले झुठला चुके थे। इसी तरह हम हद से निकल जाने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं। (74)

इस आयत में 'हद से गुजर जाने वाला' उन लोगों को कहा गया है जिनका हाल यह होता

सूरह-10. यूनुस

569

पारा 11

है कि एक बार अगर वे हक का इंकार कर दें तो इसके बाद वे उसे अपनी साख का मसला बना लेते हैं और फिर उसे मुसलसल नजरअंदाज करते रहते हैं ताकि लोगों की नजर में उनका इल्मे दीन और उनका बरसरे हक होना मुशतबह (संदिग्ध) न होने पाए।

जो लोग इस किस्म का रवैया इस्तिआर करें उन्हें दुनिया में यह सजा मिलती है कि उनके दिलों पर मुहर लगा दी जाती है। यानी खुदा के कानून के तहत उनकी नफिसयात धीरे-धीरे ऐसी बन जाती हैं कि बिलआखिर हक के मामले में उनका शिद्दते एहसास बाकी नहीं रहता। इब्तिदा में उनके अंदर जो थोड़ी सी हस्सासियत जिंदा थी वह भी बिलआखिर मुर्दा होकर रह जाती है। वे इस कबिल नहीं रहते कि हक और नाहक के मामले में तड़पें और नाहक को छोड़कर हक को कुबूल कर लें। हजरत नूह और उनके बाद आने वाले बेशतर रसूलों की तारीख इसकी तस्दीक करती है।

अल्लाह की तरफ से जब भी कोई हक का दावा आता है तो वह इस हाल में आता है कि उसके गिर्द किसी किस्म की जाहिरी अज्मत नहीं होती। उसके पास जो वाहिद चीज होती है वह सिर्फ दलील है। जो लोग दलील की जवान में हक को मानें वही हक के दावा को मानते हैं। जिन लोगों का हाल यह हो कि दलील की जवान उन्हें मुतअस्सिर न कर सके वे हक के दावा को पहचानने से भी महरूम रहते हैं और उसका साथ देने से भी।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمُ مُوسَىٰ وَهَارُونَ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ بِآيَاتِنَا ۚ فَاسْتَكْبَرُوا
وَكَانُوا قَوْمًا فَجُورِينَ ۝ فَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا إِنَّ هَذَا السَّحَرُ مَبِينٌ ۝
قَالَ مُوسَىٰ أَتَقُولُونَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُ ۚ كُمْ اسْحَرُوا هَٰذَا ۚ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُونَ ۝
قَالُوا اجْعَلْنَا بِلِقَائِكَ عَمَلًا وَجَدْنَا عَلَيْكَ آيَاتِنَا وَتَكُونُ لَكُمُ الْكِتَابُ بِمَا فِي الْأَرْضِ
وَمَا نَحْنُ لَكُمُ بِمُؤْمِنِينَ ۝

फिर हमने उनके बाद मूसा और हारून को फिरऔन और उसके सरदारों के पास अपनी निशानियां देकर भेजा, मगर उन्होंने घमंड किया और वे मुजरिम लोग थे। फिर जब उनके पास हमारी तरफ से सच्ची बात पहुंची तो उन्होंने कहा, यह तो खुला हुआ जादू है। मूसा ने कहा कि क्या तुम हक को जादू कहते हो जबकि वह तुम्हारे पास आ चुका है। क्या यह जादू है, हालांकि जादू वाले कभी फलाह नहीं पाते। उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि हमें उस रास्ते से फेर दो जिस पर हमने अपने बाप दादा को पाया है, और इस मुल्क में तुम दोनों की बड़ाई कायम हो जाए, और हम कभी तुम दोनों की बात मानने वाले नहीं हैं। (75-78)

फिरऔन और उसकी कौम के सरदारों ने अपनी मुजरिमाना जेहनियत की बिना पर मूसा और हारून की बात नहीं मानी। वे चीजों को दलील के मेयार से देखने के बजाए जाह व इक्तेदार के मेयार से देखते थे। इस खुदसाख्ता मेयार के नाम पर उन्होंने अपने को ऊंचा और मूसा

पारा 11

570

सूरह-10. यूनुस

व हारून को नीचा समझ लिया। उनकी यह नफिसयात उनके लिए उस हक को कुबूल करने में रुकावट बन गई जो उनके नजदीक एक छोटा आदमी उनके सामने पेश कर रहा था।

हजरत मूसा की इस्तदलाल (तर्क) की जवान जब फिरऔन की समझ में नहीं आई तो आप ने असा (डंडे का सांप बनना) और यदेबेजा (हाथ का चमकना) के मोजिजात दिखाए। इन मोजिजात का तोड़ फिरऔन के पास न था। चुनांचे उसने कहा कि यह जादू है। इस तरह फिरऔन ने हजरत मूसा के मुकाबले में अपनी शिकस्त को एक झूठी तौजीह में छुपाने की कोशिश की। उसने लोगों को यह तास्सुर दिया कि मूसा का मामला हक का मामला नहीं है बल्कि जादू का मामला है, यह सही है कि जादू और मोजिजे में कुछ जाहिरी मुशाबिहत होती है। मगर बहुत जल्द मालूम हो जाता है कि जादू महज शोअबदा और करिश्मा था। इसके मुकाबले में मोजिजे को मुस्तकिल कामयाबी हासिल होती है। जादू बिलआखिर जादू साबित होता है और मोजिजा बिलआखिर मोजिजा।

इस मौके पर फिरऔन ने लोगों को हजरत मूसा की दावत से फेरने के लिए दो और बातें कहीं। एक यह कि मूसा हमें हमारे आबाई दीन से बरगश्ता करना चाहते हैं। फिरऔन को चाहिए था कि वह हजरत मूसा के पैगाम को हक और नाहक की इस्तिलाह में समझने की कोशिश करे। मगर उसने उसे आबाई और गैर आबाई मेयार से जांचा। इसकी वजह यह थी कि हक और नाहक के मेयार से देखने में अपने आपको गलत मानना पड़ता। जबकि आबाई और गैर आबाई की तक्सीम में अपनी रविश पर बदस्तूर मौजूद रहने का जवाज मिल रहा था।

फिरऔन ने दूसरी बात यह कही कि 'मूसा और हारून इस मुल्क में अपनी किवरियाई (प्रभुत्व) कायम करना चाहते हैं।' यह भी अवाम को भड़काने के लिए महज एक सियासी शोशा था, क्योंकि हजरत मूसा ने तो अब्बल मरहले में फिरऔन के सामने यह बात रख दी थी कि उनका मक्सद यह है कि वह फिरऔन को खुदा का पैगाम पहुंचाएं और इसके बाद बनी इस्राईल के साथ मिस्र से निकल कर सहारा सीना में चले जाएं। ऐसी हालत में यह इल्जाम सरासर ख़िलाफेवाक्या था कि वह मिस्र की हुकूमत पर कब्जा करने का मंस्बा बना रहे हैं।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُونِي بِكُلِّ سِحْرِ عَلَيَّ ۝ فَلَمَّا جَاءَ السَّحَرَةُ قَالُوا لَهُمْ مُوسَىٰ
الْقُوا مَا أَنْتُمْ مُقْلُونَ ۝ فَلَمَّا الْقُوا قَالَ مُوسَىٰ مَا جِئْتُمْ بِهِ السَّحَرُ إِنَّ
اللَّهَ سَيُبْطِلُهُ إِنَّ اللَّهَ لَا يُضِلُّ عَمَلَ الْفَاسِقِينَ ۝ وَيُحَقِّقُ اللَّهُ الْحَقَّ بِكُلِّ شَيْءٍ
وَلَوْ كَرِهَ الْغَافِلُونَ ۝

और फिरऔन ने कहा कि तमाम माहिर जादूगरों को मेरे पास ले आओ। जब जादूगर आए तो मूसा ने उनसे कहा कि जो कुछ तुम्हें डालना है डालो। फिर जब जादूगरों ने डाला तो मूसा ने कहा कि जो कुछ तुम लाए हो वह जादू है। बेशक अल्लाह इसको बातिल (विनष्ट) कर देगा, अल्लाह यकीनन मुफ़्फिदों (उपद्रवियों) के काम को सुधरने नहीं देता। और अल्लाह अपने हुक्म से हक को हक कर दिखाता है चाहे मुजरिमों को

वह कितना ही नागवार हो। (79-82)

फिरऔन का माहिर जादूगरों को बुलाना इसलिए न था कि वह समझता था कि जादूगरों के जरिए वह हज़रत मूसा को जे कर लेगा। यह किसी अक्सी फैसले से ज़्यादा फिरऔन की उस बड़ी हुई ख़्वाहिश का नतीजा था कि वह हज़रत मूसा को न माने। ख़ुदा के पैग़म्बर को जादूगरों के जरिए ग़लत साबित करने का मंसूबा एक ऐसा मंसूबा था जिसका नाकाम होना पहले से मालूम था। मगर आदमी जब किसी हकीकत को न मानना चाहे तो उसकी यह ख़्वाहिश उसे यहां तक ले जाती है कि वह अहमकाना तदबीरों से उसका मुक़ाबला करने की नाकाम कोशिश करता है। वह सैलाब के मुकाबले में तिनकों का बांध बांधता है हालांकि वह ख़ुद जान रहा होता है कि सैलाब के मुकाबले में तिनकों की कोई हकीकत नहीं।

चुनांचे वही हुआ जो होना था। जादूगरों ने मैदान में रस्सियां और लकड़ियां फेंकीं जो देखने वालों को रेंगते हुए सांप की सूरत में दिखाई दीं। इसके बाद हज़रत मूसा ने अपना असा (डंडा) डाला तो वह बहुत बड़ा सांप बनकर मैदान में दौड़ने लगा। हज़रत मूसा का यह 'सांप' महज सांप न था, वह दरअसल ख़ुदा की एक ताकत थी जो इसलिए जाहिर हुई थी कि हक को हक और बातिल को बातिल साबित कर दे। चुनांचे उसके सामने आते ही जादूगरों की रस्सी, रस्सी रह गई और उनकी लकड़ी लकड़ी।

यह ख़ुद अपने मुंतख़ब किए हुए मैदान में फिरऔन की शिकस्त थी। मगर अब भी फिरऔन ने शिकस्त न मानी। अब उसने हज़रत मूसा की तरदीद (रद्द) के लिए कुछ और अल्फ़ाज़ तलाश कर लिए जिस तरह उसे पहले मरहले में आप की तरदीद के लिए कुछ अल्फ़ाज़ मिल गए थे।

فَمَا مِنْ لَّيْلَةٍ إِلَّا دُرِّيَتْ مِنْ قَوْمِهِ عَلَى خَوْفٍ مِنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِمْ
أَنْ يَفْتِنَهُمْ وَإِنْ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ وَإِنَّهُ لَكِنَّ الْمُسْرِفِينَ ۝
قَالَ مُوسَى يَقَوْمِ إِنْ كُنْتُمْ آمَنْتُمْ بِاللَّهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ مُسْلِمِينَ ۝
فَقَالُوا عَلَى اللَّهِ تَوَكَّلْنَا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ وَنَجِّنَا
بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ۝

फिर मूसा को उसकी कौम में से चन्द नौजवानों के सिवा किसी ने न माना, फिरऔन के डर से और ख़ुद अपनी कौम के बड़े लोगों के डर से कि कहीं वे उन्हें किसी फितने में न डाल दे, बेशक फिरऔन जमीन में ग़लबा (संप्रभुत्व) रखता था और वह उन लोगों में से था जो हद से गुजर जाते हैं। और मूसा ने कहा ऐ मेरी कौम, अगर तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम वाकई फरमांबरदार हो। उन्होंने कहा, हमने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे रब, हमें जालिम लोगों के लिए फितना

न बना। और अपनी रहमत से हमें मुंकिर लोगों से नजात दे। (83-86)

नए फ़िक्र (विचारधारा) को कुबूल करना हमेशा इस कीमत पर होता है कि आदमी अपने मुआशिरों में नए-नए मसाइल से दो चार हो जाए। यही वजह है कि ज़्यादा उम्र के लोग अक्सर किसी नए फ़िक्र को कुबूल करने में मोहतात (संकोची) होते हैं। मुख़लिफ़ वजहों से ज़्यादा उम्र के लोगों पर मस्लेहत का ग़लबा हो जाता है। वह नए फ़िक्र की सेहत को मानने के बावजूद आगे बढ़कर उसका साथ नहीं दे पाते।

मगर नौजवान तबका आम तौर पर इस किस्म की मस्लेहतों से ख़ाली होता है। चुनांचे हमेशा तारीख़ में ऐसा हुआ है कि किसी नई और इंकिलाबी दावत को कुबूल करने में वही लोग ज़्यादा आगे बढ़े जो अभी ज़्यादा उम्र को नहीं पहुंचे थे। यही सूरतेहाल हज़रत मूसा के साथ पेश आई।

हज़रत मूसा का साथ देने वाले नौजवानों को एक तरफ़ फिरऔन का ख़तरा था। दूसरी तरफ़ ख़ुद अपनी कौम के बड़ों की तरफ़ से उन्हें हैसलाअफ़जाई नहीं मिली। ये बड़े अगरचे हज़रत मूसा की नुबुव्वत को मानते थे। मगर अपनी मस्लेहतअंदेशी (स्वार्थ-भाव) की बिना पर वे नहीं चाहते थे कि उनके बेटे बेटियां पुरजोश तौर पर हज़रत मूसा का साथ दें और इसके नतीजे में वे फिरऔन के जुम का शिकार बनें।

मगर इस किस्म की सूरतेहाल का तक्ज़ यह नहीं होता कि आदमी मुख़लिफ़ीने हक के डर से ख़ामोश होकर बैठ जाए। उसे चाहिए कि वह इंसानी मुख़लिफ़ियों के मुकाबले में ख़ुदाई नुसरतों पर नज़र रखे, वह ख़ुदा के भरोसे पर उस हक का साथ देने के लिए उठ खड़ा हो जिसका साथ देने के लिए जाती तौर पर वह अपने आपको आजिज पा रहा था।

وَأَوْحَيْنَا إِلَىٰ مُوسَىٰ وَأَخِيهِ أَنْ تَبَوَّأْ لِقَوْمِكَ أُبُورًا وَاجْعَلُوا بُيُوتَكُمْ
قِبْلَةً وَأَقِيمُوا الصَّلَاةَ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ۝

और हमने मूसा और उसके भाई की तरफ़ 'वही' (प्रकाशना) की कि अपनी कौम के लिए मिस्र में कुछ घर मुक़र्र कर लो और अपने इन घरों को क़िबला बनाओ और नमाज़ कायम करो। और अहले ईमान को ख़ुशख़बरी दे दो। (87)

क़िबले के मअना अरबी ज़बान में मरजअ (आकर्षण केन्द्र) या मक़ज तवज्जोह के हैं। यहां घरों को क़िबला बनाने से मुराद यह है कि बनी इस्राईल की बस्तियों में कुछ घरों या उन घरों के कुछ मुनासिब हिस्सों को इस मक्सद के लिए मख़सूस कर दिया जाए कि वे हज़रत मूसा की दीनी ज़द्दोज़हद के लिए बतौर मक़ज के काम दें। यहां तंजीमी इज्तिमाआत हों, बाहमी मशिवरे हों। दावती अमल की ख़ामोश मंसूबाबंदी की जाए।

हज़रत मूसा की तौहीद और आख़िरत की बातें मिस्र के बादशाह फिरऔन को सख़्त नागवार थीं। उसने उनके ऊपर निहायत सख़्त किस्म की पाबंदियां आयद कर दीं। यहां तक कि खुले तौर पर दीनी सरगर्मियां जारी रखना उनके लिए सख़्त दुश्वार हो गया। उस वक़्त

हुकूम हुआ कि फिरऔन से टकराने के बजाए यह करो कि अपने काम को करीबी दायरे में समेट लो। अपनी बस्तियों में छोटे-छोटे दावती और तंजीमी मर्कज बनाकर महदूद दायरे में खामोशी के साथ अपना काम जारी रखो।

इन हालात में उन्हें जो दूसरा हुकूम दिया गया वह नमाज की इकामत था। यानी अल्लाह से तअल्लुक जोड़ने और उससे मदद मांगने के लिए नमाजों का एहतिमाम, इफिरादी तौर पर भी और इज्तिमाई तौर पर भी। नमाज दरअसल खुदा से करीब होकर खुदा से मदद मांगने की एक सूरत है। नमाज में मशगूल होकर बंदा अपने आपको इज्ज (विनय) और तवाजोअ (विनम्रता) के मक़म पर लाता है और इज्ज और तवाजोअ ही वह मक़म है जहां बंदा और खुदा की मुलाकात होती है। बंदे के लिए अपने रब से मिलने का दूसरा कोई मक़म नहीं।

यह जो प्रोग्राम बताया गया इसी की तकमील में उनके लिए फलाह और नजात का राज छुपा हुआ था। यह हुकूम गोया इस बात की खुशखबरी थी कि खुदा उन्हें उस हालत से निकालने वाला है जिसमें उनके दुश्मनों ने उन्हें मुब्तिला कर दिया है।

وَقَالَ مُوسَى رَبَّنَا إِنَّكَ آتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَكَ أَزْوَاجَهُ وَأَمْوَالَهُ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا لِيُخْشَعُوا عَن سَيِّئِكَ رَبَّنَا اطْمِسْ عَلَى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلَى قُلُوبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوا حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ قَالَ قَدْ أُجِيبْتُ دَعْوَتَكُمْ فَاستَقْبِلُوا وَلَا تَتَّبِعَنَّ سَبِيلَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝

और मूसा ने कहा, ऐ हमारे रब, तूने फिरऔन को और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िंदगी में रैनक और माल दिया है। ऐ हमारे रब, इसलिए कि वे तेरी राह से लोगों को भटकाएं। ऐ हमारे रब, उनके माल को ग़ारत कर दे और उनके दिलों को सख़्त कर दे कि वे ईमान न लाएं यहां तक कि दर्दनाक अजाब को देख लें। फरमाया, तुम दोनों की दुआ कुबूल की गई। अब तुम दोनों जमे रहो और उन लोगों की राह की पैरवी न करो जो इल्म नहीं रखते। (88-89)

जो लोग आखिरत की फिक्र करते हैं वे आम तौर पर दुनियावी साजोसामान जमा करने में उन लोगों से पीछे रह जाते हैं जो आखिरत से बेफिक्र होकर दुनिया हासिल करने में लगे हुए हैं। दुनियावी कमी आखिरत की तरफ ध्यान लगाने की कीमत है, और दुनियावी ज्यादाती आखिरत से ग़ाफ़िल होने की कीमत।

मजिद यह कि जिसके पास दुनिया की रैनक और सामान ज्यादा जमा हो जाएं वह बड़ाई के एहसास में मुब्तिला हो जाता है। नतीजा यह होता है कि ऐसे लोग अपने अंदर यह सलाहियत खो देते हैं कि किसी दूसरे की जवान से जारी होने वाले हक को पहचानें और उसके आगे झुक जाएं। अपने वसाइल (संसाधनों) को अगर वे खुदा का अतिव्या (देन) समझते तो

उसे हक की तार्ईद में इस्तेमाल करते, मगर वे उसे अपना जाती कमाल समझते हैं इसलिए वे उसे सिर्फ इस मक़सद के लिए इस्तेमाल करते हैं कि हक को दबाएं और इस तरह माहौल के अंदर अपनी बरतरी कायम रखें।

‘ताकि वे तेरी राह से भटकाएं’ का मतलब यह है कि उन्होंने अल्लाह के दिए हुए माल व असबाब को सिर्फ इसलिए इस्तेमाल किया कि उसके जरिए से खुदा के बंदों को खुदा से दूर करें, उन्होंने उसे हक की खिदमत में लगाने के बजाए बातिल की खिदमत में लगाया। यहां शिद्दते बयान के खातिर कलाम का उस्तूब (शैली) बदल गया है।

हजरत मूसा ने फिरऔन और उसके साथियों के सामने सच्चे दीन की दावत पेश की और अपनी आला सलाहियतों और खुदा की नुसरतों के जरिए उसे इतमामे हुज्जत की हद तक वाजिह कर दिया, इसके बावजूद फिरऔन और उसके साथियों ने आपके पैग़ाम को नहीं माना। उस वक़्त हज्जत मूसा ने दुआ की कि ख़ुदा इनके ऊपर वह सज़ नाज़िल फ़रमा जो तेरी क़मून के तहत ऐसे सरकशों के लिए मुक़द्दर है। ऐसे मौके पर पैम्बर की बददुआ खुद खुदा के पैसले का एलान होता है जो नुमाईदाए खुदा की जवान से जारी किया जाता है।

हजरत मूसा की दुआ कुबूल हो गई। ताहम जैसा कि कुछ रिवायत में आता है, हजरत मूसा की दुआ और फिरऔन की तबाही के दरमियान 40 साल का फ़सला है। (तफ़सीर नसफ़ी)। इसका मतलब यह है कि इसके बाद भी लम्बी मुद्दत तक यह सूरतेहाल बाकी रही कि हजरत मूसा और आपके साथी अपने आपको बेबस पाते थे, और दूसरी तरफ फिरऔन और उसके साथियों की शान व शौकत बदस्तूर मुल्क में कायम थी। ऐसी हालत में आदमी अगर खुदा की उस सुन्नत से बेख़बर हो कि वह सरकशों को मोहलत देता है तो वह जल्दबाजी में अस्त काम को छोड़ देगा और मायूसी और बददिली का शिकार होकर रह जाएगा।

وَجَاوَزْنَا بِبَنِي إِسْرَءِيلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُودُهُ بَغْيًا وَعَدُوًّا ۖ حَتَّى إِذَا دَرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ أَمْتُ أَتَىٰ لِيَ اللَّهِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا الَّذِي آمَنْتُ بِهِ بُنَا إِسْرَءِيلَ وَآكَامِنَ الْمُسْلِمِينَ ۝ أَلَّنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلَ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِينَ ۝ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُونَ لِمَن خَلْفَكَ آيَةً ۚ وَإِنَّ كَثِيرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ آيَاتِنَا لَغَافِلُونَ ۝

और हमने बनी इस्राईल को समुद्र पार करा दिया तो फिरऔन और उसके लश्कर ने उनका पीछा किया। सरकशी और ज्यादाती की ग़ारत से। यहां तक कि जब फिरऔन डूबने लगा तो उसने कहा कि मैं ईमान लाया कि कोई माबूद (पूज्य) नहीं मगर वह जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए। और मैं उसके फरमांबरदारों में हूं। क्या अब, और इससे पहले तू नाफरमानी करता रहा और तू फ़साद बरपा करने वालों में से था। पस आज हम तेरे बदन को बचाएंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए निशानी बने और

बेशक बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल रहते हैं। (90-92)

मिस्र में हजरत मूसा का मिशन दोतरफ़ था। एक, फिरऔन को तौहीद (एकेश्वरवाद) और आखिरत की तरफ़ बुलाना। दूसरे, बनी इस्राईल को मिस्र से बाहर सहराई माहौल में ले जाना और वहां उनकी तर्बियत करना। जब फिरऔन पर हक की दावत की तक्मील हो चुकी तो अल्लाह के हुक्म से वह बनी इस्राईल को लेकर मिस्र से रवाना हुए। सहराएँ सीना पहुंचने के लिए उन्हें दरिया को पार करना था। जब बनी इस्राईल हजरत मूसा की रहनुमाई में दरिया के कनारे पहुंचे तो अल्लाह के हुक्म से हजरत मूसा ने पानी पर अपना असा (डंडा) मारा। पानी बीच से फटकर दाएं बाएं खड़ा हो गया, और दर्मियान में खुशक रास्ता निकल आया। हजरत मूसा और बनी इस्राईल उस रास्ते से वाआसानी पार हो गए।

फिरऔन अपने लश्कर के साथ बनी इस्राईल का पीछा करते हुए आगे बढ़ा। वह दरिया के किनारे पहुंचा तो देखा कि मूसा और बनी इस्राईल पानी के दर्मियान एक खुशक रास्ते से गुजर रहे हैं। दरिया के वसीअ पाट ने फटकर हजरत मूसा और उनके साथियों को रास्ता दे दिया था। यह वाक्या दरअसल खुदा की एक निशानी थी। फिरऔन को उससे यह सबक लेना चाहिए था कि मूसा हक पर हैं और खुदा उनके साथ है। मगर उसने दरिया के फटने को खुदाई वाक्या समझने के बजाए आम वाक्या समझा। अपने और मूसा के दर्मियान फिरऔन को सिर्फ दरिया नजर आया, हालांकि वहां खुद खुदा खड़ा हुआ था। इसका नतीजा यह हुआ कि जिस वाक्य में फिरऔन के लिए इताअत (आज्ञापालन) और इनाबत (खुदा की तरफ झुकना) का पैमान था वह उसके लिए सिर्फ सरकशी में इजाफे का सबब बन गया। उसने 'दरिया' को देखा मगर 'खुदा' को नहीं देखा। उसने समझा कि जिस तरह मूसा और उनके साथियों ने दरिया को पार किया है उसी तरह वह भी दरिया को पार कर सकता है।

अपने इस ज़ेहन के साथ फिरऔन और उसके लश्कर दरिया में दाखिल हो गए। दरिया का पानी जो दो टुकड़े हुआ था वह मूसा और उनके साथियों के लिए हुआ था, वह फिरऔन और उसके साथियों के लिए नहीं हुआ था। चुनांचे फिरऔन और उसका लश्कर जब बीच दरिया में पहुंचे तो खुदा के हुक्म से दोनों तरफ का पानी मिल गया और फिरऔन अपने लश्कर सहित उसमें ग़र्क हो गया। ग़र्क होते हुए फिरऔन ने ईमान का इक़्रार किया मगर वह बेसूद (निरर्थक) था, क्योंकि अल्लाह तआला के यहां इख़्तियारी ईमान मोतबर है न कि वह ईमान जबकि आदमी ईमान लाने पर मजबूर हो गया हो।

खुदा से नाफरमानी और सरकशी का अंजाम हलाकत है, इसका नमूना दौरे रिसालत में बार-बार इंसान के सामने आता था। ताहम इस किस्म के कुछ नमूने खुदा ने मुस्तक़िल तौर पर महफूज़ कर दिए हैं ताकि वह बाद के जमाने में भी इंसान को सबक देते रहें जबकि नबियों की आमद का सिलसिला ख़त्म हो गया हो। इन्हीं में से एक तारीख़ी नमूना फिरऔन मूसा (रअमीस सानी) का है जिसकी ममी की हुई लाश पुरातत्व विशेषज्ञों को कदीम मिस्री शहर थेबिस (Thebes) में मिली थी और अब वह काहिरा के म्यूजियम में नुमाइश के लिए रखी हुई है।

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مَبُوءًا صَدَقَ وَرَرَقَهُمْ مِّنَ الطَّيِّبَاتِ فَمَا
اِخْتَلَفُوا حَتَّى جَاءَهُمُ الْعِلْمُ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيمَا
كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿٩٣﴾

और हमने बनी इस्राईल को अच्छा ठिकाना दिया और उन्हें सुथरी चीजें खाने के लिए दीं। फिर उन्होंने इख़्तेलाफ (मतभेद) नहीं किया मगर उस वक्त जबकि इल्म उनके पास आ चुका था। यकीनन तो ख़ व क़ियामत के दिन उनके दर्मियान उस चीज का फैसला कर देगा जिसमें वे इख़्तेलाफ करते रहे। (93)

बनी इस्राईल कदीम जमाने में खुदा के दीन के हामिल थे। उनके साथ खुदा ने यह एहसान किया कि उनके दुश्मन (फिरऔन) से उन्हें नजात दी। इसके बाद वह उन्हें सीना की खुली फज़ा में ले गया। वहां उनके लिए ख़ुसी इंतजाम के तहत पानी और रज़क मुहय्या किया। सहराई तर्बियत के जरिए उनके अंदर एक नई ताक़तवर नस्ल तैयार की। उस नस्ल ने हजरत मूसा की वफ़ात के बाद एक अजीम मुक्त फ़तह किया और शाम और उर्दु और फिलिस्तीन जैसे सरसब्ज इलाके में बनी इस्राईल की सल्तनत कायम की। जो कई सौ साल तक बाक़ी रही।

इस एहसान का नतीजा यह होना चाहिए था कि बनी इस्राईल खुदा के फरमांबरदार और शुक्रगुज़ार रहते और खुदा के दीन की ख़िदमत को अपनी ज़िंदगी का मक्सद बनाते। मगर वाज़ेह रहनुमाई के होते हुए वे राह से बेराह हो गए।

उनका राह से बेराह होना क्या था। यह आपस का इख़्तेलाफ था। उनके पास खुदा का उतारा हुआ इल्म मौजूद था जो वाहिद सच्चाई था। मगर उन्होंने इस इल्म की तशरीह व तावील (भाष्य) में इख़्तेलाफ किया और टुकड़े-टुकड़े हो गए। (तसीर नसी) कोई उम्मत जब तक खुदा के उतारे हुए दीन (अल-इल्म) पर रहती है, उसमें इत्तेफ़ाक और इत्तेहाद रहता है। मगर बाद को उनके दर्मियान इस अल-इल्म की तशरीह में इख़्तेलाफात शुरू होते हैं। कुछ लोग एक इख़्तेलाफी राय लेकर बैठ जाते हैं और कुछ लोग दूसरी इख़्तेलाफी राय लेकर। हर एक अपने अपने मस्लक (मत) को बरहक साबित करने के लिए बहस मुबाहि़सा और तकरीर और मुनाज़िरे का तूफ़ान खड़ा करता है। नौबत यहां तक पहुंचती है कि अस्ल इल्म किताबों में बंद पड़ा रहता है और सारा जोर उनकी तावीलात व तशरीहात (व्याख्या) में सर्फ़ हेंस लगता है। इस तरह बुनियादी दीनी तालीमात (अल-इल्म) में एक राय होने के बावजूद लोग ज़ेरी तालीमात (उप-शिखाओं) में मशगूल होकर मुख़्तलिफ राय वाले हो जाते हैं।

'अल्लाह क़ियामत के दिन फैसला कर देगा' मतलब यह है कि क़ियामत में जब खुदा जाहिर होगा तो हर आदमी अपने इख़्तेलाफ (मतभेद) को भूलकर उसी बात को मान लेगा जो वाहिद (एक मात्र) सच्चाई है। अगर वे खुदा से डरते तो आज ही सबके सब एक राय पर पहुंच जाते। मगर खुदा से बेख़ौफ़ होकर वे अलग-अलग राहों में बट गए हैं। बेख़ौफ़ी से बहुत सी राय पैदा होती हैं और ख़ौफ से राय का इत्तहाद।

فَإِنْ كُنْتَ فِي شكٍّ مِمَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِينَ يُقْرَأُونَ الْكِتَابَ مِنْ قَبْلِكَ لَقَدْ جَاءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُبْتَرِّينَ ۝ وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الَّذِينَ كَذَبُوا بِآيَاتِ اللَّهِ فَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

पस अगर तुम्हें उस चीज के बारे में शक है जो हमने तुम्हारी तरफ उतारी है तो उन लोगों से पूछ लो जो तुमसे पहले से किताब पढ़ रहे हैं। बेशक यह तुम पर हक आया है तुम्हारे ख की तरफ से, पस तुम शक करने वालों में से न बनो। और तुम उन लोगों में शामिल न हो जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया है, वरना तुम नुकसान उठाने वालों में से होगे। (94-95)

पैगम्बर बेआमेज (विशुद्ध) हक को लेकर उठता है और बेआमेज हक की दावत को कुबूल करना इंसान के लिए हमेशा सख्त दुश्वार काम रहा है। लोग आम तौर पर मिलावटी हक की बुनियाद पर खड़े होते हैं। वे अपनी दुनियापरस्ताना जिंदगी पर हक का लेबल लगा लेते हैं। ऐसी हालत में बेआमेज हक की दावत को मानना अपनी जात की नफ़ी (नकार) की कीमत पर होता है। हक के दाओं को मानने के लिए उसके मुकाबले में अपने आपको छोटा करना पड़ता है, और अपने आपको छोटा करना बिलाशुबह इंसान के लिए मुश्किलतरीन काम है। यही वजह है कि ऐसा कभी नहीं होता कि हक की दावत उठे और लोग समूहों में उसकी तरफ दौड़ना शुरू कर दें। हक का इस्तक़्बाल इस दुनिया में हमेशा एराज (उपेक्षा) और मुखालिफ़त की सूरत में किया गया है।

दाओं जब अपने माहौल में हक की यह बेवकअती देखता है तो कभी कभी उस पर यह शुबह गुजरता है कि मैं ग़लती पर तो नहीं हूँ। इस आयत में दाओं को इसी नफ़िसयात (मनःस्थिति) से बचने की ताकीद की गई है।

इस शुबह के ग़लत होने का एक निहायत वाजेह सुबूत यह है कि पिछले पैगम्बरों और दाअियों को भी इसी तरह की सूरतेहाल से साबिका पेश आया। जो लोग पहले के नबियों की तारीख़ से वाकिफ़ हैं उन्हें बखूबी मालूम है कि इस दुनिया में कभी ऐसा नहीं हुआ कि एक पैगम्बर उठे और फौन उसे अवामी मकबूलियत हासिल हो जाए। फिर यही बात अगर बाद के जमाने के दाअियों के साथ पेश आए तो इस पर हैरान व परेशान होने की क्या जरूरत।

आदमी की अक्ल अगर किसी चीज की सच्चाई पर गवाही दे और वह सिर्फ लोगों की बेतवज्जोही या मुखालिफ़त की वजह से इस चीज को छोड़ दे तो यह गोया अल्लाह की निशानियों को झुठलाना है। अल्लाह निशानियों (दलाइल) के रूप में इंसान के सामने जाहिर होता है। इसलिए जिस चीज की सदाक़त (सच्चाई) पर दलील कायम हो जाए उसे मानना आदमी के ऊपर खुदा का हक हो जाता है। फिर जो शख्स खुदा का हक अदा न करे उसके हिस्से में नुक़सान और हलाक़त के सिवा क्या आएगा।

إِنَّ الَّذِينَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ وَلَوْ جَاءَتْهُمْ كُلُّ آيَةٍ حَتَّى يَرَوْا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝ فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ أَمَنَتْ وَنَضَعَتْهَا رَبُّهَا إِلَّا قَوْمَ يُوسُفَ ۚ لَبَّا أَمْنُوا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنَاهُمْ إِلَىٰ حِينٍ ۝

बेशक जिन लोगों पर तेरे ख की बात पूरी हो चुकी है वे ईमान नहीं लाएंगे, चाहे उनके पास सारी निशानियाँ आ जाएं जब तक कि वे दर्दनाक अजाब को सामने आता न देख लें। पस क्यों न हुआ कि कोई बस्ती ईमान लाती कि उसका ईमान उसे नफ़ा देता, यूनस की कौम के सिवा। जब वे ईमान लाए तो हमने उनसे दुनिया की जिंदगी में रुस्वाई का अजाब टाल दिया और उन्हें एक मुद्दत तक बहरामंद (सुखी-सम्मन्न) होने का मौक़ा दिया। (96-98)

इंसान के सामने जब एक हक बात आती है तो उसकी अक्ल गवाही देती है कि यह सही है। मगर किसी हक को लेने के लिए आदमी को कुछ देना पड़ता है और इसी देने के लिए आदमी तैयार नहीं होता। इसके खातिर आदमी को दूसरे के मुकाबले में अपने को छोटा करना पड़ता है। अपने मफ़ाद (हित) को ख़तरे में डालना होता है। अपनी राय और अपने वक़र (प्रतिष्ठा) को खोना पड़ता है। ये अंदेश आदमी के लिए कुबूले हक में रुकावट बन जाते हैं। जिस चीज का जवाब उसे कुबूलियत और एतराफ़ से देना चाहिए था उसका जवाब वह इंकार और मुखालिफ़त से देने लगता है।

आदमी की नफ़िसयात कुछ इस तरह बनी है कि वह एक बार जिस रुख़ पर चल पड़े उसी रुख़ पर उसका पूरा ज़ेहन चलने लगता है। यही वजह है कि एक बार हक से इंहिराफ़ करने के बाद बहुत कम ऐसा होता है कि आदमी दुबारा हक की तरफ लौटे। क्योंकि हर आने वाले दिन वह अपने फ़िक्क (सोच) में पुख़्तातर होता चला जाता है। यहां तक कि वह इस कबिल ही नहीं रहता कि हक की तरफ वापस जाए।

इस तरह के लोग अपने मौक़िफ़ (ट्रिक्कोण) को बताने के लिए ऐसे अल्फ़ज़ बोलते हैं जिससे जाहिर हो कि उनका केस नज़रियाती केस है। मगर हकीक़तन वह सिर्फ़ जिद्द और तअस्सुब और हठधर्मी का केस होता है जो अपनी दुनियावी मस्तेहतों के खातिर इख़्तियार किया जाता है। ताहम अजाबे खुदावंदी के ज़ूर के वक़्त आदमी का यह भ्रम खुल जाएगा। ख़ौफ़ की हालत उसे उस चीज के आगे झुकने पर मजबूर कर देगी जिसके आगे वह बेख़ौफ़ी की हालत में झुकने पर तैयार न होता था।

पिछले जमाने में जितने रसूल आए सबके साथ यह किस्सा पेश आया कि उनकी मुख़ातब कौम आख़िर वक़्त तक ईमान नहीं लाई। अलबत्ता जब वे अजाब की पकड़ में आ गए तो उन्होंने कहा कि हम ईमान कुबूल करते हैं। जब तक खुदा उन्हें दलील की जवान में

सूरह-10. यूनुस

579

पारा 11

पुकार रहा था। उन्होंने नहीं माना और जब खुदा ने उन्हें अपनी ताकतों की जद में ले लिया तो कहने लगे कि अब हम मानते हैं। मगर ऐसा मानना खुदा के यहां मोतबर (मान्य) नहीं। खुदा को वह मानना मलूब है जबकि आदमी दलील के जोर पर झुक जाए न कि वह ताकत के जोर पर झुके।

हजरत यूनुस अलैहिस्सलाम इराक के एक कदीम शहर नैनवा में भेजे गए। उन्होंने वहां तब्लीग की मगर वे लोग ईमान न लाए। आखिर हजरत यूनुस ने पैगम्बरों की सुन्नत के मुताबिक हिजरत की। वह यह कहकर नैनवा से चले गए कि अब तुम्हारे ऊपर खुदा का अजाब आएगा। हजरत यूनुस के जाने के बाद अजाब की इब्तिदाई अलामतें जाहिर हुईं। मगर उस वक्त उन्होंने वह न किया जो कौमे हूद ने किया था कि उन्होंने अजाब का बादल आते देखकर कहा कि यह हमारे लिए बारिश बरसाने आ रहा है। कौमे यूनुस के अंदर फौरन चौंक पैदा हो गई। सारे लोग अपने मवेशियों और औरतों और बच्चों को लेकर मैदान में जमा हो गए और खुदा के आगे आजिजी करने लगे। इसके बाद अजाब उनसे उठा लिया गया। जिस तरह जूझे अजब से पहले का ईमान कबिले एतबार है उसी तरह कूड़े अजब के कबीब का ईमान भी कबिले एतबार हो सकता है बशर्ते कि वह इतना कामिल हो जितना कामिल कौमे यूनुस का ईमान था।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَأَمَنَّ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلَّهُمْ جَمِيعًا أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ
حَتَّى يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُوَمِّنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ وَ
يَجْعَلُ الرَّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ ۝

और अगर तेरा रब चाहता तो जमीन पर जितने लोग हैं सबके सब ईमान ले आते। फिर क्या तुम लोगों को मजबूर करोगे कि वे मोमिन हो जाएं। और किसी शख्स के लिए मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की इजाजत के बगैर ईमान ला सके। और अल्लाह उन लोगों पर गंदगी डाल देता है जो अक्ल से काम नहीं लेते। (99-100)

‘तेरा रब चाहता तो सारे लोग मोमिन बन जाते’ का मतलब यह है कि खुदा के लिए यह मुमकिन था कि इंसानी दुनिया का निजाम भी उसी तरह बनाए जिस तरह बकिया दुनिया का निजाम है। जहां हर चीज मुकम्मल तौर पर खुदा के हुक्म की पाबंद बनी हुई है। मगर इंसान के सिलसिले में खुदा की यह स्कीम ही नहीं। इंसान के सिलसिले में खुदा की स्कीम यह है कि आज्ञादाना माहिल में रखकर इंसान को मौक़ा दिया जाए कि वह खुद अपने जाती फैसले से खुदा का फरमांवरदार बने। वह अपने इख्तियार से वह काम करे जो बकिया दुनिया बेइख्तियारी के साथ कर रही है, जन्नत की अबदी (चिरस्थायी) नेमतें इसी इख्तियाराना इताअत की कीमत हैं।

‘कोई शख्स खुदा के इज्ज के बगैर ईमान नहीं ला सकता’ का मतलब यह है कि मौजूदा दुनिया में किसी को ईमान की नेमत मिलेगी तो उस तरीके की पैरवी करके मिलेगी जो खुदा

पारा 11

580

सूरह-10. यूनुस

ने उसके लिए मुकर्रर कर दिया है। मौजूदा दुनिया में ईमान को पाने का रास्ता यह है कि आदमी ईमान की दावत को अपनी अक्ल के इस्तेमाल से समझे। जिस शख्स की अक्ल के ऊपर उसकी दुनियावी मस्तेहतें (स्वार्थ) ग़ालिब आ जाएं उसकी अक्ल गोया गंदगी की कीचड़ में लतपत हो गई है। ऐसे शख्स के लिए इस दुनिया में ईमान की नेमत पाने का कोई सवाल नहीं।

قُلْ انظُرُوا مَاذَا فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا تُغْنِي الْآيَاتُ وَالَّذِينَ عَنِ
قَوْمٍ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ فَهَلْ يَنْتَظِرُونَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ
قَبْلِهِمْ قُلْ فَانْتَظِرُوا إِنِّي مَعَكُمْ مِنَ الْمُنْتَظِرِينَ ۝ ثُمَّ نُنَجِّي رُسُلَنَا
وَالَّذِينَ آمَنُوا كَذَلِكَ حَقًّا عَلَيْنَا نَحْمِلُ الْمُؤْمِنِينَ ۝

कहो कि आसमानों और जमीन में जो कुछ है उसे देखो और निशानियां और डरावे उन लोगों को फायदा नहीं पहुंचाते जो ईमान नहीं लाते। वे तो बस उस तरह के दिन का इंतजार कर रहे हैं जिस तरह के दिन उनसे पहले गुजरे हुए लोगों को पेश आए। कहो, इंतजार करो मैं भी तुम्हारे साथ इंतजार करने वालों में हूं फिर हम बचा लेते हैं अपने रसूलों को और उन्हें जो ईमान लाए। इसी तरह हमारा जिम्मा है कि हम ईमान वालों को बचा लेंगे। (101-103)

हमारे चारों तरफ जो कायनात है उसमें बेशुमार निशानियां मौजूद हैं जो खुदा के वजूद को साबित करती हैं। और इसी के साथ यह भी बताती हैं कि इस कायनात के बारे में खुदा का मंसूबा क्या है। मजीद यह कि दुनिया में डरावे (आंधी और भूचाल) जैसे वाक़ेयात भी पेश आते रहते हैं जो इंसान को खुदा और आखिरत के मामले में संजीदा बनाएं। मगर यह सब कुछ आलमे इम्तेहान में होता है, यानी ऐसी दुनिया में जहां आदमी को इख्तियार रहे कि माने या न माने। चुनांचे आदमी यह करता है कि जब निशानियां और डरावे सामने आते हैं तो वह उनकी कोई न कोई खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तौजीह करके बात को दूसरे रुख की तरफ फेर देता है और नसीहत से महरूम रह जाता है।

जब आदमी दलील की जवान में बात को न माने तो गोया वह सिर्फ उस दिन का इंतजार कर रहा है जबकि इम्तेहान का पर्दा हटा दिया जाए और खुदा अपना आखिरी फैसला सुनाने के लिए सामने आ जाए। मगर वह दिन जब आएगा तो वह आज के दिन से बिल्कुल मुख़लिफ होगा। आज तो मानने वाले और न मानने वाले दोनों बजाहिर यकसां (एक जैसी) हालत में नजर आते हैं। मगर जब फैसले का दिन आएगा तो इसके बाद वही लोग अम्न में रहेंगे जो हक़मरस्त साबित हुए थे। बकिया तमाम लोग इस तरह अजाब की लपेट में आ जाएंगे कि इसके बाद उनके लिए कोई राह न होगी जिससे भाग कर वे नजात (मुक्ति) हासिल करें।

सूरह-10. यूनुस

581

पारा 11

قُلْ يَٰأَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي شَكٍّ مِّن دِينِي فَلَا أَعْبُدُ الَّذِينَ تَعْبُدُونَ مِن دُونِ اللَّهِ وَلَكِن أَعْبُدُ اللَّهَ الَّذِي يَتَوَكَّلُكُمْ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ۖ وَأَنْ أَقِمَّ وَجْهَكَ لِلدِّينِ حَنِيفًا وَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۖ وَلَا تَدْعُ مِن دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِنَ الظَّالِمِينَ ۖ وَإِنْ يَسْسَسْكَ اللَّهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهُ إِلَّا هُوَ وَإِنْ يُرِيدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَادَّ لِفَضْلِهِ يُصِيبُ بِهِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ وَهُوَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۝

कहो, ऐ लोगो अगर तुम मेरे दीन के मुताल्लिक शक में हो तो मैं उनकी इबादत नहीं करता जिनकी इबादत तुम करते हो अल्लाह के सिवा। बल्कि मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूँ जो तुम्हें वफात (मौत) देता है और मुझको हुक्म मिला है कि मैं ईमान वालों में से बनूँ। और यह कि अपना रुख एकसू (एकाग्र) होकर दीन की तरफ करूँ। और मुश्रिकों में से न बनूँ। और अल्लाह के अलावा उन्हें न पुकारो जो तुम्हें न नफा पहुंचा सकते हैं और न नुकसान। फिर अगर तुम ऐसा करोगे तो यकीनन तुम जालिमों में से हो जाओगे। और अगर अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ में पकड़ ले तो उसके सिवा कोई नहीं जो उसे दूर कर सके। और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुंचाना चाहे तो उसके फल को कोई रोकने वाला नहीं। वह अपना फल अपने बंदों में से जिसे चाहता है देता है और वह बख्शने वाला महरबान है। (104-107)

दाओ पहले दलील की जवान में अपनी बात कहता है। मगर जब लोग दलील सुनने के बावजूद शक व शवह में पड़े रहते हैं तो उसके पास आखिरी चीज यह रह जाती है कि अज्म (संकल्प) की जवान में अपने पैगाम की सदाकत का इन्हार कर दे।

तौहीद के दाओ का शिर्क करने वालों से यह कहना कि 'मैं उसकी इबादत नहीं करता जिसकी इबादत तुम लोग करते हो' महज एक दावा नहीं बल्कि वह अपनी जात में एक दलील भी है। इसका मतलब यह है कि मैं भी तुम्हारे जैसा एक इंसान हूँ। मेरे पास भी वही अकल है जो तुम्हारे पास है। फिर जिस बात की सदाकत (सच्चाई) मेरी समझ में आ रही है उसकी सदाकत तुम्हारी समझ में आखिर क्यों नहीं आती।

सच्चाई अगर एक इंसान की सतह पर काबिलेफहम (समझ में आने योग्य) हो जाए तो इससे यह साबित होता है कि वह दूसरे इंसानों के लिए भी काबिलेफहम थी। इसके बावजूद अगर दूसरे लोग इंकार करें तो यकीनन इसकी वजह खुद उनका अपना कोई नुक्स (कमी)

पारा 11

582

सूरह-10. यूनुस

होगा न कि हक की दावत का नुक्स। जिस चीज को एक आंख वाला देख रहा हो और दूसरा आंख वाला शरख उसे न देखे तो वह सिर्फ इस बात का सुबूत है कि आंख वाला हकीकतन आंख वाला नहीं। क्योंकि इस दुनिया में यह मुमकिन नहीं कि जिस चीज को एक आंख वाला देख ले उसे दूसरा शरख आंख रखते हुए न देख सके।

मौत इस बात का एलान है कि आदमी इस दुनिया में कामिल तौर पर बेइख्तियार है। मौत उन तमाम चीजों को बातिल (असत्य) साबित कर देती है जिनके सहारे आदमी इंकार और सरकशी का तरीका इख्तियार करता है। मौत एक तरफ आदमी को अपने इज्ज और दूसरी तरफ खुदा की क़दरत का तआरुफ कराती है। वह बताती है कि इस दुनिया में कोई नहीं जिसे नफा देने या नुकसान पहुंचाने का इख्तियार हासिल हो। इस तरह मौत आदमी को हर दूसरी चीज से काट कर खुदा की तरफ ले जाती है। वह मुकम्मल तौर पर इंसान को खुदा का परस्तार बनाती है। अगर आदमी के अंदर सबक लेने का ज़ेहन हो तो सिर्फ मौत का वाक्या उसकी इस्लाह (सुधार) के लिए काफी हो जाए।

हर इंसान पर एक वक्त आता है जबकि वह बेबसी के साथ अपने आपको मौत के हवाले कर देता है। इसी तरह किसी इंसान के बस में नहीं कि वह फायदा और नुकसान के मामले में वही होने दे जो वह चाहता है। वह मल्लूब फायदे को हर हाल में पा ले और ग़ैर मल्लूब नुकसान से हर हाल में महफूज़ रहे।

यह सूरतेहाल बताती है कि इंसान एक बेइख्तियार मख़बूक है। वह एक ऐसी दुनिया में है जहां कोई और भी है जो उसके ऊपर हुक्मरानी कर रहा है।

قُلْ يَٰأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاءَكُمُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكُمْ فَمَنِ اهْتَدَىٰ فَإِنَّمَا يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا وَمَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيلٍ ۖ وَاتَّبِعْ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتَّىٰ يَحْكُمَ اللَّهُ ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۝

कहो, ऐ लोगो तुम्हारे रब की तरफ से तुम्हारे पास हक आ गया है। जो हिदायत कुबूल करेगा वह अपने ही लिए करेगा और जो भटकेगा तो उसका बवाल उसी पर आएगा, और मैं तुम्हारे ऊपर ज़िम्मेदार नहीं हूँ। और तुम उसकी पैरवी करो जो तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की जाती है और सब्र करो यहां तक कि अल्लाह फैसला कर दे और वह बेहतरीन फैसला करने वाला है। (108-109)

दावत (आह्वान) का काम अस्तन हक के एलान का काम है। किसी गिरोह के ऊपर उस वक्त पैगामरसानी का हक अदा हो जाता है जबकि दाओ हक (सत्य) को दलील के जरिए पूरी तरह वाजेह कर दे और इसी के साथ इस बात का सुबूत दे दे कि वह इस मामले में पूरी तरह संजीदा है।

दाओ अगर वक्त के मेयार के मुताबिक हक को मुदल्लल (तार्किक) कर दे। वह नफा नुकसान से बेनियाज होकर हक की मुकम्मल गवाही दे दे। वह हर तकलीफ और नाखुशगवारी

को बर्दाश्त करता हुआ अपने दावती काम को जारी रखे तो इसके बाद मुख़ातब (संबोधित व्यक्ति) के ऊपर वह इतमामे हुज्जत (आह्वान की अति) हो जाता है जिसके बाद खुदा के यहां किसी के लिए कोई उज़्र (विवशता) बाक़ी न रहे।

दाजी (आध्वानकता) का काम अस्लन इत्तबाएँ 'वही' है। यानी अपनी जात की हद तक अमलन ख की मर्जी पर कायम रहते हुए दूसरों को ख की मर्जी की तरफ पुकारते रहना। इस काम को हर हाल में हिक्मत और सब्र और खैरख्वाही के साथ मुसलसल जारी रखना है। इसके बाद जितने बकिया मराहिल हैं वे सब बराहारास्त तौर पर खुदा से मुतअल्लिक हैं। दाजी की तरफ से कोई दूसरा अमली इन्काम सिर्फ उस वक्त दुस्त है जबकि खुद, खुदा की तरफ से उसका फैसला किया जा चुका हो और उसके आसार जाहिर हो जाएं।

खुदा का फैसला हमेशा हालात के रूप में जाहिर होता है। जब खुदा के इन्म में दाजी का दावती काम मल्लूबा हद को पहुंच चुका होता है तो खुदा हालात में ऐसी तब्दीलियां पैदा करता है जिसे इस्तेमाल करके दाजी अपने अमल के अगले मरहले में दाखिल हो जाए।

سُبْحَانَكَ وَبِحَمْدِكَ ۝ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْقُرْآنِ وَالْكِتَابِ الْمُنِيرِ ۝

आयतें-123

सूरह-11. हूद
(मक्का में नाजिल हुई)

रुकूअ-10

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० रा०। यह किताब है जिसकी आयतें पहले मोहकम (दृढ़) की गई फिर एक दाना (तत्वदर्शी) और ख़बीर (सर्वज्ञ) हस्ती की तरफ से उनकी तफ़सील की गई कि तुम अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत न करो। मैं तुम्हें उसकी तरफ से डराने वाला और खुशख़बरी देने वाला हूँ। और यह कि तुम अपने रब से माफी चाहो और उसकी तरफ पलट आओ, वह तुम्हें एक मुद्दत तक बरतवाएगा अच्छा बरतवाना, और हर ज़्यादा के मुस्तहिक को अपनी तरफ से ज़्यादा अता करेगा। और अगर तुम फिर जाओ तो मैं तुम्हारे हक में एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूँ। तुम सबको अल्लाह की तरफ पलटना है और वह हर चीज़ पर क़दिर है। (1-4)

कुरआन की दावत (आह्वान) यह है कि आदमी एक अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करे। वह एक खुदा को अपना सब कुछ बनाए। वह उसी से डरे और उसी से उम्मीद रखे। उसके जेहन व दिमाग पर उसी का ग़लबा हो। अपनी जिंदगी के मामलात में वह सबसे ज्यादा उसकी मर्जी का लिहाज करे। वह अपने आपको आबिद (पूजक) के मक़ाम पर रखकर खुदा को माबूद (पूज्य) का मक़ाम देने पर राजी हो जाए।

पैगम्बराना दावत दरअस्ल इसी चीज से इंसान को बाख़बर करने की दावत है। कुरआन में इसको इतिहाई मोहकम ज़बान और वाज़ेह उस्लूब में बयान कर दिया गया है। अब इंसान से जो चीज मल्लूब है वह यह कि वह इसके मुकाबले में सही रद्देअमल पेश करे। हसद, घमंड, मस्तेहतबीनी (स्वार्थता) और गिरोहपरस्ती जैसी चीज़ों के ज़ेअसर आकर वह उसे नज़रअंदाज़ न कर दे। बल्कि सीधी तरह उसे मान कर खुदा की तरफ़ पलट आए। वह अपनी माजी की ग़लतियों के लिए खुदा से माफ़ी माँगे और मुस्तक़बिल के लिए खुदा से मदद की दरख़्वास्त करे।

आदमी के सामने खाना पेश किया जाए और वह खाने को कुबूल कर ले तो इसका मतलब यह है कि उसने अपनी जिस्मानी परवरिश का इतिजाम किया। इसके बरअक्स अगर वह खाना कुबूल न करे तो गोया उसने अपने आपको जिस्मानी परवरिश से महरूम रखा। ऐसा ही मामला हक की दावत का है। जब आदमी हक को कुबूल करता है तो दरहकीकत वह उस रिज्के रब्बानी को कुबूल करता है जो उसके अंदर दाखिल होकर उसकी रूह और उसके जिस्म की सालेह (सही) परवरिश का सबब बने और बिलआखिर उसे रूहानी तरक्की की उस मंजिल की तरफ ले जाए जो उसे जन्मत के बागों का मुस्तहिक बनाती है।

जो शऱ्ख हक की दावत को कुबूल न करे उसने गोया अपनी रूह को रब्बानी परवरिश के मौकों से महरूम कर दिया । हक को मानने वाला अगर तवाजोअ (विनम्रता) में जी रहा था तो यह दूसरा शऱ्ख धमंड की नफिसयात में जिएगा । हक को मानने वाले के लम्हात अगर खुदा की याद में बसर हो रहे थे तो उसके लम्हात ग़ैर खुदा की याद में बसर होंगे । हक को मानने वाला अगर ज़िंदगी के मौकों में इताअते खुदावंदी का रवैया इख्तियार किए हुए था तो यह उसकी जगह सरकशी का रवैया इख्तियार करेगा । इसका नतीजा यह होगा कि पहला शऱ्ख इस दुनिया से इस हाल में जाएगा कि उसकी रूह सेहतमंद और तऱक्कीयाफ़्ता रूह होगी और जन्नत की फज़ाओं में बसाए जाने की मुस्तहिक ठहरेगी । और दूसरे शऱ्ख की रूह बीमार और पिछड़ी हुई रूह होगी और सिर्फ़ इस काबिल होगी कि उसे जहन्नम के कुड़ाघर में फेंक दिया जाए ।

أَلَا إِنَّهُمْ يَمُوتُونَ ۖ فَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُمْ لَمُسْتَخِفُّونَ ۚ أَمْ لِيَحْسَبُنَا نَبَأَهُمُ ۚ
 يَعْلَمُوا مَا يُفْسِدُونَ ۚ وَمَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَلَا يُلْغُونَ فِي الْأَرْضِ بِحِيلِهِمْ ۚ إِنَّهُمْ لَشَرٌّ مَّا يُخْتَلَوْنَ ۚ
 وَمَا مِنْ دَابَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللَّهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ۚ كُلٌّ فِي كِتَابٍ مُبِينٍ ۚ

देखो, ये लोग अपने सीनों को लपेटते हैं ताकि उससे छुप जाएं। खबरदार, जब वे कपड़ों से अपने आपको ढांपते हैं, अल्लाह जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो वे जाहिर करते हैं। वह दिलों की बात तक जानने वाला है। और जमीन पर कोई चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी रोजी अल्लाह की जिम्मे न हो। और वह जानता है जहां कोई ठहरता है और जहां वह सौंपा जाता है। सब कुछ एक खुली किताब में मौजूद है। (5-6)

कुरैश के कुछ सरदारों ने ऐसा किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके सामने तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत पेश की तो वे बेपरवाही के साथ उठे। अपनी चादर अपने ऊपर डाली और रवाना हो गए।

यह दरअस्त किसी बात को नजरअंदाज करने की एक सूत है। कोई आदमी जब दाजी (आख्यानकर्ता) को हकीर (तुच्छ) समझे और उसके मुकाबले में अपने को बरतार ख्याल करे तो उस वक्त वह इसी किस्म का रवैया इख्तियार करता है। मगर आदमी भूल जाता है कि जिस नपिसयात के तहत वह ऐसा कर रहा है वह अल्लाह तआला को खूब मालूम है। यह सिर्फ एक इंसान (दाजी) को नजरअंदाज करना नहीं है बल्कि खुद खुद को नजरअंदाज करना है जो हर खुले और छुपे को जानने वाला है।

फिर आदमी का हाल उस वक्त क्या होगा जब वह खुदा का सामना करेगा। वह देखेगा कि जिस खुदा को उसने नजरअंदाज किया था वही वह हस्ती था जिससे उसे वह सब कुछ मिला था जो उसके पास था। यहां तक कि वे असबाब भी जिनके बल पर उसने खुदा की बात को नजरअंदाज कर दिया था। आदमी खुदा की दुनिया में है और बिलआखिर वह खुदा की तरफ जाने वाला है। मगर वह इस तरह रहता है जैसे कि न आज खुदा से उसका कोई तअल्लुक है और न आइंदा उसका खुदा से कोई वास्ता पड़ने वाला है।

وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا وَلَئِنْ قُلْتُمْ إِنَّا لَنُكْفِرُكُمْ مَبْعُوثُونَ مِنْ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُولَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا إِنْ هَذَا إِلَّا سِحْرٌ مُبِينٌ ۝ وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلَىٰ أُمَّةٍ مَّعْدُودَةٍ لَيَقُولُنَّ مَا يَحْبِسُهُ ۚ الْيَوْمَ يَأْتِيهِمْ لَيْسَ مَصْرُوفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَكْبِرُونَ ۝

और वही है जिसने आसमानों और जमीन को छः दिनों में पैदा किया। और उसका अर्श (सिंहासन) पानी पर था, ताकि तुम्हें आजमाए कि कौन तुम में अच्छा काम करता है। और अगर तुम कहो कि मरने के बाद तुम लोग उठाए जाओगे तो मुंकिरीन कहते हैं यह तो खुला हुआ जादू है। और अगर हम कुछ मुद्दत तक उनकी सजा को रोक दें तो कहते हैं कि क्या चीज उसे रोके हुए है। आगाह, जिस दिन वह उन पर आ पड़ेगा

तो वह उनसे फेरा न जा सकेगा और उन्हें घेर लेगी वह चीज जिसका वे मजाक उड़ा रहे थे। (7-8)

मौजूदा दुनिया को खुदा ने छः दिनों, यानी छः अदवार (Periods) में पैदा किया है। जमीन पर एक ऐसा दौर गुजरा है जबकि उसकी सतह पानी से ढकी हुई थी। खुदा की सल्लतनत के इस हिस्से में उस वक्त सिर्फ पानी नजर आता था। इसके बाद खुदा के हुक्म से खुशकी के इलाके उभर आए और पानी समुद्रों की गहराई में जमा हो गया। इस तरह यह मुमकिन हुआ कि जमीन पर मौजूदा जीवधारी ज़हूर में आए।

खुदा अगरचे कादिर है कि वाक्यात को अचानक जाहिर कर दे। मगर यह दुनिया इंसान के लिए बतौर इम्तेहानगाह बनाई गई है। यही वजह है कि खुदा ने मौजूदा दुनिया को मंसूबे के तहत बनाया और अपनी तख्लीकात (रचनाओं) पर असबाब का पर्दा कायम रखा।

दुनिया की पैदाइश और उस पर इंसान की आबादकारी से खुदा का मक्सूद अच्छा अमल करने वाले का इंतख़ाब है। 'अच्छा अमल' दरअस्त हकीकतपसंदाना अमल का दूसरा नाम है। यानी किसी दबाव के बग़ैर वह करना जो अजरूए हकीकत आदमी को करना चाहिए। हकीकतपसंद शरूब वह है जो असबाब के जाहिरि पदों से गुजर कर खुदा की छुपी हुई कारफरमाई को देख ले। बजाहिर इख्तियार रखते हुए अपने आपको बेइख्तियार कर ले। सरकशी की ज़िंदगी गुज़रने का मौका रखते हुए खुदा का ताबेअदार बन जाए।

मौजूदा दुनिया में ऐसे ही हकीकतपसंद इंसानों का चुनाव हो रहा है। जब चुनाव की यह मुद्दत ख़त्म होगी तो मौजूदा निजाम को ख़त्म करके दूसरा मेयारी निजाम बनाया जाएगा जहां तमाम अच्छी चीज़ें सिर्फ अच्छा अमल करने वालों के लिए होंगी और तमाम बुरी चीज़ें सिर्फ बुरा अमल करने वालों के लिए।

अल्लाह तआला अपने कानूने मोहलत की वजह से मुंकिरों और सरकशों को फौरन नहीं पकड़ता। उन्हें इतिहाई हद तक मौका देता है कि वे या तो सचेत होकर अपनी इस्लाह कर लें या आखिरी तौर पर अपने आपको मुजरिम साबित कर दें। यह कानूने मोहलत कुछ सरकशों के लिए ग़लतफहमी का सबब बन जाता है। वे अपनी हैसियत को भूल कर बड़ी-बड़ी बातें करने लगते हैं। मगर जब वे खुदा की पकड़ में आ जाएंगे उस वक्त उन्हें मालूम होगा कि वे खुदा के मुक़ाबले में किस कदर बेबस थे।

وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنَاهَا مِنْهُ إِنَّهُ لَكَفُورٌ ۝ وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ نَعْمَاءَ بَعْدَ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ ذَهَبَ السَّيِّئَاتِ عَنِّي إِنَّهُ لَفَرِحَ فَخُورٌ ۝ إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝

और अगर हम इंसान को अपनी किसी रहमत से नवाजते हैं फिर उससे उसे महरूम कर देते हैं तो वह मायूस और नाशुक्रा बन जाता है। और अगर किसी तकलीफ के बाद जो उसे पहुंची थी, उसे हम नेमत से नवाजते हैं तो वह कहता है कि सारी मुसीबतें

सूरह-11. हूद

587

पारा 12

मुझसे दूर हो गई, वह इतराने वाला और अकड़ने वाला बन जाता है। मगर जो लोग सब्र करने वाले और नेक अमल करने वाले हैं उनके लिए बख्शिश (क्षमा) है और बड़ा अज्र (प्रतिफल)। (9-11)

मौजूदा दुनिया में आदमी को कभी राहत दी जाती है और कभी मुसीबत। मगर यहाँ न राहत इनाम के तौर पर है और न मुसीबत सजा के तौर पर। दोनों ही का मकसद जांच है। यह दुनिया दारुल इम्तेहान (परीक्षा-स्थल) है। यहाँ इंसान के साथ जो कुछ पेश आता है वह सिर्फ इसलिए होता है कि यह देखा जाए कि मुख़लिफ़ हालात में आदमी ने किस किस का रद्देअमल पेश किया।

वह आदमी नाकाम है जिसका हाल यह हो कि जब उसे खुदा की तरफ से कोई राहत पहुँचे तो वह फ़ख़ की नफ़िसयात में मुब्तिला हो जाए। और जो अफ़राद उसे अपने से कम दिखाई दें उनके मुकाबले में वह अकड़ने लगे। इसी तरह वह शख्स भी नाकाम है कि जब उससे कोई चीज़ छिने और वह मुसीबत का शिकार हो तो वह नाशुक्री करने लगे। किसी महरूम की बाद भी आदमी के पास खुदा की दी हुई बहुत सी चीज़ें मौजूद होती हैं। मगर आदमी उन्हें भूल जाता है और खोई हुई चीज़ के ग़म में ऐसा पस्तहिम्मत होता है गोया उसका सब कुछ लुट गया है।

इसके बरअक्स ईमान में पूरा उतरने वाले वे हैं जो साबिर (धैर्यवान) और नेक अमल करने वाले हों। यानी हर झटके के बावजूद अपने आपको एतदाल पर बाकी रखें और वही करें जो खुदा का बंदा होने की हैसियत से उन्हें करना चाहिए।

सब्र यह है कि आदमी की नफ़िसयात हालात के ज़ेअसर न बने बल्कि उसूल और नज़रिये के तहत बने। हालात चाहे कुछ हों वह उनसे बुलन्द होकर ख़ालिस हक की रोशनी में अपनी राय बनाए। वह हालात से ग़ैर मुतअस्सिर रहकर अपने अकीदे और शुऊर की सतह पर ज़िद्दा रहने की ताक़त रखता हो। इसी क्रिम की ज़िद्गी नेक अमली की ज़िद्गी है। जो लोग इस नेक अमली का सुबूत दें वही वे लोग हैं जो अगली ज़िन्दगी में खुदा की रहमतों के हिस्सेदार होंगे और खुदा की अबदी (चिरस्थायी) जन्नतों में जगह पाएंगे।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضُ مَا يُوحَىٰ إِلَيْكَ وَضَائِقٌ بِهِ صَدْرُكَ أَنْ يَقُولُوا لَوْلَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ كُتُبٌ وَجَاءَ مَعَهُ مَلَائِكَةٌ إِنَّمَا أَنْتَ نَذِيرٌ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ۝^٩
أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأَنُؤِ بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَتٍ ۖ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ تُصِدِّقُونَ ۝^{١٠} فَإِنَّمَا يَسْتَجِيبُ أَلَكُمْ فَأَعْلَمُوا
أَنَّمَا أُنْزِلَ بِعِلْمِ اللَّهِ وَأَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ فَهَلْ أَنْتُمْ مُسْلِمُونَ ۝^{١١}

पारा 12

588

सूरह-11. हूद

कहीं ऐसा न हो कि तुम उस चीज़ का कुछ हिस्सा छोड़ दो जो तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) की गई है। और तुम इस बात पर दिलतंग हो कि वे कहते हैं कि उस पर कोई ख़जाना क्यों नहीं उतारा गया या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया। तुम तो सिर्फ़ डराने वाले हो और अल्लाह हर चीज़ का जिम्मेदार है। क्या वे कहते हैं कि पैग़म्बर ने इस किताब को गढ़ लिया है। कहो, तुम भी ऐसी ही दस सूरतें बना कर ले आओ और अल्लाह के सिवा जिसे बुला सको बुला लो, अगर तुम सच्चे हो। पस अगर वे तुम्हारा कहा पूरा न कर सकें तो जान लो कि यह अल्लाह के इल्म से उतरा है और यह कि उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, फिर क्या तुम हुक्म मानते हो। (12-14)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब शिर्क की तरदीद की और लोगों को तौहीद की तरफ बुलाया तो आपके मुखातबीन बिगड़ गए। इसकी वजह यह थी कि आपकी बातों से उनके उन बड़ों पर ज़द पड़ती थी जिनके दीन को उन्होंने इख़्तियार कर रखा था और जिनसे जुड़ाव पर वे फ़ख़ करते थे। सूरतेहाल यह थी कि कदीम अरबों के ये अकाबिर (बड़े) तारीख़ी तौर पर उनकी नज़र में बाअज़मत बने हुए थे, जबकि पैग़म्बरे इस्लाम के साथ अभी तारीख़ की अज़मतें शामिल नहीं हुई थीं। उस वक़्त आप लोगों को एक बेहैसियत इंसान के रूप में नज़र आते थे। अरब के लोग यह देखकर सख़्त बरहम (आक्रोशित) होते थे कि एक मामूली आदमी ऐसी बातें कह रहा है जिससे उनके अकाबिर व महापुरुष बेएतबार साबित हो रहे हैं।

ऐसी हालत में दाजी के जेहन में यह ख़याल आता है कि वह, कम से कम वक्ती तौर पर, तंकीदी अंदाज़ से परहेज करे और सिर्फ़ मुस्बत (सकारात्मक) तौर पर अपना पैग़ाम पेश करे। "शायद तुम 'वही' के कुछ हिस्से की तक्लीफ़ छोड़ दोगे।" से मुराद खुदाई 'वही' का यही तंकीदी हिस्सा है। मगर अल्लाह तआला को वज़ाहत मल्लूब है और तंकीद (आलोचना) के बग़ैर वज़ाहत मुमकिन नहीं। फिर अगर हक को पूरी तरह खोलने के नतीजे में लोग दाजी को मज़ाक और मुख़ालिफ़त का मौजूअ (विषय) बनाएं तो इससे घबराने की क्या ज़रूरत। मदऊ की तरफ से यह मुख़ालिफ़ाना रद्देअमल तो दरअस्त वह कीमत है जो किसी आदमी को बेआमेज़ (विशुद्ध) हक का दाजी बनने के लिए इस दुनिया में अदा करनी पड़ती है।

ख़ुदा के दाजी के बरहक होने का सबसे ज़्यादा यकीनी सुबूत उसका नाक़बिले तक्लीद (अद्वितीय) कलाम है। जो लोग पैग़म्बर को हकीर (तुच्छ) समझ रहे थे और यह यकीन करने के लिए तैयार न थे कि इस बज़ाहिर मामूली आदमी को वह सच्चाई मिली है जो उनके अकाबिर को भी नहीं मिली थी, उनसे कहा गया कि पैग़म्बर की सदाकत को इस मेयार पर न जांचो कि मादूदी एतबार से वह कैसा है। बल्कि इस हैसियत से देखो कि वह जिस कलाम के ज़रिए अपनी दावत पेश कर रहा है वह कलाम इतना अजीम है कि तुम और तुम्हारे तमाम अकाबिर मिलकर भी वैसा कलाम नहीं बना सकते। यह नाक़बिले तक्लीद इम्तियाज़ (विशिष्टता) इस बात का क़तई सुबूत है कि पैग़म्बर खुदा की तरफ से बोल रहा है। पैग़म्बर के बरसरे हक होने की इस वाज़ेह निशानी के बाद आख़िर लोगों को खुदा का हुक्मबर्दार बनने में किस चीज़ का इतिज़र है।

सूरह-11. हूद

589

पारा 12

مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيَاةَ الدُّنْيَا وَزِينَتَهَا نُوفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ﴿١٥﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ إِلَّا النَّارُ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا وَبِطِلٌ لَّهُمُ الْكُلُّ لَأَعْلَمُونَ ﴿١٦﴾

जो लोग दुनिया की जिंदगी और उसकी जीनत (वैभव) चाहते हैं, हम उनके आमाल का बदला दुनिया ही में दे देते हैं। और इसमें उनके साथ कोई कमी नहीं की जाती। यही लोग हैं जिनके लिए आखिरत में आग के सिवा कुछ नहीं है। उन्होंने दुनिया में जो कुछ बनाया था वह बर्बाद हुआ और खराब गया जो उन्होंने कमाया था। (15-16)

दीन की दो किस्में हैं। एक मिलावटी दीन, दूसरा बेआमेज दीन। मिलावटी दीन दरअसल दुनिया के ऊपर दीन का लेबल लगाने का दूसरा नाम है। वह दुनिया और दीन के दर्मियान मुसालेहत करने से वजूद में आता है। यही वजह है कि हर जमाने में ऐसा होता है कि मिलावटी दीन की बुनियाद पर बड़े-बड़े इदारे कायम होते हैं। मफ़दपरस्त लोग उसके जरिए दीन के नाम पर दुनिया हासिल कर लेते हैं।

बेआमेज (विशुद्ध) दीन का मामला इसके बिल्कुल बरअक्स है। बेआमेज दीन की दावत जब किसी माहिल में उठती है तो वह सिर्फ एक नजरी सच्चाई होती है। मआशी मफ़ददात और कयादती मसालेह (हित) उसके साथ जमा नहीं होते। ऐसी हालत में जो लोग मिलावटी दीन के नाम पर इज्जत और मक़म हासिल किए हुए हों उनके सामने जब बेआमेज दीन का दावत आती है तो वे सख्त ख़ौफ़ज़दा होते हैं। क्योंकि इसे इख़्तियार करने की सूरत में उन्हें नजर आता है कि तमाम दुनियावी चीज़ें उनसे छिन जाएंगी।

इस एतबार से किसी माहिल में बेआमेज दीन का दावत का उठना वहां एक नाजुक इन्तेहान का बरपा होना है। ऐसे वक़्त में जो लोग दुनिया की इज्जत और दुनिया के मफ़ददात को काबिले तरजीह समझें और बेआमेज दीन का साथ न दें उनकी सारी दौड़ धूप दुनिया के ख़ाने में चली जाती है। क्योंकि उन्होंने उस दीन का साथ दिया जिसमें उनके दुनियावी मफ़ददात (स्वार्थ) महफूज़ थे। और उस दीन का साथ न दिया जिसमें उन्हें अपने दुनियावी मफ़ददात छिनते हुए नजर आते थे। वे बजाहिर चाहे दीनी सरगर्मियों में मशगूल हों, असल मक्सूद के एतबार से वे दुनिया के हुसूल मे मशगूल होते हैं। जाहिर है कि ऐसी कोशिशों का आखिरत में कोई नतीजा मिलना मुमकिन नहीं।

उन्होंने अगरचे अपनी सरगर्मियों को दीन का नाम दे रखा था वे अपने कौमी मेलों के ऊपर जश्ने दीनी का बोर्ड लगाते थे। वे अपनी कौमी लड़ाइयों को मुक़द्दस जंग का नाम देते थे। वे अपनी कयादती नुमाइश को दीनी कॉन्फ़्रेंस कहते थे, वे अपने सियासी हंगामों को मजहब की इस्तेलाहत (शब्दावलियों) में बयान करते थे, वे अपने दुनियावी जब्बात के तहत धूम मचाते थे और उसे ख़ुदा और रसूल के साथ जोड़ते थे। मगर ये सारी तामीरात दुनिया की ज़मीन में थीं, वे आख़िरत की ज़मीन में नहीं थीं, इसलिए क़ियामत का ज़लज़ला उन्हें बिल्कुल बर्बाद कर देगा। अगली दुनिया में उनका कोई अंजाम उनके हिस्से में न आएगा।

पारा 12

590

सूरह-11. हूद

أَفَمَنْ كَانَ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّهِ وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهِ كُتِبَ مُوسَىٰ إِمَامًا وَرَحْمَةً ۚ أُولَٰئِكَ يُؤْمِنُونَ بِهِ ۚ وَمَنْ يَكْفُرْ بِهِ ۚ مِنَ الْأَخْرَابِ ۖ فَلَأَنَّا مُّوَعِدُهُ ۖ فَلَأَنَّا فِي مَرْيَةٍ ۖ مِّنْهُ ۚ إِنَّهُ الْحَقُّ مِن رَّبِّكَ ۚ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٧﴾

भला एक शख्स जो अपने रब की तरफ से एक दलील पर है, इसके बाद अल्लाह की तरफ से उसके लिए एक गवाह भी आ गया, और इससे पहले मूसा की किताब रहनुमा और रहमत की हैसियत से मौजूद थी, ऐसे ही लोग उस पर ईमान लाते हैं और जमाअतों में से जो कोई इसका इंकार करे तो उसके वादे की जगह आग है। पस तुम इसके बारे में किसी शक में न पड़ो। यह हक है तुम्हारे रब की तरफ से मगर अक्सर लोग नहीं मानते। (17)

पैगम्बरे इस्लाम ने अरब में तौहीद की दावत पेश की तो कुछ लोगों ने उसे माना और ज्यादा लोग इसके मुँक़िर हो गए। यही हर जमाने में हक की दावत के साथ होता रहा है।

ख़ुदा ने हर आदमी को फ़ितरते सही पर पैदा किया है। गिर्द व पेश की दुनिया में हर तरफ ऐसी निशानियाँ फैली हुई हैं जो अपने ख़ालिक का एलान करती हैं और इसी के साथ उसके तख़लीकी मंसूबे की तरफ इशारा कर रही हैं। फिर इंसानियत के बिल्कुल इन्तिदाई जमाने से ख़ुदा के रसूल आते रहे और ख़ुदा की बातें लोगों को बताते रहे। उन्हीं में से एक पैगम्बर हजरत मूसा अलैहिस्सलाम हैं। जिनकी लाई हुई किताब अब तक किसी न किसी शक़ल में मौजूद है। अब जो शख्स संजीदा हो और चीज़ों से सबक लेना जानता हो तो वह हक़ीक़त से इतना मानूस (भिन्न) होगा कि दाओ जब उसके सामने हक़ीक़त का एलान करेगा तो फौरन वह उसे पहचान लेगा। उसका दिल और उसका दिमाग़ हक के हक होने पर गवाही देंगे। वह आगे बढ़कर उसे इस तरह इख़्तियार कर लेगा जैसे वह उसके अपने दिल की आवाज़ हो।

मगर अक्सर लोगों का हाल यह होता है कि वे चीज़ों को बहुत ज्यादा संजीदगी के साथ नहीं देखते। वे सतही तमाशों और वक़्ती दिलचस्पियों में पड़कर अपना मिजाज बिगाड़ लेते हैं। ग़ैर मुतअल्लिक चीज़ों की मसरूफ़ियत उन्हें इसका मौअज़ नहीं देती कि वे दाओ और उसकी दावत पर ठहर कर सोचें। चुनांचे उनके सामने जब हक की बात आती है तो वे उसे पहचान नहीं पाते। वे अपने बिगड़े हुए मिजाज की बिना पर उसके मुँक़िर बल्कि मुख़ालिफ बन जाते हैं। ये वे लोग हैं जिन्होंने ख़ुदा की और ख़ुदा के तख़लीकी मंसूबे की नाक़दी की। उनके लिए आख़िरत में जहन्नम की आग के सिवा और कुछ नहीं।

इंसानी फ़ितरत, ज़मीन व आसमान के वाक़ेआत और पिछली आसमानी किताबें कुरआन के हक होने की गवाही दे रही हैं। इसके बाद अगर लोगों की अक्सरियत (बहुसंख्या) इसका इंकार करती है तो इसकी वजह मुँक़िरीन के अंदर तलाश की जाएगी न यह कि ख़ुद कुरआन के किताबे हक (दिव्य ग्रंथ) होने पर शक किया जाए।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ افْتَرَى عَلَى اللَّهِ كَذِبًا أُولَٰئِكَ يُعْرَضُونَ عَلَىٰ رَبِّهِمْ وَيَقُولُ الْأَشْقَاءُ هَٰؤُلَاءِ الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَىٰ رَبِّهِمْ أَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ ۝ الَّذِينَ يَصُدُّونَ عَنِ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَعُوقِبُونَ نَهَايَ عِوَجًا ۖ وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ ۝ أُولَٰئِكَ لَمْ يَكُونُوا مُعْجِزِينَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُ لَهُمْ مِّن دُونِ اللَّهِ مِن أَوْلِيَاءٍ يُلَاقُوا فِي أُولَٰئِكَ لَهُمُ الْعَذَابُ مَا كَانُوا يَسْتَطِيعُونَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوا يُبْصِرُونَ ۝ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ خَسِرُوا أَنفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ لَاجِرًا تَهُمُّ فِي الْآخِرَةِ هُمْ الْخَاسِرُونَ ۝

और उससे बढ़कर जालिम कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े। ऐसे लोग अपने रब के सामने पेश होंगे और गवाही देने वाले कहेंगे कि ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूठ गढ़ा था। सुनो, अल्लाह की लानत है जालिमों के ऊपर। उन लोगों के ऊपर जो अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोकते हैं और उसमें कजी (टढ़) ढूंढते हैं। यही लोग आखिरत के मुंकिर हैं। वे लोग जमीन में अल्लाह को बेवस करने वाले नहीं और न अल्लाह के सिवा उनका कोई मददगार है, उन पर दोहरा अजाब होगा। वे न सुन सकते थे और न देखते थे। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला। और वे सब कुछ उनसे खोया गया जो उन्होंने गढ़ रखा था। इसमें शक नहीं कि यही लोग आखिरत (परलोक) में सबसे ज्यादा घाटे में रहेंगे। (18-22)

‘खुदा पर झूठ गढ़ने’ से मुराद खुदा की जात पर झूठ गढ़ना नहीं है। इससे मुराद खुदा की बात पर झूठ गढ़ना है। खुदा अपना पैगाम सुनाने के लिए खुद सामने नहीं आता बल्कि एक इंसान की जवान से इसका एलान कराता है। यह इंसान उस वक्त बजाहिर एक मामूली इंसान होता है, मगर उसके कलाम में खुदा की वाजेह झलकियां होती हैं। अगर लोग उसे उसके कलाम के एतबार से देखें तो वे उसकी अज्मतों में खुदा को पा लें। मगर लोगों की सतहियत और जाहिरपरस्ती का नतीजा यह होता है कि उनकी निगाहें सुनाने वाले की मामूली हैसियत में अटक कर रह जाती हैं। पैगम्बर का मामूली होना उन्हें नजर आता है मगर पैगाम का गैर मामूली होना उन्हें दिखाई नहीं देता। चुनांचे वे उसे एक आम इंसान का मामला समझ कर उसका मजाक उड़ते हैं। उसकी बात में झूठे एतराजात निकालते हैं। और उसे इस तरह नजरअंदाज कर देते हैं जैसे कि इसकी कोई अहमियत ही नहीं।

इस जालिमाना रवैये की अस्ल वजह बेखौफी की नपिस्यात है। लोगों को आखिरत पर यकीन नहीं। उनके दिलों में खुदाए क़ह्हार व जब्बार का खौफ नहीं। इसलिए वे इस पैगाम के

बारे में संजीदा नहीं हो पाते। और जिस मामले में आदमी संजीदा न हो वह उसके मुतअल्लिक सही रद्देअमल पेश करने में हमेशा नाकाम रहेगा।

मगर लोगों की यह गैर संजीदगी उस वक्त रुख्त हो जाएगी जब वे कियामत में मालिके कायनात के सामने खड़े होंगे। उस वक्त उनकी मौजूदा आजादी उनसे छिन चुकी होगी। जिन असबाब व वसाइल के भरोसे पर वे सरकश बने हुए थे वे खुदा का टेपरिकॉर्ड बनकर उनके खिलाफ गवाही देने लगेंगे। उस वक्त यह सुस्पष्ट हो जाएगा कि खुदा के दाओ (आह्वानकर्ता) को जो उन्होंने झुठलाया तो इसकी वजह यह नहीं थी कि वे उसे समझने से आजिज थे। इसकी वजह यह थी कि वे उसके बारे में संजीदा न थे। कियामत की हैलनाकी अचानक उन्हें संजीदा बना देगी। उस वक्त अपनी बेबसी के माहौल में वे उस बात को पूरी तरफ समझ लेंगे जिसे दुनिया में अपनी आजादी के माहौल में समझ नहीं पाते थे।

अल्लाह ने इंसान को ऐसी आला सलाहियतें दी हैं कि अगर वह उन्हें इस्तेमाल करे तो वह हर बात को उसकी गहराई तक समझ सकता है। और अपने दुनियावी मामलात में वाकैयतन वह ऐसा ही साबित होता है। मगर आखिरत के मामले में आदमी का हाल यह है कि वह कान रखते हुए बहरा बन जाता है और आंख रखते हुए अंधेपन का सुबूत देता है।

आदमी की कामयाबी उसकी संजीदगी (Sincerity) की कीमत है। जो लोग दुनिया के मामले में संजीदा हों वे दुनिया में कामयाब रहते हैं। इसी तरह जो लोग आखिरत के मामले में संजीदा हों वे आखिरत में कामयाब रहेंगे।

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَآخَبَتُوا إِلَىٰ رَبِّهِمْ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَنَّةِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝ مَثَلُ الْفَرِيقَيْنِ كَالْأَعْمَىٰ وَالْأَبْصِرِ وَالْبَصِيرُ وَالسَّوْمِ ۖ هَلْ يَسْتَوِينَ مَثَلًا ۖ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ۝

जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए और अपने रब के सामने आजिजी (समर्पण) की वही लोग जन्नत वाले हैं। वे उसमें हमेशा रहेंगे। इन दोनों फरीकों (पक्षों) की मिसाल ऐसी है जैसे एक अंधा और बहरा हो और दूसरा देखने और सुनने वाला। क्या ये दोनों यकसां (समान) हो जाएंगे। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। (23-24)

इब्बात के मअना हैं आजिजी करना (समर्पण भाव से झुकना)। यही ईमान का खुलासा है। ईमान न कोई विरासत है और न किसी लफ्जी मज्मूअे की ज़बानी अदायगी। ईमान एक दरयाप्त (खोज) है। आदमी जब अपने देखने-सुनने (दूसरे शब्दों में शुऊर) को इस्तेमाल करके खुदा को पाता है और इसके मुकाबले में अपनी हैसियत का इदराक (भान) करता है तो उस वक्त उसके ऊपर जो कैफ़ियत तरी होती है उसी का नाम इज्ज (इब्बात) है। इज्ज खुदा के मुक़बले में अपनी हैसियत वाकई की पहचान का लाजिमी नतीजा है।

ईमान, इब्बात और अमले सालेह (सत्कर्म) तीनों एक ही हक्कीकत के मुख़ालिफ पहलू हैं। ईमान खुदा के वजूद और उसकी सिफाते कमाल की शुऊरी दरयाप्त है। इब्बात उस कत्बी

हालत का नाम है जो खुदा की दरयाफ्त के नतीजे में लाजिमन आदमी के अंदर पैदा होती है। अमले सालेह उसी शुऊर और उसी कैफियत से पैदा होने वाली ख़ाजगी (वाह्य) सूरत है। आदमी जब खुदा के जेहन से सोचता है। जब उसका दिल खुदाई कैफियतों से भर जाता है तो उस वक़्त उसके ऐन फ़ित्ती नतीजे के तौर पर उसकी जाहिरी ख़ुदाई अमल में ढल जाती है। इसी का नाम अमले सालेह है। जो शख्स ईमान, इख़्वात और अमले सालेह का पैकर बन जाए वही खुदा का मल्लूब इंसान है। और वही वह इंसान है जिसे जन्नत के अबदी (चिरस्थायी) बाग़ों में बसाया जाएगा।

दुनिया में आलातरीन इस्तेहानी हालात पैदा करके यह दिखाया जा रहा है कि कौन अपने आपको क्या साबित करता है। एक गिरोह वह है जिसने अपने समअ व बसर (शुऊर) को सही तौर पर इस्तेमाल करके हकीकते वाक्या को जाना और अपने आपको उसके मुताबिक ढाल लिया। ये देखने और सुनने वाले लोग हैं। दूसरा गिरोह वह है जिसने अपने समअ व बसर (सुनने-देखने) को सही तौर पर इस्तेमाल नहीं किया। उसे न हकीकते वाक्या की मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) हासिल हुई और न वह अपने आपको उसके मुताबिक ढाल सका। ये अधे और बहरे लोग हैं। जाहिर है कि ये दोनों बिल्कुल मुख़लिफ़ किस्म के इंसान हैं। और दो मुख़लिफ़ इंसानों का अंजाम एक जैसा नहीं हो सकता।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا إِلَىٰ قَوْمِهِ إِذْ يٰۤاَيُّهَا قَوْمُيْ ۖ اِنِّىۤ اَنْزَلْتُ لَكُمْ نَذِيرًا مُّبِينًا ۚ اَنْ لَا تَعْبُدُوا الْاِلٰهَ اِلَّا اِنِّىۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمِ الرِّيمِ ۝ فَقَالَ الْبَلٰٓءُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهِ مَا نَزَّلَكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَزَّلَكَ اَتَّبِعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَادُوْا لَنَا بِاَدٰى الرَّاِىِّ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ بَلْ نَظُنُّكُمْ كَاذِبِيْنَ ۝

और हमने नूह को उसकी कौम की तरफ भेजा कि मैं तुम्हें खुला हुआ डराने वाला हूँ। यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो। मैं तुम पर एक दर्दनाक अजाब के दिन का अदेशा रखता हूँ। उसकी कौम के सरदारों ने कहा, जिन्होंने इंकार किया था कि हम तो तुम्हें बस अपने जैसा एक आदमी देखते हैं। और हम नहीं देखते कि कोई तुम्हारे ताबेअ हुआ हो सिवाए उनके जो हम में पस्त लोग हैं, बेसमझे बूझे। और हम नहीं देखते कि तुम्हें हमारे ऊपर कुछ बड़ाई हासिल हो, बल्कि हम तो तुम्हें झूठा ख्याल करते हैं। (25-27)

खुदा के जितने पैगम्बर आए, इसीलिए आए कि वे इंसान को खुदा के तख़्कीकी मंसूबे से आगाह करें। यह मंसूबा कि इंसान मौजूदा दुनिया में इस्तेहान की गरज से रखा गया है। यहां अगरचे बजहिर मुख़लिफ़ चीजों की इबादत के मैके हैं। मगर अस्त मल्लूब सिर्फ यह है कि इंसान खुदा का आविद बने। जो लोग खुदा के आविद (पूजक) न बनें वे इस्तेहान में

नाकाम हो गए। ऐसे लोगों के लिए मरने के बाद की ज़िंदगी में सख़्त अजाब है। हज़रत नूह ने अपनी कौम के लोगों से यही बात कही। वह उसके लिए नज़ीरे मुबीन (खुले हुए डराने वाले) बन गए। मगर आपकी कौम ने आपकी बात नहीं मानी।

इसकी वजह लोगों की जाहिरपरस्ती थी। इंसान की गुमराही की नज़रियाती तौर पर बहुत सी किस्में हैं। मगर हकीकत के एतबार से हर दौर के इंसानों की गुमराही सिर्फ एक रही है। और वह है जाहिरपरस्ती या दुनियापसंदी। दुनियापरस्त लोग, ऐन अपने मिजाज के मुताबिक, दुनियावी चीजों को हक और नाहक का मेयार समझते हैं। वे शुऊरी या ग़ैर शुऊरी तौर पर यह फर्ज़ कर लेते हैं कि जिसके पास जाहिरी रैनकें हैं वह हक पर है और जो दुनिया की रैनकें से महरूम हो वह नाहक पर।

खुदा का दाओ (आह्वानकर्ता) जब उठता है तो अपने हमअम्नों (समकालीन) को वह सिर्फ इंसानों में से एक इंसान नजर आता है। दुनियावी एतबार से उसके गिर्द व पेश बड़ाई का कोई खुसूसी निशान नहीं होता। दूसरी तरफ यह होता है कि वह जिस दिन का अलमबरदार होता है उसके साथ चूँकि अभी तक दुनियावी फ़ायदे वाबस्ता नहीं होते, इसलिए उसकी तरफ बढ़ने वाले ज्यादा वे तहीदस्त (साधनहीन) लोग होते हैं जिन्हें एक 'नए दिन' को इख़्तियार करने के नतीजे में कुछ खोना न पड़े। यह सूरतेहाल ख़ालिस तौर पर, वक़्त के बड़ों के लिए, फ़ित्ता बन जाती है। वे समझ लेते हैं कि जब दुनिया उनके साथ नहीं है तो हक भी उनके साथ नहीं हो सकता। यहां तक कि कौम में ऐसे लोग भी निकलते हैं जो उन्हें झूठा और धोखेबाज कहने से भी दरेग न करें।

قَالَ يَقَوْمِ اَرَاَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلَىٰ بَيْتَةٍ مِّن رَّبِّيۤ وَاشْتَنِىٰ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُبَيْتُ عَلَيْكُمْ اَنْ لِّرْمُكُمُوهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كَرِهُوْنَ ۝ وَيَقَوْمِ لَا تَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَا لَكُمۡ اِنْ اَجْرٰى اِلَّا عَلَىٰ اللّٰهِ وَمَا اَنَاۡ بِطَارِدٍ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا اَلَيْسَ لَهُمۡ ثَلٰٓغُوۡا رَبِّيۡهِمْ وَلَكِنِّىۤ اَرَاَكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝ وَيَقَوْمِ مِّنْ يُّنْصَرُنِىۤ مِنَ اللّٰهِ اِنْ طَرَدْتُّهُمْ اَفَلَا تَذْكُرُوْنَ ۝ وَلَا اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِىۤ خَزَاۡئِنُ اللّٰهِ وَلَا اَعْلَمُ الْغَيْبِ وَلَا اَقُوْلُ اِنِّىۤ مَلَكٌۭ ۚ وَلَا اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِىۡۤ اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۗ اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا فِىۡۤ اَنْفُسِهِمْ ۚ اِنِّىۤ اِذْ لِّىۤنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝

नूह ने कहा ऐ मेरी कौम, बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ से एक रोशन दलील पर हूँ और उसने मुझ पर अपने पास से रहमत भेजी है, मगर वह तुम्हें नजर न आई तो क्या हम उसे तुम पर चिपका सकते हैं जबकि तुम उससे बेजार (खिन्) हो। और ऐ मेरी कौम, मैं उस पर तुमसे कुछ माल नहीं मांगता। मेरा अज़्र (प्रतिफल) तो बस

सूरह-11. हूद

595

पारा 12

अल्लाह के जिम्मे है और मैं हरगिज उन्हें अपने से दूर करने वाला नहीं जो ईमान लाए हैं। उन लोगों को अपने रब से मिलना है। मगर मैं देखता हूँ तुम लोग जहालत में मुक्तिला हो। और ऐ मेरी कौम, अगर मैं उन लोगों को धुत्कार दूँ तो खुदा के मुकाबले में कौन मेरी मदद करेगा। क्या तुम ग़ौर नहीं करते। और मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़जाने हैं। और न मैं ग़ैब की ख़बर रखता हूँ। और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और मैं यह भी नहीं कह सकता कि जो लोग तुम्हारी निगाहों में हकीर (तुच्छ) हैं उन्हें अल्लाह कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ उनके दिलों में है। अगर मैं ऐसा कहूँ तो मैं ही ज़ालिम हूँगा। (28-31)

यहां 'बय्यिनह' से मुराद दलील है और रहमत से मुराद नुबुव्वत है। (तफ़सीर नसफ़ी) इससे मालूम हुआ कि पैग़म्बर जब किसी कौम को दावत देता है तो वह दो चीज़ों के ऊपर खड़ा होता है। दलील और नुबुव्वत। पैग़म्बर के बाद कोई दाओ (आह्वानकर्ता) भी उसी वक़्त दाओ है जबकि वह इन्हीं दो चीज़ों पर खड़ा हो। इस फ़र्क के साथ कि दलील के बाद दूसरी चीज़ जो उसके पास होगी वह बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर पैग़म्बर से मिली हुई होगी। जबकि पैग़म्बर के पास वह बराहिरास्त (प्रत्यक्ष) खुदा की तरफ से आई है।

कौम जिस वक़्त खुदा के दाओ को यह समझ कर नज़रअंदाज़ कर देती है कि उसके यहां ज़हिरी एतबार से कोई क़ाबिले लिहाज़ चीज़ नहीं, ऐम उसी वक़्त उसके पास एक बहुत बड़ी क़ाबिले लिहाज़ चीज़ मौजूद होती है। और वह दलील और हिदायत है। दलील और हिदायत की बड़ाई क़ामिल तौर पर खुदा के दाओ के पास मौजूद होती है। मगर यह बहरहाल मअनवी (अर्थपूर्ण) बड़ाई है। और जिन लोगों की निगाहें ज़ाहिरी चीज़ों में अटक गई हों उन्हें मअनवी बड़ाई क़्योंकर दिखाई देगी।

दावते इल्लल्लाह का काम ख़ालिस उख़रवी (परलोकवादी) काम है। उसकी सही कारक़र्दगी के लिए ज़रूरी है कि दाओ और मदद के दर्मियान ज़र और ज़मीन के झगड़े न हों। यह जिम्मेदारी खुद दाओ को लेनी पड़ती है कि उसके और मदद के दर्मियान मोअतदिल (अनुकूल) फज़ा हो। और इसकी ख़ातिर वह हर किस्म के मादूदी और मआशी (आर्थिक) झगड़े एकतरफ़ा तौर पर ख़त्म कर दे। जिस दाओ का यह हाल हो कि वह एक तरफ़ दावत दे और दूसरी तरफ़ मदद से दुनियावी चीज़ों के लिए एहतज़ाज़ (प्रोटेस्ट) और मुतालबा भी कर रहा हो, वह दाओ नहीं, मसख़रह है। उसकी कोई कीमत न मदद की नज़र में हो सकती है और न खुदा की नज़र में।

मदद का इस्तेहान यह है कि वह बज़ाहिर एक बेअज़मत इंसान के अंदर हक़ की अज़मत को देख ले। इसी तरह दाओ का इस्तेहान यह है कि वह किसी बेदीन का इसलिए इस्तक़वाल न करने लगे कि वह माल व जाह का मालिक है। और किसी दीनदार को इसलिए नाक़ाबिले लिहाज़ न समझ ले कि उसके पास दुनियावी शान व शौकत की चीज़ें मौजूद नहीं। दाओ अगर ऐसा करे तो इसका मतलब यह होगा कि वह ज़बान से आख़िरत (परलोक) की अहमियत का वज़ा (प्रवचन) कह रहा है और अमल से दुनिया की अहमियत का सुबूत दे रहा है। ज़ाहिर है कि यह अपनी तरदीद (खंडन) अपने आप है। और जो शख्स अपनी तरदीद अपने आप करे उसकी बात की दूसरों की नज़र में क्या कीमत हो सकती है।

पारा 12

596

सूरह-11. हूद

قَالُوا يَنْبَغُ لَكَ أَنْ يَكُونَ لَكَ إِتْمَانٌ بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۚ قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيكُمْ بِهِ اللّٰهُ إِنْ شَاءَ وَمَا أَنتُمْ بِمُعْجِزِينَ ۚ وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِي إِنْ أَرَدْتُ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيدُ أَنْ يُغْوِيَكُمْ هُوَ رَبُّكُمْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ۝

उन्होंने कहा कि ऐ नूह तुमने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा कर लिया। और वह चीज़ ले आओ जिसका तुम हमसे वादा करते रहे हो, अगर तुम सच्चे हो। नूह ने कहा उसे तो तुम्हारे ऊपर अल्लाह ही लाएगा अगर वह चाहेगा और तुम उसके काबू से बाहर न जा सकोगे। और मेरी नसीहत तुम्हें फायदा नहीं देगी अगर मैं तुम्हें नसीहत करना चाहूँ जबकि अल्लाह यह चाहता हो कि वह तुम्हें गुमराह करे। वही तुम्हारा रब है और उसी की तरफ तुम्हें लौट कर जाना है। (32-34)

हज़रत नूह ने अपनी कौम से ज़िदाल (झगड़ा और बहस) नहीं किया था। वह संजीदा अंदाज़ में अपना सालेह पैग़ाम उनके सामने पेश कर रहे थे। मगर आपकी संजीदा दावत आपकी कौम को उल्टी सूरत में नज़र आ रही थी। इसकी वजह इंसान की यह कमजोरी है कि जब उसकी अपनी जात ज़द (निशाने) में आ रही हो तो वह संजीदगी खो देता है। ऐसी बात को वह दलील और सुबूत के एतबार से नहीं देखता। वह बग़ैर सोचे समझे उसे रद्द कर देता है। हक के दाओ की ओस दलील भी उसे बहस व ज़िदाल मालूम होने लगती है।

‘बहुत ज़िदाल कर चुके’ का जुमला दरअस्त यह बताने के लिए नहीं है कि नूह ने क्या कहा था। बल्कि वह इसे बताता है कि सुनने वालों ने आपकी बात को क्या दर्ज़ा दिया था।

इसी तरह मुख़लिफ़ीने नूह का अज़ब को तलब करना हकीक़तन अज़ब को तलब करना नहीं था। बल्कि हज़रत नूह का मज़ाक उड़ाना था कि देखो यह शख्स ऐसी बात कह रहा है जो कभी होने वाली नहीं। वे अपनी पोजीशन को इतना मुस्तहक़म (सुदृढ़) समझते थे जिसमें उनके ख़याल के मुताबिक कहीं से अज़ाब आने की गुंजाइश न थी। इसी ज़ेहन के तहत उन्होंने कहा कि हमारे इंकार की सज़ा में जिस अज़ाब की तुम ख़बर देते रहे हो वह अज़ाब लाओ। और चूँकि उनके नज़दीक ऐसा अज़ाब कभी आने वाला न था इसलिए तार्किक रूप से इसका मतलब यह था कि हम हक पर हैं और तुम नाहक पर।

हज़रत नूह ने जवाब दिया कि तुम मामले को मेरी निस्वत से देख रहे हो और चूँकि मैं कमजोर हूँ इसलिए तुम्हारी समझ में नहीं आता कि यह अज़ाब कभी तुम्हारे ऊपर आ सकता है। अगर मामले को खुदा की निस्वत से देखते तो तुम यह न कहते। क़्योंकि फिर तुम्हें नज़र आ जाता कि इस दुनिया में ज़ालिमों के लिए अज़ाब का आना इतना ही यकीनी है जितना सूरज का निकलना और जलजले का फटना।

हक के दाओ की बात को मानने का तमामतर इहिसार इस पर है कि सुनने वाला उसे कहने वाले के एतबार से न देखे बल्कि जो कहा गया है उसके एतबार से देखे। चूँकि हज़रत नूह की

कौम आपकी बात को बस एक आम इंसान की बात समझ रही थी, इसलिए आपने फरमाया कि इस ज़ेहन के तहत तुम मेरी बात की कद्र व कीमत कभी नहीं पा सकते। अब तो तुम्हारे लिए उसी दिन का इंतजार करना है जबकि खुदा बराहेरास्त तुम्हारे सामने आ जाए।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَيْنَاهُ قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَعَلَىٰ إِجْرَائِي وَإِنَّا بِرَبِّي لَمُبَشِّرُونَ
تَجْرُمُونَ

क्या वे कहते हैं कि पैगम्बर ने उसे गढ़ लिया है। कहो कि अगर मैंने इसको गढ़ा है तो मेरा जुर्म मेरे ऊपर है और जो जुर्म तुम कर रहे हो उससे मैं बरी हूँ। (35)

जो लोग कहते थे कि पैगम्बर ने यह कलाम खुद गढ़ लिया है, यह खुदा की तरफ से नहीं है, वे 'वही' (ईश्वरीय वाणी) व इल्हाम (दिव्य प्रकाशना) के मुंकिर न थे। यहां तक कि वे माजी (अतीत) के रसूलों को मानते थे। फिर उन्होंने ऐसा क्यों कहा। यह दरअस्त 'वही' का इंकार नहीं था। बल्कि साहिबे 'वही' का इंकार था। जो शख्स खुदा की तरफ से बोल रहा था वह देखने में उन्हें एक मामूली इंसान दिखाई देता था। उनका जाहिरपरस्त मिजाज समझ नहीं पाता था कि ऐसा एक आदमी वह शख्स कैसे हो सकता है जिसे खुदा ने अपने पैगाम की पैगाम्बरी (संदेश वाहन) के लिए चुना हो।

'मेरा जुर्म मेरे ऊपर, तुम्हारा जुर्म तुम्हारे ऊपर' यह दरअस्त कलिमए रुख़्त है। जब मुखातब दलील से बात को नहीं मानता। हर किसम की वजाहत के बावजूद वह इंकार पर तुला हुआ है तो दाजी महसूस करता है कि उसके लिए अब आखिरी चाराएकार सिर्फ यह है कि वह यह कहकर खामोश हो जाए कि मैं और तुम दोनों असली हाकिम के सामने पेश होने वाले हैं। वहां हर एक का हाल खुल जाएगा। और हर आदमी अपनी हकीकत के एतबार से जैसा था उसके मुताबिक उसे बदला दिया जाएगा। जब दलील की हद खत्म हो जाए तो दाजी (आख्यानकर्ता) के लिए इसके सिवा कोई सूरत बाकी नहीं रहती कि वह यकीन की जवान में कलाम करके अलग हो जाए।

وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَن قَدْ آمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَكَانُوا يَفْعَلُونَ ۖ وَاصْنَعْ الْفُلَكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطَبُنِي فِي الْكَافِرِينَ ۚ ظَلَمُوا ۚ إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ۚ وَيَصْنَعْ الْفُلَكَ ۚ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ نَلَأَ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۚ قَالَ إِن تَسْخَرُوا مِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُونَ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ ۚ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيمٌ ۚ

और नूह की तरफ 'वही' (प्रकाशना) की गई कि अब तुम्हारी कौम में से कोई ईमान नहीं लाएगा सिवा उसके जो ईमान ला चुका। पस तुम उन कामों पर ग़मगीन न हो जो वे कर रहे हैं। और हमारे रूबरू और हमारे हुक्म से तुम कश्ती बनाओ और जालिमों के हक में मुझसे बात न करो, बेशक ये लोग गर्क होंगे। और नूह कश्ती बनाने लगा। और जब उसकी कौम का कोई सरदार उस पर गुजरता तो वह उसकी हंसी उड़ाता, उन्होंने कहा अगर तुम हम पर हंसते हो तो हम भी तुम पर हंस रहे हैं। तुम जल्द जान लो कि वे कौन हैं जिन पर वह अजाब आता है जो उसे रुसवा कर दे और उस पर वह अजाब उतरता है जो दाइमी है। (36-39)

इंसान से जो ईमान मलूब है वह ईमान वह है जबकि आदमी शुऊरी तौर पर अपने आजादना फैसले से ईमान कुबूल करे। पैगम्बर के लंबे दावती अमल के बावजूद जो लोग ईमान न लाएं वे ऐसा करके यह साबित करते हैं कि वे आजादना फैसले के तहत खुदा के मोमिन बनने के लिए तैयार नहीं हैं। ऐसे लोगों के लिए दूसरा मरहला यह होता है कि उनकी आजादी छीन ली जाए और उन्हें ले जाकर बराहेरास्त खुदाए जुलजलाल (प्रतापी प्रभु) के सामने खड़ा कर दिया जाए ताकि जिस चीज को उन्होंने मोमिनाना इकरार नहीं किया था, उसका वे मुजरिमाना इकरार करें और अपनी सरकशी की सजा भुगतें।

हजरत नूह की सैंकड़ों साल की तब्दीग के बाद उनकी कौम के लिए यह वक्त आ गया था। इसके बाद हजरत नूह से कह दिया गया कि अब तब्दीग के काम से फारिग होकर कश्ती तैयार करो ताकि जब सरकशों को गर्क करने के लिए खुदा का सैलाब आए तो उस वक्त तुम और तुम्हारे साथी अहले ईमान उसमें पनाह ले सकें।

हजरत नूह ने एक बहुत बड़ी तीन मंजिला कश्ती तैयार की। उसे बनाने में कई साल लग गए। जिस जमाने में हजरत नूह अपने चन्द साथियों को लेकर कश्ती बना रहे थे तो कौम के सरकश लोग आते जाते हुए उसे देखते। चूँकि वे लोग अजाब की बात को महज फर्जी समझ रहे थे इसलिए जब उन्होंने देखा कि आने वाले मफ़रूजा (काल्पनिक) अजाब से बचने के लिए कश्ती भी तैयार की जा रही है तो वे हजरत नूह का और भी ज्यादा मजाक उड़ाने लगे।

एक आदमी सरकशी और नाइंसाफी के जरिए दौलत समेट रहा हो तो जाहिरपरस्त आदमी उसके गिर्द दुनिया का साजोसामान देखकर उसे कामयाब समझ लेगा। मगर जो शख्स जानता हो कि दुनिया का निजाम अज़्बाकी कानूनों पर चल रहा है, वह मचकूरा (उक्त) शख्स की कस्ती कामयाबी में मुक्तकबिल की अजीम तबाही का मंजर देख रहा होगा। नूह की कौम के जाहिरपरस्त लोग अगरचे हजरत नूह का मजाक उड़ा रहे थे मगर हकीकते बाक़िया की नजर में खुद उनका मजाक उड़ा रहा था।

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ امْرَأَتَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۖ قُلْنَا احْمِلِي فِيهِمَا مِنْ كُلِّ رَوْحَيْنِ ائْتَيْنِ ۚ وَاهْلَاكِ إِلَّا مَن سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ ۚ وَمَا آمَنَ مَعَهُ

الْأَقْلِيلُ ۝ وَقَالَ اذْكُبُوا فِيهَا بِسْمِ اللَّهِ حَجَّ رَبِّهَا وَمُرْسَاهَا إِنَّ رَبِّي لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ وَهِيَ تَجْرِي بِهِمْ فِي مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۝ وَنَادَى نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يَبْنَىٰ اِرْكَبَ مَعَنَا وَلَا تَكُنْ مَعَ الْكَافِرِينَ ۝ قَالَ سَأُوۡىٰٓ إِلَىٰ جَبَلٍ يَعْصِمُنِي مِنَ الْمَاءِ ۝ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ اٰمَنَ ۝ رَحِمَهُ ۝ وَحَالٌ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِينَ ۝ وَقِيلَ يَا اَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكِ وَيَسْبَأْ اَقْلَعِي وَغِيضَ الْمَاءِ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَالسُّوۡتُ عَلَىٰ الْجُودَىٰ ۝ وَقِيلَ بُعِدَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝

यहां तक कि जब हमारा हुक्म आ पहुंचा और तूफान उबल पड़ा हमने नूह से कहा कि हर किस्म के जानवरों का एक-एक जोड़ा कश्ती में रख लो और अपने घर वालों को भी, सिवा उन लोगों के जिनकी बाबत पहले कहा जा चुका है और सब ईमान वालों को भी। और थोड़े ही लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाए थे। और नूह ने कहा कि कश्ती में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से इसका चलना है और इसका ठहरना भी। बेशक मेरा रब बरख़शने वाला महरबान है। और कश्ती पहाड़ जैसी मौजों के दर्मियान उन्हें लेकर चलने लगी। और नूह ने अपने बेटे को पुकारा जो उससे अलग था। ऐ मेरे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा और मुंकिरों के साथ मत रह। उसने कहा मैं किसी पहाड़ की पनाह ले लूंगा जो मुझे पानी से बचा लेगा। नूह ने कहा कि आज कोई अल्लाह के हुक्म से बचाने वाला नहीं मगर वह जिस पर अल्लाह रहम करे। और दोनों के दर्मियान मौज हायल (बाधित) हो गई और वह डूबने वालों में शामिल हो गया। और कहा गया कि ऐ जमीन, अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान थम जा। और पानी सुखा दिया गया। और मामले का फैसला हो गया और कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई और कह दिया गया कि दूर हो जालिमों की क़ौम। (40-44)

जब कश्ती बनकर तैयार हो गई तो खुदा के हुक्म से तूफानी हवाएं चलने लगीं। जमीन से पानी के दहाने फूट पड़े। ऊपर से मुसलसल बारिश होने लगी। यहां तक कि हर तरफ पानी ही पानी हो गया। तमाम लोग उसमें डूब गए। सिर्फ वे चन्द इंसान और कुछ मवेशी बचे जो हजरत नूह की कश्ती में सवार थे। यहां तक कि हजरत नूह का बेटा भी ग़र्क हो गया। खुदा की नजर में किसी की कीमत उसके अमल के एतबार से है न कि रिश्ते के एतबार से, चाहे वह रिश्ता पैगम्बर का क्यों न हो।

जब तमाम डूबने वाले डूब चुके तो खुदा ने हुक्म दिया कि तूफान थम जाए, और तूफान थम गया। पानी समुद्रों और दरियाओं में चला गया और जमीन दुबारा रहने के काबिल हो गई।

तूफाने नूह के मौके पर देखने वालों ने यह मंजर देखा कि ऊँचे पहाड़ पर चढ़ने वाले डूब गए और हौलनाक मौजों के बावजूद कश्ती में बैठने वाले सलामत रहे। इसकी वजह खुद पहाड़ में या कश्ती में न थी। इसकी वजह यह थी कि यह हुक्म खुदावंदी का मामला था। हुक्म खुदावंदी अगर पहाड़ के साथ होता तो पहाड़ अपने चढ़ने वालों को बचाता और कश्ती का सहारा लेने वाले हलाक हो जाते। मगर इस मौके पर हुक्म खुदावंदी कश्ती के साथ था। इसलिए कश्ती वाले महफूज रहे और दूसरी चीजों की पनाह लेने वाले ग़र्क हो गए।

दुनिया में असबाब का निजाम महज एक पर्दा है। वर्ना यहां जो कुछ हो रहा है बराहिरास्त (प्रत्यक्षतः) खुदा के हुक्म से हो रहा है। इंसान का इम्तेहान यह है कि वह जाहिरी पर्दे से गुजर कर अस्ल हकीकत को देख ले। वह असबाब के अंदर खुदाई ताकतों को काम करता हुआ पा ले।

و نَادَىٰ نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ ۝ قَالَ يُنُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْأَلُنِي مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ ۖ إِنِّي أَعْطُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ۝ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ ۖ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُنْ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

और नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे रब, मेरा बेटा मेरे घर वालों में है, और बेशक तेरा वादा सच्चा है। और तू सबसे बड़ा हाकिम है। खुदा ने कहा ऐ नूह, वह तेरे घर वालों में नहीं। उसके काम ख़राब हैं। पस मुझसे उस चीज के बारे में सवाल न करो जिसका तुम्हें इल्म नहीं। मैं तुम्हें नसीहत करता हूं कि तुम जाहिलों में से न बनो। नूह ने कहा कि ऐ मेरे रब, मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझसे वह चीज मांगूं जिसका मुझे इल्म नहीं। और अगर तू मुझे माफ न करे और मुझ पर रहम न फरमाए तो मैं बर्बाद हो जाऊंगा। (45-47)

तूफाने नूह में जो लोग ग़र्क हुए उनमें खुदा हजरत नूह का बेटा कंआन भी था। हजरत नूह ने उसे अपनी कश्ती में बिठाना चाहा। मगर उसके लिए डूबना मुकद्दर था इसलिए वह नहीं बैठा। फिर उन्होंने उसके बचाव के लिए खुदा से दुआ की तो जवाब मिला कि यह नादानी का सवाल है, ऐसे सवालात न करो।

अस्ल यह है कि खुदा का फैसला इस बुनियाद पर नहीं होता कि जो लोग बुजुर्गों की औलाद हैं। या जो किसी हजरत का दामन थामे हुए हैं उन सबको नजातयाप्ता (मुक्ति-प्राप्त) करार देकर जन्तों में दाखिल कर दिया जाए। खुदा के यहां नजात का फैसला ख़ालिस अमल

की बुनियाद पर होता है न कि नसबी या गिरोही तअल्लुक की बुनियादों पर।

दुनिया में अगर नसबी रिश्ते का एतबार है तो आखिरत में अख़लाकी रिश्ते का एतबार। तूफ़ान नूह इसीलिए आया था कि इंसानों के दर्मियान दूसरी तमाम तक्सीमात को तोड़कर अख़लाकी तक्सीम कायम कर दे। जो अमले सालेह वाले लोग हैं उन्हें खुदाई कश्ती में बिठा कर बचा लिया जाए और ग़ैर अमले सालेह वाले तमाम लोगों को तूफ़ान की बेरहम मौजों के हवाले कर दिया जाए। यही वाक्या दुबारा क्रियामत में ज्यादा बड़े पैमाने पर और ज्यादा कामिल तौर पर होगा।

قِيلَ يٰنُوْحُ اٰمُرْ اٰهْلَكَ بِالسَّلَامَةِ مِنْكَ وَبَرَكَاتٍ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ اٰمَةٍ مِّنْ مَّعَكَ ۚ وَامُرْ سَمْعِيَّةَ بِهِنَّ
ثُمَّ يَكْسِيْهُنَّ مِّمَّا عَدِلَ ابْنُ الْكَيْلِ ۚ تِلْكَ مِنْ اَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَا اِلَيْكَ ۖ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَا
اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۚ فَاصْبِرْ ۚ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝۵۱

कहा गया कि ऐ नूह, उतरो, हमारी तरफ से सलामती के साथ और बरकतों के साथ, तुम पर और उन गिरोहों पर जो तुम्हारे साथ हैं। और (उनसे जुहूर में आने वाले) गिरोह कि हम उन्हें फ़ायदा देंगे, फिर उन्हें हमारी तरफ से एक दर्दनाक अजाब पकड़ लेगा। ये ग़ैब की ख़बरें हैं जिनको हम तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) कर रहे हैं। इससे पहले न तुम उन्हें जानते थे और न तुम्हारी कौम। पस सब्र करो बेशक आखिरी अंजाम डरने वालों के लिए है। (48-49)

जब तमाम बुरे लोग गर्क हो चुके तो तूफ़ान थम गया। पानी धीरे-धीरे जमीन में और समुद्रों में चला गया। हजरत नूह की कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई थी, आप अपने साथियों के साथ उससे निकल कर जमीन पर उतरे। जमीन दुबारा खुदा के हुक्म से सरसब्ज व आबाद हो गई।

हजरत नूह जिन लोगों के दर्मियान आए वे हजरत आदम की नुबुव्वत को मानने वाले लोग थे। आपके बाद आपकी उम्मत इब्तिदा में राहेरास्त पर रही। इसके बाद उसकी अगली नस्लों में बिगाड़ आया तो दुबारा अबिया (ईशदूत) भेजे गए। ये बाद को आने वाले अबिया उन कौमों में आए जो हजरत नूह की नुबुव्वत को मानती थीं। इसके बावजूद जब उन्होंने वक्त के नबी को मान कर अपनी इस्लाह न की तो वे हलाक कर दी गई। गोया सिर्फ किसी नबी को मानना या उसकी तरफ अपने को मंसूब करना नजातयाफ़ता होने के लिए काफी नहीं है। बल्कि वह ईमान मलूब है जो जिंदा ईमान हो और जिसके अंदर यह ताकत हो कि वह आदमी की ज़िंदगी को नेक अमली की ज़िंदगी में तब्दील कर दे।

हजरत नूह की तारीख़ (इतिहास) यह सबक देती है कि बातिलपरस्तों का जोर चाहे कितना ही ज्यादा हो और उनकी ज़िंदगी चाहे कितनी ही लंबी हो जाए। बिलआखिर उनके लिए जो चीज मुकद्दर है वह हलाकत है। और इसके मुक़ाबले में अहले ईमान चाहे कितने

ही कम हों और चाहे वे बजाहिर कितने ही बेजोर हों। मगर जब खुदा का फैसला जाहिर होता है तो यही लोग हैं जो खुदा की रहमतों में हिस्सेदार बनाए जाते हैं, इब्तिदा में मौजूदा दुनिया में और आखिरी तौर पर आखिरत में।

وَإِلَىٰ عَادِ اٰخَاھُمْ ۚ هُوْدًا ۖ قَالَ يَقُوْمُ اَعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِنَ اللّٰهِ غَيْرَةَ ۚ اِنْ اَنْتُمْ
اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ۝۵۲ يَقُوْمُ لَا اَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۚ اِنْ اَجْرِيْ اِلَّا عَلٰی الَّذِيْ فَطَرَنِيْ
ۚ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝۵۳ وَيَقُوْمُ اسْتَغْفِرُ وَاَرَبُّكُمْ ثُمَّ تُؤْبَوْنَ اِلَيْهِ ۚ يُرْسِلِ السَّمَاءَ عَلٰیكُمْ
مِدْرَارًا ۚ وَيَرْدُّكُمْ قُوَّةً اِلٰی قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَكَّلُوْا عَلٰی شَيْءٍ مِّنْ

और आद की तरफ हमने उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तुमने महज झूठ गढ़ रखे हैं। ऐ मेरी कौम, मैं इस पर तुमसे कोई अज़्र (प्रतिफल) नहीं मांगता। मेरा अज़्र तो उस पर है जिसने मुझे पैदा किया है। क्या तुम नहीं समझते। और ऐ मेरी कौम, अपने ख़ब से माफी चाहो, फिर उसकी तरफ पलटो। वह तुम्हारे ऊपर खूब बारिशें बरसाएगा। और तुम्हारी कुव्वत पर मज्बूद कुव्वत का इज़ाफ़ा करेगा। और तुम मुजरिम होकर रूगदानी (अवहेलना) न करो। (50-52)

कौम आद की हिदायत के लिए हजरत हूद को उठाया गया जो उन्हीं के भाई थे। यह पैगम्बरों के मामले में हमेशा से अल्लाह तआला की सुन्नत (तरीका) रही है। इसकी हिक्मत यह है कि कौम का फर्द होने की वजह से वह बख़ूबी तौर पर कौम की नफिसयात, उसके हालात और उसकी ज़बान को जानते हैं और ज्यादा प्रभावी तौर पर उसके अंदर हक की दावत का काम कर सकते हैं।

हजरत हूद ने अपनी कौम को एक अल्लाह की इबादत का पैग़ाम दिया। इसी के साथ उन्होंने यह भी कहा कि तुम्हारा जो दीन है वह महज एक झूठ है जो तुमने गढ़ लिया है। इससे मालूम हुआ कि पैग़म्बर का तरीका मारुफ (प्रचलित) मअनों में सिर्फ 'मुख्त (सकारात्मक) तौर पर' अपनी बात कहने का तरीका नहीं है। बल्कि इसी के साथ वह खुली खुली तंकीद (आलोचना) भी करता है। क्योंकि जब तक तंकीद व तज्जिया (विश्लेषण) के जरिए नाहक का नाहक होना बाज़ न किया जाए उस वक्त तक हक का हक होना लोगों की समझ में नहीं आ सकता।

हर पैग़म्बर के जमाने में ऐसा हुआ कि उसके मुखातिफीन उसकी पैग़म्बरी को मानने के लिए यह चाहते थे कि वह कोई बड़ा ओहदेदार हो, उसे दौलत के ख़जाने हासिल हों, वह आलीशान इमारतों में रहता हो। मगर हक के दाजी को जांचने का यह मेयार सही नहीं। दाजी की सदाकत को जांचने का अस्ल मेयार यह है कि वह अपने मिशन में पूरी तरह संजीदा हो, उसकी बात आखिरी हद तक मुदल्लल (तार्किक) हो। वह हर किस्म की

सूरह-11. हूद

603

पारा 12

बुनियादी गरज से बालातर हो। वह जो कुछ कह रहा है वह ऐन हकीकत वाक्या है। उसका पैगाम कायनाती निजाम से कामिल मुताबिकत (अनुकूलता) रखता हो। उसे इख्तियार करना कामयाबी की शाहराह पर चलना हो।

‘तुम्हारी कुवत पर मजिद कुवत का इजाफा करेगा।’ इस जुमले का मतलब मादूदी कुवत में इजाफा नहीं है। क्योंकि वैसे आद अपने जमाने में निहायत ताकतवर थी। कुआन से मालूम होता है कि पैगम्बर ने जब उन्हें अजाब से डराया तो उन्होंने कहा कि हमसे ज्यादा ताकतवर कौन है। (हामीम अस्सज्दह : 15) इसलिए मादूदी कुवत (भौतिक शक्ति) के की बात, दावती एतबार से उनके लिए ज्यादा पुरकशिश नहीं हो सकती थी।

इस आयत में कुवत पर इजाफा का मतलब है मादूदी कुवत पर ईमानी कुवत का इजाफा। पैगम्बर का मतलब यह था कि अगर तुम ईमानी जिंदगी इख्तियार कर लो तो इससे तुम्हें अज्जाकी और रूहानी कुवत हासिल होगी। मौजूदा मादूदी जोर के साथ अज्जाकी और रूहानी जोर मिलने से तुम्हारी ताकत घटेगी नहीं। बल्कि वह मजिद बहुत ज्यादा बढ़ जाएगी।

قَالُوا يَهُودُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَمَا نَحْنُ بِتَارِكِي آلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِينَ ۖ إِنْ تَقُولُ إِلَّا اعْتَرَاكَ بَعْضُ آلِهَتِنَا بِسُوءٍ قَالَ إِنْ تَرَىٰ إِلَيْنَا شِكْرًا فَاعْلَمْ أَنَّ إِلَيْنَا الْمَصِيرُ ۚ

उन्होंने कहा कि ऐ हूद, तुम हमारे पास कोई खुली निशानी लेकर नहीं आए हो, और हम तुम्हारे कहने से अपने माबूदों (पूज्यों) को छोड़ने वाले नहीं हैं। और हम हरगिज तुम्हें मानने वाले नहीं हैं। हम तो यही कहेंगे कि तुम्हारे ऊपर हमारे माबूदों में से किसी की मार पड़ गई है। हूद ने कहा, मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं बरी हूँ उनसे जिनको तुम शरीक करते हो उसके सिवा। पस तुम सब मिलकर मेरे खिलाफ तदबीर (युक्ति) करो, फिर मुझे मोहलत न दो। मैंने अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा खब है और तुम्हारा खब भी। कोई जानदार ऐसा नहीं जिसकी चोटी उसके हाथ में न हो। वेशक मेरा खब सीधी राह पर है। (53-56)

कौम ने हजरत हूद से कहा कि तुम्हारे पास अपने बरसरे हक होने की कोई दलील नहीं। इसका यह मतलब नहीं कि फिलवाकअ भी हजरत हूद के पास कोई दलील नहीं थी। आप के पास यकीनन दलील थी, मगर वह मुखातबीन को दलील दिखाई नहीं देती थी। इसकी वजह यह थी कि आदमी आम तौर पर किसी बात को ख़ालिस दलील की बुनियादों पर जांच

पारा 12

604

सूरह-11. हूद

नहीं पाता। बल्कि इस एतबार से देखता है कि जो शख्स उसे पेश कर रहा है वह कैसा है। चूँकि पेश करने वाला अपने जमाने में लोगों को एक नाकबिले लिहाज़ ईसान दिखाई देता था इसलिए उसकी बात भी लोगों को नाकबिले लिहाज़ नजर आती थी।

जब एक शख्स वक्त के जमे हुए मजहब को छोड़कर ख़ालिस बेआमेज (विशुद्ध) दीन की दावत लेकर उठता है तो हमेशा ऐसा होता है कि माहौल में वह अजनबी बल्कि हकीर (तुच्छ) बनकर रह जाता है। लोग उसे इस नजर से देखते हैं जैसे वह कोई ऐसा शख्स हो जिसे खलले दिमागी का रोग लाहिक हो गया हो। हजरत हूद के मामले में यही सूरतेहाल थी जिसकी वजह से उनकी कौम के लोगों को यह कहने की जुरअत हुई कि ‘हमारा तो ख़्याल है कि तुम्हारे ऊपर हमारे बुजुर्गों की मार पड़ गई है’ मगर हक के दाजी की सदाकत का सुन्न, नजरी (वैचारिक) दलाइल के बाद, हमेशा यह होता है कि उसके मुखालिफीन हर किस्म की कोशिशों के बावजूद उसे जेर (परास्त) नहीं कर पाते।

खुदा के पैगम्बर जिन कौमों में आए वे सब खुदा को मानने वाली थीं। गोया दाजी भी खुदापरस्त होने का दावेदार था और मदऊ भी खुदापरस्त होने का दावेदार। ऐसी हालत में यह सवाल पैदा होता है कि खुदा दोनों में से किस गिरोह के साथ है। इस सवाल का आसान जवाब यह है कि खुदा सिराते मुस्तकीम (सीधी शाहराह) पर है। इसलिए जो दीन के सीधे खत (लाइन) पर चल रहा है वह बराहेरास्त खुदा तक पहुंचेगा और जो टेढ़े रास्तों पर चल रहा है उसका रास्ता इधर उधर भटक कर रह जाएगा। वह खुदा तक पहुंचने में कभी कामयाब नहीं हो सकता।

हजरत हूद ने जब कहा कि ‘मेरा खब सिराते मुस्तकीम पर है’ तो दूसरे लफ्जों में गोया वह यह कह रहे थे कि मैं जिस चीज की तरफ बुला रहा हूँ वह सिराते मुस्तकीम (दीन की शाहराह) है। और तुम लोग जिन चीजों को दीन समझ कर इख्तियार किए हुए हो वह दीन की शाहराह के अतराफ में पगडंडियां निकाल कर उनके ऊपर दौड़ना है। इस किस्म की दौड़ आदमी को खुदा तक नहीं पहुंचाती, वह उसे इधर उधर भटका कर छोड़ देती है।

इन आयात की रोशनी में गौर किया जाए तो हजरत हूद की बताई हुई सिराते मुस्तकीम यह निकलती हैतीहीद, इबादते इलाही, इस्तगफार, तौबा, नेमतों पर खुदा का शुक्र, तवक्कुल अलल्लाह (खुदा पर भरोसा), खुदा को अपना परवरदिगार मानना, सिर्फ खुदा को तमाम ताकतों का मालिक समझना, खुदा को अपने ऊपर निगरां (निरीक्षक) बना लेना। किब्र (अहं, बड़ाई) की रविश के बजाए इताअत (आज्ञापालन) की रविश इख्तियार करना।

ये सब दीन की बुनियादी तालीमात हैं। इन तालीमात पर चलना और उन्हें अपनी तवज्जोह का मर्कज बनाना गोया दीन की शाहराह पर चलना है। इस पर चलने वाला सीधे खुदा तक पहुंचता है। इसके सिवा जिन चीजों को आदमी अहमियत दे और उनकी धूम मचाए वह गोया अस्ल शाहराह के दाएं बाएं पगडंडियां निकाल कर उनके ऊपर दौड़ रहा है। ऐसी दौड़ आदमी को सिर्फ खुदा से दूर करने वाली है, वह उसे खुदा के करीब नहीं पहुंचा सकती।

وَأَن تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَا أُرْسِلْتُ بِهِ إِلَيْكُمْ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّي قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا
تَضُرُّونَهُ شَيْئًا إِنَّ رَبِّي عَلَى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ۝ وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا
هُودًا وَالَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَنَجَّيْنَاهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ۝ وَبَلَكَ
عَادٌ جَدُّوًا بِأَيِّتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهُ وَاتَّبَعُوا أَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۝
وَاتَّبَعُوا فِي هَذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ أَلَا إِنَّ عَادًا لَّكُفْرًا رَبَّهُمْ ۚ
أَلَا بُعْدُ لِّلْعَادِ قَوْمِ هُودٍ ۝

अगर तुम एराज (उपेक्षा) करते हो तो मैंने तुम्हें वह पैगाम पहुंचा दिया जिसे देकर मुझे तुम्हारी तरफ भेजा गया था। और मेरा रब तुम्हारी जगह तुम्हारे सिवा किसी और गिरोह को जानशीन (खलीफा, उत्तराधिकारी) बनाएगा। तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। वेशक मेरा रब हर चीज पर निगहबान है। और जब हमारा हुक्म आ पहुंचा, हमने अपनी रहमत से बचा दिया हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे। और हमने उन्हें एक सख्त अजाब से बचा दिया। और ये आद थे कि उन्होंने अपने रब की निशानियों का इंकार किया। और उसके रसूलों को ना माना और हर सरकश और मुखालिफ की बात की इतिबाज (अनुसरण) की। और उनके पीछे लानत लगा दी गई इस दुनिया में और कियामत के दिन। सुन लो, आद ने अपने रब का इंकार किया। सुन लो, दूरी है आद के लिए जो हूद की कौम थी। (57-60)

जो लोग खुदा की बात को नजरअंदाज कर दें, खुदा भी उन्हें नजरअंदाज कर देता है। यह वाक्या जो मौजूदा दुनिया में जुर्जई तौर पर पेश आता है यही कियामत में कुल्ली और आखिरी तौर पर पेश आएगा। उस वक्त तमाम सरकश लोग खुदा की रहमतों से दूर कर दिए जाएंगे। और खुदा की रहमत सिर्फ उन लोगों का हिस्सा होगी जो दुनिया की जिंदगी में खुदा के ताबेज और वफादार बनकर रहे थे।

इस दुनिया में खुदा ने 'इस्तखलाफ' का उसूल राइज किया है। यानी एक कौम को हटाने के बाद दूसरी कौम को उसकी जगह जमीन पर मुतमक्किन (आसीन) करना। दुनिया में यह तमक्कुन (आसीन करना) इस्तेहान की गर्ज से वक्ती तौर पर होता है। आखिरत में खुदा की मेयारी दुनिया में यह तमक्कुन इनाम के तौर पर मुस्तकिल तौर पर सच्चे अहले ईमान को हासिल होगा।

मौजूदा इस्तेहानी दुनिया का निजाम कुछ इस तरह बना है कि यहां आदमी हमेशा खैर और शर के दर्मियान होता है। उसे आजादी होती है कि दोनों में से जिस राह को चाहे इस्तिहार करे। मजीद यह कि अक्सर हालात में इस दुनिया में शर का गलबा होता है। खैर की

जानिब सिर्फ निशानियों (नजरी दलाइल) का जोर होता है। दूसरी तरफ शर की जानिब मादूदी (भौतिक) ताकत मौजूद होती है, वह भी इतनी बड़ी मिक्दार में कि उसके अलमवारदार सरकशी और घमंड में मुत्तिला होकर माहौल के अंदर ऐसी दबाव की फजा पैदा करते हैं कि आम आदमी हक की तरफ बढ़ने की जुरअत ही न करे।

وَالِیْ شُؤْدَ أَخَاهُمْ صِلْحًا قَالَ يَقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُمْ مِنَ الْغِيْثِ هُوَ
أَنشَأَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تَوْبُوا إِلَيْهِ ۖ إِنَّ رَبِّيْ
قَرِیْبٌ مُّجِیْبٌ ۝ قَالُوا بَصِلْهُ قَدْ كُنْتَ فِیْنَا مُرْجُوًّا قَبْلَ هَٰذَا أَتَنْهَانَا أَنْ نَعْبُدَ
مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَإِنَّا لَفِی شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَا إِلَيْهِ مُرِیْبٍ ۝ قَالَ يَقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن
كُنْتُ عَلَىٰ بَیِّنَةٍ مِّنْ رَبِّيْ وَآتَنِیْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ یَنْصُرُنِی مِنَ اللَّهِ إِن
عَصَيْتُ ۖ فَمَا تَزِیْدُنَّی غَیْرَ تَخْصِیْرٍ ۝

और समूद की तरफ हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा, ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो। उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। उसी ने तुम्हें जमीन से बनाया, और उसमें तुम्हें आबाद किया। पस माफी चाहो, फिर उसकी तरफ रुजूअ करो। वेशक मेरा रब करीब है, कुबूल करने वाला है। उन्होंने कहा कि ऐ सालेह इससे पहले हमें तुमसे उम्मीद थी। क्या तुम हमें उनकी इबादत से रोकते हो जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। और जिस चीज की तरफ तुम हमें बुलाते हो उसके बारे में हमें सख्त शुबह है और हम बड़े खलजान (दुविधा) में हैं। उसने कहा कि ऐ मेरी कौम, बताओ अगर मैं अपने रब की तरफ से एक वाजेह (सुस्पष्ट) दलील पर हूं और उसने मुझे अपने पास से रहमत दी है तो मुझे खुदा से कौन बचाएगा अगर मैं उसकी नाफरमानी करूं। पस तुम कुछ नहीं बढ़ाओगे मेरा सिवाए नुस्तान के। (61-63)

हजरत सालेह ने अपनी कौम को एक खुदा की इबादत की तरफ बुलाया। यही हर जमाने में तमाम पैम्बरों का मक्सद था। मगर हजरत सालेह की कौम आपके पैगाम को कुबूल न कर सकी। इसकी वजह यह थी कि आप उसे बराहेरास्त खुदा से जोड़ने की बात करते थे, जबकि कौम का हाल यह था कि वह खुदा के नाम पर सिर्फ अपने पूर्वजों व अकाबिर (महापुरुषों) से जुड़ी हुई थी।

ऐसे लोगों का हाल यह होता है कि वे अपने मखसूस मिजाज की वजह से किसी चीज की अहमियत और मअनवियत (सार्वकता) सिर्फ उस वक्त समझ पाते हैं जबकि उनके कैमी बुजूर्गों के कौल व अमल में उसकी तस्दीक मिल जाए। अब चूंकि हजरत सालेह के पास सिर्फ दलील का जोर था, उनकी कौम उनकी बात की अहमियत को महसूस न कर सकी। हजरत सालेह जिस दीन की तरफ बुला रहे थे उसकी अहमियत खुदा की 'वही' (वाणी) और जमीन व आसमान की

निशानियों में गौर करने से वाजह होती थी। जबकि उनकी कौम सिर्फ उस दीन की अहमियत से बाखबर थी जो महापुरुषों की कौम के मल्फूजात (ग्रंथों) और मअमूलात (क्रिया-कलापों) से साबित होता हो। इसका नतीजा यह हुआ कि उनकी कौम आप के दलाइल के मुक़ाबले में लाजवाब होकर भी बस एक क्रिस्म के शुबह की हालत में पड़ी रही।

हजरत सालेह, दूसरे तमाम पैगम्बरों की तरह, शख्सियत और जहानत में अपनी कौम के **مُتَتَمِّمٌ** (सर्वोत्तम व्यक्ति) थे। लोग उम्मीद रखते थे कि बड़े होकर वह कौम के एक कारआमद फर्द साबित होंगे। मगर वह बड़ी उम्र को पहुँचे तो उन्होंने कौम के प्रचलित मजहब पर तंकीद शुरू कर दी। यह देखकर कौम के लोगों को उनके बारे में सख्स मायूसी हुई। उन्होंने कहा, हम तो यह समझे हुए थे कि तुम हमारे कायमशुदा मजहबी निजाम के एक सुतून (स्तंभ) बनोगे। इसके बरअक्स हम यह देख रहे हैं कि तुम हमारे मजहबी निजाम को बेबुनियाद साबित करने पर अपना सारा जोर लगाए हुए हो। यही मामला हर दौर में खुदा के सच्चे दावियों को अपनी कौम की तरफ से पेश आया है।

وَيَقَوْمُ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ ۖ فَذُرُوهَا تَأْكُلْ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا تَمَسُّوهَا
سُوءًا فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيبٌ ۖ فَعَقَرُوهَا فَقَالَ تَمَتُّعُوا فِي دَارِكُمْ ثَلَاثَةَ
أَيَّامٍ ذَلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوبٍ ۖ فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صَالِحًا ۖ وَالَّذِينَ آمَنُوا
مَعَهُ بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمٍ مِّمَّا إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيزُ ۖ وَأَخَذَ
الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّخْرَةَ فَصَاحُوا فِي دِيَارِهِمْ جُثَمِينَ ۖ كَانَ لَمَّا يَتُوبُونَ فِيهَا
أَلَّا إِنَّ شَمُودَ كَفَرُوا رَبَّهُمْ إِلَّا بَعْدَ الْإِسْحَادِ ۖ

और ऐ मेरी कौम, यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। पस इसे छोड़ दो कि वह अल्लाह की जमीन में खाए। और इसे कोई तकलीफ न पहुँचाओ वरना बहुत जल्द तुम्हें अजाब पकड़ लेगा। फिर उन्होंने उसके पांव काट डाले। तब सालेह ने कहा कि तीन दिन और अपने घरों में फायदा उठा लो। यह एक वादा है जो झूठा न होगा। फिर जब हमारा हुक्म आ गया तो हमने अपनी रहमत से सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे बचा लिया और उस दिन की रुस्वाई से (महफूज रखा)। बेशक तेरा रब ही कबी (शक्तिमान) और जबरदस्त है। और जिन लोगों ने जुम्म किया था उन्हें एक हौलनाक आवाज ने पकड़ लिया फिर सुबह को वे अपने घरों में आँधे पड़े रह गए। जैसे कि वे कभी उनमें बसे ही नहीं। सुनो, समूद ने अपने रब से कुफ़ किया। सुनो, फिटकार है समूद के लिए। (64-68)

हजरत सालेह अपनी कौम से कहते थे कि मैं खुदा का रसूल हूँ। अगर तुमने मेरी बात न मानी तो तुम खुदा की पकड़ में आ जाओगे। उनकी कौम अगरचे खुदा और रिसालत की मुँक़िर

न थी मगर उसने हजरत सालेह की बात को एक मजाक समझा। क्योंकि हजरत सालेह के पास अपनी पैगम्बरी को साबित करने के लिए सिर्फ नजरी (वैचारिक) दलील थी और यह इंसान की कमजोरी है कि वह सिर्फ नजरी दलील की बुनियाद पर बहुत कम इसके लिए तैयार होता है कि एक मानूस (परिचित) चीज को छोड़े और दूसरी ग़ैर मानूस चीज को इस्तिआर कर ले।

हजरत सालेह की कौम जब नजरी निशानियों के आगे झुकने पर तैयार न हुई तो आखिरी मरहले में उसके मुताबिके के मुताबिक उसके लिए स्पष्ट निशानी भी जाहिर कर दी गई। यह एक ऊंटनी थी जो लोगों के सामने ठोस चट्टान के अंदर से निकल आई। ऐसी निशानी के बारे में खुदा का कानून है कि जब वह जाहिर की जाती है तो इसके बाद लोगों के लिए इम्तेहान की मजीद मोहलत बाकी नहीं रहती। चुनांचे हजरत सालेह ने एलान कर दिया कि अब तुम लोग या तो तौबा करके मेरी बात मान लो, वरना तुम सब लोग हलाक कर दिए जाओगे। मगर जो लोग नजरी दलाइल की कुव्वत को महसूस न कर सकें वे स्पष्ट दलाइल को देखकर भी उससे इबरत पकड़ने में नाकाम रहते हैं। चुनांचे इसके बाद भी हजरत सालेह की कौम अपनी सरकशी से बाज न आई। यहाँ तक कि उसने खुद ऊंटनी को मार डाला। इसके बाद उन लोगों के लिए मजीद मोहलत का सवाल न था। चुनांचे वह मिटा दी गई।

कौमे सालेह (समूद) का इलाका शिमाल मग़िबी अरब (अलहिज़्र) था। हजरत सालेह को हुक्म हुआ कि तुम यहाँ से बाहर चले जाओ। चुनांचे वह अपने मुख़्लिस (आस्थावान) साथियों को लेकर शाम की तरफ चले गए। इसके बाद एक सज़ जलजला आया और सारी कौम उसकी लपेट में आकर बुरी तरह हलाक हो गई।

وَلَقَدْ جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرَاهِيمَ بِالْبُشْرَى قَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ فَمَا لَبِثَ أَنْ
جَاءَهُ بِعَجَلٍ حِينٍ ۖ فَلَمَّا رَأَىٰ أَن يُدْرِيهِمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكَّرَهُمْ وَأَوْجَسَ
مِنْهُمْ خِيفَةً قَالُوا لَا تَخَفْ إِنَّا أَرْسَلْنَا إِلَىٰ قَوْمِ لُوطٍ ۖ وَامْرَأَتُهُ قَالِمَةٌ فَضَحِكَتْ
فَبَشَّرْنَاهَا بِإِسْحَقَ وَمِنْ وَرَاءِ إِسْحَقَ يَعْقُوبَ ۖ قَالَتْ يُونُكُنِي إِذٍ أَلِدُ وَأَنَا عَجُوزٌ وَ
هَذَا بَعْلِي شَيْخًا ۖ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجِيبٌ ۖ قَالُوا اتَّبِعِينَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ
رَحِمْتُ لَكُمْ ۖ وَبَرَكَتُهُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ إِنَّهُ حَمِيدٌ مَّجِيدٌ ۖ

और इब्राहीम के पास हमारे फरिश्ते खुशखबरी लेकर आए। कहा तुम पर सलामती हो। इब्राहीम ने कहा तुम पर भी सलामती हो। फिर देर न गुजरी कि इब्राहीम एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की तरफ नहीं बढ़ रहे हैं तो वह खटक गया और दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो नहीं, हम लूत की कौम की तरफ भेजे गए हैं। और इब्राहीम की बीबी खड़ी थी, वह हंस पड़ी। पस हमने उसे इस्हाक की खुशखबरी दी और इस्हाक के आगे याकूब की। उसने कहा, ऐ खराबी,

सूरह-11. हूद

609

पारा 12

क्या मैं बच्चा जन्मूँगी, हालांकि मैं बुढ़िया हूँ और यह मेरा ख़ाविंद भी बूढ़ा है। यह तो एक अजीब बात है। फरिश्तों ने कहा, क्या तुम अल्लाह के हुक्म पर तअज्जुब करती हो। इब्राहीम के घर वालों, तुम पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें हैं। बेशक अल्लाह निहायत क़बिले तारीफ और बड़ी शान वाला है। (69-73)

हजरत इब्राहीम की उम्र तकरीबन सौ साल हो चुकी थी कि एक रोज चन्द इतिहाई ख़ुबसूरत नौजवान उनके घर में दाखिल हुए। हजरत इब्राहीम ने उन्हें मेहमान समझ कर फौरन उनके खाने का इंतजाम किया। मगर वे इंसान नहीं थे बल्कि खुदा के फरिश्ते थे। वे एक ही वक़्त में दो मक्सद के लिए आए थे। एक, हजरत इब्राहीम को औलाद की बशारत देना। (शुभ सूचना) दूसरे, हजरत लूत की कौम को हलाक करना जो इंकार और सरकशी की आखिरी हद पर पहुंच चुकी थी।

हजरत इब्राहीम और उनकी बीवी को इस्हाक (बेटे) और याकूब (पेटे) की बशारत देना आम मअनों में महज औलाद की बशारत न थी। यह सालेह (नेक) और दाजी इंसानों का एक घराना वजूद में लाना था। तारीख का तजर्बा है कि अक्सर कोई 'घराना' होता है जो दीने हक की खिदमत के लिए खड़ा होता है। नबियों की तारीख और नबियों के बाद उनके सच्चे पैरोकारों के वाक़ेयात यही बताते हैं। इसकी वजह यह है कि एक शख्स जिस पर सच्चाई का इंक़िशाफ होता है वह अपने जमाने के लोगों की नजर में एक मामूली इंसान होता है। इस बिना पर आम लोगों के लिए उसके मक़ाम का पहचानना और उसका साथ देना बहुत मुश्किल होता है। मगर उसके अपने घर वाले के लिए जाती रिश्ता एक मजिद वजह बन जाता है। जिस चीज को बाहर वाले जहिरबीनी की बिना पर देख नहीं पाते, घर वाले जाती तअल्लुक की बिना पर उसे महसूस कर लेते हैं। और उसके मिशन में उसके साथी बन जाते हैं।

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرَاهِيمَ الرَّوْعُ وَجَاءَتْهُ الْبُشْرَىٰ يُجَادِلُنَا فِي قَوْمِ لُوطٍ
إِنَّ إِبْرَاهِيمَ لَحَلِيمٌ أَوَّاهٌ مُنِيبٌ ۖ يَأْتِيهِمْ أَغْرَضٌ عَنِ هَذَا الْآيَةِ قَدْ جَاءَ
أَمْرٌ رَبِّكَ ۖ وَإِنَّهُمْ لَيُؤْمِنُونَكَ أَوْ لَا يُؤْمِنُونَكَ ۖ غَيْرُ مُرْدُوْدٍ ۖ

फिर जब इब्राहीम का ख़ौफ दूर हुआ और उसे खुशख़बरी मिली तो वह हमसे कौम लूत के बारे में झगड़ने लगा। बेशक इब्राहीम बड़ा हलीम (उदार) और नर्म दिल था और रुजूअ करने वाला था। ऐ इब्राहीम उसे छोड़ो। तुम्हारे रब का हुक्म आ चुका है और उन पर एक ऐसा अजाब आने वाला है जो लौटाया नहीं जाता। (74-76)

हजरत इब्राहीम की यह गुप्तगू उन फरिश्तों से हुई जो कौम लूत को हलाक करने के लिए आए थे। चूँकि ये फरिश्ते खुदा की तरफ से और उसके हुक्म की तामील में आए थे, इसलिए ख़ुदा ने इसे अपनी तरफ मंज़ूब फरमाया। पैग़म्बर और फरिश्तों के दर्मियान इस गुप्तगू का एक जुज सूरह अनकबूत (आयत 32) में मज्कूर है। और इसका तफ़्सीली ज़िक्र मौजूद

पारा 12

610

सूरह-11. हूद

बाइबल (पैदाइश बाब 18) में आया है।

हजरत इब्राहीम की दुआ कौम लूत के हक में मंज़ूर नहीं हुई। इसी तरह इससे पहले हजरत नूह की दुआ अपने बेटे के लिए मंज़ूर नहीं हुई थी। इसकी वजह यह है कि मफ़िरत (क्षमा, मुक्ति) की दुआ मारुफ़ मअनों में कोई सिफ़ारिश नहीं है जो कि एक शख्स दूसरे शख्स के लिए करे। और वह दुआ करने वाले की बुजुर्गी की बिना पर उसके हक में मान ली जाए।

दुआ खुद अपने आपको खुदा के सामने पेश करना है। अगर हजरत नूह के बेटे या हजरत लूत की कौम के लोगों के अंदर खुद दुआ का जच्चा उभर आता और वे अपनी नजात के लिए खुदा को पुकारते तो यकीनन खुदा उन्हें माफ़ कर देता और अपनी रहमत उनकी तरफ भेज देता। अजाब का लौटा दिया जाना मुमकिन है, जैसा कि हजरत यूनुस की कौम की मिसाल से साबित होता है। मगर वह जब भी लौटेगा खुद ज़ेरे सजा (सजा के पात्र) अफ़राद की दुआओं से लौटेगा न कि किसी ग़ैर शख्स की दुआओं से, चाहे वह ग़ैर शख्स पैग़म्बर ही क्यों न हो।

एक शख्स को दूसरे शख्स के लिए भी दुआ करनी चाहिए। और हर जमाने में पैग़म्बरों ने और सालेह लोगों ने दूसरों के लिए दुआएं की हैं। मगर यह दुआ हकीकतन खुद दुआ करने वाले के हलीम (उदार, सहृदय) और परोपकारी होने का इन्हार होता है। अल्लाह का एक बंदा जो अल्लाह से डरता हो वह अल्लाह के अजाब को देखकर कांप उठता है और अपने लिए और दूसरों के लिए दुआएं करने लगता है। ताहम किसी की दुआ दूसरे के हक में उसी वक़्त मुफीद होगी जबकि वह खुद भी अल्लाह से डर कर अल्लाह को पुकार रहा हो।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سَيِّئًا يَوْمَ وَضَّا قَٰلَ لَهُمْ ذَرْعَا وَقَالَ هَٰذَا يَوْمُ
عَصِيْبٍ ۖ وَجَاءَهُ قَوْمُهُ يُهْرَعُونَ إِلَيْهِ ۖ وَمِنْ قَبْلِكَ لَمْ يَكُنْ لَكَ بِنَايَ السَّيِّئَاتِ
قَالَ يَقَوْمِ هَٰؤُلَاءِ بَنَاتِي هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللَّهَ ۖ وَلَا تُخْزُونِ فِي
ضَيْفِي ۚ أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ۖ قَالُوا الْقَدْ عَلِمْتَ مَآ لَنَا فِي بَنَاتِكَ
مِنْ حَقٍّ وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۖ

और जब हमारे फरिश्ते लूत के पास पहुंचे तो वह घबराया और उनके आने से दिल तंग हुआ। उसने कहा आज का दिन बड़ा सख़्त है। और उसकी कौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आए। और वे पहले से बुरे काम कर रहे थे। लूत ने कहा ऐ मेरी कौम, ये मेरी बेटियां हैं, वे तुम्हारे लिए ज़्यादा पाकीजा हैं। पस तुम अल्लाह से डरो और मुझे मेरे मेहमानों के सामने रुसवा न करो। क्या तुम में कोई भला आदमी नहीं है। उन्होंने कहा, तुम जानते हो कि हमें तुम्हारी बेटियों से कुछ ग़रज नहीं, और तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं। (77-79)

हजरत लूत के पास जो फरिश्ते आए वे अजाब के फरिश्ते थे। मगर वे निहायत ख़ुबसूरत नौजवानों की सूरत में बस्ती के अंदर दाखिल हुए। यह दरअसल उन्हें आखिरी तौर पर मुजरिम

हजरत लूत ने शरीर (दुष्ट) लोगों को इस तरह आते हुए देखा तो आप पर सख्त शर्म और गैरत तारी हुई। आप ने कहा, 'ये कौम की बेटियाँ हैं, इनमें से जिससे चाहो निकाह कर लो और अपनी फित्ती ख़्वाहिश पूरी करो।' किसी कौम में जो बड़े बूढ़े होते हैं वे कौम की तमाम लड़कियों को बेटी कह कर पुकारते हैं। इसी मअना में हजरत लूत ने कौम की बेटियों को 'मेरी बेटियाँ' फरमाया।

‘क्या तुम में एक भी भला आदमी नहीं !’ यह उस बंदए खुदा का आखिरी कलिमा होता है जिसके पास शरीर (दुष्ट) लोगों के रोकने के लिए माददी कुव्वत न हो और माकूलियत (विवेक) की तमाम बातें उन्हें रोकने के लिए नाकाफी साबित हुई हों। उस वक्त इस तरह का जुमला बोलकर वह कौम की गैरत को पुकारता है और उसके जमीर (अन्तरात्मा) को बेदार करना चाहता है। इसके बाद भी अगर ऐसा हो कि लोग बदस्तूर बेहिस बने रहें तो इसका मतलब होता है कि उनके अंदर इंसानियत और शराफत का कोई दर्जा बाकी नहीं रहा।

الصفحة ٨

पारा 12

जब खुदा किसी कीम को उसकी सरकशी की बिना पर हलाक करने का फैसला करता है तो यह उस पूरे इलाके के लिए एक आम हुक्म होता है। ऐसे मौके पर उस इलाके में बसने वाले तमाम जानदार खुदाई अजाब की लपेट में आ जाते हैं। अलबत्ता खुदा के खुसूसी इंतजामात के तहत वे लोग उससे बचा लिए जाते हैं जिन्होंने उन सरकश लोगों के ऊपर हक का एलान किया हो। हक का एलान खुदा की पकड़ से बचने की सबसे बड़ी जमानत है। मौजूदा दुनिया में भी और आखिरत में भी।

इसमें यह सबक है कि एक शख्स अगर वाकअतन खुदा व रसूल का वफादार नहीं है तो किसी और मुहरिक (प्रिक) के तहत हक के काफिले के साथ लग जाने से वह नजात नहीं पा जाएगा। उसकी कमजोरी कहीं न कहीं जाहिर होगी और वहीं वह बैठकर रह जाएगा।

وَالِى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَاقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنَ الْعِيزَةِ وَلَا تَتَّبِعُوا
الْبُكْيَالَ وَالْمِيزَانَ إِنِّي أَرَاكُمْ بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ
مُّحِيطٍ ^(١٧) وَيَقَوْمِ أَتُوفُوا الْبُكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ
وَلَا تَعْتُوا فِى الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ^(١٨) بَقِيتَ اللَّهُ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُؤْمِنِينَ هَـٰ
مَا أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيظٍ ^(١٩)

सूरह-11. हूद

613

पारा 12

और मदयन की तरफ उनके भाई शूऐब को भेजा। उसने कहा ऐ मेरी कौम, अल्लाह की इबादत करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद (पूज्य) नहीं। और नाप और तोल में कमी न करो। मैं तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूँ, और मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन के अजाब से डरता हूँ। और ऐ मेरी कौम, नाप और तोल को पूरा करो इंसाफ के साथ। और लोगों को उनकी चीजें घटाकर न दो। और जमीन पर फसाद न मचाओ। जो अल्लाह का दिया बच रहे वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम मोमिन हो। और मैं तुम्हारे ऊपर निगहबान (रखवाला) नहीं हूँ। (84-86)

मदयन का इलाका हिजाज और शाम के दरमियान था। उनके पैगम्बर हजरत शूऐब का अपनी कौम से यह कहना कि 'अगर तुम ईमान वाले हो' जाहिर करता है कि उनकी कौम मोमिन होने की मुद्दई (दावेदार) थी। बअल्फ़जे दीगर, वह अपने जमाने की मुसलमान कौम थी। वह हजरत शूऐब से पहले आने वाले नबी की उम्मत थी और अब लम्बा अर्सा गुजरने के बाद उनकी बाद की नस्लों में बिगाड़ आ गया था।

हजरत शूऐब ने उनसे कहा कि अगर तुम मोमिन होने के दावेदार हो तो तुम्हारा दावा खुदा के यहां उसी वक्त माना जाएगा जबकि तुम अपने दावे के तक्ज़े पूरे करो। तक्ज़ा पूरा किए बग़ैर दावे की कोई कीमत नहीं।

तुम्हारे ईमान का तक्ज़ा यह है कि तुम सिर्फ एक अल्लाह की इबादत करो। लेन देन में इंसाफ बरतो। दूसरों के लिए वही पसंद करो जो अपने लिए पसंद करते हो। तुम में से हर शख्स को चाहिए कि वह लोगों के हुक्क ठीक-ठीक अदा करे। और इसमें किसी तरह की कमी न करे। जमीन में इस तरह रहो जिस तरह खुदा चाहता है कि उसके बंदे रहें। जाइज तरीके से हासिल किए हुए रिक् पर कनाअत (स्तेष) करो न कि नाफ़्सानी करके ख़ादा हासिल करने की कोशिश करो। अगर तुम ऐसा करो जभी तुम खुदा के यहां मोमिन ठहरोगे। वर्ना अदिशा है कि खुदा का अजाब तुम्हें पकड़ लेगा।

हजरत शूऐब ने एक तरफ यह कहा कि लोगों को कम न दो। दूसरी तरफ यह फरमाया कि 'आज मैं तुम्हें अच्छे हाल में देख रहा हूँ' इससे मालूम होता है कि कौमे शूऐब में कुछ गरीब थे और कुछ अमीर। कुछ ज्यादा पाने वाले थे और कुछ वे थे जिनको घटाकर मिल रहा था। अगर सारे लोग कम पाने वाले होते तो उनमें 'अच्छे हाल वाला' कौन बाकी रहता।

इससे मालूम होता है कि यहां जिन मुखातबीन का जिक्र है। वे कौम के बाअसर और साहिबे हैसियत अफ़राद थे। अबिया अगरचे हर एक की हिदायत के लिए आते हैं मगर उनका ख़िताब ख़ास तौर पर वक्त के मुमताज (शीष) तबके से होता है। क्योंकि अवाम उन्हीं लोगों के ताबेअ होते हैं। वे ज्यादातर अपने बड़ों के नक्शेकदम पर चलते हैं। ख़ास (विशिष्ट जनों) तक दावत (सत्य-संदेश) पहुंचना परोक्ष तौर पर अवाम तक भी दावत का पहुंचना है।

قَالُوا يَشْعِبُ أَصْلُوكَ تَأْمُرُكَ أَنْ تَتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا وَأَنْ نَفْعَلَ فِي

أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَكِيمُ الرَّشِيدُ ۝

पारा 12

614

सूरह-11. हूद

उन्होंने कहा कि ऐ शूऐब, क्या तुम्हारी नमाज तुम्हें यह सिखाती है कि हम उन चीजों को छोड़ दें जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। या अपने माल में अपनी मर्जी के मुताबिक तसरूफ़ (उपभोग) करना छोड़ दें। बस तुम ही तो एक दानिशमंद (प्रबुद्ध) और नेक चलन आदमी हो। (87)

कभी ऐसा होता है कि नमाज बोलकर दीन मुराद लिया जाता है। मतलब यह है कि क्या तुम्हारा दीन तुम्हें ऐसा हुक्म दे रहा है। उन्होंने नमाज का लफ़्ज इसलिए इस्तेमाल किया कि नमाज दीन की सबसे ज्यादा वाज़ेह अलामत है।

हजरत शूऐब की कौम दीनदार होने की मुद्दई थी। वह इबादत भी करती थी। मगर उन्होंने अपने दीन और इबादत के साथ शिर्क और बदमामलगी को भी जमा कर रखा था। हजरत शूऐब ने उन्हें सच्ची खुदापरस्ती और लोगों के साथ हुस्ने मामला की दावत दी और कहा कि दीन के साथ अगर शिर्क है और इबादत के साथ बदमामलगी भी जारी है तो ऐसे दीन और ऐसी इबादत की खुदा के यहां कोई कीमत नहीं।

इस किस्म की बातों से कौम का दीनी भरम खुलता था। इससे उनके उस जेम (दंभ) पर जद पड़ती थी कि सब कुछ करते हुए भी वे दीनदार हैं और इबादत गुजारी का तमगा भी हर हाल में उन्हें मिला हुआ है। चुनांचे वे बिगाड़ गए। उन्होंने कहा कि क्या तुम ही एक खुदा के इबादत गुजार हो। क्या हमारे वे तमाम बुजुर्ग जाहिल थे या हैं जिनके तरीके को हमने इख़्तियार कर रखा है। क्या तुम्हारे सिवा कोई यह जानने वाला नहीं कि इबादत क्या है और उसके तक्ज़े क्या हैं। शायद तुम समझते हो कि सिर्फ तुम ही दुनिया भर में एक समझदार और सालेह (नेक) पैदा हुए हो।

कौमे शूऐब को वे लोग ज्यादा बड़े मालूम होते थे जो लम्बी रिवायात के नतीजे में बड़े बन चुके थे। या जो अब ऊंची गद्दियों पर बैठे हुए थे। इसीलिए उन्हें हजरत शूऐब के बारे में ऐसा कहने की जुरअत हुई।

قَالَ يَقَوْمُ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلَى بَيِّنَةٍ مِّن رَّبِّي وَرُرُقْبَىٰ مِنْهُ رُزْقًا حَسَنًا وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا أَنْهَكُمْ عَنْهُ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝ وَيَقَوْمُ لَا يُجِزُكُمْ شِقَاقِي أَنْ يُصِيبَكُمْ مِّثْلُ مَا أَصَابَ قَوْمُ نُوحٍ أَوْ قَوْمُ هُودٍ أَوْ قَوْمُ صَالِحٍ وَمَا قَوْمُ لُوطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيدٍ ۝ وَاسْتَغْفِرُوا لَكُمْ ثُمَّ تَوْبُوا إِلَيْهِ إِنَّ رَبِّي رَحِيمٌ وَدُودٌ ۝

शूऐब ने कहा कि ऐ मेरी कौम, बताओ, अगर मैं अपने खब की तरफ से एक वाज़ेह दलील पर हूँ और उसने अपनी जानिव से मुझे अच्छा रिक् भी दिया। और मैं नहीं चाहता कि

सूरह-11. हूद

615

पारा 12

मैं खुद वही काम करूँ जिससे मैं तुम्हें रोक रहा हूँ। मैं तो सिर्फ इस्लाम (सुधार) चाहता हूँ, जहाँ तक हो सके। और मुझे तौफीक तो अल्लाह ही से मिलेगी। उसी पर मैंने भरोसा किया है। और उसी की तरफ मैं रुजूअ करता हूँ। और ऐ मेरी कौम, ऐसा न हो कि मेरा विरोध करके तुम पर वह आपत पड़े जो कौमे नूह या कौमे हूद या कौमे सालेह पर आई थी, और लूत की कौम तो तुमसे दूर भी नहीं। और अपने रब से माफी मांगो फिर उसकी तरफ पलट आओ। बेशक मेरा रब महरबान और मुहब्बत वाला है। (88-90)

मानने की दो सूरतें हैं। एक है तकलीदी (अनुकरणीय) तौर पर मानना। दूसरा सही समझ कर मानना। पहली सूरत में आदमी किसी बात को इसलिए मानता है कि लोग उसे मानते हैं। दूसरी सूरत में वह उसे इसलिए मानता है कि उसने खुद दलील की बुनियाद पर पाया है कि वह बात सही है। पहला अगर रस्मी इकरार है तो दूसरा शुऊरी दरयाफ्त।

हक को दलील (या शुऊर) की सतह पर पाना ही मोमिन का अस्ल सरमाया है। इसी से वह जिंदा यकीन हासिल होता है जबकि आदमी हर चीज से बेपरवाह होकर लोगों के दर्मियान खड़ा हो और हक की नुमाइंदगी कर सके। हक की शुऊरी याफ्त हर दूसरी चीज का बदल है। जिसे यह नेमत हासिल हो जाए उसे फिर किसी और चीज की जरूरत बाकी नहीं रहती।

आम आदमी 'रोटी' पर जीता है। मोमिन वह इंसान है जो हक की दलील पर जीता है। इस तरह का रिज्क (शुऊरी याफ्त) मिलने के बाद आदमी के लिए नामुमकिन हो जाता है कि वह उसके खिलाफ रकैया इस्तिथार करे। कौल व अमल का तजाद (अन्तर्विरोध) रस्मी ईमान का नतीजा है और कौल व अमल की यकसानियत शुऊरी ईमान का नतीजा।

“शिक्रक” की तशरीह में हजरत हसन बसरी का कौल है कि मेरी दुश्मनी तुम्हें ईमान का रास्ता छोड़ देने पर न उभारे कि इसके बाद तुम्हें वह सजा मिले जो मुंकिरों को मिली।

दाओ चूँकि अपने जमाने के लोगों को एक आम इंसान की मानिंद नजर आता है। इसलिए उसकी नाकिदानी (आलोचनात्मक) बातों से वे लोग बिगड़ उठते हैं जिन्हें माहौल में ऊँची हैसियत हासिल हो। एक मामूली आदमी की यह जुरअत उनके लिए नाकाबिले बर्दाश्त हो जाती है कि वह उन पर और उनके बड़ों पर तंकीद (आलोचना) करे। इस वजह से उनके अंदर दाओ के खिलाफ ज़िद और नफरत पैदा हो जाती है।

किसी आदमी के अंदर इस किस्म की नफिसयात का पैदा होना उसका निहायत कड़े इस्तेहान में मुब्तिला किया जाना है। क्योंकि ऐसा आदमी एक शख्स को हकीर (तुच्छ) समझने की वजह से उसकी तरफ से आने वाली खुदाई बात को भी हकीर समझ लेता है। वह एक इंसान को नजरअंदाज करने के नाम पर खुद खुदा को नजरअंदाज कर देता है।

قَالُوا لَشُعَيْبٌ مَّا نَفَقَهُ كَثِيرٌ أَهْمًا تَقُولُ وَإِنَّا لَكَرِيمٌ صٰغِيَةً وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنَاكَ وَمَا أَنتَ عَلَيْنَا بِعَزِيزٍ ۝١٠ قَالَ يَقْتُمِرٌ أَهْطَىٰ أَعْرَٰضَكُمْ مِّنَ اللَّهِ وَاتَّخَذَ ثَمُوهُ وَرَءَاكُمْ ظُهُرِيًّا إِنَّ رَبِّي بِمَا تَعْمَلُونَ فَحِيطٌ ۝١١ وَيَقْتُمِرُ أَعْمَلُوا عَلَىٰ

पारा 12

616

सूरह-11. हूद

مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عَامِلٌ سَوْفَ تَعْلَمُونَ مِّنْ يَّاتِيهِمْ عَذَابٌ يُخْزِيهِمْ وَمِنْ هُوَ كَذِبٌ ۝١٢ وَارْتَقِبُوا إِنِّي مَعَكُمْ رَقِيبٌ ۝١٣

उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब, जो तुम कहते हो उसका बहुत सा हिस्सा हमारी समझ में नहीं आता। और हम तो देखते हैं कि तू हम में कमजोर है। और अगर तेरी बिरादरी न होती तो हम तुम्हें संगसार (पत्थरों से मार डाला) कर देते। और तुम हम पर कुछ भारी नहीं। शुऐब ने कहा कि ऐ मेरी कौम, क्या मेरी बिरादरी तुम पर अल्लाह से ज्यादा भारी है। और अल्लाह को तुमने पसेपुश्त (पीछे) डाल दिया। बेशक मेरे रब के काबू में है जो कुछ तुम करते हो। और ऐ मेरी कौम, तुम अपने तरीके पर काम किए जाओ और मैं अपने तरीके पर करता रहूँगा। जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किसके ऊपर रुसवा करने वाला अजाब आता है और कौन झूठा है। और इंतजार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतजार करने वालों में हूँ। (91-93)

हजरत शुऐब को हदीस में खतीबुल अबिया (नबियों के वक्ता) कहा गया है। आप अपनी कौम को उसकी अपनी कबिलेफहम जमान में निहायत मुवस्तिर (प्रभावी) अंदाज में समझाते थे। फिर आपकी बात उसकी समझ में क्यों नहीं आई। इसकी वजह यह थी कि कौम का जेहनी सांचा बिगड़ा हुआ था। उसके सोचने का अंदाज और था और हजरत शुऐब के सोचने का अंदाज और। इस बिना पर आप की बात उसकी समझ में न आ सकी।

कौम इंसानों की ताज़ीम में गुम थी। आप उसे एक अल्लाह की ताज़ीम की तरफ बुलाते थे। वह ख़ुश अक़ीदगी को नजात का जरिया समझे हुए थी, आपका कहना था कि सिर्फ अमल के जरिए नजात हो सकती है। कौम का ख़्याल था कि वह अपने को मोमिन समझती है इसलिए वह मोमिन है। आपने कहा कि मोमिन वह है जो खुदा की मीजान (तुला) में मोमिन करार पाए। कौम के नजदीक नमाज की हैसियत बस एक गैर मुअस्तिर किस्म के रस्मी जमीमा (परिशिष्ट) की थी। आपने एलान किया कि नमाज आदमी की जिंदगी और उसके आमद व खर्च की मुहासिब है। कौम समझती थी कि ईमान बस एक बेरूह इकरार है, आपने बताया कि ईमान वह है जो एक जिंदा शुऊर के तौर पर हासिल हुआ हो।

इस तरह हजरत शुऐब और उनकी कौम के दर्मियान एक किस्म का फ़सल (Gap) पैदा हो गया था। यही जेहनी फ़सल कौम के लिए आपकी सीधी और सच्ची बात को समझने में रुकावट बना रहा।

‘अगर तुम्हारा कबीला न होता तो हम तुम्हें संगसार कर देते।’ यह जुमला बताता है कि हजरत शुऐब की कौम किस कदर बेहिस और जहिरपरस्त हो चुकी थी। किस्सा यह था कि हजरत शुऐब ने जब कौम के दीनी भरम को बेन काब किया तो कौम के लोग उनके दुश्मन बन गए। उस वक्त हजरत शुऐब के साथ न अवाम की भीड़ थी जो लोगों को रोके और न आप दौलत और हैसियत के मालिक थे जिसे देखकर लोग मरऊब हों। आपके पास सिर्फ सदाकत (सच्चाई) और माकूलियत (विवेक) का जेर था और ऐसे लोगों के नजदीक सिर्फ सदाकत और माकूलियत

सूरह-11. हूद

617

पारा 12

की कोई अहमियत नहीं होती।

ऐसी हालत में वे यकीनन आप पर कातिलाना हमला कर देते। ताहम जिस चीज ने उन्हें इस किस्म के इक़दाम से रोक़ा वह कबीले के इतिहास का अंश था। कबाइली दौर में कबीले के किसी पद को मारने का मतलब यह था कि कबाइली दस्तूर के मुताबिक पूरा कबीला उससे खून का बदला लेने के लिए उठ खड़ा हो जाए। यह अंदेशा कौम शूऐब के लिए आपके खिलाफ किसी इतिहाई इक़दाम में रुकावट बन गया। ठीक उसी तरह जैसे मौजूदा जमाने में शरीर अफ़राद की शरारत से अक्सर औकात लोग इसलिए महफूज रहते हैं कि उन्हें अंदेशा होता है कि अगर उन्हें कोई ज़ारिहयत (आक्रामक) की तो उन्हें पुलिस और अदालत का सामना करना पड़ेगा।

وَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا مُجْتَنِبًا شُعَبًا وَالَّذِينَ انْتَوَمَعُوا بِرَحْمَةٍ مِنَّا وَأَخَذَتِ الَّذِينَ ظَلَمُوا الصَّيْعَةَ فَاصْبَحُوا فِي دِيَارِهِمْ جِثِيَيْنَ ۖ كَانُوا يَكْفُرُونَ فِيهَا الْأُبْعَدُ

ع

لِلَّذِينَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُودُ ۖ

और जब हमारा हुक्म आया हमने शूऐब को और जो उसके साथ ईमान लाए थे अपनी रहमत से बचा लिया। और जिन लोगों ने जुल्म किया था उन्हें कड़क ने पकड़ लिया। पस वे अपने घरों में आँधे पड़े रह गए। गोया कि कभी उनमें बसे ही न थे। सुनो, फिटकार है मदन को जैसे फिटकार हुई थी समूद को। (94-95)

हजरत शूऐब की कौम के लोग समझते थे कि वे मदन के मालिक हैं। जो चीज उन्हें इस्तेहान की मस्तेहत के तहत दी गई थी उसे उन्होंने अपना मुस्तकिल हक समझ लिया। इस एहसास के तहत उन्होंने आपके खिलाफ ज़ारिहाना (आक्रामक) तदबीरें कीं। उन्होंने आपको यह धमकी भी दी कि हम तुम्हें और तुम्हारे साथियों को अपनी सरजमीन से निकाल देंगे। (अल आराफ 88)। मगर वही जमीन जिसे वे अपनी जमीन समझते थे और जिसके वे मालिक बने हुए थे। वहाँ खुदा के हुक्म से हैलनाक गड़गड़ाहट के साथ जलजला आया। जिसके नतीजे में यह पूरा इलाका तबाह हो गया। वे खुद अपनी दुनिया में इस तरह भिटकर रह गए जैसे कभी उनका वजूद ही न था।

अलबत्ता कौम के वे अफ़राद जिन्होंने हजरत शूऐब की बात मानी थी और आपके साथ हो गए थे उन्हें खुसूसी नुसरत से बचा लिया गया।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ۖ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَٰئِهِ فَاتَّبَعُوا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ۖ وَمَا أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيدٍ ۖ يَقْدُومُ قَوْلُهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ ۖ وَبِئْسَ الْوَرْدُ الْمَوْرُودُ ۖ وَاتَّبِعُوا فِي هٰذِهِ لَعْنَةً ۖ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۖ بِئْسَ الرَّفْدُ الْمَرْفُودُ ۖ

पारा 12

618

सूरह-11. हूद

और हमने मूसा को अपनी निशानियों और वाजेह सनद (स्पष्ट प्रमाण) के साथ भेजा, फिर वे फिरऔन की तरफ। फिर वे फिरऔन के हुक्म पर चले हालाँकि फिरऔन का हुक्म रास्ती (भलाई) पर न था। क़ियामत के दिन वह अपनी कौम के आगे होगा और उन्हें आग पर पहुँचाएगा। और कैसा बुरा घाट है जिस पर वे पहुँचेंगे। और इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी गई और क़ियामत के दिन भी। कैसा बुरा इनाम है जो उन्हें मिला। (96-99)

हजरत मूसा ने हक की दावत आखिरी मुमकिन हद तक पेश कर दी। उन्होंने फिरऔन और उसके साथियों को न सिर्फ नज़री (वैचारिक) तौर पर बेदलील कर दिया। बल्कि असा (डंडा) के मोजिजे की सूत में अपनी सदाकत का खुला हुआ ज़ाहिरी सुबूत भी उन्हें दिखा दिया। फिर भी फिरऔन की कौम फिरऔन ही के साथ रही, वह हजरत मूसा का साथ देने पर तैयार न हुई।

इसकी वजह यह थी कि इन लोगों के नजदीक सारी अहमियत इक्तेदार और दुनियावी साजोसामान की थी और ये चीज़ें वे हजरत मूसा के अंदर न देखते थे। वे आपकी बातों पर हैरान ज़रूर होते थे। मगर जब वे हजरत मूसा का मुक़बला फिरऔन से करते तो उन्हें एक तरफ बेसरोसामानी (साधनहीनता) दिखाई देती और दूसरी तरफ हर किस्म का मादूदी जाह व जलाल। यह तकाबुल उनके लिए फ़ैसलाक़ून बन गया। और वे दलाइल और मोजिजात (चमत्कार) देखने के बावजूद इसके लिए तैयार न हुए कि फिरऔन को छोड़ दें और उससे अलग होकर हजरत मूसा के साथ हो जाएं।

जो लोग दुनिया में किसी का साथ सिर्फ इसलिए देंगे कि उसके पास मादूदी (सांसारिक) बड़ाई की चीज़ें थीं, वे आखिरत में भी उसके साथ कर दिए जाएंगे। मगर दुनिया के बरअक्स यह बहुत बुरा साथ होगा। क्योंकि उस दिन उस आदमी से उसका तमाम सामान छिन चुका होगा। अब उसका वजूद सिर्फ जिल्लत और बर्बादी का निशान होगा। वह अपने साथियों को भी उसी आग में पहुँचा देगा जो खुद उसके लिए उसकी गुमराह कयादत (नेतृत्व) के नतीजे में खुदा की तरफ से मुक़द्दर की जा चुकी है।

ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَاءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَالِمٌ وَحٰصِدٌ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْا اَنْفُسَهُمْ فَمَا اَغْنٰتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِي يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَاءَ اَمْرٌ رَّبِّكَ وَمَا رَادُّوْهُمْ غَيْرَ تَتٰبٍ ۝

ये बस्तियों के कुछ हालात हैं जो हम तुम्हें सुना रहे हैं। इनमें से कुछ अब तक कायम हैं और कुछ मिट गईं। और हमने उन पर जुल्म नहीं किया। बल्कि उन्होंने खुद अपने ऊपर जुल्म किया। फिर जब तेरे रब का हुक्म आ गया तो उनके माबूद (पूज्य) उनके कुछ काम न आए जिनको वे अल्लाह के सिवा पुकारते थे। और उन्होंने उनके हक में बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं बढ़ाया। (100-101)

कदीम तारीखों (इतिहासों) में बादशाहों और फौजी जनरलों के हालात दर्ज हैं मगर नबियों और उनकी कौमों के हालात किसी तारीख में दर्ज नहीं। दूसरी तरफ कुरआन को देखिए तो उसमें सबसे ज्यादा एहतिमाम के साथ नबियों और उनकी कौमों के हालात मिलते हैं। बकिया बातें उसने इस तरह नजरअंदाज कर दी हैं जैसे उसकी नजर में उनकी कोई अहमियत नहीं। इंसान ने जो तारीख लिखी उसमें उसने वही बात छोड़ दी जो ख़ालिक के नजदीक सबसे ज्यादा कबिलतबिना थी।

दौरे नुबुव्वत की उन हलाकशुदा बस्तियों में से कुछ बस्तियां ऐसी हैं जो अभी तक आबाद हैं। जैसे मिन्न जो फिरऔन का मकम था। दूसरी तरफ कैमे हूद और कैमे लूत जैसी कौमों हैं जिनकी बस्तियां उनके वाशिंदों सहित नापैद हो गईं। अलबत्ता कहीं कहीं उनके कुछ निशानात खंडहर की सूरत में खड़े हैं या जमीन की खुदाई से बरामद किए गए हैं।

इन बस्तियों का हलाक किया जाना बजाहिर एक जालिमाना वाक्या मालूम होता है। मगर जब यह देखिए कि क्यों ऐसा हुआ तो वह ऐन मुताबिके हकीकत बन जाता है। क्योंकि ये उनकी अपनी बदअमली के नताइज थे। जो कुछ हुआ वह उनकी बदकिरदारी के बाद हुआ न कि उनकी बदकिरदारी से पहले।

जब भी आदमी सरकशी और जुल्म करता है तो वह किसी बरते पर करता है। वह कुछ चीजों या हस्तियों को अपना सहारा समझ लेता है और ख्याल करता है कि ये मुश्किल वक्तों में उसके मददगार साबित होंगे। मगर ये सहारे उसी वक्त तक सहारे हैं जब तक खुदा ढील दे रहा हो। जब खुदा के कानून के मुताबिक ढील की मुद्दत खत्म हो जाए और खुदा अपना आखिरी फैसला जाहिर कर दे उस वक्त आदमी को मालूम होता है कि वे सब महज झूठे मफरूजे थे जिनको उसने अपनी नादानी की वजह से सहारा समझ लिया था।

وَكَذَلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَا أَخَذَ الْقُرَىٰ وَهِيَ ظَالِمَةٌ إِنَّ أَخْذَهُ أَلِيمٌ شَدِيدٌ ﴿١٠٥﴾
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّمَن خَافَ عَذَابَ الْآخِرَةِ ۚ ذَٰلِكَ يَوْمُ تَجْجُوْعُ النَّاسِ وَ
ذَٰلِكَ يَوْمُ مَشْهُودٍ ۚ وَمَا نُوَخَّرُهُ إِلَّا لِأَجَلٍ مُّعَدٍّ ۚ يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلُمُ نَفْسٌ
إِلَّا بِإِذْنِهِ ۖ فَمِنْهُمْ شَقِيْقٌ وَسَعِيْدٌ ﴿١٠٦﴾

और तेरे रब की पकड़ ऐसी ही है जबकि वह बस्तियों को उनके जुल्म पर पकड़ता है। बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक और सख्त है। इसमें उन लोगों के लिए निशानी है जो आखिरत के अजाब से डरें। वह एक ऐसा दिन है जिसमें सब लोग जमा होंगे। और वह हाजिरी का दिन होगा। और हम उसे एक मुद्दत के लिए टाल रहे हैं जो मुकर्रर है। जब वह दिन आएगा तो कोई जान उसकी इजाजत के बगैर कलाम न कर सकेगी। पस उनमें कुछ बदबख्त (अभाग) होंगे। और कुछ नेकबख्त (भाग्यशाली)। (102-105)

मौजूदा दुनिया में इंसान को रहने और बसने का मौका सिर्फ इस्तेहान की बिना पर हासिल है। पैगम्बरों के जरिए इतमामे हुज्जत के बाद भी जो लोग मुंकिर बने रहें वे खुदा की जमीन में मजीद ठहरने का हक खो देते हैं। यही वजह है कि पैगम्बरों के मुंकिरीन को खुदा ने हलाक कर दिया (अनकबूत 40)। यह हलाकत ज्यादातर इस तरह हुई कि आम जमीनी आपत्तों में शिद्दत पैदा कर दी गई मसलन आंधी, सैलाब या जलजला, जो आम हालात में एक हद के अंदर रहते हैं, उन्हें ग़ैर महदूद तौर पर शदीद कर दिया गया।

माजी में इस तरह कौमों की तबाही के वाक्यात को भूगोलविद मौसमी परिवर्तनशीलता (Climatic Pulsations) का नाम देते हैं। गोया जो कुछ हुआ वह महज भौगोलिक उथल पुथल के नतीजे में हुआ। अगरचे वे इस वाक्ये की कोई तौजीह नहीं कर पाते कि इस किस्म के शदीद मौसमी परिवर्तन सिर्फ माजी में क्यों पेश आए। वे अब (ख़त्मे नुबुव्वत के बाद) क्यों नहीं पेश आते।

हकीकत यह है कि ये वाक्यात सादा मअनों में सिर्फ भौगोलिक वाक्यात न थे बल्कि यह हुक्मे खुदावंदी का जहूर था। इनसे यह साबित होता है कि मौजूदा दुनिया का निजाम अदूल पर कायम है। यहां खुद कानून कुर्रत के तहत लाजिमन ऐसा हेमे वाला है कि जल्लिम अपने जुल्म की सजा पाए और आदिल को अपने अदूल का इनाम मिले। इन वाक्यात को मौसमी तगय्युरात (परिवर्तन) कहना इन्हें भूगोल के खाने में डाल देना है। इसके बरअक्स अगर उन्हें खुदाई तगय्युरात (परिवर्तन) माना जाए तो वे आदमी के लिए खोफे खुदा और पिन्ने आखिरत का जबरदस्त सबक बन जाएंगे।

पैगम्बरों के जमाने में जो वाक्यात पेश आए वे गोया बड़ी कियामत से पहले उसकी एक छोटी निशानी थे। उनमें ऐसा हुआ कि मुंकिरीन को एक मुद्दत तक ढील दी गई। इसके बाद खुदा का फैसला जाहिर हुआ तो सबके सब हलाक कर दिए गए। सिर्फ वे लोग बच सके जो हक का साथ देने की वजह से खुदा के नजदीक नेकबख्त करार पा चुके थे। इनके अलावा जो लोग खुदा की मीजान में सरकश और बदबख्त थे वे लाजिमी तौर पर अजाब की जद में आए। यहां तक कि पैगम्बरों की सिफारिश भी उन्हें बचा न सकी, जैसा कि हजरत नूह और हजरत इब्राहीम की मिसाल से साबित होता है।

فَأَمَّا الَّذِينَ شَقُّوا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيهَا زُفَيْرٌ ۖ وَشَهِيقٌ ۖ خَلِيدِينَ فِيهَا
مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيدُ ﴿١٠٧﴾
وَأَمَّا الَّذِينَ سَعَدُوا فَفِي الْجَنَّةِ خَالِدِينَ فِيهَا مَا دَامَتِ السَّمُوتُ وَالْأَرْضُ
إِلَّا مَا شَاءَ رَبُّكَ عَطَاءٌ غَيْرُ مَجْدُوْدٍ ۚ فَلَا تَكُ فِي مَرِيَةٍ مِّمَّا يَعْْبُدُ هَٰؤُلَاءِ
مَا يَعْْبُدُونَ إِلَّا كَمَا يَعْْبُدُ آبَاؤُهُمْ مِن قَبْلُ ۖ وَإِنَّا لَنُوفِّهُمُ نَصِيْبَهُمْ
غَيْرَ مُنْقَوِصٍ ۖ ﴿١٠٨﴾

सूरह-11. हूद

621

पारा 12

पस जो लोग बदबख्त हैं वे आग में होंगे। उन्हें वहां चीखना है और दहाड़ना। वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और जमीन कायम हैं, मगर जो तेरा खब चाहे। बेशक तेरा खब कर डालता है जो चाहता है। और जो लोग नेकबख्त हैं तो वे जन्नत में होंगे, वे उसमें रहेंगे जब तक आसमान और जमीन कायम हैं, मगर जो तेरा खब चाहे बख्शिश है बेइतिहा। पस तू उन चीजों से शक में न रह जिनकी ये लोग इबादत कर रहे हैं। ये तो बस उसी तरह इबादत कर रहे हैं जिस तरह उनसे पहले उनके बाप दादा इबादत कर रहे थे। और हम उनका हिस्सा उन्हें पूरा पूरा देंगे बगैर किसी कमी के। (106-109)

कुरआन में सबसे ज्यादा अहमियत और सबसे ज्यादा तकरार (पुनरावृत्ति) के साथ जिस चीज का जिक्र है वह यह है कि इंसान अपनी मौजूदा हालत पर छोड़ नहीं दिए जाएंगे। बल्कि वे मौत के बाद खुदा की अदालत में हाजिर किए जाएंगे। वहां हर एक अपनी कारकंदगी के मुताबिक जन्नत या देहखु में डाला जाएगा।

इस अहमियत और तकरार की वजह लोगों का 'शक' है। लोग देखते हैं कि जमीन पर बेशुमार इंसान ऐसे हैं जो खुदा की हिदायत को नहीं मानते। बेशुमार इंसान ऐसे हैं जो खुदा की हिदायत से आजाद होकर अमल करते हैं। बेशतर इंसान खुदापसंद जिंदगी की बजाए खुदपसंद जिंदगी गुजार रहे हैं। फिर भी उनका कुछ नहीं बिगड़ता। फिर भी सारे लोग कामयाब हैं। बजाहिर यहां कहीं दिखाई नहीं देता कि खुदा के वफादारों को कोई खुसूसी इनाम मिल रहा हो। या खुदा के नाफरमानों को कोई ख़ास सजा भुगतनी पड़ती हो।

इस बिना पर लोगों को शक होने लगता है। उन्हें यकीन नहीं आता कि इंसानों का जो अंजाम मुसलसल वे अपनी आंखों से देख रहे हैं उसके सिवा भी कोई अंजाम उनके लिए मुकद्दर है। यहां कुरआन बताता है कि लोगों का मुसलसल गैर हक पर चलना इसलिए नहीं है कि उन्होंने मसले के तमाम पहलुओं पर गौर किया और फिर उसे माकूल पाकर उसे इख्तियार कर लिया। इसका सबब दरअसल रिवाज की पैरवी है न कि दलील और माकूलियत की पैरवी।

इसके बावजूद लोगों के अमल का अंजाम उनके सामने नहीं आता तो इसका सबब मोहलते इस्तेहान है। जमीन पर मौत से पहले की जिंदगी जांच की जिंदगी है। इसलिए मौत तक इंसान को यहां ढील दी जा रही है कि वह जो चाहे बोले और जो चाहे करे। मौत इस मुकर्रह (निर्धारित) मुद्दत का ख़ात्मा है। मौत का मतलब यह है कि इंसान को मकामे इस्तेहान से उठाकर मकामे अदालत में पहुंचा दिया जाए। वहां हर एक को वही मिलेगा जिसका वह फिलवाकअ मुस्तहिक (पात्र) था और हर एक से वह छिन जाएगा जिसे उसने इस्तहक़क (पात्रता) के बगैर अपने गिर्द जमा कर रखा था।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتَلَفَ فِيهِ وَلَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَبِّكَ
لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ مُرِيبٍ ۖ وَإِنَّ كَلَامَ الْيَوْفِيِّ لَهُمْ رَبُّكَ
أَعْمَالُهُمْ إِنَّهُمْ بِإِعْمَالُونَ خَيْرٍ ۖ

पारा 12

622

सूरह-11. हूद

और हमने मूसा को किताब दी। फिर उसमें फूट पड़ गई। और अगर तेरे खब की तरफ से पहले ही एक बात न आ चुकी होती तो उनके दर्मियान फैसला कर दिया जाता। और उन्हें इसमें शुबह है कि वह मुतमइन (संतुष्ट) नहीं होने देता और यकीनन तेरा खब हर एक को उसके आमाल का पूरा बदला देगा। वह बाख़बर है उससे जो वे कर रहे हैं। (110-111)

'मूसा की किताब में इख़लेफ' का मतलब यह है कि उसके मुखातबीन उसके बयानात के बारे में कई राय हो गए। उनमें से कुछ लोगों ने झुठलाया और कुछ लोगों ने तस्लीम किया।

जब भी कोई बात कही जाए तो आदमी उसके बारे में हमेशा दो चीजों के दर्मियान होता है। एक, सही ताबीर (भाष्य)। दूसरे, ग़लत ताबीर। अगर सुनने वाले फिलवाकअ संजीदा हों तो वे एक ही सही ताबीर तक पहुंचेंगे उनकी संजीदगी उनके लिए इतेहादे राय की जामिन बन जाएगी। इसके बरअक्स अगर वे बात के बारे में संजीदा न हों तो वे उसे कोई अहमियत न देंगे और अपने अपने ख़्याल के मुताबिक उसकी मुख्तलिफ ताबीरें करेंगे। कोई एक बात कहेगा, कोई दूसरी बात। इस तरह उनकी ग़ैर संजीदगी उन्हें इख़लेफे राय तक पहुंचा देगी।

यह सूरत तमाम पैगम्बरों के साथ पेश आई। इसके बावजूद खुदा इसे गवारा करता रहा। इसकी वजह यह है कि खुदा ने मौजूदा दुनिया को अमल की जगह बनाया है और अगली आने वाली दुनिया को बदला पाने की जगह। खुदा की यही सुन्नत है जिसकी बिना पर लोगों को मुकम्मल आजादी मिली हुई है। मौजूदा सूरतेहाल इसी मोहलते इस्तेहान की बिना पर है न कि खुदा के इज्ज या लोगों के किसी इस्तहक़क (पात्रता) की बिना पर।

فَاسْتَقِمْ كَمَا أُنْزِلَتْ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۖ وَلَا تَرْكَبُوا
إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمُ مِنْ دُونِ اللَّهِ مِنْ أَوْلِيَاءٍ ثُمَّ
لَا تُنصَرُونَ ۖ وَأَقِمِ الصَّلَاةَ طَرَفِي النَّهَارِ وَزُلْفًا مِنَ اللَّيْلِ إِنَّ الْحَسَنَاتِ
يُذْهِبْنَ السَّيِّئَاتِ ذَلِكَ ذِكْرَى لِلذَّاكِرِينَ ۖ وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ
أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ۖ

पस तुम जमे रहो जैसा कि तुम्हें हुक्म हुआ है और वे भी जिन्होंने तुम्हारे साथ तौबा की है और हद से न बढ़े बेशक वह देख रहा है जो तुम करते हो। और उनकी तरफ न झुको जिन्होंने जुल्म किया, वरना तुम्हें आग पकड़ लेगी और अल्लाह के सिवा तुम्हारा कोई मददगार नहीं, फिर तुम कहीं मदद न पाओगे और नमाज कायम करो दिन के दोनों हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में। बेशक नेकियां दूर करती हैं बुराइयों को। यह याददिहानी (अनुस्मरण) है याददिहानी हासिल करने वालों के लिए और सब्र करो अल्लाह नेकी करने वालों का अज़्र जाए (विनष्ट) नहीं करता। (112-115)

हक की दावत (आह्वान) का इत्तिदाई इस्तक़बाल नज़रअंदाज करने की सूरत में होता है।

सूरह-11. हूद

623

पारा 12

इसके बाद मुखालिफ्त शुरू होती है, यहां तक कि मुखालिफ्त अपने आखिरी नुक्ते पर पहुंच जाती है। यह दावियों के लिए बड़ा नाजुक वक्त होता है। उस वक्त उनके दर्मियान दो क्रिसम के जेहन उभरते हैं। कुछ लोग झुंझला कर यह चाहने लगते हैं कि मुखालिफ्तीन से टकरा जाएं और उन लोगों से कुव्वत के जरिए निपटें जिनके लिए नजरी दलाइल बेअसर साबित हुए हैं। दूसरा जेहन वह है जो यह सोचता है कि मुखातबीन के लिए काविले कुवूल बनाने के खातिर अपनी दावत में कुछ तरमीम (संशोधन) कर ली जाए। दावत के उन अज्जा (अंशों) का जिक्र न किया जाए जिन्हें सुनकर मुखातबीन बिगड़ जाते हैं।

पहला रवैया अगर हद से तजावुज (सीमा-उल्लंघन) करना है तो दूसरा रवैया बातिल से मुसालेहत (असत्य से समझौता) करना। और ये दोनों ही अल्लाह की नजर में यकसां तौर पर गलत हैं। खास तौर पर दूसरी चीज (काविले कुवूल बनाने के खातिर तब्दीली) तो ज़ुर्म का दर्जा रखती है। क्योंकि अल्लाह तआला को सबसे ज्यादा जो चीज मलूब है वह हक का एलान है। और मुसालेहत की सूरत में हक का वाजेह एलान नहीं हो सकता।

दावत की राह में जब भी कोई मुश्किल पेश आए तो दाअी (आह्वानकर्ता) को चाहिए कि खुदा की तरफ ज्यादा से ज्यादा रुजूअ करे क्योंकि सब कुछ करने वाला वही है। खुदा की मदद ही तमाम मुश्किलात के हल का वाहिद यकीनी जरिया है।

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُونِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوا بَقِيَّةَ يَوْمِهِمْ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيلًا مِمَّنْ أَجَيْنَا مِنْهُمْ وَاتَّبَعَ الَّذِينَ ظَلَمُوا مَا أُتْرِفُوا فِيهِ وَكَانُوا مُجْرِمِينَ ۝ وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرَىٰ بِظُلْمٍ وَأَهْلُهَا مُصْطَحُونَ ۝

पस क्यों न ऐसा हुआ कि तुमसे पहले की कौमों में ऐसे अहले खैर होते जो लोगों को जमीन में फसाद करने से रोकते। ऐसे थोड़े लोग निकले जिनको हमने उनमें से बचा लिया। और जालिम लोग तो उसी ऐश में पड़े रहे जो उन्हें मिला था और वे मुजरिम थे। और तेरा रब ऐसा नहीं कि वह बस्तियों को नाहक तबाह कर दे हालांकि उसके वाशिंदे इस्लाह (सुधार) करने वाले हों। (116-117)

यहां पिछलों से मुराद पिछली उम्मतें बअल्फ़जे दीगर पिछली मुस्लिम कौमों हैं। कौम का बिगाड़ हमेशा इस तरह होता है कि दुनियावी सामान जो खुदा की तरफ से उन्हें इसलिए दिया गया था कि इससे उनके अंदर शुक्र का जज्बा उभरे, वह उनके लिए सरमस्ती (उन्मुकता) और दुनियापरस्ती पैदा करने का जरिया बन गया।

ऐसी हालत में मुस्लिम कौम की इस्लाह के लिए जो काम करना है उसका उन्वान शरीअत की इस्तेलाह में 'अग्र बिल मारुफ और नही अनिलमुकर' है। यह हुक्म एक मुसलमान की उस जिम्मेदारी को बताता है जो अपने करीबी माहिल की इस्लाह के सिलसिले में उस पर आयद होती है। इससे मुराद यह है कि मुस्लिम मुआशिरों में हमेशा ऐसे अफराद मौजूद

पारा 12

624

सूरह-11. हूद

रहने चाहिए जो मुसलमानों को खुदा और आखिरत की याद दिलाएं। वे उनके अख़लाक की निगरानी करें। वे मामलात में उन्हें राहेरास्त पर कायम रखने की कोशिश करें।

किसी कौम में ऐसे अहले खैर का न निकलना हमेशा दो सबब से होता है। या तो पूरी कौम की कौम बिगड़ चुकी हो और उसमें कोई सालेह इंसान बाक़ी न रहा हो। या सालेह अफराद मौजूद तो हों मगर उमूमी बिगाड़ की वजह से वे ज़वान खोलने की हिम्मत न करते हों। उन्हें अदेशा हो कि अगर उन्होंने सच्ची बात कही तो कौम के दर्मियान वे बेइज्जत होकर रह जाएंगे।

मज्कूरा दोनों सूरतों में कौम खुदा की नजर में अपना एतबार खो देती है और इसकी मुस्तहिक हो जाती है कि एक या दूसरी सूरत में वह इतावे खुदावंदी की जद में आ जाए।

وَلَوْ شَاءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَاحِدَةً ۚ وَلَا يَزَالُ النَّاسُ مُحْتَفِلِينَ ۝ إِلَّا مَنْ رَحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذَلِكَ خَلَقَهُمْ وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ۝

और अगर तेरा रब चाहता तो लोगों को एक ही उम्मत बना देता मगर वे हमेशा इख़तेलाफ (मत-भिन्नता) में रहेंगे सिवा उनके जिन पर तेरा रब रहम फरमाए। और उसने इसीलिए उन्हें पैदा किया है। और तेरे रब की बात पूरी हुई कि मैं जहन्नम को जिनों और इंसानों से इकट्ठे भर दूंगा। (118-119)

हमारी दुनिया में इंसान के सिवा दूसरी बेशुमार मख़बूक़ात भी हैं। ये सब हमेशा फ़ितरत के एक ही मुकरर रास्ते पर चलती हैं। इसी तरह इंसान को भी खुदा एक ही सिराते मुस्तकीम (सन्मार्ग) का पाबंद बना सकता था। मगर इंसान के बारे में खुदा की यह स्कीम ही नहीं। इंसान के सिलसिले में खुदा का मंसूबा यह था कि एक ऐसी मख़बूक़ पैदा की जाए जो खुद अपने आजादाना इख़्तियार के तहत एक चीज को ले और दूसरी चीज को छोड़ दे। इंसान की दुनिया में इख़तेलाफ (किसी का एक रास्ते पर चलना और किसी का दूसरे रास्ते पर) दरअसल इसी खास खुदाई मंसूबे की बिना पर है।

यह मंसूबा यकीनन एक पुरख़तर (ख़तरे भरा) मंसूबा था क्योंकि इसका मतलब यह था कि बहुत से लोग आजादी का ग़लत इस्तेमाल करके अपने आपको जहन्नम का मुस्तहिक बना लेंगे। मगर इसी पुरख़तर मंसूबे के जरिए वे आला रूहें भी चुनी जा सकती थीं जो खुदा की खास रहमत की मुस्तहिक करार पाएं। खुदा ने अपनी रहमतें सारी कायनात को बतौर अतिय्या (पारितोष) दे रखी हैं। अब खुदा ने यह मंसूबा इसलिए बनाया ताकि अपनी रहमत वह अपनी एक मख़बूक़ को यह कहकर दे कि यह तुम्हारा हक़ है।

खुदा की रहमत उस शख्स को मिलती है जिसका शुक्र इतना बेदार हो गया हो कि वह इस्तेहानी इख़्तियार के अंदर अपनी हकीकी बेइख़्तियारी को जान ले। वह इंसानी कुदरत के पर्दे

सूरह-11. हूद

625

पारा 12

में खुदा की कदरत को देख ले। यह शुऊर ऐसे आदमी से सरकशी की ताकत छीन लेता है। यहां तक कि उसका यह हाल हो जाता है कि जब खुदा अपनी रहमत को उसका हक कहकर पेश करे तो उसका शुऊर हकीकत पुकार उठेखुदाया यह भी तेरी रहमतों ही का एक करिश्मा है। वरना मेरा अमल तो किसी कीमत का मुस्तहिक (पात्र) नहीं।

وَكَلَّا نَقْصُصْ عَلَيْكَ مِنْ أَنْبَاءِ الرُّسُلِ مَا نَشِئْتُمْ بِهِ فُؤَادَكَ وَجَاءَكَ فِي هَذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَذِكْرَى لِلْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقُلْ لِلَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ أَعْمَلُوا عَلَى مَكَانَتِكُمْ إِنَّا عَمِلُونَ ۝ وَانْتَظِرُوا إِنَّا مُنْتَظِرُونَ ۝ وَبِاللَّهِ غَيْبُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْيَهِ يُرْجَعُ الْأُمُورُ كُلُّهَا فاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝

और हम रसूलों के अहवाल से सब चीज तुम्हें सुना रहे हैं। जिससे तुम्हारे दिल को मजबूत करें और इसमें तुम्हारे पास हक आया है और मोमिनों के लिए नसीहत और याददिहानी (अनुस्मरण)। और जो लोग ईमान नहीं लाए उनसे कहो कि तुम अपने तरीके पर करते रहो और हम अपने तरीके पर कर रहे हैं। और इंतजार करो हम भी मुंतजिर हैं। और आसमानों और जमीन की छुपी बात अल्लाह के पास है और वही तमाम मामलों का मरजअ (उन्मुख-केन्द्र) है। पस तुम उसकी इबादत करो और उसी पर भरोसा रखो और तुम्हारा ख उससे बेखबर नहीं जो तुम कर रहे हो। (120-123)

कुरआन में रसूलों के अहवाल (वृत्तांत) इसलिए सुनाए गए हैं कि बाद के दाअियों को इससे सबक हासिल हो। रसूलों के अहवाल में दाअी देखता है कि उनकी मुखातब कौमों ने उनसे झगड़े किए। सीधी बात को गलत रुख देकर उन्हें मतऊन (लांछित) किया। उन्हें तरह तरह की तकलीफें पहुंचाई। उन्हें इस तरह रद्द कर दिया जैसे उनकी कोई कीमत ही नहीं।

मगर बिलआखिर अल्लाह ने उनकी मदद की। उनकी बात सबसे बरतर साबित हुई। मुखालिफीन की तमाम कारवाइयां नाकाम होकर रह गई। दोनों गिरोहों का यह मुख्तलिफ अंजाम अपनी इब्तिदाई सूरत में मौजूदा दुनिया ही में पेश आया और आखिरत में वह अपनी कामिलतरीन सूरत में पेश आएगा।

इन मिसालों से दाअी को यह तारीखी एतमाद हासिल होता है कि उसे हक की दावत की राह में जो मुश्किलें पेश आ रही हैं उनमें उसके लिए न मायूसी का सवाल है और न घबराहट का। हक की दावत की राह में ये चीजें हमेशा पेश आती हैं। और इसे भी बिलआखिर उसी तरह कामयाबी हासिल होगी जिस तरह इससे पहले खुदा के सच्चे दाअियों को हासिल हुई।

पारा 12

626

सूरह-12. यूसुफ

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ إِذْ نَزَّلْنَاهُ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ هَذَا الْقُرْآنَ وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمَنِ الْغَافِلِينَ ۝

आयतें-111

सूरह-12. यूसुफ

रुकूअ-12

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० रा०। ये वाजेह (स्पष्ट) किताब की आयतें हैं। हमने इसे अरबी कुरआन बनाकर उतारा है ताकि तुम समझो। हम तुम्हें बेहतरीन सरगुजस्त (किस्से) सुनाते हैं इस कुरआन की बदौलत जो हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) किया। इससे पहले बेशक तू बेखबरों में था। (1-3)

कुरआन अगरचे सारी दुनिया की हिदायत के लिए आया है। ताहम इससे मुखातब अव्वल अरब थे। इसलिए वह अरबी जवान में उतरा। अब इस पर ईमान लाने वालों की जिम्मेदारी है कि वे इसकी तालीमात को हर जवान में मुंतकिल करें। और इसको दुनिया की तमाम कौमों तक पहुंचाएं।

कुरआन की तालीमात कुरआन में मुख्तलिफ अंदाज और उस्तूब (शैली) से बयान की गई हैं। कहीं वह कायनाती इस्तदलाल (तर्कों) की जवान में हैं, कहीं इंजार और तबशीर (डरावा और खुशखबरी) की जवान में और कहीं तारीख की जवान में। सूरह यूसुफ में यह पैगाम हजरत यूसुफ के किस्से की शकल में सामने लाया गया है। इस सूरह में अहले ईमान को एक पैगम्बर की सरगुजस्त (किस्सा) की सूरत में बताया गया है कि खुदा हर चीज पर कादिर है। वह हक के लिए उठने वालों की मदद करता है। और मुखालिफीन की तमाम साजिशों के बावजूद बिलआखिर उन्हें कामयाब करता है। शर्त यह है कि अहले ईमान के अंदर तकवा और सन्न की सिफत मौजूद हो। यानी वे अल्लाह से डरने वाले हों और हर हाल में हक के रास्ते पर जमे रहें।

إِذْ قَالَ يُوسُفُ لِأَبِيهِ يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ ۝ قَالَ يَبْنَئِي لَكَ عَلَيْهِمْ رُءُوسٌ عَلَى إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُبِينٌ ۝ وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَىٰ آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَتْكَ عَلَىٰ أَبِيكَ مِنْ قَبْلُ إِزْهِيمَهُ وَاَسْتَقِ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۝

जब यूसुफ ने अपने बाप से कहा कि अब्बाजान मैंने ख़ाब में ग्यारह सितारे और सूरज और चांद देखे हैं। मैंने उन्हें देखा कि वे मुझे सज्दा कर रहे हैं। उसके बाप ने कहा कि ऐ मेरे बेटे, तुम अपना यह ख़ाब अपने भाइयों को न सुनाना कि वे तुम्हारे खिलाफ कोई साजिश करने लगे। वेशक शैतान आदमी का खुला हुआ दुश्मन है। और इसी तरह तेरा रब तुझे मुंतख़ब करेगा और तुम्हें बातों की हकीकत तक पहुंचना सिखाएगा और तुम पर और आले याकूब पर अपनी नेमत पूरी करेगा जिस तरह वह इससे पहले तुम्हारे अज्दाद (पूर्वजों) इब्राहीम और इस्हाक पर अपनी नेमत पूरी कर चुका है। यकीनन तेरा रब अलीम (ज्ञानवान) और हकीम (तत्वदर्शी) है। (4-6)

हदीस में है कि ख़ाब की तीन किस्में हैं। अपने दिल की बात, शैतान का डरावा और खुदा की बशारत (शुभ सूचना)। आम आदमी का ख़ाब तीनों में से कोई भी हो सकता है। मगर पैग़म्बर का ख़ाब हमेशा खुदा की बशारत होता है, कभी रास्त (प्रत्यक्ष) अंजाम में और कभी तमसीली (उपमा के) अंजाम में।

हज़रत यूसुफ का ज़माना उन्नीसवीं सदी ईसा पूर्व का ज़माना है। आपके वालिद हज़रत याकूब फिलिस्तीन में रहते थे। हज़रत यूसुफ और उनके भाई बिन यामीन एक मां से थे और बकिया दस भाई दूसरी माओं से। इस ख़ाब में सूरज और चांद से मुराद आपके वालिदेन हैं और ग्यारह सितारों से मुराद ग्यारह भाई। इसमें यह बशारत थी कि हज़रत यूसुफ को पैग़म्बरी मिलेगी और इसी के साथ यह ख़ाब आपके उस उरूज व इक्तेदार (सत्ता) की तमसील था जो बाद को मिश्र पहुंच कर आपको मिला और जिसके बाद सारे अहले ख़ानदान मजबूर हुए कि वे आपकी अज़मत को तस्लीम कर लें।

हज़रत यूसुफ के दस सौतेले भाई आपकी शख़्सियत और मकबूलियत को देखकर आपसे हसद रखते थे। इसलिए आपके वालिद (हज़रत याकूब) ने ख़ाब सुनकर फ़ैरन कहा कि अपने भाइयों से इसका ज़िक्र न करना वरना वे तुम्हारे और ज्यादा दुश्मन हो जाएंगे।

किसी की बड़ाई देखकर उसके खिलाफ जलन पैदा होना ख़ालिस शैतानी फ़ैअल (कृत्य) है। जिस शख़्स के अंदर यह सिफत पाई जाए उसे अपने बारे में तौबा करनी चाहिए। क्योंकि यह इस बात का सबूत है कि वह खुदा के फ़ैसले पर राजी नहीं। वह शैतान की हिदायत पर चल रहा है न कि खुदा की हिदायत पर।

यहां इतमामे नेमत का लफ़्ज़ हज़रत यूसुफ के लिए भी बोला गया है जिनको हुक्मत हासिल हुई और हज़रत इब्राहीम के लिए भी जिनको कोई हुक्मत नहीं मिली। फिर दोनों के दर्मियान वह मुश्तरक (साम्य) चीज क्या थी जिसे इतमामे नेमत कहा गया। वह नुबुव्वत थी। यानी खुदा की उस खुसूसी हिदायत की तौफीक जो किसी को आखिरत में आला मर्तबों तक पहुंचाने वाली है। खुदा की हिदायत इंसान के ऊपर खुदा की नेमतों की तक्मील है। यह नेमत पैग़म्बरों को बराहेरास्त (प्रत्यक्ष) तौर पर मिलती है और आम सालेहीन को बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर।

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِّلْمَسْكِينِ ۖ إِذْ قَالَ الْيُوسُفُ وَأَخُوهُ أَحَبُّ إِلَيَّ إِنِّي أَتَمَنَّى أَن تُبَدِّلَنِي مِثْلَ مَا يُبَدِّلُ الْيُوسُفَ ۚ وَبَدَّلْنَاهُ بِجَنَاحِ يَاقُوبَ ۚ وَكَانَ أَبُوهُمَا صَالِحًا ۚ فَأَرَادَ أَبُوهُمَ طَالِحِينَ ۖ قَالَ قَائِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوا يُوسُفَ وَأَلْقُوهُ فِي غَيِّبَتِ الْغُبِّ يَلْتَقِطَهِ بَعْضُ السَّيَّارَةِ إِن كُنْتُمْ فَاعِلِينَ ۝

हकीकत यह है कि यूसुफ और उसके भाइयों में पूछने वालों के लिए बड़ी निशानियां हैं। जब उसके भाइयों ने आपस में कहा कि यूसुफ और उसका भाई हमारे बाप को हमसे ज्यादा महबूब हैं। हालांकि हम एक पूरा जत्था हैं। यकीनन हमारा बाप एक खुली हुई गलती में मुत्तिला है। यूसुफ को कत्ल कर दो या उसे किसी जगह फेंक दो ताकि तुम्हारे बाप की तवज्जोह सिर्फ तुम्हारी तरफ हो जाए। और इसके बाद तुम बिल्कुल ठीक हो जाना। उनमें से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ को कत्ल न करो। अगर तुम कुछ करने ही वाले हो तो उसे किसी अंधे कुर्वे में डाल दो। कोई राह चलता कफ़िला उसे निकाल ले जाएगा। (7-10)

मक्का के आखिरी दिनों में जबकि अबू तालिब और हज़रत खदीजा का इतिकाल हो चुका था मक्का के लोगों ने आपकी मुख़ालिफ़त तेज़तर कर दी। उस ज़माने में मक्का के कुछ लोगों ने आपसे हज़रत यूसुफ का हाल पूछा जिनका नाम उन्होंने सफ़रों के दौरान कुछ वहीदियों से सुना था। यह सवाल अगरचे उन्होंने मज़ाक के तौर पर किया था मगर अल्लाह तआला ने उसे खुद पूछने वालों की तरफ लौटा दिया। इस क़िस्से के ज़रिए बिलवास्ता (परोक्ष) तौर पर उन्हें बताया गया कि तुम लोग वे हो जिनके हिस्से में यूसुफ के भाइयों का किरदार आया है। जबकि पैग़म्बर का अंजाम खुदा की रहमत से वह होने वाला है जो यूसुफ का मिश्र में हुआ।

हज़रत याकूब देख रहे थे कि उनकी औलाद में सबसे ज्यादा लायक और सालेह (निक) हज़रत यूसुफ हैं। उनके अंदर उन्हें मुस्तकबिल के नबी की शख़्सियत दिखाई देती थी। इस बिना पर उन्हें हज़रत यूसुफ से बहुत ज्यादा लगाव था। मगर आपके दस साहबज़दे मामले को दुनियावी नजर से देखते थे। उनका ख़ाल था कि बाप की नजर में सबसे ज्यादा अहम चीज उनका जत्था होना चाहिए। क्योंकि वही इस काबिल है कि ख़ानदान की मदद और हिमायत कर सके। उनका यह एकतरफा दृष्टिकोण यहां तक पहुंचा कि उन्होंने सोचा कि यूसुफ को मैदान से हटा दें तो बाप की सारी तवज्जोह उनकी तरफ हो जाएगी।

वे लोग जब हज़रत यूसुफ के खिलाफ मंसूबा बनाने बैठे तो उनके एक भाई (यहूदा) ने यह तज्वीज पेश की कि यूसुफ को कत्ल करने के बजाए किसी अंधे कुर्वे में डाल दिया जाए। यह अल्लाह तआला का ख़ास इतिज़ाम था। अल्लाह का यह तरीका है कि कोई ग़िरोह जब

नाहक किसी बंदे के दरपे हो जाता है तो खुद उस गिरोह में से एक ऐसा शख्स निकलता है जो अपने लोगों को किसी ऐसी मोअतदिल तदबीर पर राजी कर ले जिसके अंदर से उस खुदा के बंदे के लिए नया इम्कान खुल जाए।

قَالُوا يَا بَنَا بَنِي إِسْرَءِيلَ مَا لَكَ لَا تَأْتِيَنَا عَلَى يَدَيْكَ ۖ أَتَنْهَى أَنْ يَخْرُجَ أَوْ يَدْخُلَ ۖ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّكَ إِذًا لَخَبِيرٌ ۖ
عَدَايَرْتَهُ وَيَلْعَبُ وَإِنَّا لَهُ لَحَفُظُونَ ۖ قَالَ إِنِّي لَيَحْزُنُنِي أَنْ تَذْهَبُوا بِهِ وَأَخَافُ أَنْ يَأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غَافِلُونَ ۖ قَالُوا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّا إِذًا لَخَبِيرُونَ ۖ

उन्होंने अपने बाप से कहा, ऐ हमारे बाप, क्या बात है कि आप यूसुफ के मामले में हम पर भरोसा नहीं करते। हालांकि हम तो उसके खैरखाह हैं। कल उसे हमारे साथ भेज दीजिए, खाए और खेले, और हम उसके निगहवान हैं। बाप ने कहा मैं इससे गमगीन होता हूँ कि तुम उसे ले जाओ और मुझे अंदेशा है कि उसे कोई भेड़िया खा जाए जबकि तुम उससे ग्राफिल हो। उन्होंने कहा कि अगर उसे भेड़िया खा गया जबकि हम एक पूरी जमाअत हैं, तो हम बड़े ख़सारे (घाटे) वाले साबित होंगे। (11-14)

हजरत याकूब ने अपने बेटों को जो जवाब दिया उससे मालूम होता है कि हालात के मुतालअे से उन्होंने अंदाजा कर लिया था कि यह सहरा में खेलने कूदने का मामला नहीं है। बल्कि यूसुफ के खिलाफ उनके भाइयों की साजिश का मामला है। मगर अल्लाह से डरने वाला इंसान अल्लाह पर भरोसा करने वाला इंसान होता है। हजरत याकूब ने अगरचे अपनी फरासत (दूरदृष्टि) से यह महसूस कर लिया था कि क्या होने जा रहा है। ताहम वह खुदा की कुदरत को हर दूसरी चीज से ऊपर समझते थे। उन्हें खुदा की बालादस्ती पर कामिल यकीन था। चुनांचे वाजह ख़तरात के बावजूद उन्होंने यूसुफ को खुदा के भरोसे पर उनके भाइयों के हवाले कर दिया।

यह खुदा से डरने वाले इंसान की तस्वीर थी। दूसरी तरफ हजरत यूसुफ के भाइयों में उन लोगों की तस्वीर नजर आती है जिनके दिल खुदा के ख़ौफ से खाली हों। ये लोग एक खुदा के बंदे को नाहक बर्बाद करने के मंसूबे बना रहे थे। वे यह भूल गए थे कि वे एक ऐसी दुनिया में हैं जहाँ खुदा के सिवा किसी और को कोई इख़्तियार हासिल नहीं। वे लफ़्जों के एतबार से अपने को खैरखाह (हितैषी) साबित कर रहे थे। हालांकि खुदा के नजदीक खैरखाह वह है जो अमल के एतबार से अपने को खैरखाह साबित करे।

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَآرَدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْلَاهُ قَالَ لِبُشَيْرِي هَذَا غُلَامٌ وَأَسَرُّهُ بِضَاعَةً وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۖ وَشَرُّهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَأَنَّا وَفِيهِ مِنَ الرَّاهِدِينَ ۚ

فَلَمَّا ذَهَبُوا بِهِ وَآرَدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْلَاهُ قَالَ لِبُشَيْرِي هَذَا غُلَامٌ وَأَسَرُّهُ بِضَاعَةً وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۖ وَشَرُّهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَأَنَّا وَفِيهِ مِنَ الرَّاهِدِينَ ۚ

फिर जब वे उसे ले गए और यह तै कर लिया कि उसे एक अंधे कुर्वे में डाल दें और हमने यूसुफ को 'वही' (प्रकाशना) की कि तू उन्हें उनका यह काम जताएगा और वे तुझे न जानेंगे और वे शाम को अपने बाप के पास रोते हुए आए। उन्होंने कहा कि ऐ हमारे बाप हम दौड़ का मुकाबला करने लगे और यूसुफ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया। फिर उसे भेड़िया खा गया। और आप हमारी बात का यकीन न करेंगे चाहे हम सच्चे हों। और वे यूसुफ की कमीज पर झूठ खून लगाकर ले आए। बाप ने कहा नहीं, बल्कि तुम्हारे नपस ने तुम्हारे लिए एक बात बना दी है। अब सब्र ही बेहतर है। और जो बात तुम जाहिर कर रहे हो उस पर अल्लाह ही से मदद मांगता हूँ। (15-18)

हजरत यूसुफ का अस्ल किस्सा यकीनी तौर पर उससे ज्यादा मुफ़सल (विस्तृत) है जितना कि कुरआन में बयान हुआ है। मगर कुरआन का अस्ल मक्सद नसीहत है न कि वाक्यानिगारी। इसलिए वह सिर्फ उन पहलुओं को लेता है जो नसीहत और तज्कीर के लिए मुफीद हों। और बकिया तमाम अज्जा (अंशों) को हटा देता है ताकि तारीखनिगार उसे मुस्तब करें।

रिवायात के मुताबिक हजरत यूसुफ तीन दिन तक अंधे कुर्वे में रहे। इन्हीं तीन दिनों में ग़ालिबन ख़ाब के जरिए आपको आपका मुस्तकबिल दिखाया गया। उसमें आपने देखा कि आप कुर्वे से निकलते हैं और फिर अजमत व शान के एक ऊंचे मकाम पर पहुंचते हैं। यहां तक कि आपके और आपके भाइयों के दर्मियान हैसियत के एतबार से इतना फर्क हो जाता है कि वे आपको देखते हैं तो पहचान नहीं पाते।

हजरत यूसुफ के भाइयों ने जो कुछ किया वह इतिहाई इश्तिआलअंगेज (उत्तेजक) हरकत थी। मगर एक तरफ हजरत यूसुफ का हाल यह था कि उन्होंने अपने मामले को खुदा के हवाले कर दिया और सुनसान मकाम पर अंधे कुर्वे के अंदर ख़ामोश बैठे हुए खुदा की मदद का इतिजार करते रहे। दूसरी तरफ आपके वालिद हजरत याकूब ने सब्र जमील (असीम संयम) की रविश इख़्तियार की। कुछ तफ़्सीरों में आया है कि उन्होंने अपने बेटों से कहा : अगर यूसुफ को भेड़िया खा जाता तो वह उसकी कमीज को भी जरूर भाड़ डालता। यानी वह भेड़िया भी कैसा शरीफ भेड़िया था जो यूसुफ को तो उठा ले गया और खून आलूद कमीज को निहायत सही व सालिम हालत में उतार कर तुम्हारे हवाले कर गया।

وَجَاءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوا وَارِدَهُمْ فَأَدْلَى دَلْلَاهُ قَالَ لِبُشَيْرِي هَذَا غُلَامٌ وَأَسَرُّهُ بِضَاعَةً وَاللَّهُ عَلِيمٌ بِمَا يَعْمَلُونَ ۖ وَشَرُّهُ بِثَمَنٍ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُودَةٍ وَكَأَنَّا وَفِيهِ مِنَ الرَّاهِدِينَ ۚ

सूरह-12. यूसुफ

631

पारा 12

और एक काफिला आया तो उन्होंने अपना पानी भरने वाला भेजा। उसने अपना डोल लटकाया। उसने कहा, खुशखबरी हो यह तो एक लड़का है। और उसे तिजारात का माल समझ कर महफूज कर लिया। और अल्लाह खूब जानता था जो वे कर रहे थे। और उन्होंने उसे थोड़ी सी कीमत चन्द दिरहम के एवज बेच दिया। और वे उससे बेराबत (उदासीन) थे। (19-20)

हजरत यूसुफ के भाई जब आपको अंधे कुएँ में डाल कर चले गए तो तीन दिन बाद एक तिजारी काफिला उधर से गुज़ा जो मदन से मिस्र जा रहा था। काफिले के एक आदमी ने पानी की खातिर कुएँ में डोल डाला तो हजरत यूसुफ (जो उस वक़्त तकरीबन 16 साल के थे) डोल पकड़ कर बाहर आ गए।

यह इंसानों को बेचने का जमाना था। इसलिए काफिले वाले खुश हुए कि वे मिस्र ले जाकर लड़के को फरोख्त कर सकेंगे। चुनांचे जब वे मिस्र पहुँचे तो अपने दीगर सामानों के साथ हजरत यूसुफ को भी बाज़ार में रखा। वहाँ एक आदमी ने होनहार लड़का देखकर आपको बीस दिरहम में ख़रीद लिया।

हजरत यूसुफ के भाई आपको बेचन करके कुएँ में डाल चुके थे। काफिले वालों ने गुलाम की हैसियत से फरोख्त कर दिया। इसके बाद मिस्र के एक आला सरकारी अफसर की बीवी (जुलैखा) ने आपको कैदख़ाने में कैद करा दिया। मगर अल्लाह तआला ने इन तमाम मरहलों को आपके लिए इज्जत व सरबुलन्दी तक पहुँचने का ज़िन्ना बना दिया। किस वक़्त फर्क है इल्मे इंसान में और इल्मे खुदावंदी में!

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرَاهُ مِنْ مِصْرَ لِمَرْأَتِهِ أَكْرِمِي مَوْلِيَّ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا ۖ وَكَذَلِكَ مَكَّنَّا لِيُوسُفَ فِي الْأَرْضِ وَلِنُعَلِّمَهُ مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ ۚ وَاللَّهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ ۖ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَالنَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝ وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهُ آتَيْنَاهُ حُكْمًا وَعِلْمًا ۖ وَكَذَلِكَ نُجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝

और अहले मिस्र में से जिस शख्स ने उसे ख़रीदा उसने अपनी बीवी से कहा कि इसे अच्छी तरह रखो। उम्मीद है कि वह हमारे लिए मुफ़ीद हो या हम उसे बेटा बना लें। और इस तरह हमने यूसुफ को उस मुल्क में जगह दी। और ताकि हम उसे बातों की तावील (निहितार्थ) सिखाएं। और अल्लाह अपने काम पर शालिब (अधिकार प्राप्त) रहता है। लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। और जब वह अपनी पुरख़गी को पहुँचा हमने उसे हुक्म और इल्म अता किया। और नेकी करने वालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं। (21-22)

कहा जाता है कि मिस्री हुक्मस्त के एक अफसर (फ़ैतिफ़र) ने हजरत यूसुफ को ख़रीदा।

पारा 12

632

सूरह-12. यूसुफ

मामूली कपड़े में छुपी हुई आपकी शानदार शख्सियत को उसने पहचान लिया। उसने समझ लिया कि यह कोई गुलाम नहीं है बल्कि शरीफ ख़ानदान का लड़का है। किसी वजह से वह काफिले के हाथ लग गया और उसने इसे यहाँ लाकर बेच दिया। चुनांचे उसने अपनी बीवी से कहा कि इसे गुलाम की तरह न रखना। यह एक लायक नौजवान मालूम होता है और इस काबिल है कि हमारे घर और जायदाद का इतिजाम संभाल ले। मज़ीद यह की फ़ैतिफ़र बेऔलाद था और किसी को अपना मुतबन्ना (ले पालक) बनाना चाहता था। उसने यह इरादा भी कर लिया कि अगर वाकई यह नौजवान उसकी उम्मीदों के मुताबिक निकला तो वह उसे अपना बेटा बना लेगा।

हजरत यूसुफ जब तकरीबन चालीस साल के हुए तो ख़ुदा ने उन्हें एक तरफ़ नुबुवत अता की और दूसरी तरफ़ इक्तेदार (सत्ता)। उन्हें यह इनाम उनके हुस्ने अमल की वजह से मिला। ख़ुदा के इनाम का दरवाज़ा हमेशा मोहसिनीन के लिए खुला हुआ है। फ़र्क यह है कि दोरे नुबुवत में किसी को उसके हुस्ने अमल के नतीजे में नबी भी बनाया जा सकता था। मगर बाद के जमाने में उसे सिर्फ़ वे इनामात मिलेंगे जो नुबुवत के अलावा हैं।

وَرَأَوْنَاهُ الْيَتِيمَ هُوَ فِي بَيْتِهَا عَنْ نَفْسِهِ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ۖ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ إِنَّهُ رَبِّي أَحْسَنَ مَثْوَايَ إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الظَّالِمُونَ ۝ وَقَدْ هَمَّتْ بِهِ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَا أَنَّ رَأْبُهَا رَأَتْهُ كَذَلِكَ لَیَصْرَفَ عَنْهُ الشَّؤْمُ ۖ وَالْفَحْشَاءُ إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِينَ ۝

और यूसुफ जिस औरत के घर में था वह उसे फुसलाने लगी और एक रोज़ दरवाज़े बंद कर दिए और बोली कि आ जा। यूसुफ ने कहा ख़ुदा की पनाह। वह मेरा आका है, उसने मुझे अच्छी तरह रखा है। बेशक ज़ालिम लोग कभी फ़लाह नहीं पाते। और औरत ने उसका इरादा कर लिया और वह भी उसका इरादा करता अगर वह अपने रब की बुरहान (स्पष्ट प्रमाण) न देख लेता। ऐसा हुआ ताकि हम उससे बुराई और बेहयाई को दूर कर दें। बेशक वह हमारे चुने हुए बंदों में से था। (23-24)

अर्जिमिस की बीवी ज़ुलैखा हजरत यूसुफ पर फ़ैसा हे गई। वह बराबर आपको फुसलाती रही। यहाँ तक की एक दिन मौक़ा पाकर उसने कमरे का दरवाज़ा बंद कर लिया।

एक रोज़ शदीशुदा नौजवान के लिए यह बड़ा नाज़ुक मौक़ा था। मगर हजरत यूसुफ ने अपनी फ़ितरत-रब्बानी को महफूज रखी और यह फ़ितरत उस वक़्त हजरत यूसुफ के काम आ गई। हक़ और नाहक भलाई और बुराई को पहचानने की यह ताक़त हर आदमी के अंदर पैदाइशी तौर पर मौजूद होती है। वह हर मौक़े पर इंसान को मुतनब्वह (सचेत) करती है। जो शख्स उसे नज़अंदाज़ कर दे उसने गोया ख़ुदा की आवाज़ को नज़अंदाज़ कर दिया। ऐसा आदमी ख़ुदा की मदद से महरूम होकर धीरे-धीरे अपनी फ़ितरत को कमजोर कर लेता है। इसके बरअक्स जो शख्स ख़ुदाई पुकार के जाहिर होते ही उसके आगे झुक जाए, ख़ुदा की मदद उसकी

इस्तेदाद (क्षमता) बढ़ती रहती है। वह इस काबिल हो जाता है कि आइंदा ज्यादा कुव्वत के साथ बुराई के मुकाबले में ठहर सके।

हजरत यूसुफ को जिस चीज ने बुराई से रोक़ा वह हकीकतन अल्लाह का उर था। मगर जुलूम के लिए खुदा का हवाला देना उस वक़्त बेअसर रहता। यह मौक़ा हक के एलान का नहीं था बल्कि एक नाजुक सूरतेहाल से अपने आपको बचाने का था। इसी नज़ाकत की बिना पर आपने जुलूम को उसके शौहर का हवाला दिया। आपने फरमाया कि वह मेरा आका है। उसने मुझे निहायत इज्जत के साथ अपने घर में रखा है। फिर कैसे मुमकिन है कि मैं अपने मोहसिन के नामूस (मर्यादा) पर हमला करूं।

وَأَسْتَبْعَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَيْصَهُ مِنْ دُبُرٍ وَأَلْفَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ قَالَتْ مَا جَزَاءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوءًا إِلَّا أَنْ يُسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ قَالَ هِيَ رَاوَدْتَنِي عَنْ نَفْسِي وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا إِنْ كَانَ قَبِيصُهُ قَدْ مِّنْ قَبْلِ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكَذَّابِينَ ۖ وَإِنْ كَانَ قَبِيصُهُ قَدْ مِّنْ دُبُرٍ فَكَذَّبَتْ وَهُوَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۖ فَلَمَّا رَأَى قَبِيصَهُ قَدْ مِّنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهُ مِن كَيْدِكُنَّ إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيمٌ ۖ يُوسُفُ أَعْرَضَ عَنْ هَٰذَا ۖ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنبِكِ ۖ إِنَّكَ كُنتِ مِنَ الْخَاطِئِينَ ۖ

और दोनों दरवाजे की तरफ भागे। और औरत ने यूसुफ का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उसके शौहर को दरवाजे पर पाया। औरत बोली जो तेरी घरवाली के साथ बुराई का इरादा करे उसकी सजा इसके सिवा क्या है कि उसे कैद किया जाए या उसे सख्त अजाब दिया जाए। यूसुफ ने कहा कि इसी ने मुझे फुसलाने की कोशिश की। और औरत के कुनबे वालों में से एक शख्स ने गवाही दी कि अगर उसका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो औरत सच्ची है और वह झूठा है। और अगर उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ हो तो औरत झूठी है और वह सच्चा है। फिर जब अजीज ने देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ है तो उसने कहा कि बेशक यह तुम औरतों की चाल है। और तुम्हारी चालें बहुत बड़ी होती हैं। यूसुफ, इससे दरगुजर करो। और ऐ औरत तू अपनी गलती की माफ़ी मांग। बेशक तू ही ख़ताकार थी। (25-29)

हजरत यूसुफ अपने आपको बचाने के लिए दरवाजे की तरफ भागे। जुलूम भी उनके पीछे दौड़ी और पीछे से आपका कुर्ता पकड़ लिया। खींच तान में पीछे का दामन फट गया। ताहम हजरत यूसुफ दरवाजा खोल कर बाहर निकलने में कामयाब हो गए। दरवाजे के बाहर इस्तेदाद से जुलूम का शौहर मौजूद था। उसे देखते ही जुलूम ने सारी जिम्मेदारी हजरत यूसुफ

पर डाल दी। एक लम्हा पहले वह जिस शख्स से इन्हारे मुहब्बत कर रही थी, एक लम्हा बाद उस पर झूठा इल्जाम लगाने लगी।

हजरत यूसुफ ने बताया कि मामला इसके बिल्कुल बरअक्स है। अब सवाल यह था कि फैसला कैसे किया जाए कि ग़लती किस की है। कोई तीसरा शख्स मौके पर मौजूद नहीं था जो ऐनी गवाही दे। उस वक़्त घर के एक समझदार शख्स ने लोगों को रहनुमाई दी। संभव है कि यह शख्स पहले से हालात से बाख़बर था। साथ ही, उसने यह भी देख लिया था कि यूसुफ का कुर्ता आगे के बजाए पीछे से फटा हुआ है। मगर उसने अपनी बात को ऐसे अंदाज़ में कहा गोया कि वह लोगों से कह रहा है कि जब ऐनी शहादत मौजूद नहीं है तो करीना की शहादत (Circumstantial evidence) देखकर फैसला लो। और करीने की शहादत यह थी कि हजरत यूसुफ का कुर्ता पीछे की जानिब से फटा हुआ था। यह वाजिह तौर पर इसका सबूत था कि इस मामले में इक्दाम जुलूम की तरफ से हुआ है न कि यूसुफ की तरफ से।

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِينَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ تُرَاوِدُ فَتَاهَا عَنْ نَفْسِهِ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۚ إِنَّا لَنَرُهَا فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۖ فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكًا وَآتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّينًا ۖ وَقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۖ فَلَمَّا رَأَيْنَهُ أَكْبَرْنَهُ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلَّهِ مَا هَٰذَا بَشَرًا إِنْ هَٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيمٌ ۖ قَالَتْ فَذَلِكُنَّ الَّذِي لُمْتُنَّنِي فِيهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ ۖ فَاسْتَعْصَمَ وَلَئِن لَّمْ يَفْعَلْ مَا أَمُرُهُ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُونًا مِّنَ الصَّغِيرِينَ ۖ قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُونَنِي إِلَيْهِ ۖ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّي كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُن مِّنَ الْجَاهِلِينَ ۖ فَاسْتَجَابَ لَهُ رَبُّهُ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۖ

और शहर की औरतें कहने लगीं कि अजीज की बीवी अपने नौजवान गुलाम के पीछे पड़ी हुई है। वह उसकी मुहब्बत में फरेफ़ता है। हम देखते हैं कि वह खुली हुई ग़लती पर है। फिर जब उसने उनका फरेब सुना तो उसने उन्हें बुला भेजा। और उनके लिए एक मजलिस तैयार की और उनमें से हर एक को एक-एक छुरी दी और यूसुफ से कहा कि तुम उनके सामने आओ। फिर जब औरतों ने उसे देखा तो वे दंग रह गईं। और उन्होंने अपने हाथ काट डाले। और उन्होंने कहा पाक है अल्लाह, यह आदमी नहीं है, यह तो कोई बुजुर्ग फरिश्ता है। उसने कहा यह वही है जिसके बारे में तुम मुझे मलामत कर रही थीं और मैंने इसे रिझाने की कोशिश की थी मगर वह बच गया। और अगर

इबादत न करो। यही सीधा दीन है। मगर बहुत लोग नहीं जानते। (37-40)

नौजवान कैदियों ने अपने ख़ाब की ताबीर जानने के लिए हजरत यूसुफ से रूजूअ किया। उन्होंने जिस अंदाज से सवाल किया उससे साफ ज़ाहिर हो रहा था कि वे आपकी शख्सियत से मुतअस्सिर हैं। और आपकी राय पर एतमाद करते हैं। हजरत यूसुफ जैसे नेक और बाउसूल इंसान के साथ एक अर्से तक रहने के बाद ऐसा होना बिल्कुल फितरी था।

हजरत यूसुफ के दावती जबने ने फ़ैरन महसूस कर लिया कि यह कैदख़ाने में है कि इन नौजवानों को दीने हक का पैग़ाम पहुंचाया जाए। मगर ख़ाब की ताबीर फ़ौरन बता देने के बाद उनकी तवज्जोह आपकी तरफ से हट जाती। चुनचुने आपने हकीमाना (सूझबूझ भरा) अंदाज इख़्तियार किया और ख़ाब की ताबीर को थोड़ी देर के लिए टाल दिया। इसके बाद आपने तौहीद (एकेश्वरवाद) पर मुख़्तसर तकरीर की। उसमें मुखातब की नपिसयात की रियायत करते हुए निहायत ख़ूबसूरत इस्तदलाल (तर्क) के साथ अपना पैग़ाम उन्हें सुना दिया।

दरख़्त, पथर, सितारे और रूहों वग़ैरह को जो लोग पूजते हैं इसका राज यह है कि वे बतौर खुद उन्हें मुश्किलकुशा (संकट मोचक) और हाज़तरवा (दाता) जैसे अल्काब देते हैं और समझ लेते हैं कि वाकई वे मुश्किलकुशा और हाज़तरवा हैं। हालांकि ये सब इंसान के अपने बनाए हुए इस्म (नाम) हैं जिनका मूल रूप कहीं मौजूद नहीं।

يُصَاحِبِي السَّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمْ فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا وَآمَّا الْآخَرُ فَيُضْلَبُ
فَتَأْكُلُ التَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِينَ ۝ وَقَالَ
لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنَسَهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ
فَكَثَبَ فِي السَّجْنِ بِضَعَةِ سِنِينَ ۝

ऐ मेरे कैदख़ाने के साथियो तुम में से एक अपने आका को शराब पिलाएगा। और जो दूसरा है उसे सूली दी जाएगी। फिर परिंदे उसके सर में से खाएंगे। उस अन्न मामला का फैसला हो गया जिस अन्न के बारे में तुम पूछ रहे थे। और यूसुफ ने उस शख्स से कहा जिसके बारे में उसने गुमान किया था कि बच जाएगा कि अपने आका के पास मेरा ज़िक्र करना। फिर शैतान ने उसे अपने आका से ज़िक्र करना भुला दिया। पस वह कैदख़ाने में कई साल पड़ा रहा। (41-42)

दोनों जवान जो जेल में लाए गए वह शाहे मिस्र (रियान बिन वलीद) के साकी (शराब पिलाने वाला) और ख़ब्बाज (खाना बनाने वाला) थे। दोनों पर यह इल्जाम था कि उन्होंने बादशाह के खाने में जहर मिलाने की कोशिश की। उनमेंसे जो साकी था वह तहकीक के बाद इल्जाम से बरी साबित हुआ और रिहाई पाकर दुबारा बादशाह का साकी मुक़र्रर हुआ। उसके ख़ाब का मतलब यह था कि अब वह बादशाह को ख़ाब में शराब पिला रहा है कुछ दिन बाद वह वेदारी में उसे शराब

पिलाएगा। ख़ब्बाज पर इल्जाम साबित हो गया। उसे सूली देकर छोड़ दिया गया कि चिड़ियां उसका गोश्त खाएं और वह लोगों के लिए इबरत (सीख) हो।

हजरत यूसुफ की दोनों ताबीरों बिल्कुल दुरुस्त साबित हुईं। मगर साकी कैद से छूटकर दुबारा महल में पहुंचा तो वह वादे के मुताबिक बादशाह से हजरत यूसुफ का ज़िक्र करना भूल गया। उसे अपना किया हुआ वादा सिर्फ उस वक़्त याद आया जबकि बादशाह ने एक ख़ाब देखा और दरबारियों से कहा कि इसकी ताबीर बताओ।

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ
سُنْبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخْرَىٰ سِتٍّ يَأْكُلْنَ الْبَلَائُ أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ إِنْ كُنْتُ
لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ ۝ قَالُوا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الْأَحْلَامِ
بِعِلْمِينَ ۝ وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ
فَارْسِلُونِ ۝

और बादशाह ने कहा कि मैं ख़ाब में देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और दूसरी सात सूखी, ऐ दरबार वालो मेरे ख़ाब की ताबीर मुझे बताओ, अगर तुम ख़ाब की ताबीर देते हो। वे बोले ये ख़्याली ख़ाब हैं। और हमें ऐसे ख़ाबों की ताबीर मालूम नहीं। उन दो कैदियों में से जो शख्स बच गया था और उसे एक मुद्दत के बाद याद आया, उसने कहा कि मैं तुम लोगों को इसकी ताबीर बताऊंगा, पस मुझे (यूसुफ के पास) जाने दो। (43-45)

मिस्र का बादशाह अगरचे मुशिरक और शराबी था, मगर खुदा की तरफ से उसे मुस्तक़बिल के बारे में एक सच्चा ख़ाब दिखाया गया। इससे अंदाजा होता है कि खुदा हक के दावियों की मदद किन-किन तरीकों से करता है। उनमें से एक तरीका यह है कि फरीके सानी को कोई ऐसा ख़ाब दिखाया जाए जिससे उसके ज़ेहन पर दाजी की अज़मत और अहमियत कायम हो और उसका दिल नर्म होकर दाजी के लिए नए रास्ते खुल जाएं।

बादशाह के साकी ने जब बादशाह का ख़ाब सुना उस वक़्त उसे कैदख़ाने का माजरा याद आया। उसने बादशाह और दरबारियों के सामने अपना जाती तजर्बा बताया कि किस तरह यूसुफ की बताई हुई ख़ाब की ताबीर दो कैदियों के हक में लफ़्त बलफ़्त सही साबित हुई। इसके बाद वह बादशाह से इजाजत लेकर कैदख़ाने पहुंचा ताकि यूसुफ से बादशाह के ख़ाब की ताबीर दरयाफ़्त करे।

हजरत यूसुफ की इसी हसियत के तआरुफ से उनके लिए कैदख़ाने से बाहर आने का रास्ता खुला। खुदा ऐसा कर सकता था कि साकी की रिहाई के बाद हजरत यूसुफ को मज़ीद कैदख़ाने में न रहने दे। वह साकी को महल के अंदर पहुंचते ही याद दिला सकता था कि वह

वादे के मुताबिक बादशाह के सामने यूसुफ का जिक्र करे। मगर खुदा का हर काम अपने मुकरर वक्त पर होता है। वक्त से पहले कोई काम करना खुदा का तरीका नहीं।

يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعُ عِجَافٍ وَ سَبْعِ سُنبُلَاتٍ خُضْرٍ وَأُخْرَىٰ يُسَلِّتُ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ ٥٠ قَالَ تَزَرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأْبًا فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُونَهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَأْكُلُونَ ٥١ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيلًا مِّمَّا تَحْصِنُونَ ٥٢ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْرِضُونَ ٥٣

यूसुफ ऐ सच्चे, मुझे इस ख़ाब का मतलब बता कि सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं। और सात बालें हरी हैं और सात सूखी। ताकि मैं उन लोगों के पास जाऊं ताकि वे जान लें। यूसुफ ने कहा कि तुम सात साल तक बराबर खेती करोगे। पस जो फसल तुम काटो उसे उसकी बालियों में छोड़ दो मगर थोड़ा सा जो तुम खाओ। फिर इसके बाद सात सूखे साल आएंगे। उस जमाने में वह गल्ला खा लिया जाएगा जो तुम उस वक्त के लिए जमा करोगे, सिवाय थोड़े के जो तुम महफूज कर लोगे। फिर इसके बाद एक साल आएगा जिसमें लोगों पर मेंह बरसेगा। और वे उसमें रस निचोड़ेंगे। (46-49)

हजरत यूसुफ ने बादशाह के ख़ाब की ताबीर यह बताई कि सात मोटी गायें और सात हरी बालें सात वर्ष हैं। उनमें लगातार अच्छी पैदावार होगी। हैवानात और नबातात (खेती) खूब बढ़ेंगे। इसके बाद सात साल कहत (अकाल) पड़ेगा जिसमें तुम सारा पिछला भंडार खाकर ख़त्म कर डालोगे। सिर्फ़ आईदा बीज डालने के लिए थोड़ा सा बाकी रह जाएगा। ये बाद के सात साल गोया दुबली गायें और सूखी बालें हैं जो पिछली मोटी गायों और हरी बालों का ख़ात्मा कर देंगी।

इसी के साथ हजरत यूसुफ ने इसकी तदबीर (समाधान) भी बता दी। अपने कहा की पहले सात साल में जो पैदावार हो उसे निहायत हिफाजत से रखो और किरफायत के साथ खर्च करो। जरूरी खुराक से ज्यादा जो गल्ला है उसे बालों के अंदर रहने दो। इस तरह वह कीड़े वगैरह से महफूज रहेगा। और सात साल की पैदावार चौदह साल तक काम आएगी। मजीद आपने यह खुशख़बरी भी सुना दी कि बाद के सात साल कहत के बाद जो साल आएगा वह दुबारा फ़ायदा (सम्पन्नता) का साल होगा। उसमें खूब बारिश होगी, कसरत से दूध और फल लोगों को हासिल होंगे।

अल्लाह तआला ने बादशाह को एक अजीब ख़ाब दिखाया और हजरत यूसुफ के जरिए उसकी कामयाब ताबीर जाहिर फरमाई। इस तरह आपके लिए यह मौन फ़ाहम किया गया कि मिस्र के निजामे हुकूमत में आपको निहायत आला मक़ाम हासिल हो।

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أُنْذِرُ بِكَ فَلَئِمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ ارْجِعْ إِلَىٰ سَرَتِكَ فَسُئِلَهُ مَا بِآلِ النَّسْوَةِ الَّتِي قَطَعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ۚ إِنَّ رَبِّي بِكَيْدِهِنَّ عَلِيمٌ ٥٤ قَالَ مَا خَطْبُكَ ۖ إِذْ رَاوَدْتَنِّي يُوسُفُ عَنْ نَفْسِهِ ۚ قُلْنَا حَاشَ لِلَّهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْكَ مِنْ سُوءٍ ۖ قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيزِ إِنَّنِ حَصْحَصَ الْحَقُّ ۖ أَنَا رَاوَدْتُهُ عَنْ نَفْسِهِ وَإِنَّهُ لَمِنَ الصّٰدِقِیْنَ ٥٥

और बादशाह ने कहा कि उसे मेरे पास लाओ। फिर जब कासिद (संदेशवाहक) उसके पास आया तो उसने कहा कि तुम अपने आका के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि उन औरतों का क्या मामला है जिन्होंने अपने हाथ काट लिए थे। मेरा खब तो उनके फ़तेब से खूब वाकिफ़ है। बादशाह ने पूछा, तुम्हारा क्या माजरा है जब तुमने यूसुफ को फुसलाने की कोशिश की थी। उन्होंने कहा कि पाक है अल्लाह, हमने उसमें कुछ बुराई नहीं पाई। अजीज की बीबी ने कहा अब हक़ खुल गया। मैं ही इसे फुसलाने की कोशिश की थी और बिलाशुबह वह सच्चा है। (50-51)

कैदख़ाने से निकल कर हजरत यूसुफ को एक मुल्की किरदार अदा करना था, इसलिए जरूरी था कि आपकी शख्सियत मुल्की सतह पर एक मारुफ़ शख्सियत बन जाए। इसकी सूरत बादशाह के ख़ाब के जरिए पैदा हो गई। बादशाह ने एक अजीब ख़ाब देखा। वह उसकी ताबीर के लिए इतना बेचैन हुआ कि आम एलान करके तमाम मुल्क के उलमा, ज्ञाताओं और दानिशवरो को अपने दरबार में जमा किया। और उनसे कहा कि वे इस ख़ाब की ताबीर बताएं मगर सबके सब आजिज रहे। इस तरह ख़ाब का वाक्या एक उम्मी शोहरत का वाक्या बन गया। अब जब हजरत यूसुफ ने ख़ाब की ताबीर बयान की और बादशाह ने उसे पसंद किया तो अचानक वह तमाम मुल्क की नज़रों में आ गए।

बादशाह ने सारी बात सुनने के बाद संबंधित औरतों से इसकी तहकीक की। सबने एक ज़मान हज़त यूसुफ को बेग़ुनार कर दिया। अजीजमिस्र की बीबी फ़ाफ़ेहक़ मेसबसे आगे निकल गई। उसने साफ़ लफ़्ज़ में एलान किया कि अब सच्चाई खुल चुकी है। हकीकत यह है कि सारा कुसूर मेरा था। यूसुफ का कुछ भी कुसूर न था। अजीजमिस्र की बीबी (जुरेज़) का यह इक्तरा इतना अजीम अमल है कि अजब नहीं कि इसके बाद उसे ईमान की तौफ़ीक़ दे दी गई हो।

ذَٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّي لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي كَيْدَ
الْخَائِنِينَ ﴿٥٤﴾ وَمَا بَرِئُ نَفْسِي إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌ بِالسُّوءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّي
إِنَّ رَبِّي غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٥٥﴾

यह इसलिए कि (अजीजे मिस्र) यह जान ले कि मैंने दरपदा उसकी ख़ियानत नहीं की।
और बेशक अल्लाह ख़ियानत (विश्वासघात) करने वालों की चाल चलने नहीं देता।
और मैं अपने नफ्स को बरी नहीं करता। नफ्स (मन) तो बदी ही सिखाता है मगर
यह कि मेरा रब रहम फरमाए। बेशक मेरा रब बख़्शने वाला महरबान है। (52-53)

बादशाह ने जब हजरत यूसुफ को बुलाया तो वह फ़ैरन कैदख़ाने से बाहर नहीं आ गए।
बल्कि यह कहा कि पहले उस वाक्य की तहकीक़ हेनी चाहिए जिसे बहाना बनाकर मुझे कैद
किया गया था। खुदा की नजर में अगरचे आप पूरी तरह बरीउज्जिम्मा थे मगर मसला यह था
कि आपको अवाम के दर्मियान पैगम्बरी की ख़िदमत अंजाम देनी थी। यानी खुदा की अमानत
हिदायत को उसके बंदों तक पहुंचाना था। मज्कूरा वाक्य में आप पर अपने आका के साथ
ख़ियानत का इल्जाम लगाया गया था। यह एक बहुत नाजुक मामला था और अवाम के सामने
आने से पहले जरूरी था कि आप के ऊपर से यह इल्जाम ख़त्म हो क्योंकि जिस शख्स को लोग
बंदों के मामले में अमानतदार न समझें उसे वे खुदा के मामले में अमानतदार नहीं समझ सकते।
मोमिन बयकवक्त दो चीजों के दर्मियान होता है। एक इंसान दूसरे खुदा। कभी ऐसा
होता है कि उसे इंसानों की निस्वत से मामले की वजाहत के लिए कोई ऐसा कलामा बोलना
पड़ता है जिसमें बजाहिर दावे का पहलू नजर आता है। मगर उसका दिल उस वक्त भी इज्ज
(निर्बलता) के एहसास से भरा हुआ होता है। क्योंकि जब वह अपने आपको खुदा की निस्वत
से देखता है तो वह पाता है कि खुदा की निस्वत से वह सिर्फ आजिज (निर्बल) है इसके सिवा
और कुछ नहीं। खुदा का तसव्वुर हर आन मोमिन को मुतवाजिन (संतुलित) करता रहता है।
हजरत यूसुफ का मज्कूरा कलाम मोमिन की शख्सियत के उसी दो गुना पहलू की तस्वीर है।

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُونِي بِهِ اَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِي فَلَمَّا كَلَمَ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا
مَكِينٌ أَمِينٌ ﴿٥٦﴾ قَالَ اجْعَلْنِي عَلَى خَزَائِنِ الْأَرْضِ إِنِّي حَفِيظٌ عَلَيْكُمْ ﴿٥٧﴾ وَ
كَذَٰلِكَ مَكَانًا يُوسُفُ فِي الْأَرْضِ يَتَّبِعُوا مِنْهُ حَيْثُ يَشَاءُ نُصِيبُ بِرَحْمَتِنَا
مَنْ نَشَاءُ وَلَا نُضِيبُهُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٨﴾ وَلَا جَبْرُ الْآخِرَةِ خَيْرٌ لِلَّذِينَ
آمَنُوا وَكَانُوا يَتَّقُونَ ﴿٥٩﴾

और बादशाह ने कहा उसे मेरे पास लाओ। मैं उसे ख़ास अपने लिए रखूंगा। फिर जब

यूसुफ ने उससे बात की तो बादशाह ने कहा, आज से तुम हमारे यहां मुअज्ज और
मोअतमद (विश्वसनीय) हुए। यूसुफ ने कहा मुझे मुल्क के ख़जानों पर मुकर्र कर दो।
मैं निगहबान हूं और जानने वाला हूं। और इस तरह हमने यूसुफ को मुल्क में
बाइख़्तियार बना दिया। वह उसमें जहां चाहे जगह बनाए। हम जिस पर चाहें अपनी
इनायत मुतवज्जह कर दें। और हम नेकी करने वालों का अज़ जाए (नष्ट) नहीं करते।
और आख़िरत का अज़ (प्रतिफल) कहीं ज्यादा बढ़कर है ईमान और तकवा (ईश-भय)
वालों के लिए। (54-57)

‘मुझे ज़मीन के ख़जानों पर मुकर्र कर दो’ यहां ख़जानों से मुग़ाद ग़ल्ले के खिन्ते हैं।
हजरत यूसुफ ने बादशाह को अपनी तरफ मुतवज्जह देखकर शाह मिस्र से यह इख़्तियार मांगा
कि वह हुकूमती वसाइल के तहत सारे मुल्क में ग़ल्ले के बड़े-बड़े खिन्ते बनवाएं ताकि इब्तिदाई
सात सालों में किसानों से फ़जिल ग़ल्ला लेकर वहां महफूज़ किया जा सके। (तफ़सीर इब्ने
कसीर)। बादशाह राजी हो गया और अपने आईनी (संवैधानिक) और कानूनी इक़तदार
(शासन) के तहत आपको हर किस्म का इख़्तियार दे दिया।
मिस्र का बादशाह मुशिरक था। आयत नम्बर 76 से मालूम होता है कि हजरत यूसुफ के
तक़रूर के तकरीबन दस साल बाद तक भी उसी बादशाह का कानून (दीनुल मुल्क) मिस्र में
राइज था। यह खुदा के एक पैगम्बर का उसवा (आदर्श) है जो बताता है कि ग़ैर मुस्लिम
हुकूमत के तहत कोई ज़ेली ओहदा कुबूल करना इस्लाम के ख़िलाफ नहीं है। इसी बिना पर
अस्लाफ (पूर्वजों) ने ज़ालिम बादशाहों के तहत कज़ा (न्याय-विधान) के ओहदे कुबूल किए।
(तफ़सीर नफ़ि)

मिस्र में इख़्तियार संभालने से हजरत यूसुफ का मक़सद क्या था, क़ुरआन की तफ़सील
से बजाहिर इसका मक़सद यह मालूम होता है कि बंदगाने खुदा को तवील कहत (लंबे अकाल)
की मुसीबत से बचाया जाए, और फिर इसके नतीजे में बनी इस्राईल के लिए मिस्र में आबाद
होने के अवसर फ़राहम किए जाएं।

ईमान और तकवे की रविश इख़्तियार करने वालों के लिए खुदा ने अबदी जन्नत का
यकीनी वादा किया है। दुनिया की ज़िंदगी में भी उन्हें खुदा की मदद हासिल होती है। ताहम
इसमें एक फ़र्क़ है। जहां तक हक के एलान का मामला है, उसकी तैमिक हर एक को यकसां
(समान) तौर पर मिलती है। मगर अमली मदद के मामले में सबकी नुसरत यकसां अंदाज में
नहीं। अमली नुसरत (मदद) किसी को एक ढंग पर मिलती है और किसी को दूसरे ढंग पर।
وَجَاءَ إِخْوَتُهُ يُوسُفَ فَدَخَلُوا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهُ مُنْكَرُونَ ﴿٦٠﴾ وَلَمَّا
جَهَرَهُمْ بِجَهَارِهِمْ قَالَ ائْتُونِي بِأَخِي لَكُمْ مِنْ أَبِيكُمْ أَلا تَرَوْنَ أَنِّي أُوفِي
الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِينَ ﴿٦١﴾ فَإِن لَّمْ تَأْتُونِي بِهِ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِي
وَلَا تَقْرُبُونِ ﴿٦٢﴾ قَالُوا سُبْحَانَ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفَاعِلُونَ ﴿٦٣﴾

और यूसुफ के भाई मिस्र आए फिर उसके पास पहुंचे, पस यूसुफ ने उन्हें पहचान लिया। और उन्होंने यूसुफ को नहीं पहचाना। और जब उसने उनका सामान तैयार कर दिया तो कहा कि अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास ले आना। तुम देखते नहीं हो कि मैं गल्ला भी पूरा नाप कर देता हूं और बेहतरीन मेजबानी करने वाला भी हूं। और अगर तुम उसे मेरे पास न लाए तो न मेरे पास तुम्हारे लिए गल्ला है और न तुम मेरे पास आना। उन्होंने कहा कि हम उसके बारे में उसके बाप को राजी करने की कोशिश करेंगे और हमें यह काम करना है। (58-61)

हजरत यूसुफ के इक्तेदार के इत्तिदाई सात साल तक खूब फसल पैदा हुई। आपने सारे मुल्क में बड़े-बड़े खिस्ते बनवाए और किसानों से उनका फाजिल गल्ला खरीद कर हर साल इन खिस्तों में महफूज करते रहे। इसके बाद जब कहत के साल शुरू हुए तो आपने उस गल्ले को दारुस्सलतनत (राजधानी) में मंगवा कर मुनासिब कीमत पर फरोख्त करना शुरू कर दिया। यह कहत चूंकि मिस्र के अलावा अतराफ के इलाकों (शाम, फिलिस्तीन, शर्क उर्दुन वगैरह) तक फैला हुआ था, इसलिए जब यह खबर मशहूर हुई कि मिस्र में गल्ला सस्ती कीमत पर फरोख्त हो रहा है तो बिरादराने यूसुफ भी गल्ला लेने के लिए मिस्र आए। यहां हजरत यूसुफ को अगरचे उन्होंने बीस साल बाद देखा था, ताहम आपकी शकल व सूरत में उन्हें अपने भाई की झलक नजर आई। मगर जल्द ही उन्होंने इसे अपने दिल से निकाल दिया। क्योंकि उनकी समझ में नहीं आया कि जिस शख्स को वे अंधे कुर्वे में डाल चुके हैं वह मिस्र के तख्त पर मुतमक्किन हो सकता है। हजरत यूसुफ ने अपने भाइयों को एक-एक ऊंट प्रति व्यक्ति गल्ला दिलवाया। अब उनके दिल में यह ख्वाहिश हुई कि बिन यामीन के नाम पर एक ऊंट गल्ला और हासिल करें। उन्होंने दरख्वास्त की कि हमारे एक भाई (बिन यामीन) को बूढ़े बाप ने अपने पास रोक लिया है। अगर हमें उस भाई के हिस्से का गल्ला भी दिया जाए तो बड़ी इनायत हो। हजरत यूसुफ ने कहा कि गायब का हिस्सा देना हमारा तरीका नहीं। तुम दुबारा आओ तो अपने उस भाई को भी साथ लाओ। उस वक्त तुम उसका हिस्सा पा सकोगे। तुम मेरी बख्शिश का हाल देख चुके हो। क्या इसके बाद भी तुम्हें अपने भाई को लाने में तरदुद (झिझक) है। हजरत यूसुफ ने मजिद कहा कि जो भाई तुम बता रहे हो अगर तुम अगली बार उसे न लाए तो समझा जाएगा कि तुम झूठ बोलते हो और महज धोखा देकर एक ऊंट गल्ला और लेना चाहते थे। इसकी सजा यह होगी कि आइंदा खुद तुम्हारे हिस्से का गल्ला भी तुम्हें नहीं दिया जाएगा।

وَقَالَ لِفَتَيْنِهِ اجْعَاوَا يَصَاعَتَهُمْ فِي رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُونَهَا إِذَا انْقَلَبُوا إِلَى أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿٦٢﴾ فَلَمَّا رَجَعُوا إِلَى أَبِي يَاقَانَ قَالُوا يَا أَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَا آخَانَ نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهُ نَحْفُظُونَ ﴿٦٣﴾ قَالَ هَلْ أُمِيتُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَا أَمِيتُكُمْ عَلَى أَخِيهِ مِنْ قَبْلُ فَأَلْفَهُ خَيْرٌ حِفْظًا وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّحِيمِينَ ﴿٦٤﴾

और उसने अपने कारिंदों से कहा कि इनका माल इनके असबाब में रख दो ताकि जब वे अपने घर पहुंचें तो उसे पहचान लें, शायद वे फिर आएंगे। फिर जब वे अपने बाप के पास लौटे तो कहा कि ऐ बाप, हमसे गल्ला रोक दिया गया, पस हमारे भाई (बिन यामीन) को हमारे साथ जाने दे कि हम गल्ला लाएं और हम उसके निगहबान हैं। याकूब ने कहा, क्या मैं इसके बारे में तुम्हारा वैसा ही एतबार करूं जैसा इससे पहले इसके भाई के बारे में तुम्हारा एतबार कर चुका हूं। पस अल्लाह बेहतर निगहबान है और वह सब महरबानों से ज्यादा महरबान है। (62-64)

हजरत यूसुफ ने गालिबन भाइयों से कीमत लेना मुब्यत के खिलाफ समझा या इस ख्याल से कि माल की कमी उनके दुबारा यहां आने में रुकावट न बन जाए, अपने आदमियों को हिदायत की कि जो रक्म उन्होंने गल्ले की कीमत के तौर पर अदा की है वह खामोशी से उनके माल में डाल दी जाए ताकि जब वे घर पर जाकर अपना सामान खोलें तो उसे पा लें और अपने भाई (बिन यामीन) को लेकर दुबारा यहां आएंगे।

हजरत याकूब ने एक तरफ बिन यामीन के सिलसिले में अपने बेटों पर बेएतमादी का इत्हार किया दूसरी तरफ यह भी फरमाया कि तुम्हें या किसी और को कोई ताकत हासिल नहीं। होना वही है जो खुदा चाहे। मगर यह होना इंसान के हाथों कराया जाता है ताकि जो बुरा है वह बुरा करके अपनी हकीकत को साबित करे। और जो अच्छा है वह अच्छा करके अपने आपको उस फेहरिस्त में लिखवाए जिसका वह मुस्तहिक है।

وَلَمَّا فَتَحُوا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوا بِصَاعَتِهِمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ قَالُوا يَا أَبَانَا مَا نَبْغِي هَذِهِ بِصَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا وَنَمِيرُ أَهْلَنَا وَنَحْفُظُ أَخَانَا وَنَزِدُ بِكَلِيلَ بَعِيرٍ ذَٰلِكَ كَيْلٌ يَسِيرٌ ﴿٦٥﴾ قَالَ لَنْ أُرْسِلَهُ مَعَكُمْ حَتَّى تُؤْتُونِ مَوْثِقًا مِنَ اللَّهِ لَتَأْتُنَّنِي بِهِ إِلَّا أَنْ يُحَاطَ بِكُمْ فَلَمَّا آتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللَّهُ عَلَى مَا نَقُولُ وَكِيلٌ ﴿٦٦﴾

और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो देखा कि उनकी पूंजी भी उन्हें लौटा दी गई है। उन्होंने कहा, ऐ हमारे बाप और हमें क्या चाहिए। यह हमारी पूंजी भी हमें लौटा दी गई है। अब हम जाएंगे और अपने अहल व अयाल (परिवारजनों) के लिए रसद लाएंगे। और अपने भाई की हिफजत करेंगे। और एक ऊंट का बोझ गल्ला और ज्यादा लाएंगे। यह गल्ला तो थोड़ा है। याकूब ने कहा, मैं उसे तुम्हारे साथ हरगिज न भेजूंगा जब तक तुम मुझसे खुदा के नाम पर यह अहद न करो कि तुम इसे जरूर मेरे पास ले आओगे, इल्ला यह कि तुम सब घिर जाओ। फिर जब उन्होंने उसे अपना पक्का कौल (वादा) दे दिया, उसने कहा कि जो हम कह रहे हैं उस पर अल्लाह निगहबान है। (65-66)

घर लौट कर जब उन्होंने देखा कि उनकी रकम उनकी गल्ले की बोरी में मौजूद है तो वे बहुत खुश हुए। उन्होंने अपने वालिद से कहा कि आप जरूर हमारे साथ बिन यामीन को जाने दें। हम उसकी पूरी हिफाजत करेंगे। और अपने हिस्से के अलावा उसके हिस्से का भी मजीद एक ऊंट गल्ला लाएंगे। यह गल्ला जो हम लाए हैं यह तो इब्राजात के लिए थोड़ा है।

हजरत यूसुफ ने तक्सीम का जो निजम कयम किया था, उसके तहत गलिवन ऐसा था कि बाहर के एक आदमी को एक ऊंट गल्ला दिया जाता था।

وَقَالَ يَبْنَی لَا تَدْخُلُوا مِن بَابٍ وَاحِدٍ وَادْخُلُوا مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ
وَمَا أُغْنِي عَنْكُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلَّهِ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَعَلَيْهِ
فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُونَ ۝ وَلَمَّا دَخَلُوا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوهُمْ مَا كَانَ يُغْنِي
عَنْهُمْ مِنَ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِي نَفْسِ يَعْقُوبَ قَضَاهُ وَإِنَّهُ لَذُو عِلْمٍ
لِّمَا عََلَّمْنَاهُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝

और याकूब ने कहा कि ऐ मेरे बेटे, तुम सब एक ही दरवाजे से दाखिल न होना बल्कि अलग-अलग दरवाजों से दाखिल होना। और मैं तुम्हें अल्लाह की किसी बात से नहीं बचा सकता। हुक्म तो बस अल्लाह का है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए। और जब वे दाखिल हुए जहाँ से उनके बाप ने उन्हें हिदायत की थी, वह उन्हें नहीं बचा सकता था अल्लाह की किसी बात से। वह बस याकूब के दिल में एक ख्याल था जो उसने पूरा किया। बेशक वह हमारी दी हुई तालीम से इल्म वाला था मगर अक्सर लोग नहीं जानते। (67-68)

मिस्र का कदीम दारुस्सलतनत (राजधानी) एक ऐसा शहर था जिसके चारों तरफ ऊंची फसील थी और मुख्तलिफ सम्तों में दाखिले के लिए दरवाजे बने हुए थे। हजरत याकूब का अपने बेटों से यह कहना कि तुम लोग इकट्ठा होकर एक ही दरवाजे से दाखिल न हो बल्कि विभिन्न दरवाजों से दाखिल हो, इस अदेशे की बिना पर था कि उनके दुश्मन उन्हें हलाक करने की कोशिश न करें।

इस अदेशे का मामला इसी सूरह की आयत 73 से वाजेह है जिसमें विरादराने यूसुफ अपनी बरान्त (असंबद्धता) इन अल्फाज में करते हैं कि हम यहाँ फसाद के लिए या चोरी के लिए नहीं आए हैं। विरादराने यूसुफ मिस्र में बाहर से आए थे। उनके लिबास मकामी लोगों के लिबास से मुख्तलिफ थे। वे अपने हुलिये से यकीनन मिस्र वालों को अजनबी दिखाई देते होंगे। ऐसे ग्यारह आदमियों का एक साथ शहर में दाखिल होना उन्हें लोगों की नजर में मुशतबह बना सकता था। इसलिए मकामी लोगों से किसी गैर जरूरी टकराव से बचने के लिए उन्होंने उन्हें यह हिदायत की कि शहर में दाखिल हो तो एक साथ जल्दी की सूरत में दाखिल न हो।

मोमिन की नजर एक तरफ खुदा की कुदरते कामिला पर होती है। वह देखता है कि इस कायनात में खुदा के सिवा किसी को कोई इख्तियार हासिल नहीं। इसी के साथ वह जानता है कि यह दुनिया दारुल इस्तेहान है। यहाँ इस्तेहान की मस्लेहत से खुदा ने हर मामले को जाहिरी असबाब के मातहत कर रखा है। यही वजह है कि हजरत याकूब ने एक तरफ अपने बेटों को दुनियावी तदबीर इख्तियार करने की तक्वीन फरमाई। दूसरी तरफ यह भी फरमा दिया कि जो कुछ होगा खुदा के हुक्म से होगा क्योंकि यहाँ खुदा के सिवा किसी को कोई ताकत हासिल नहीं।

وَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ أَوَى إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّي أَنَا أَخُوكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝ فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَّازِهِمْ جَعَلَ السَّقَايَةَ فِي رَحْلِ أَخِيهِ ثُمَّ
أَدْنَىٰ مَوْزِنَ أَيْتِمَ الْعَبْدِ لَكُمْ لَسَارِقُونَ ۝ قَالُوا وَأَقْبَلُوا عَلَيْهِمْ مَاذَا اتَّفَقْتُمْ ۝
قَالُوا نَقِذْ صُورَ الْمَلِكِ وَلِمَن جَاءَ بِهِ حِمْلُ بَعِيرٍ ۝ وَأَنَّا بِهِ زَعِيمُونَ ۝ قَالُوا تَاللَّهِ
لَقَدْ عَلِمْتُمْ فَا حِشْنَا نَقِذْ فِي الْأَرْضِ وَمَا لَكُمَا سَارِقَيْنِ ۝ قَالُوا فَمَا جَزَاؤُهُ إِنْ
كُنْتُمَا كَذِبِينَ ۝ قَالُوا جَزَاؤُهُ مَن وُجِدَ فِي رَحْلِهِ فَهُوَ جَزَاؤُهُ ۝ كَذَلِكَ
نَجْزِي الظَّالِمِينَ ۝ فَبَدَأَ بِأَوْعِيَّتِهِمْ قَبْلَ وِعَاءِ أَخِيهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهُمَا مِنْ وِعَاءِ
أَخِيهِ ۝ كَذَلِكَ كِدْنَا لِيُوسُفَ ۝ مَا كَانَ لِيَلْخُذَ أَخَاهُ فِي دِينِ الْمَلِكِ إِلَّا أَنْ
يَشَاءَ اللَّهُ ۝ نَرْفَعُ دَرَجَاتٍ مَّنْ شَاءَ ۝ وَفَوْقَ كُلِّ ذِي عِلْمٍ عَلِيمٌ ۝

और जब वे यूसुफ के पास पहुंचे तो उसने अपने भाई को अपने पास रखा। कहा कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ) हूँ। पस ग़मगीन न हो उससे जो वे कर रहे हैं। फिर जब उनका सामान तैयार करा दिया तो पीने का प्याला अपने भाई के असबाब में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ काफिले वाले, तुम लोग चोर हो। उन्होंने उनकी तरफ मुतवज्जह होकर कहा, तुम्हारी क्या चीज खोई गई है। उन्होंने कहा, हम शाही पैमाना नहीं पा रहे हैं। और जो उसे लाएगा उसके लिए एक ऊंट के बोझ भर गल्ला है और मैं इसका जिम्मेदार हूँ। उन्होंने कहा, खुदा की कसम तुम्हें मालूम है कि हम लोग इस मुल्क में फसाद करने के लिए नहीं आए और न हम कभी चोर थे। उन्होंने कहा अगर तुम झूठे निकले तो उस चोरी करने वाले की सजा क्या है। उन्होंने कहा, इसकी सजा यह है कि जिस शख्स के असबाब में मिले पस वही शख्स अपनी सजा है। हम लोग जालिमों को ऐसी ही सजा दिया करते हैं। फिर उसने उसके (छोटे) भाई से पहले उनके थैलों की तलाशी लेना शुरू किया। फिर उसके भाई के थैले से उसे बरामद कर लिया। इस तरह हमने यूसुफ के लिए तदबीर की। वह बादशाह के कानून

की रू से अपने भाई को नहीं ले सकता था मगर यह कि अल्लाह चाहे। हम जिसके दर्जे चाहते हैं बुलन्द कर देते हैं। और हर इल्म वाले के ऊपर एक इल्म वाला है।
(69-76)

बिरादराने यूसुफ खाना होने लगे तो हजरत यूसुफ ने अजरारो मुहब्बत अपना पानी पीने का प्याला (जो गालिबन चांदी का था) अपने भाई बिन यामीन के सामान में रख दिया। इसकी खबर न बिन यामीन को थी और न दरबार वालों को। इसके बाद खुदा की कुदरत से ऐसा हुआ कि गल्ला नापने का शाही पैमाना (जो खुद भी कीमती था) कहीं इधर-उधर (Misplace) हो गया। तलाश के बावजूद जब वह नहीं निकला तो कारिंदों का शुबह देकर काफिले को बुलाया। पूछाछ के दौरान उन्होंने बतौर खुद चोरी की वह सजा तज्बीज की जो शरीअते इब्राहीमी की रू से उनके यहां राज्ज थी। यानी जो चोर है वह एक साल तक मालिक के यहां गुलाम बनकर रहे।

इसके बाद कारिंद ने तलाशी शुरू की। अब गल्ले का पैमाना तो उनके यहां नहीं मिला। मगर दरबार की एक और खास चीज (चांदी का प्याला) बिन यामीन के सामान से बरामद हो गया। चुनांचे बिन यामीन को हस्बे फैसला हज्रत यूसुफ के हवाले कर दिया गया। अगर शाहे मिस्त्र के कानून पर फैसले की करारदाद हुई होती तो हज्रत यूसुफ अपने भाई को न पाते। क्योंकि शाहे मिस्त्र के मुख्वजा कानून में चोर की सजा यह थी कि उसे मारा जाए और चुलाई गई चीज की कीमत उससे वसूल की जाए। इस वाक्ये में हज्रत यूसुफ की नियत शामिल न थी, यह खुदाई तदबीर से हुआ इसलिए खुदा ने उसे अपनी तरफ मंसूब फरमाया।

قَالُوا إِنْ يَسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ أَخٌ لَهُ مِنْ قَبْلُ فَأَسْرَهَا يُوْسُفُ فِي نَفْسِهِ وَلَمْ يُبَيِّدْهَا لَهُمْ قَالَ أَنْتُمْ شَرُّ مِمَّا كَانَ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا تَصِفُونَ ﴿٧٧﴾ قَالُوا يَا الْعَزِيزُ إِنْ لَكَ أَبَاشِيحٌ كَبِيرٌ فَخُذْ أَحَدًا مِمَّا كَانَ إِنْ أَنْزَلْنَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ ﴿٧٨﴾ قَالَ مَعَاذَ اللَّهِ أَنْ نَأْخُذَ إِلَّا مَنْ وَجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهُ إِنْ أَرَادْنَا إِذَا ظَلَمُونَ ﴿٧٩﴾

उन्होंने कहा कि अगर यह चोरी करे तो इससे पहले इसका एक भाई भी चोरी कर चुका है। पस यूसुफ ने इस बात को अपने दिल में रखा। और इसे उन पर जाहिर नहीं किया। उसने अपने जी में कहा, तुम खुद ही बुरे लोग हो, और जो कुछ तुम बयान कर रहे हो अल्लाह उसे खूब जानता है। उन्होंने कहा कि ऐ अजीज, इसका एक बहुत बूढ़ बाप है सो तू इसकी जगह हम में से किसी को रख ले। हम तुझे बहुत नेक देखते हैं। उसने कहा, अल्लाह की पनाह कि हम उसके सिवा किसी को पकड़ें जिसके पास हमने अपनी चीज पाई है। इस सूरत में हम ज़रूर जल्लिम ठहरे। (77-79)

मुमसिरीन ने लिखा है कि हजरत यूसुफ की किसी नानी के यहां एक कुत था। हजरत यूसुफ अपने बचपन में उसे चुपके से उनके यहां से उठा लाए और उसे तोड़ डाला। इसी वाक्य को बहाना बनाकर बिरादराने यूसुफ ने कहा कि 'इसका बड़ा भाई भी इससे पहले चोरी कर चुका है' एक वाक्या जो आपकी रैतने तौहीद को बता रहा था उसे महज एक जाहिरी मुशाबिहत (समरूपता) की वजह से उन्होंने चोरी के खाने में डाल दिया।

बिरादराने यूसुफ का हाल यह था कि मिस्र के तख्त पर बैठे हुए यूसुफ को तो वह अजीज (हुनू, सरकार) कह रहे थे और उसके सामने खूब तवाजोअ दिखा रहे थे। मगर कनआन का यूसुफ जो उनकी नजर में सिर्फ एक देखती लड़का था, उसे ऐन उसी वक्त नाहक चोरी के इल्जाम में मृतबिस कर रहे थे।

हजरत यूसुफ को इल्म था कि उनके रखे हुए प्याले की वजह से बिन यामीन ख़ामख़ाह चोर बन रहा है, मगर वक्ती मस्तेहत की बिना पर वह ख़ामोश रहे और वाकये को अपनी रफ़्तार से चलने दिया जो भाइयों और शाही कारिंदे के दर्मियान हो रहा था। एक बार जब आपको बोलना पड़ा तो यह नहीं कहा कि 'जिसने हमारी चोरी की है' बल्कि यह फरमाया कि 'जिसके पास हमने अपना माल पाया है।'

فَلَمَّا اسْتَأْيَسُوا مِنْهُ خَلَصُوا نَجِيًّا قَالَ كَبِيرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوا أَنَّ آبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَوثِقًا مِنَ اللَّهِ وَمَنْ قَبْلَ مَا فَرَّطْتُمْ فِي يُوسُفَ فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتَّى يَأْذَنَ لِي أَبِي أَوْ يَحْكُمَ اللَّهُ لِي ۖ وَهُوَ خَيْرُ الْحَاكِمِينَ ۖ ارْجِعُوا إِلَىٰ آبَائِكُمْ فَقُولُوا يَا أَبَانَا إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ وَمَا شَهِدْنَا إِلَّا لِأَهْلِهِمَا عَلَيْهِمَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حَافِظِينَ ۖ وَسَأَلُ الْقَرْيَةَ الَّتِي كُنَّا فِيهَا وَالْعِيرَ الَّتِي أَقْبَلْنَا فِيهَا ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ۖ

जब वे उससे नाउम्मीद हो गए तो अलग होकर बाहम मश्विरा करने लगे। उनके बड़े ने कहा क्या तुम्हें मालूम नहीं कि तुम्हारे बाप ने अल्लाह के नाम पर पक्का इकरार लिया और इससे पहले यूसुफ के मामले में जो ज्यादाती तुम कर चुके हो वह भी तुम्हें मालूम है। पस मैं इस सरजमीन से हरगिज नहीं टूटूंगा जब तक मेरा बाप मुझे इजाजत न दे या अल्लाह मेरे लिए कोई फैसला फरमा दे। और वह सबसे बेहतर फैसला करने वाला है। तुम लोग अपने बाप के पास जाओ और कहो कि ऐ हमारे बाप, तेरे बेटे ने चोरी की और हम वही बात कह रहे हैं जो हमें मालूम हुई और हम ग़ैब (अप्रकट) के निगहबान नहीं और तू उस बस्ती के लोगों से पूछ ले जहां हम थे और उस काफिले से पूछ ले जिसके साथ हम आए हैं। और हम बिल्कुल सच्चे हैं। (80-82)

हजरत यूसुफ के सौतेले भाइयों में ग़ालिबन एक भाई दूसरों से मुख़लिफ़ था। उसी भाई

قَالَ بَلْ سَأَلْتُ لَكُمْ أَنْفُسَكُمْ أَمْرًا فَصَبْرٌ جَمِيلٌ عَسَى اللَّهُ أَنْ
يَأْتِيَنِي بِهِمْ جَمِيعًا إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ وَتَوَلَّى عَنْهُمْ وَقَالَ يَا أَسْفَى
عَلَى يُوسُفَ وَأَبِصْرَتْ عَيْنُهُ مِنَ الْحُزَنِ فَهُوَ كَظِيمٌ ۝ قَالُوا اتَّاللَّهُ تَفَتُّوْا
تَذَكَّرُوا يُوسُفَ حَتَّى تَكُونَ حَرَضًا أَوْ تَكُونَ مِنَ الْهَالِكِينَ ۝ قَالَ
إِنَّمَا أَشْكُوا بَثِّي وَحُزْنِي إِلَى اللَّهِ وَأَعْلَمُ مِنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ يَبْنَئِي
أَذْهَبُوا فَتَحَسُّوْا مِنْ يُوسُفَ وَأَخِيهِ وَلَا تَأْسُؤْا مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ إِنَّهُ لَا يَأْسُ
مِنْ رَّوْحِ اللَّهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكَافِرُونَ ۝

‘तुमने बात बना ली है।’ कह कर हजरत याकूब ने बिरादराने यूसुफ के दिल का खोट वाजेह किया। वे बाप के यहां से गए तो मुकम्मल हिफाजत का वादा करके उसे साथ ले गए। और जब बिन यामीन के असबाब में से प्याला बरामद हुआ तो उसकी तरफ से इतनी मुदाफअत भी न कर सके कि यह कहते कि महज प्याला बरामद होने से वह चोर कैसे साबित हो गया। शायद किसी और ने रख दिया हो या किसी ग़लती से वह उसके असबाब के साथ बंध गया हो। इसके बरअक्स उन्होंने यह किया कि यह कह कर उसके जुर्म को मिस्त्रियों की नजर में और पुख्ता कर दिया कि इसका भाई भी इससे पहले चोरी कर चुका है।

650

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَيْهِ قَالُوا يَا أَيُّهَا الْعَزِيزُ مَسَّنَا وَأَهْلَكْنَا الضُّرَّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُرْجُومَةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ ٥١ قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَا فَعَلْتُمْ بِيُوسُفَ وَأَخِيهِ إِذْ أَنْتُمْ جَاهِلُونَ ٥٢ قَالُوا إِنَّكَ لَآتٍ بِيُوسُفَ ٥٣ قَالَ إِنَّا يُوسُفُ ٥٤ قَالَ أَنَا يُوسُفُ وَهَذَا أَخِي قَدْ مَنَّ اللَّهُ عَلَيْنَا إِنَّهُ مَنْ يَتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِينَ ٥٥

‘तकवा और सन्न करने वालों का अन्न खुदा जाया नहीं करता’ यही बात पूरे यूसुफ के किस्से का खुलासा है। अल्लाह तआला को इसकी एक वाजह मिसाल कायम करनी थी कि मामलाते दुनिया में जो शख्स अल्लाह से डरने वाला तरीका इस्तिन्यार करे और बेसब्री वाले तरीकों से बचे, बिलआखिर वह खुदा की मदद से जल्द कामयाब होता है। हजरत यूसुफ के वाक्यो को इसी हकीकत की एक नजर आने वाली मिसाल बिना दिया गया।

वाक्यात दो किस्म के होते हैं। एक वह जिसके अंदर शोहरत का माद्दा हो। और दूसरा वह जिसके अंदर शोहरत का माद्दा न हो। दो वाक्यात नौडयत के एतबार से बिल्कुल यकसां

दर्जे के हो सकते हैं। मगर एक वाकया शोहरत पकड़ेगा और दूसरा गुमनाम होकर रह जाएगा। हजरत यूसुफ के साथ नुसरते खुदावंदी का जो मामला हुआ वह दूसरे नेक लोगों और मोहसिनीन के साथ भी पेश आता है। मगर हजरत यूसुफ के वाकये की खुसूसियत यह है कि इसमें शोहरत का माद्दा भी पूरी तरह मौजूद था। इसलिए वह बखूबी तौर पर लोगों की नजर में आ गया।

قَالُوا تَاللّٰهِ لَقَدْ اِشْرَكَ اَللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ كُنَّا لَخٰطِطِيْنَ ۝۱۰ قَالَ لَا تَثْرِيبَ عَلَيْكُمْ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ اَرْحَمُ الرَّحِيْمِيْنَ ۝۱۱ اِذْهَبُوا بِقَمِيصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلَى وِجْهِ اِنِّىْ يَأْتِ بِصَيْرٍ ۚ وَاُنُوْنِ بِاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝۱۲

भाइयों ने कहा, खुदा की कसम, अल्लाह ने तुम्हें हमारे ऊपर फजीलत दी, और वेशक हम ग़लती पर थे। यूसुफ ने कहा, आज तुम पर कोई इल्जाम नहीं, अल्लाह तुम्हें माफ करे और वह सब महरवानों से ज्यादा महरबान है। तुम मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसे मेरे बाप के चेहरे पर डाल दो, उसकी बीनाई (दृष्टि) पलट आएगी और तुम अपने घरवालों के साथ मेरे पास आ जाओ। (91-93)

जब हकीकत खुल गई तो भाइयों ने हजरत यूसुफ की बड़ाई को तस्लीम करते हुए खुले तौर पर अपनी ग़लती का इक़रार कर लिया। दूसरी तरफ हजरत यूसुफ ने भी उस आली जर्मी का सबूत दिया जो एक सच्चे खुदापरस्त को ऐसे मौके पर देना चाहिए। उन्होंने अपने भाइयों को कोई मलामत नहीं की। उन्होंने माजी के तल्ख़ वाक़ेयात को अचानक भुला दिया और भाइयों से दुबारा विरादराना तअल्लुकात उस्तुवार कर लिए।

इस वाकये में इफ़िरादी नुसरत (व्यक्तिगत मदद) के साथ इज्तिमाई नुसरत (सामूहिक मदद) की मिसाल भी मौजूद है। इसी के जरिए वे हालात पैदा हुए कि बनी इस्राईल फिलिस्तीन से निकल कर मिस्र पहुँचे और वहाँ इज्जत और खुशहाली का मक़म हासिल करें।

चुनिचे हजरत यूसुफ के ज़माने में हजरत याक़ूब का ख़ानदान मिस्र मुंक्लि हो गया और तक्रीबन पाँच सौ साल तक वहाँ इज्जत के साथ रहा। बाइबल के बयान के मुताबिक सब ख़ानदान के अफ़राद जो इस मौके पर मिस्र गए उनकी तादाद 67 थी।

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيرُ قَالَ أَبُوهُمْ اِنِّىْ لَاجِدٌ رِّيحَ يُّوسُفَ لَوْلَا اَنْ تُفَيِّدُوْنِ ۝۱۳ قَالُوا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِى ضَلٰلٍ كَثِيْرٍ ۝۱۴ فَلَمَّا اَنَّ جَاءَ الْبَشِيْرُ اَلْقَاهُ عَلَى وِجْهِهِ فَازْتَدَّ بِصَيْْرٍ ۚ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ اِنِّىْ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۱۵ قَالُوا يٰكَانَ اسْتَغْفِرُ لَنَا ذُنُوْبَنَا اِنَّكَ لَكَا خَطِيْئٌ ۝۱۶ قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّىْ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝۱۷

और जब काफ़िला (मिस्र से) चला तो उसके बाप ने (कंआन में) कहा कि अगर तुम मुझे बुढ़ापे में बहकी बातें करने वाला न समझो तो मैं यूसुफ की खुशबू पा रहा हूँ। लोगों ने कहा, खुदा की कसम, तुम तो अभी तक अपने पुराने ग़लत ख़्याल में मुन्तला हो। पस जब खुशख़बरी देने वाला आया, उसने कुर्ता याक़ूब के चहरे पर डाल दिया, पस उसकी बीनाई (दृष्टि) लौट आई। उसने कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की जानिब से वे बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। विरादराने यूसुफ ने कहा, ऐ हमारे बाप, हमारे गुनाहों की माफी की दुआ कीजिए। वेशक हम ख़तावार थे। याक़ूब ने कहा, मैं अपने ख़ब से तुम्हारे लिए मफ़िरत (क्षमा) की दुआ करूँगा। वेशक वह बख़शने वाला, रहम करने वाला है। (94-98)

हजरत यूसुफ अपने बाप से जुदा होकर 20 साल से ज्यादा मुद्दत तक पड़ोसी मुल्क मिस्र में रहे। मगर हजरत याक़ूब को इसका इल्म न हो सका। अलबत्ता आखिरी वक़्त में आपका लिबास मिस्र से चला तो आपको उसके पहुंचने से पहले उसकी खुशबू महसूस होने लगी। इससे मालूम हुआ कि पैग़म्बरों का इल्म उनका जाती इल्म नहीं होता बल्कि खुदा का अतिया होता है। अगर जाती इल्म होता तो हजरत याक़ूब पहले ही जान लेते कि उनके साहबज़दे मिस्र में हैं। मगर ऐसा नहीं हुआ। आप हजरत यूसुफ के बारे में सिर्फ उस वक़्त मुत्तलअ हुए जबकि अल्लाह ने आपको उनकी ख़बर कर दी।

हजरत याक़ूब के साथ आपके ख़ानदान वालों की गुम्तुगुं जो इस सूरह में मुज़ल्लिफ़ मक़मात पर नक्कल हुई हैं उनसे अंज़ा होता है कि ख़ानदान वालों की नज़र में हजरत याक़ूब को वह अज़मत हासिल न थी जो एक पैग़म्बर के लिए होनी चाहिए। वही लोग जो माजी के बुजुर्गों की परस्तिश कर रहे होते हैं वे जिंदा बुजुर्गों की अज़मत मानने के लिए तैयार नहीं होते। इसकी वजह यह है कि मुर्दा बुजुर्गों के गिर्द हमेशा मुवाल्गाआमेज (अतिरंजनापूर्ण) किस्सों और तिलिस्माती कहानियों का हाला बना दिया जाता है। इसकी वजह से लोगों के ज़ेहन में 'बुजुर्ग' की एक मस्सूह (कृत्रिम) तस्वीर बैठ जाती है। चूँकि जिंदा बुजुर्ग उस मस्सूह तस्वीर के मुताबिक नहीं होता इसलिए वह लोगों को बुजुर्ग भी नज़र नहीं आता।

فَلَمَّا دَخَلُوا عَلَى يُوسُفَ اٰوٰى اِلَيْهِ اَبْوِيْهٖ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنَّ شَاْءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۝۱۸ وَرَفَعَ اَبْوِيْهٖ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهُ سُجَّدًا ۚ وَقَالَ يٰاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ رُّءْيَايَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّىْ حَقًّا ۚ وَقَدْ اَحْسَنَ بِّىْ اِذْ اَخْرَجَنِىْ مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ نُّزِعَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِىْ وَبَيْنَ اٰخُوْتِىْ اِنَّ رَبِّىْ لَطِيْفٌ لِّمَآ اٰيْتَا ۚ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝۱۹

पस जब वे सब यूसुफ के पास पहुँचे तो उसने अपने वालिदैन् को अपने पास बिठाया। और कहा कि मिस्र में ईशाअल्लाह अम्न चैन से रहो और उसने अपने वालिदैन् को तख़्त

सूरह-12. यूसुफ

653

पारा 13

पर बिठाया और सब उसके लिए सज्दे में झुक गए। और यूसुफ ने कहा ऐ बाप, यह है मेरे ख्वाब की ताबीर जो मैंने पहले देखा था। मेरे रब ने उसे सच्चा कर दिया और उसने मेरे साथ एहसान किया कि उसने मुझे कैद से निकाला और तुम सबको देहात से यहां लाया बाद इसके कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान फसाद डाल दिया था। बेशक मेरा रब जो कुछ चाहता है उसकी उम्दा तदबीर कर लेता है, वह जानने वाला हिक्मत (तत्वदर्शिता) वाला है। (99-100)

यहां तख़्त से मुराद तख़्ते शाही नहीं है बल्कि वह तख़्त है जिस पर हजरत यूसुफ अपने ओहदे की जिम्मेदारियों को अदा करने के लिए बैठते थे। सज्दे से मुराद भी मारुफ सज्दा नहीं बल्कि रुकूअ के अंदाज पर झुकना है। किसी बड़े की ताजीम के लिए इस अंदाज में झुकना कद्दीम ज़माने में बहुत मारुफ था।

‘इन्न रब्बी लतीफुल लिमा यशा’ का मतलब यह है कि मेरा रब जिस काम को करना चाहे उसके लिए वह निहायत छुपी राहें निकाल लेता है। खुदा अपने मंसूबे की तक्मील के लिए ऐसी तदबीरें पैदा कर लेता है जिसकी तरफ आम इंसानों का गुमान भी नहीं जा सकता।

رَبِّ قَدْ آتَيْنَتْنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيلِ الْأَحَادِيثِ فَاطِرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ أَنْتَ وَلِيَّ الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحَقْنِي بِالْصَّالِحِينَ ۝

ऐ मेरे रब, तूने मुझे हुक्मत में से हिस्सा दिया और मुझे बातों की ताबीर करना सिखाया। ऐ आसमानों और जमीन के पैदा करने वाले, तू मेरा कारसाज (कार्य-साधक) है, दुनिया में भी और आखिरत में भी। मुझे फरमांबरदारी की हालत में वफ़ात दे और मुझे नेक बंदों में शामिल फरमा। (101)

ग़ैर मोमिन हर चीज को इंसान के एतबार से देखता है और मोमिन हर चीज को खुदा के एतबार से। हजरत यूसुफ को आला हुक्मती ओहदा मिला तो उसे भी उन्होंने खुदा का अतिया करार दिया। उन्हें तावील और ताबीर (बातों की गहराई और अस्तित्व का इल्म) का इल्म हासिल हुआ तो उन्होंने कहा कि यह मुझे खुदा ने सिखाया है। उनके अपनों ने उन्हें मुसीबत में डाला तो उसे भी उन्होंने इस नजर से देखा कि यह खुदा की लतीफ तदबीरें थीं जिनके जरिए वह मुझे इरतक़ाई (उत्थानगत) सफ़र करा रहा था।

खुदा की अज़मत के एहसास ने उनसे जाती अज़मत के तमाम एहसासात छीन लिए थे। दुनियावी बुलन्दी की चोटी पर पहुंच कर भी उनकी ज़बान से जो अल्पज्ञ निकले वे ये थे खुदाया, तू ही तमाम ताकतों का मालिक है। तू ही मेरे सब काम बनाने वाला है। तू दुनिया और आखिरत में मेरी मदद फरमा। मुझे उन लोगों में शामिल फरमा जो दुनिया में तेरी पसंद पर चलने की तौफ़ीक पाते हैं और आखिरत में तेरा अबदी इनाम हासिल करते हैं।

पारा 13

654

सूरह-12. यूसुफ

ذَلِكَ مِنْ أَنْبَاءِ الْغَيْبِ نُوحِيهِ إِلَيْكَ وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُونَ ۝ وَمَا أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِينَ ۝ وَمَا تَسْتَأْذِنُ عَلَيْهِمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

यह ग़ैब की ख़बरों में से है जो हम तुम पर ‘वही’ (प्रकाशना) कर रहे हैं और तुम उस वक़्त उनके पास मौजूद न थे जब यूसुफ के भाइयों ने अपनी राय पुष्टा की और वे तदबीरें कर रहे थे और तुम चाहे कितना ही चाहो, अक्सर लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं। और तुम इस पर उनसे कोई मुआवज़ा (बदला) नहीं मांगते। यह तो सिर्फ़ एक नसीहत है तमाम ज़मानों के लिए। (102-104)

हजरत यूसुफ का क़िस्सा जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान पर जारी हुआ वह बजाए खुद इस बात का सुबूत है कि कुरआन रब्बानी ‘वही’ (ईश्वरीय वाणी) है न कि इंसानी कलाम। यह वाक्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तकरीबन ढाई हजार साल पहले पेश आया। आपने इस वाक्य को न तो बतौर खुद देखा था और न वह किसी तारीख में लिखा हुआ था कि आप उसे पढ़ें या किसी से पढ़वा कर सुनें। वह सिर्फ़ तौरात के सफ़हात में था। और प्रेस के दौर से पहले तौरात एक ऐसी किताब थी जिसकी वाकफ़ियत सिर्फ़ यहूदी मराकिज (केन्द्रों) के चन्द यहूदी उलेमा को होती थी, और किसी को नहीं।

मज़ीद यह कि कुरआन में इस वाक्य को जिस तरह बयान किया गया है, बुनियादी तौर पर तौरात के मुताबिक होने के बावजूद, तफ़सीलात में वह उससे काफ़ी मुतालिफ़ है। यह इस्तेलाफ़ बजाते खुद कुरआन के इलाही ‘वही’ होने का सुबूत है। क्योंकि जहां-जहां दोनों में इस्तेलाफ़ (भिन्नता) है वहां कुरआन का बयान वाज़ह तौर अक़्ल व फ़ितरत के मुताबिक मालूम होता है। कुरआन का बयान पढ़कर वाकई यह समझ में आता है कि वह हजरत याकूब और हजरत यूसुफ की पैगम्बराना सीरत के मुनासिब है जबकि तौरात के बयानात पैगम्बराना सीरत के मुनासिबे हाल नहीं। इसी तरह वाक्य के कई बेहद कीमती अज्ज़ा (मसलन कैदख़ाने में हजरत यूसुफ की तक़रीर, आयत 37-40) जो कुरआन में मंज़ूल हुई हैं। बाइबल या तलमूद में इसका कोई जिक्र नहीं। यहां तक कि कुछ तारीखी ग़लतियां जो बाइबल में मौजूद हैं उनका इआदा (पुनः उल्लेख) कुरआन में नहीं हुआ है। मिसाल के तौर पर बाइबल हजरत यूसुफ के ज़माने के बादशाह को फ़िरऔन कहती है। हालांकि फ़िरऔन का ख़ानदान हजरत यूसुफ के पांच सौ साल बाद मिश्र में हुक्मरां बना है। हजरत यूसुफ के ज़माने में मिश्र में एक अरब ख़ानदान हुक्मत कर रहा था जिसे चरवाहे बादशाह (Hyksos Kings) कहा जाता है। (तक़बुल के लिए मुलाहिज़ा हो, बाइबल, किताब पैदाइश)

हक को न मानने का सबब अगर दलील हो तो दलील सामने अपने के बाद आदमी फ़ौरन उसे मान लेगा। मगर अक्सर हालात में इंकारे हक का सबब हठधर्मी होता है। ऐसे लोग हक को इसलिए नहीं मानते कि वह उसे मानना नहीं चाहते। हक को मानना अक्सर

हालात में अपने को छोटा करने के हममअना होता है, और अपने को छोटा करना आदमी के लिए सबसे ज्यादा मुश्किल काम है। यही वजह है कि इस किस्म के लोग हर किस्म के दलाइल और कराइन (संकेत) सामने आने के बाद भी अपनी रविश को नहीं छोड़ते। वे इसे गवारा कर लेते हैं कि हक छोटा हो जाए मगर वे अपने आपको छोटा करने पर राजी नहीं होते। वे भूल जाते हैं कि जो दुनिया में अपने आपको छोटा कर ले वह आखिरत में बड़ा किया जाएगा। और जो शख्स दुनिया में अपने को छोटा न करे वही वह शख्स है जो आइंदा आने वाली दुनिया में हमेशा के लिए छोटा होकर रह जाएगा।

وَكَايْنِ مِنْ آيَةٍ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّونَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُونَ
وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ ۝ أَفَأَمْنُوا أَنْ تَأْتِيَهُمْ
غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللَّهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝
قُلْ هَذِهِ سَبِيلِي أَدْعُو إِلَى اللَّهِ عَلَىٰ بَصِيرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِي ۖ
وَسُبْحَنَ اللَّهِ وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۝

وَقُلْ لِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِلَّهِ الْمُلْكُ وَلِلَّهِ الْغَلْبَةُ

और आसमानों और जमीन में कितनी ही निशानियां हैं जिन पर उनका गुजर होता रहता है और वे उन पर ध्यान नहीं करते। और अक्सर लोग जो खुदा को मानते हैं वे उसके साथ दूसरों को शरीक भी ठहराते हैं। क्या ये लोग इस बात से मुतमइन हैं कि उन पर अजबे इलाही की कोई आफत आ पड़े या अचानक उन पर क्यामत आ जाए और वे इससे बेखबर हों। कहे यह मेरा रास्ता है, मैं अल्लाह की तरफ बुलाता हूं समझ-बूझ कर, मैं भी और वे लोग भी जिन्होंने मेरी पैरवी की है। और अल्लाह पाक है और मैं मुशिकों (बहुदेववादियों) में से नहीं हूं। (105-108)

हक के जुहर के बाद जो लोग उसे न मानें वे अपने इंकार को हमेशा इस रंग में पेश करते हैं कि जो दलील मलूब थी वह दलील हक की तरफ से उनके सामने नहीं आई। अगर ऐसी दलील होती तो वे उसे जरूर मान लेते। गोया उनके एराज (उपेक्षा) या इंकार का सबब उनके बाहर है न कि उनके अंदर।

मगर हकीकते हाल इसके बरअक्स है। हक इतना बाजे है कि जब वह जाहिर होता है तो जमीन व आसमान की तमाम निशानियां उसकी तस्दीक (पुष्टि) करती हैं। वह सारी कायनात में सबसे ज्यादा साबितशुदा चीज होता है। मगर हक को पाने के लिए अस्ल जरूरत देखने वाली आंख और इबरत (सीख) पकड़ने वाले दिमाग की है। और यही चीज मुकिरीन के यहां मौजूद नहीं होती।

हक के मुकाबले में आदमी जब सरकशी दिखाता है तो अक्सर हालात में इसकी वजह 'शिक' होता है। बेशतर लोगों का हाल यह है कि खुदा को मानते हुए उन्होंने कुछ और जिंदा या मुर्दा हस्तियां फर्ज कर रखी हैं जिन पर वे अपना एतमाद कायम किए हुए हैं जिनको वे

बड़ाई का मकाम देते हैं। इस तरह हर एक ने खुदा के सिवा कुछ 'बड़े' बना रखे हैं। वे उन्हीं बड़ों के भरोसे पर जी रहे हैं। हालांकि खुदा के यहां सब छोटे हैं। वहां किसी को जो चीज बचाएगी वह उसका जाती अमल है न कि काल्पनिक बड़ों की बड़ाई।

पैगम्बर का काम एक अल्लाह की तरफ बुलाना है। यही उसका मिशन है। इस मिशन को उसने बसीरत के तौर पर इख्तियार किया है न कि तक्लीद के तौर पर। गोया पैगम्बराना दावत (आह्वान) वह दावत है जो इंसान को एक खुदा से जोड़ने की दावत हो और जिसकी सदाकत (सत्यता) दाओ के ऊपर इतनी खुल चुकी हो कि वह उसके लिए बसीरत और मअरफत (अन्तर्ज्ञान) बन जाए। इसी तरह पैगम्बर के पैरोकार वे लोग हैं जो हक को बसीरत (सूझबूझ) की सतह पर पाएं और तौहीद की सतह पर उसका एलान करें।

आदमी अपने वक्ती इत्मीनान को मुस्तकिल इत्मीनान समझ लेता है। हालांकि किसी के पास इस बात की जमानत नहीं कि उसकी मोहलते उम्र कब तक है। कोई नहीं जानता कि कब मौत आकर उसके तमाम मजऊमात (दंभों) को बातिल कर देगी। कब क्यामत का जलजला उसकी बनी बनाई दुनिया को उलट-पलट कर देगा। आदमी अपने आपको यकीनी अंजाम की दुनिया में समझता है। हालांकि वह हर लम्हा एक गैर यकीनी अंजाम के कनारे खड़ा हुआ है।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوْحِي إِلَيْهِمْ مِنْ أَهْلِ الْقُرَىٰ أَفَلَمْ يَسِيرُوا
فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۖ وَلَكِنَّ الْأَخْزَرَ
خَيْرٌ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ حَتَّىٰ إِذَا اسْتَأْيَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوا أَنَّهُمْ
قَدْ كُذِّبُوا إِجَاءَهُمْ نَصْرُنَا فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَاءُ ۖ وَلَا يُرِيدُ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِينَ ۝

और हमने तुमसे पहले मुख्तलिफ बस्ती वालों में से जितने रसूल भेजे सब आदमी ही थे। हम उनकी तरफ 'वही' (प्रकाशना) करते थे। क्या ये लोग जमीन पर चले फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का अंजाम क्या हुआ जो उनसे पहले थे और आखिरत (परलोक) का घर उन लोगों के लिए बेहतर है जो डरते हैं, क्या तुम समझते नहीं। यहां तक कि जब पैगम्बर मायूस हो गए और वे ख्याल करने लगे कि उनसे झूठ कहा गया था तो उन्हें हमारी मदद आ पहुंची। पस नजात (मुक्ति) मिली जिसे हमने चाहा और मुजरिम लोगों से हमारा अजाब टाला नहीं जा सकता। (109-110)

तारीख बताती है कि जो लोग रिसालत और पैगम्बरी को मानते थे वे भी उस वक्त इसके मुकिर हो गए, जबकि खुद अपनी कौम के अंदर से एक शख्स पैगम्बर होकर उनके सामने खड़ा हुआ। इसकी वजह यह थी कि माजी का पैगम्बर तारीखी तौर पर साबितशुदा पैगम्बर बन चुका होता है, जबकि हाल का पैगम्बर एक निजाई (विवादित) शख्सियत होता

सूरह-12. यूसुफ

657

पारा 13

है। तारीखी पैगम्बर को मानना हमेशा इंसान के लिए आसानतरीन काम रहा है और निजाई पैगम्बर को मानना हमेशा उसके लिए मुश्किलतरीन काम।

आद और समूद और मदन और कोमे लूत वगैरह की तबाहशुदा बस्तियां कुश के आस पास के इलाकों में मौजूद थीं। वे अपने सफरों के दौरान उन्हें देखते थे। ये आसार जबाने हाल से कह रहे थे कि पैगम्बर को निजाई दौर में न पहचानने ही की वजह से इन कौमों पर खुदा का अजाब आया और वे हलाक कर दी गई। इसके बावजूद कुश ने उनसे सबक नहीं लिया। इसकी वजह इंसान की यह कमजोरी है कि वह एक गलत काम करता है मगर कुछ खुदसाखा (स्वनिर्मित) ख्यालात की बिना पर अपने आपको गलतकारों की फेहरिस्त से अलग कर लेता है।

सूरह यूसुफ की आयत 110 की तशरीह सूरह बकरह की आयत 214 से हो रही है जिसमें इरशाद हुआ है 'क्या तुम ख्याल करते हो कि तुम जन्नत में दाखिल कर दिए जाओगे। हालांकि तुम पर अभी वह हालात गुजरे ही नहीं जो तुमसे पहले वालों पर गुजरे थे। उन्हें सखी और तकलीफ पहुंची और वे हिला मारे गए। यहां तक कि रसूल और उसके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे कि खुदा की मदद कब आएगी। जान लो, खुदा की मदद करीब है।'।

खुदा हमेशा दाजी (आह्वानकर्ता) की मदद करता है। मगर यह मदद मदद के खिलाफ दाजी के हक में खुदा का फैसला होता है, इसीलिए यह मदद हमेशा उस वक्त आती है जबकि दावती जद्दोजहद अपनी तक्मील के आखिरी मरहले में पहुंच चुकी हो, चाहे इस ताखीर की वजह से दावत देने वालों पर मायूसी के एहसासात तारी होने लगे।

'और आखिरत का घर मुत्तकियों के लिए ज्यादा बेहतर है' इससे मालूम हुआ कि दुनिया में अहले ईमान के साथ जो सुलूक किया जाता है वह आखिरत में उनके साथ किए जाने वाले सुलूक की अलामत होता है।

दुनिया में खुदा हक के दाजियों की इस तरह मदद करता है कि उनकी बात तमाम दूसरी बातों पर बुलन्द व बाला साबित होती है। वे अपने दुश्मनों की तमाम साजिशों और मुहालिफतों के बावजूद अपना मिशन पूरा करने में कामयाब साबित होते हैं। यही इज्जत और सरबुलन्दी उन्हें आखिरत में ज्यादा कामिल और मेयारी सूरत में हासिल होगी।

لَقَدْ كَانَ فِي قَصَصِهِمْ عِبْرَةً لِّأُولِي الْأَلْبَابِ مَا كَانَ حَدِيثًا يُفْتَرَى وَلَكِنْ تَصْدِيقَ الَّذِي بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيلَ كُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿١١١﴾

उनके किस्सों में समझदार लोगों के लिए बड़ी इबरत (सीख) है। यह कोई गढ़ी हुई बात नहीं, बल्कि तस्दीक (पुष्टि) है उस चीज की जो इससे पहले मौजूद है। और तफ्सील है हर चीज की। और हिदायत और रहमत है ईमान वालों के लिए। (111)

पिछले पैगम्बरों और उनकी कौमों की कहानी इबरत के एतबार से तमाम इंसानों की कहानी है। अगर आदमी अक्ल से काम ले तो वह माजी (अतीत) के वाक्य में हाल की

पारा 13

658

सूरह-13. अर-रअद

नसीहत पा लेगा। दूसरों के अंजाम को देखकर वह अपने अहवाल को दुरुस्त कर लेगा।

कुरआन किसी इंसान की गढ़ी हुई किताब नहीं, वह खुदा की तरफ से उतरी हुई किताब है। वह ऐन उस पेशीनगोई (भविष्यवाणी) के मुताबिक आई है जो पिछली आसमानी किताबों में की गई थी। इसमें हिदायत से मुतअल्लिक हर जल्दी चीज का बयान मौजूद है। वह अपने आगाज के एतबार से इंसानों के लिए रहनुमाई है और अपने अंजाम के एतबार से उनके लिए रहमत।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ
الَّذِي أَنْزَلَ إِلَيْكَ مِنَ الْبُحْرِ الْحَقَّ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝ اللَّهُ الَّذِي رَفَعَ السَّمُوتَ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ
اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ كُلٌّ يَجْرِي لِإِجَالٍ مُّسَمًّى ۝
يُذَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاءِ رَبِّكُمْ تُوقِنُونَ ۝

आयतें-43

सूरह-13. अर-रअद

रुकूअ-6

(मदीना में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० मीम० रा०। ये किताबे इलाही की आयतें हैं। और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे रब की तरफ से उतरा है वह हक (सत्य) है। मगर अक्सर लोग नहीं मानते। अल्लाह ही है जिसने आसमान को बुलन्द किया बगैर ऐसे सुतून (स्तंभ) के जो तुम्हें नजर आए। फिर वह अपने तख्त पर मुतमक्किन (आसीन) हुआ और उसने सूरज और चांद को एक कानून का पाबंद बनाया, हर एक एक मुक़रर वक्त पर चलता है। अल्लाह ही हर काम का इतिजाम करता है। वह निशानियों को खोल खोल कर बयान करता है ताकि तुम अपने रब से मिलने का यकीन करो। (1-2)

कुरआन एक खुदा को मानने की दावत देता है। जो लोग खुदा को नहीं मानते उनकी सबसे बड़ी दलील यह होती है कि खुदा अगर है तो हमें दिखाई क्यों नहीं देता। मगर हमारी मालूम कायनात बताती है कि किसी चीज का दिखाई न देना इस बात का सबूत नहीं है कि उसका कोई वजूद भी नहीं। इसकी एक मिसाल कुव्वते कशिश (गुरुत्वाकर्षण शक्ति) है। ख़ला में बेशुमार अलग-अलग सितारे और सय्यारे (ग्रह) हैं। इंसानी इल्म कहता है कि इन अजरामे समावी (आकाशीय पिंडों) के दर्मियान एक गैर मरई (अदृश्य) कुव्वते कशिश है जो वसीअ ख़ला (विशाल अंतरिक्ष) में उन्हें संभाले हुए है। फिर इंसान जब गैर मरई होने के बावजूद कुव्वते कशिश की मौजूदगी का इकरार कर रहा है तो गैर मरई होने की वजह से खुदा के वजूद का इंकार करने में वह क्योंकर हक बजानिब होगा।

यही मामला 'वही' (ईश्वरीय वाणी) व रिसालत का है। कायनात का तालिबे इल्म जब

कायनात का मुतालाआ करता है तो वह पाता है कि यहां हर चीज एक निजाम की पाबंद है। ऐसा मालूम होता है कि तमाम चीजें किसी खास हुक्म में जकड़ी हुई हैं। यह 'हुक्म' खुद इन चीजों के अंदर मौजूद नहीं है। यकीनन वह खारिज (बाहर) से आता है। गोया तमाम दुनिया अपने अमल के लिए 'खारिज' से हिदायत ले रही है। इंसान के अलावा बकिया दुनिया में इस खारजी (वाय्) हिदायत का नाम कानून फितरत है, और इंसान की दुनिया में इसका नाम 'वही' व इल्हाम। 'वही' दरअसल इसी खारजी रहनुमाई की इंसानी दुनिया तक तौसीअ (विस्तार) है जिसे बकिया दुनिया में कानून फितरत कहा जाता है।

कायनात गोया एक मशीन है और कुरआन उसकी गाइड बुक। कायनात खुदा की तदबीरे अम्र (कार्य-प्रणाली) की मिसाल है और कुरआन खुदा की तपसीले आयात (निशानियों की व्याख्या) की मिसाल। इन दोनों के दर्मियान कामिल मुताबिकत (अुकूलता) है। जो कुछ कायनात में अमलन नजर आता है वह कुरआन में लफ्जी तौर पर मौजूद है। यह मुताबिकत बयकवक्त दो बातें साबित करती है। एक यह कि इस कायनात का एक खालिक है। और दूसरे यह कि कुरआन उसी खालिक की किताब है न कि महदूद (सीमित) इंसानी दिमाग की तख्खीक (रचना)।

وَهُوَ الَّذِي مَكَدَ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهَارًا وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ
جَعَلَ فِيهَا رَوْحَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشَى اللَّيْلُ النَّهَارُ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ
يَتَفَكَّرُونَ ﴿٦٥﴾

और वही है जिसने जमीन को फैलाया। और उसमें पहाड़ और नदियां रख दीं और हर किस्म के फलों के जोड़े इसमें पैदा किए। वह रात को दिन पर उड़ा देता है। बेशक इन चीजों में निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो गौर करें। (3)

आसमान की निशानियों के बाद जब जमीन की हालत पर गौर किया जाए तो वह इंसान की रिहाइश के लिए इतिहाई बामअना तौर पर मौजूं (उपयुक्त) नजर आती है।

जमीन एक कुदरती फर्श की मानिंद आदमी के कदमों के नीचे फैली हुई है। इसमें एक तरफ इंसान की जरूरत के लिए समुद्र की गहराइयां हैं तो दूसरी तरफ पहाड़ों की बुलन्दियां भी हैं ताकि दोनों मिलकर जमीन का तवाजुन (संतुलन) बरकरार रखें। दरख्त एक दूसरे से अलग-अलग भी हो सकते थे मगर इनमें जोड़े हैं जिनके दर्मियान तजवीज (निषेचन) के अमल से दाने और फल पैदा होते हैं। जमीन का यह हाल है कि सूरज के चारों तरफ अपनी सालाना दौर वाली गर्दिश के साथ अपने महवर (धुरी) पर भी मुसलसल गर्दिश करती है जिसका दौर 24 घंटे में पूरा होता है और जिससे रात और दिन पैदा होते हैं।

इस किस्म की निशानियों पर जो शख्स भी संजीदगी से गौर करेगा वह यह मानने पर मजबूर होगा कि यह दुनिया एक बाइख़्तियार मालिक के तहत है और उसने अपने इरादे के तहत उसकी एक बामक्सद मंसूबाबंदी कर रखी है। बाशुऊर मंसूबाबंदी के बगैर जमीन पर यह मअनवियत (अर्थपूर्णता) हरगिज मुमकिन न थी।

وَفِي الْأَرْضِ قِطْعٌ مُّتَبَعَرَاتٌ وَجَنَّاتٌ مِّنْ أَعْنَابٍ وَزُرْعٌ وَنَخِيلٌ صِنْوَانٌ وَغَيْرُ صِنْوَانٍ يُسْقَى بِمَاءٍ وَاحِدٍ وَنُفِضَ لُبُّهَا عَلَى بَعْضِ فِي الْأَكْلِ
إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿٦٦﴾

और जमीन में पास-पास मुख़लिफ़ कितने (भू-भाग) हैं और अंगूरों के बाग हैं और खेती है और खजूरें हैं, उनमें से कुछ इकहरे हैं और कुछ दोहरे। सब एक ही पानी से सैराब होते हैं। और हम एक को दूसरे पर पैदावार में फौकियत (श्रेष्ठता) देते हैं बेशक इनमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो गौर करें। (4)

हजरत अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने फरमाया कि कोई अच्छी जमीन है और कोई बंजर जमीन। एक उगती है और उसी के पास दूसरी नहीं उगती। मुजाहिद ने कहा कि यही मामला बनी आदम (मानव-जाति) का है। उनमें अच्छे भी हैं और बुरे भी, हालांकि सबकी अस्ल एक है। हसन बसरी ने कहा कि यह एक मिसाल है जो अल्लाह ने बनी आदम के दिलों के लिए दी है।

जमीन में एक अजीब निशानी यह है कि एक ही मिट्टी है। एक ही पानी से उसे सैराब किया जाता है मगर एक जगह से एक दरख्त निकलता है और उसी के पास दूसरी जगह से दूसरा दरख्त। एक में मीठा फल है और दूसरे में खट्टा फल। कोई ज्यादा पैदावार देता है और कोई कम पैदावार।

यह इंसानी वाक्ये की जमीनी तमसील (उपमा) है। इससे मालूम होता है कि अगरचे तमाम इंसान बजाहिर यकसां (समान) हैं और उन सबके पास एक ही हिदायत आती है। मगर हिदायत से इस्तिफ़ादे के मामले में एक इंसान और दूसरे इंसान में बहुत ज्यादा फर्क हो जाता है। कोई इससे रहनुमाई हासिल करता है और कोई इसका मुंकिर बन जाता है। कोई थोड़ी हिदायत लेता है और किसी की ज़िंदगी हिदायत से मालामाल हो जाती है। गोया जैसी जमीन वैसी पैदावार का उसूल यहां भी है और वहां भी।

وَأَن تَعْجَبَ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ ءِذَا كُنَّا تُرَابًا إِنْ لَفِئَ خَلْقٍ جَدِيدَةٍ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ وَأُولَٰئِكَ الْأَعْلَىٰ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ
هَم فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٦٧﴾

और अगर तुम तअज्जुब करो तो तअज्जुब के काबिल उनका यह कौल है कि जब वे मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा किए जाएंगे। ये वे लोग हैं जिन्होंने अपने रब का इंकार किया और ये वे लोग हैं जिनकी गर्दनों में तौक पड़े हुए हैं वे आग वाले लोग हैं, वे उसमें हमेशा रहेंगे। (5)

दूसरी ज़िंदगी के मुकिरीन का केस निहायत अजीब है। वे जिस वाक्ये के जुहूर को एक बार मान रहे हैं उसी वाक्ये के दुबारा जुहूर का इंकार कर देते हैं।

जो लोग दूसरी ज़िंदगी के युक्कूअ (घटित होने) को नहीं मानते वे दूसरी ज़िंदगी का अकीदा रखने वालों पर हैरानी का इज़हार करते हैं। उनका ख्याल यह होता है कि दूसरी ज़िंदगी को मानना एक ग़ैर इल्मी (अबैद्धिक) बात को मानना है। मगर हकीकत यह है कि सूरतेहाल इसके बिल्कुल बरअक्स है। क्योंकि कोई मुकिर जिस चीज का इंकार कर सकता है, वह सिर्फ दूसरी ज़िंदगी है। जहां तक पहली ज़िंदगी का तअल्लुक है उसका इंकार करना किसी शरख के लिए मुमकिन नहीं। क्योंकि वह तो एक जिंदा वाक्ये के तौर पर हर आदमी के सामने मौजूद है। फिर जब पहली ज़िंदगी का वजूद में आना मुमकिन है तो दूसरी ज़िंदगी का वजूद में आना नामुमकिन क्यों हो।

ऐसे लोग हमेशा बहुत कम पाए गए हैं जो खुदा के मुकिर हों। बेशतर लोगों का हाल यह है कि वे एक खालिक को मानते हैं मगर वे आखिरत (परलोक) को नहीं मानते। मगर आखिरत के इंकार के बाद खालिक के इंकार की कोई कीमत बाकी नहीं रहती। खुदा इस कायनात का खालिक ही नहीं वह बजाते खुद हक (सत्य) भी है। खुदा का सरापा हक और अदल (न्याय) होना लाजिमी तौर पर तक्ज़ा करता है कि वह जो कुछ करे हक और अदल के मुताबिक करे। आखिरत दरअसल खुदा की सिफते अदल का जुहूर है। खुदा को मानना वही मानना है जबकि उसके साथ आखिरत को भी माना जाए। आखिरत को माने बग़ैर खुदा का अकीदा मुकम्मल नहीं होता।

जो लोग हक के सीधे और सच्चे पैग़ाम को नहीं मानते इसकी वजह अक्सर यह होती है कि वे जुमूद (जड़ता), तअस्सुब (विद्वेष) अनानियत (अहंकार) के शिकार होते हैं। उनसे बात कीजिए तो ऐसा मालूम होगा कि वे खुद अपने ख्यालात के कैदी बने हुए हैं। इससे निकल कर वे आजादाना तौर पर किसी ख़ारजी (वाह्य) हकीकत पर ग़ैर नहीं कर सकते। इसी हालत को 'गर्दन में तौक पड़ना' फ़रमाया। क्योंकि गर्दन में तौक होना गुलामी की अलामत है। गोया कि ये लोग खुद अपने ख्यालात के गुलाम हैं। जो इस तरह अपने आपको दुनिया में कैदी बना लें, आखिरत में भी उनके हिस्से में कैद ही आएगी।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثَلُتُ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِلنَّاسِ عَلَى ظُلْمِهِمْ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ⑥

वे भलाई से पहले बुराई के लिए जल्दी कर रहे हैं। हालांकि उनसे पहले मिसालें गुजर चुकी हैं और तुम्हारा रब लोगों के जुल्म के बावजूद उन्हें माफ करने वाला है। और बेशक तुम्हारा रब सख्त सजा देने वाला है। (6)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का के लोगों से कहते थे कि खुदा की हिदायत को मानो वना तुम खुदा की पकड़ में आ जाओगे। इसके जवाब में उन्होंने कहा 'खुदाया, मुहम्मद जो कुछ पेश कर रहे हैं अगर वह हक है तो तू हमारे ऊपर आसमान से पत्थर बरसा' यह दुआ बजाहिर खुदा से थी मगर हकीकतन इसका ख़ूब रसूल की तरफ था।

आप उस वक्त मक्का के लोगों को बिल्कुल बेवजन मालूम होते थे। उन्हें यकीन नहीं आता था कि ऐसे मामूली आदमी के इंकार पर खुदा हमें सजा देगा। 'मुहम्मद' के इंकार पर अजाब आना उन्हें इतना असंभावी नजर आता था कि वे बतौर मजाक कहते थे कि तुम जिस खुदाई अजाब की धमकी दे रहे हो हम चाहते हैं कि वह हमारे ऊपर आ जाए।

फरमाया कि तुम्हारे इंकारे हक के सबब से तुम्हारे ऊपर खुदा का अजाब तो आने ही वाला है। यह सिर्फ तुम्हारी बदबख्ती है कि तुम उसे जल्द बुलाना चाहते हो। हालांकि तुम्हें चाहिए था कि इस क़स्फे (अंतराल) को दावते क़ुरआन पर ग़ैर व फ़िक्र और उसकी कबूलियत में इस्तेमाल करो न कि अजाब को वक्त से पहले बुलाने में।

लोग चाहते हैं कि खुदा के अजाब को अपनी आंखों से देख लें फिर उसे मानें। मगर यह सिर्फ अंधेपन का मुतालबा है। अगर उनके पास आंखें हों तो जो कुछ दूसरों के साथ पेश आया वही उनके सबक के लिए काफी है। इनसे पहले कितनी कैमों गुजर चुकी हैं जिन्होंने इन्हीं की तरह अपने जमाने के पैग़म्बरों को झुठलाया और बिलआखिर उन्हें उसकी सजा भुगतनी पड़ी।

खुदा का कानून यह है कि वह इंसान को अमल की मोहलत देता है। यही कानून मोहलत है जिसने लोगों को सरकश बना रखा है। मगर मोहलत की एक हद है। इस हद के बाद जो चीज उनका इतिजार कर रही है वह सिर्फ दर्दनाक अजाब है जिससे वे अपने आपको बचा न सकेंगे।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْ أَنزَلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ إِنَّمَا أَنْتَ مُنذِرٌ وَلِكُلِّ قَوْمٍ مَّهَادٍ ⑦

और जिन लोगों ने इंकार किया वे कहते हैं कि इस शरख पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी। तुम तो सिर्फ ख़बरदार कर देने वाले हो। और हर कौम के लिए एक राह बताने वाला है। (7)

आज सारी दुनिया में एक अरब से भी ज्यादा इंसान मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को खुदा का रसूल मानते हैं। मगर आपकी ज़िंदगी में मक्का वालों की समझ में न आ सका कि आपको खुदा ने अपना रसूल बनाया है। इसकी वजह यह थी कि अपनी तारीख के इब्तिदाई दौर में आपकी नुबुव्वत एक निजाई (Controversial) नुबुव्वत थी। मगर अब अपनी तारीख के इतिहाई दौर में आपकी नुबुव्वत एक साबितशुदा (Established) नुबुव्वत बन चुकी है। निजाई (विवादपूर्ण) दौर में पैग़म्बर को पहचानना जितना मुश्किल है, इस्वाती (सुस्थापित) दौर में उसे पहचानना उतना ही आसान हो जाता है।

मक्का के लोगों के पास जो पैमाना था वह दौलत, इक्तेदार (सत्ता) और अवाम में मकबूलियत का पैमाना था। इस एतबार से आप उन्हें ग़ैर मामूली नजर न आते थे। इसलिए उन्होंने चाहा कि आपके साथ कोई ग़ैर मामूली निशानी हो जो उनके लिए आपके पैग़म्बर होने का क़तई सबूत बन जाए। इसके जवाब में फरमाया गया कि ये लोग ऐसी चीज मांग रहे हैं जो खुदाई मंसूबे के मुताबिक नहीं, इसलिए वे किसी को मिलने वाली भी नहीं।

मौजूदा दुनिया दारुल इम्तेहान (परीक्षा-स्थल) है। यहां हिदायत ऐसी सरीह निशानियों के साथ नहीं आ सकती कि उसके बाद आदमी के लिए शुबह की गुंजाइश बाकी न रहे। क्योंकि ऐसी हालत में इम्तेहान की मस्लेहत फ़ौत हो जाती है। यहां बहरहाल यही होगा कि आदमी को 'ख़बर' की सतह पर जांच कर उसका यकीन करना पड़ेगा। जो शख्स इस इम्तेहान में पूरा न उतरे, उसके हिस्से में हिदायत भी कभी नहीं आ सकती।

ख़ुदा हर कौम में उसके अपने अंदर के एक आदमी को खड़ा करता है ताकि वह उसकी मानूस जवान में उसे ख़ुदा का पैगाम पहुंचा दे। यह इतिजाम कौमों की आसानी के लिए था। मगर अक्सर ऐसा हुआ कि कौमों ने इससे उल्टा असर लेकर ख़ुदा के पैग़मबरों का इंकार कर दिया। उनकी निगाहें पैग़ामरसां (संदेशवाहक) के मामूलीपन पर अटक कर रह गईं, वे पैग़ाम के ग़ैर मामूलीपन को न देख सकीं।

اللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ اُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْاَرْحَامُ وَمَا تَرْدٰدُ وَاٰتٰى كُلَّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِقَدَرٍ ۝ عَلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةُ الْكُبْرٰى الْمُتَعَالٰى ۝ سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ اَسْرَأَ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِالْاٰلِیْلِ وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝

अल्लाह जानता है हर मादा के हमल (गर्भ) को। और जो कुछ रहमों में घटता या बढ़ता है उसे भी। और हर चीज का उसके यहां एक अंदाजा है। वह पोशीदा और जाहिर को जानने वाला है, सबसे बड़ा है, सबसे बरतर। तुम में से कोई शख्स चुपके से बात कहे और जो पुकार कर कहे और जो रात में छुपा हुआ हो। और दिन में चल रहा हो, ख़ुदा के लिए सब एकसां (समान) हैं। (8-10)

मां का पेट एक हैरतअंगेज फैक्टरी है। इस ख़ुदाई फैक्टरी में जो इंसानी पैदावार तैयार होती है उसका एक अजीब पहलू यह है कि वह 'मुकरर मिक्दार' के मुताबिक अमल करती है। आजकल की जवान में गोया डिमांड और सप्लाई के दर्मियान मुसलसल एक तवाजुन (संतुलन) बरकरार रहता है।

मसलन यह फैक्टरी हजारों साल से काम कर रही है। इससे मर्द भी पैदा हो रहे हैं और औरतें भी। मगर दोनों जिनसों की तादाद के दर्मियान हमेशा एक तनासुब (संतुलन) कायम रहता है। ऐसा कभी नहीं होता कि इस फैक्टरी से सब मर्द ही मर्द पैदा हो जाएं या सब औरतें ही औरतें पैदा होने लगे। जंग जैसा कोई हादसा मकामी तौर पर कभी इस तनासुब (संतुलन) को बिगाड़ देता है। मगर हैरतअंगेज तौर पर देखा गया है कि कुछ अर्से बाद ही यह कुदरती कारख़ाना इस तनासुब को दुबारा कायम कर देता है।

यही मामला इस फैक्टरी से निकलने वाले मर्द व औरत के दर्मियान सलाहियों (क्षमताओं) के तवाजुन का है। मुतालआ बताता है कि पैदा होने वाले मर्द व औरत सब एकसां इस्तेदाद के नहीं होते। उनकी सलाहियों में बहुत ज्यादा विविधता है। इस विविधता की ग़ैर मामूली तमददुनी (सांस्कृतिक) अहमियत है। क्योंकि तमददुन (संस्कृति) के निज़ाम

को चलाने के लिए मुक़्तलिफ़ किस्म की सलाहियों के इंसान दरकार है। मां की फैक्टरी निहायत ख़ामोशी से हर किस्म की इस्तेदाद (सामर्थ्य) वाले इंसान इस तरह कामयाबी के साथ तैयार कर रही है जैसे उसे बाहर से 'ऑर्डर' मोसूल होते हों। और वह पेट के अंदर उसके मुताबिक इंसानों की तशकील कर रही हो। अगर इंसानी पैदावार में यह विविधता न हो तो तमददुन का सारा निज़ाम सर्द पड़ जाए और तमाम तरक़ियां मांद होकर रह जाएं।

मां के पेट के अमल में इस मंसूबाबंदी का होना सरीह तौर पर इस बात का सुबूत है कि इसके पीछे कोई मंसूबासाज है। इरादे के साथ मंसूबाबंदी के बग़ैर इस किस्म का निज़ाम इस कदर तसलसुल (निरंतरता) के साथ कायम नहीं रह सकता।

इससे यह भी साबित होता है कि इस दुनिया का ख़ालिक व मालिक एक ऐसी हस्ती है जिसे न सिर्फ़ खुले की ख़बर है बल्कि वह छुपे को भी जानता है। रहम (गर्भ) के अंदर और मां के पेट में जो कुछ होता है वह बजाहिर एक छुपी चीज है। मगर मज्बूरा वाक्या बताता है कि ख़ुदा को इसकी मुकम्मल ख़बर है। फिर जो हस्ती एक के छुपे और खुले को जानती है वह दूसरे के छुपे और खुले को क्यों नहीं जानेगी। फरिश्तों का अकीदा भी इसी से साबित होता है। क्योंकि वह 'निगरानी' के मौजूदा निज़ाम की गोया तौसीअ (विस्तार) है।

لَهُۥ مُعَقِّبٰتٌ مِّنۡۢ بَیْنِ يَدَیْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ یَحْفَظُوْنَہٗ مِنْۢ اَمْرِ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ لَا یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوْا مَاۤ اَنْفُسُہُمْ وَاِذَا اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْۤءًا لَاَ یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوْا مَاۤ اَنْفُسُہُمْ وَاِذَا اَرَادَ اللّٰهُ بِقَوْمٍ سُوْۤءًا لَاَ یُغَیِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰی یُغَیِّرُوْا مَاۤ اَنْفُسُہُمْ ۝

हर शख्स के आगे और पीछे उसके निगरां (रक्षक) हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी देखभाल कर रहे हैं। वेशक अल्लाह किसी कौम की हालत को नहीं बदलता जब तक कि वे उसे न बदल डालें जो उनके जी में है। और जब अल्लाह किसी कौम पर कोई आफ़त लाना चाहता है तो फिर उसके हटने की कोई सूरत नहीं और अल्लाह के सिवा उसके मुक़ाबले में कोई उनका मददगार नहीं। (11)

दुनिया में कौमों का उरूज व जवाल (उत्थान-पतन) अललटप तौर पर नहीं होता बल्कि ख़ुदा की निगरानी और फैसले के तहत होता है। ख़ुदा जब किसी कौम को अपनी नेमत से नवाजता है तो वह उस नेमत को उस वक़्त तक उसके लिए बाकी रखता है जब तक वह अपने अंदर उसकी इस्तेदाद (सामर्थ्य) बाकी रखे। इस्तेदाद खो देने के बाद वह कौम लाज़िमी तौर पर ख़ुदाई नेमत को भी खो देती है, मसलन अपने दर्मियान इस्तेहाद खोने के बाद ख़ारजी दुनिया में रौब से महरूम हो जाना, वग़ैरह।

दुनिया में कोई कौम जो कुछ पाती है, ख़ुदा के क़ानून के तहत पाती है और कोई कौम जो कुछ खोती है ख़ुदा के क़ानून के तहत खोती है। ख़ुदा के सिवा यहां न कोई देने वाला है और न कोई छीनने वाला।

هُوَ الَّذِي يُرِيكُمْ الْبَرْقَ خَوْفًا وَطَمَعًا وَيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۖ وَ يُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهِ وَالْمَلِكُ مِنْ خِيفَتِهِ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَهُوَ شَدِيدُ الْحِسَابِ ۖ

वही है जो तुम्हें बिजली दिखाता है जिससे डर भी पैदा होता है और उम्मीद भी। और वही है जो पानी से लदे हुए बादल उठाता है। और बिजली की गरज उसकी हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी पाकी बयान करती है और फरिश्ते भी उसके खौफ से। और वह बिजलियां भेजता है, फिर जिस पर चाहे उन्हें गिरा देता है और वे लोग खुदा के बाव में झगड़ते हैं, हालांकि वह जबरदस्त है कुव्वत वाला है। (12-13)

बिजली चमकती है तो कभी वह नए खुशगवार मौसम की आमद का पैगाम होती है और कभी वह साइका (बिजली) बनकर जमीन पर गिरती है और चीजों को जला डालती है। इसी तरह बादल उठते हैं तो कभी वे मुफीद बारिश की सूरत में जमीन पर बरसते हैं और कभी तूफान और सैलाब का पेशखेमा (पूर्व-क्रिया) साबित होते हैं।

इसका मतलब यह है कि इस दुनिया में एक ही चीज में डर का पहलू भी है और उम्मीद का पहलू भी। दुनिया का इतिजाम करने वाला जिस चीज के जरिए दुनिया वालों पर अपनी रहमत भेजता है उसी को वह तबाहकून अजाब भी बना सकता है। इस सूतेहाल का तकाजा है कि आदमी कभी अपने आपको खुदा की पकड़ से मामून (सुरक्षित) न समझे।

गाफिल इंसान हमेशा किसी अनेखी और तिलिस्माती निशानी के जुहर के मुंतजिर रहते हैं। मगर जिन लोगों का शुऊर बेदार है, वे अपने आस पास रोज मरह के वाक्यात में हर किस्म की आला निशानी पा लेते हैं। बिजली की कड़क चमक उनके दिल की धड़कनें तेज कर देती है। और बारिश के कतरे देखकर उनकी आंखों से आंसुओं का सैलाब बह पड़ता है। खुदा की ताकतों को बराहेरास्त देखकर फरिश्तों का जो हाल होता है वही हाल सच्चे इंसानों का उस वक्त हो जाता है जबकि उन्होंने खुदा की ताकतों को अभी बराहेरास्त नहीं देखा है।

لَهُ دَعْوَةُ الْحَقِّ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِنْ دُونِهِ لَا يَسْتَجِيبُونَ لَهُمْ شَيْءٌ إِلَّا كِبَاسٌ كَفَيْنَهُ إِلَى الْمَاءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِالْعَاوِ ۖ وَمَادُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ ۖ

सच्चा पुकारना सिर्फ खुदा के लिए है। और उसके सिवा जिनको लोग पुकारते हैं वे उनकी इससे ज्यादा दादरसी (सहायता) नहीं कर सकते जितना पानी उस शख्स की करता है जो अपने दोनों हाथ पानी की तरफ फैलाए हुए हो ताकि वह उसके मुंह तक पहुंच जाए और वह उसके मुंह तक पहुंचने वाला नहीं। और मुंकिरीन की पुकार सब बेमयदा है। (14)

अगर आप हाथ फैलाकर समुद्र के पानी को पुकारें तो ऐसा कभी नहीं होगा कि समुद्र आपकी पुकार को सुने और उसका पानी समुद्र की गहराइयों से निकल कर आपकी तरफ आए और आपके खेतों और बागों को सैराब करे। मगर इसी समुद्र के साथ ऐसा होता है कि कदरत के कानून के तहत उसका पानी नमक के जुज को छोड़कर फज में बुलन्द होता है। फिर गर्मी, कशिश और हवा के अमल से मुतहरिक होकर वह आपकी बस्ती के ऊपर आता है और मीठे पानी की सूरत में बरस कर आपकी जमीन को सैराब कर देता है। इससे मालूम हुआ कि समुद्र बजहिर अजीम हेने के बावजूद सरासर आजिज है उसे किसी किस्म का जती इख्तियार हासिल नहीं।

यही इस दुनिया की तमाम चीजों का हाल है। ऐसी हालत में अकलमंद इंसान सिर्फ वह है जो खालिक (रचयिता) को पूजे न कि मख्लूक (रचना) को, जो चीजों के रब को अपना मकजे तवज्जोह बनाए न कि खुद चीजों को।

وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا وَظِلَلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْآصَالِ ۖ قُلْ مَنْ رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ قُلْ اللَّهُ قُلْ أَفَاتَخَذْتُمْ مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ لَا يَمْلِكُونَ لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَلَا ضَرًّا قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرَةُ أَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّورُ ۚ أَمْ جَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ خَلَقُوا كَخَلْقِهِ فَتَشَابَهَ الْخَالِقُ عَلَيْهِمْ قُلْ اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۖ

और आसमानों और जमीन में जो भी हैं सब खुदा ही को सज्दा करते हैं। खुशी से या मजबूरी से और उनके साये भी सुबह व शाम। कहो, आसमानों और जमीन का रब कौन है। कह दो कि अल्लाह। कहो, क्या फिर भी तुमने उसके सिवा ऐसे मददगार बना रखे हैं जो खुद अपनी जात के नफा और नुकसान का भी इख्तियार नहीं रखते। कहो, क्या अंधा और आंखों वाला दोनों बराबर हो सकते हैं। या क्या अंधेरा और उजाला दोनों बराबर हो जाएंगे। क्या उन्होंने खुदा के ऐसे शरीक ठहराए हैं जिन्होंने भी पैदा किया है जैसा कि अल्लाह ने पैदा किया, फिर पैदाइश उनकी नजर में मुशतबह (संदिग्ध) हो गई। कहो, अल्लाह हर चीज का पैदा करने वाला है और वही है अकेला, जबरदस्त। (15-16)

खुदा का मुतालबा इंसान से यह है कि वह उसके आगे झुक जाए। यही 'झुकना' तमाम कायनात का दीन है। इस दुनिया की हर चीज खुदा के हुक्म के आगे कामिल तौर पर झुकी हुई है। इसी झुकाव की एक अलामत है चीजों के साये का सुबह व शाम मरिब और मशरिक की तरफ गिरना। चीजों का यह साया गोया उस सज्दे को माददी (भौतिक) तौर पर दर्शा रहा है जो इंसान से शुऊरी तौर पर मल्लूब है। पहला सज्दे का अलामती (प्रतीकात्मक) रूप है और

كُورَا اُكُورَا اُكُورَا

वसीअ कायनात का मुतालआ (अवलोकन) बताता है कि सारी कायनात एक ही आफ्रकी (सार्वभौम) कानून में बंधी हुई है। यह इस बात का सुबूत है कि इसका ख़ालिक और मालिक एक है। इंसान का इल्मी और अक्ली मुतालआ किसी भी तरह यह साबित नहीं करता कि इस कायनात में एक से ज्यादा ताकतों की कारफरमाई हो। ऐसी हालत में एक खुदा के सिवा मजीद (अतिरिक्त) खुदा मानना सरासर बेबुनियाद कल्पना है।

‘आंख’ का मुशाहिदा तो सिर्फ एक खुदा का पता देता है। इसलिए जो लोग एक खुदा से ज्यादा खुदा मानें वे सिर्फ इस बात का सुबूत देते हैं कि वे अंधे हैं। उन्होंने अपने अंधेपन की वजह से कई खुदा फर्ज कर लिए हैं न कि हकीकी मअनों में इल्म और मुशाहिदे (साक्ष्य) की बुनियाद पर।

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةً يُقَدِّرُهَا قَحْتَمَلُ السَّيْلِ رَبِّدًا رَّايًا
وَمِمَّا يُوقِدُونَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَاءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ رَبِّدًا وَمِثْلَهُ كَذَلِكَ
يَضْرِبُ اللهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ هُ فَاَمَّا الذِّبْدُ فَيَذْهَبُ جُفَاءً وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ
فَيَمْنُكُ فِي الْاَرْضِ كَذَلِكَ يَضْرِبُ اللهُ الْاَمْثَالَ

अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर नाले अपनी-अपनी मिकदार के मुवाफि क बह निकले। फिर सैलाब ने उभरते झाग को उठा लिया और इसी तरह का झाग उन चीजों में भी उभर आता है जिन्हें लोग जेवर या असबाब बनाने के लिए आग में पिघलाते हैं। इस तरह अल्लाह हक (सत्य) और बातिल (असत्य) की मिसाल बयान करता है। पस झाग तो सूखकर जाता रहता है और जो चीज इंसानों को नफा पहुंचाने वाली है वह जमीन में ठहर जाती है। अल्लाह इसी तरह मिसालें बयान करता है। (17)

खुदा ने अपनी दुनिया इस तरह बनाई है कि यहां माद्दी (भौतिक) वाक़ेयात अख़्खाकी हकीकतों की तमसील बन गए हैं। जो कुछ अल्लाह तआला को इंसान से शुऊर की सतह पर मल्लूब है, उन्हीं को बकिया दुनिया में माद्दी सतह पर दिखाया जा रहा है।

यहां कुरआन में फ़ितरत के दो वाक़ेयात की तरफ इशारा किया गया है। एक यह कि जब बारिश होती है और उसका पानी बहकर नदियों और नालों में पहुंचता है तो पानी के ऊपर हर तरफ झाग फैल जाती है। इसी तरह जब चांदी और अन्य धातुओं को साफ करने के लिए आग पर तपाते हैं तो उसका मैलकुचेल झाग की सूरत में ऊपर आ जाता है। मगर जल्द ही बाद यह होता है कि दोनों चीजों का झाग, जिसमें इंसान के लिए कोई फ़ायदा नहीं फ़ज में उड़ जाता है।

और पानी और धातु अपनी जगह पर महफूज रह जाते हैं जो इंसान के लिए मुफ़ीद हैं।

ये फ़ितरत के वाक़ेयात हैं जिनके जरिए खुदा तमसील के रूप में दिखा रहा है कि उसने जिंदगी की कामयाबी और नाकामी के लिए क्या उसूल मुकर्रर फरमाया है। वह उसूल यह है

कि इस दुनिया में सिर्फ उस शख्स या कौम को जगह मिलती है जो दूसरों के लिए नफाबख़शी का सुबूत दे। जो फर्द या ग़िरोह दूसरे इंसानों को नफा पहुंचाने की ताकत खो दे उसके लिए खुदा की बनाई हुई दुनिया में कोई जगह नहीं।

لِّلَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِرَبِّهِمْ الْخُسْفَىٰ وَالَّذِينَ لَمْ يَسْتَجِيبُوا لَهُ لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّارِ
الْاَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ ۗ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوءُ الْحِسَابِ ۖ وَكَوَاوُمُ
جَهَنَّمَ وِبِئْسَ الْيِهَادُ

जिन लोगों ने अपने रब की पुकार को लब्बैक कहा उनके लिए भलाई है और जिन लोगों ने उसकी पुकार को न माना, अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो जमीन में है, और उसके बराबर और भी तो वह सब अपनी रिहाई के लिए दे डालें। उन लोगों का हिसाब सख़्त होगा और उनका ठिकाना जहन्नम होगा। और वह कैसा बुरा ठिकाना है। (18)

दुनिया में खुदा का यह कानून है कि चाहे वक्ती तौर पर मैल और झाग उभर कर ऊपर आ जाए मगर बिलआख़िर जिस चीज को यहां मक़म मिलता है वह वही है जो हकीकी है और जिसमें नफाबख़शी की सलाहियत है। आख़िरत के एतबार से भी इंसानों का मामला यही है। दुनिया में कुछ लोग अपनी इजाफी हैसियत की बिना पर नुमायां हो सकते हैं। मगर आख़िरत में वही लोग ऊंची जगह पाएंगे जो हकीकी औसाफ (गुणों) के मालिक हों। दुनिया में जो लोग हक की पुकार पर लब्बैक नहीं कहते। इसकी वजह हमेशा यह होती है कि बेआमेज (विशुद्ध) हक की तरफ बढ़ने में उन्हें दुनिया के फ़ायदे हाथ से जाते हुए नजर आते हैं। ऐसे लोगों को हक को नज़रअंदाज करने की कीमत हमेशा यह मिलती है कि वे दुनिया में इज्जत और मक़बूलियत और खुशहाली के मालिक बन जाते हैं। वे हक का इंकार करके ऊंची गढ़ियों पर सरफराज नज़र आते हैं।

मगर इन चीजों की हैसियत मैल और झाग से ज्यादा नहीं। आख़िरत में ये सारे लोग वक्ती झाग की तरह दूर फेंके जा चुके होंगे। और वही लोग नुमायां नज़र आएंगे जिन्होंने तमाम वक्ती फ़ायदों को नज़रअंदाज करके अपने आपको हक के हवाले किया था।

जो लोग दुनिया की हैसियत और दुनिया के फ़ायदों को इतनी अहमियत दे रहे हैं कि इसकी ख़ातिर हक को नज़रअंदाज कर देते हैं आख़िरत में ये चीजें उन्हें इतनी हकीर (तुच्छ) दिखाई देंगी कि वे चाहेंगे कि यह सारी दुनिया और इसके बराबर एक और दुनिया मिल जाए तो वे उन सबको सिर्फ अजाब से बचने की ख़ातिर फ़िदये में दे दें।

اَفَمَنْ يَعْلَمُ اَنَّمَا اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ۚ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُو
الْاَلْبَابِ

जो शख्स यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे खब की तरफ से उतारा गया है वह हक (सत्य) है, क्या वह उसके मानिंद हो सकता है जो अंधा है। नसीहत तो अक्ल वाले लोग ही कुबूल करते हैं। (19)

इंसानों में हमेशा दो किस्म के लोग होते हैं। एक इंसान वह है जिसने खुदा की दी हुई अक्ल से सोचा और हक़इक की रोशनी में एक यकीनी फैसले तक पहुंचा। इस तरह बेलाग जायजे के नतीजे में उसका दिल जिस चीज पर मुतमइन हुआ उसे उसने इरादा और शुऊर के साथ इख्तियार कर लिया।

दूसरे लोग वे हैं जो कौमी रिवायात और तकलीदी ख्यालात के दायरे में सोचते हैं। जो चीजों को दलाइल की नजर से देखने के बजाए रवाज की नजर से देखते हैं। और फिर जो चीज उन्हें अवाम में चलती हुई दिखाई दे उसी को हक समझ कर इख्तियार कर लें।

कुरआन के नजदीक पहला शख्स वह है जो इल्म की रोशनी में ईमान लाया है। इसके मुक़बले में दूसरा आदमी कुरआन की नजर में अंधा है। पहला आदमी खुद अपनी बसीरत (सूझबूझ) से हक और बातिल को जानता है। जबकि दूसरे आदमी का सरमाया सिर्फ सुनी सुनाई बातें हैं। लोग जिसे बातिल (असत्य) समझ लें उसे उसने बातिल समझ लिया, लोग जिसे हक समझें उसके मुतअल्लिक उसने भी यकीन कर लिया कि वह हक होगी।

हक की दावत (आह्वान) ऐसे लोगों की तलाश के लिए उठती है जो अपनी अक्ल से काम लेकर फैसला कर सकते हैं। बाकी जो लोग आंख रखते हुए अंधे बने हुए हैं उन्हें हक की दावत कुछ फायदा नहीं पहुंचाएगी।

الَّذِينَ يُؤْفُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ ۖ وَلَا يَنْقُضُونَ الْمِيثَاقَ ۖ وَالَّذِينَ يَصِلُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُونَ سُوءَ الْحِسَابِ ۖ وَالَّذِينَ صَبَرُوا بِبُعْدِ الْبُعْدِ ۖ وَجَاءَ رِزْقُهُمْ ۖ وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ ۖ وَأَنفَقُوا مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَعَلَانِيَةً ۖ وَيَدْرُءُونَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۗ جَنَّتٌ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا ۖ وَأَمَّا صِدْقُهُمْ ۖ وَأَزْوَاجُهُمْ ۖ وَذُرِّيَّتُهُمْ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ يَدْخُلُونَ عَلَيْهِمْ مِنْ كُلِّ بَابٍ ۖ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ ۖ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ۗ

वे लोग जो अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करते हैं और उसके अहद को नहीं तोड़ते। और जो उसे जोड़ते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और वे अपने खब से डरते हैं और वे बुरे हिसाब का अंदेशा रखते हैं और जिन्होंने अपने खब की रिजा के लिए सब्र किया। और नमाज कायम की। और हमारे दिए में से पोशीदा और एलानिया खर्च

किया। और जो बुराई को भलाई से मिटाते हैं। आखिरत का घर इन्हीं लोगों के लिए है। अबदी (चिरस्थायी) बाग जिनमें वे दाखिल होंगे। और वे भी जो उसके अहल बनें, उनके आबा व अज्दाद (पूर्वज) और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से। और फरिश्ते हर दरवाजे से उनके पास आएंगे, कहेंगे तुम लोगों पर सलामती हो उस सब्र के बदले जो तुमने किया। पस क्या ही खूब है यह आखिरत का घर। (20-24)

इंसान को खुदा ने पैदा किया। उसने उसे रहने के लिए बेहतरीन दुनिया दी। वह हर आन उसकी परवरिश कर रहा है। यह वाकया इंसान को अपने खालिक व मालिक के साथ एक फितरी अहद (वचन) बांध देता है। इसका तकाजा है कि इंसान सरकश न बने बल्कि हकीकते वाकया का एतराफ करते हुए खुदा के आगे झुक जाए।

दुनिया में इंसान की जिंदगी मुक़्तलिफ किस्म के तअल्लुक़त व ख़ाबित (संपर्कों) के दर्मियान है। इंसान की बंदगी का तकाजा है कि वह उसी से जुड़े जिससे जुड़ना खुदा को पसंद है और उससे कट जाए जिससे कटने का हुक्म दिया गया है। उस पर खुदा की अज्मत का एहसास इतनी शिद्दत से तारी हो कि वह उसके आगे झुक जाए, जिसकी एक मुकरर सूरत का नाम नमाज है। वह अपने असासे में से दूसरों को उसी तरह दे जिस तरह खुदा ने अपने असासे में से उसे दिया है। उसे किसी की तरफ से बुरे सुलूक का तजर्बा हो तो वह अच्छे सुलूक के साथ उसका जवाब दे। क्योंकि वह खुद भी यह चाहता है कि आखिरत में खुदा उसकी बुराइयों को नजरअंदाज कर दे और उसके साथ फल व रहमत का मामला फरमाए।

यह सब कुछ मुसलसल सब्र का तालिब है। नफ्स के मुहरिकात (प्रेरकों) के मुक़ाबले में सब्र। मफ़दात का जियाज (नाश) के मुक़ाबले में सब्र। माहिल के दबाव के मुक़ाबले में सब्र। मगर मोमिन को जन्नत की खातिर इन तमाम चीजों पर सब्र करना है। सब्र ही जन्नत की कीमत है। सब्र की कीमत अदा किए बग़ैर किसी को खुदा की अबदी जन्नत नहीं मिल सकती।

وَالَّذِينَ يَنْقُضُونَ عَهْدَ اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مِيثَاقِهِ وَيَقْطَعُونَ مَا أَمَرَ اللَّهُ بِهِ أَنْ يُوصَلَ وَيُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ أُولَٰئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوءُ الدَّارِ ۗ ۝ اللَّهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ وَفَرَحُوا بِالْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا الْحَيَاةُ الدُّنْيَا فِي الْآخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ۚ

और जो लोग अल्लाह के अहद को मजबूत करने के बाद तोड़ते हैं और उसे काटते हैं जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है और जमीन में फ़साद करते हैं, ऐसे लोगों पर लानत है और उनके लिए बुरा घर है। अल्लाह जिसे चाहता है रोजी ज्यादा देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। और वे दुनिया की जिंदगी पर खुश हैं। और दुनिया की जिंदगी आखिरत के मुक़ाबले में एक मताए कलील (अल्प सुख-सामग्री) के सिवा और कुछ नहीं। (25-26)

इंसान अपने खुदा से अहदे फितरत में बांधा हुआ है और दूसरे इंसानों से अहद आदमियत में। इन दोनों अहदों को तोड़ना खुदा की जमीन में फसाद करना है। खुदा की जमीन में इस्लाहयापता बनकर रहना यह है कि आदमी मज्बूरा दोनों अहदों का पाबंद बनकर जिंदगी गुजारे। इसके बरअक्स खुदा की जमीन में फसादी बनना यह है कि आदमी इन अहदों से आजद हो जाए। उसे न खुदा के हुक्म की परवाह हो और न इंसानों के हुक्म की।

ऐसे लोग खुदा के नजदीक लानतजदा हैं। ये वे लोग हैं जो खुदा की रहमतों में हिस्सेदार नहीं बनाए जाएंगे। उन्होंने खुदा की जमीन को गंदा किया, इसलिए वे इसी काबिल हैं कि आईंदा उन्हें सिर्फ गंदे घर में जगह मिले।

दुनिया में किसी को कम मिलता है और किसी को ज्यादा। अब जिसे ज्यादा मिला वह एहसासे बरतरी में मुव्तिला हो जाता है और जिसे कम मिला वह एहसासे कमतरी में। मगर खुदा की नजर में ये दोनों गलत हैं। सही रवदेअमल यह है कि ज्यादा मिले तो आदमी खुदा का शुक्रगुजार बने। कम मिले तो वह सन्न और कनाअत (संतोष) का तरीका इख्तियार करे।

दुनियापरस्त लोग हमेशा हक के दाओ को नजरअंदाज कर देते हैं। इसकी वजह यह है कि दुनियापरस्त आदमी सिर्फ जाहिरी अजमतों को पहचानना जानता है। चूंकि दाओ के पास सिर्फ मअनवी अजमत होती है इसलिए वह उसे पहचान नहीं पाता। वह उसे हकीर समझ कर नजरअंदाज कर देता है। मगर जब हकीर का पर्दा फटेगा उस वक्त इंसान जानेगा कि जिस नजर आने वाली रैनक को वह सब कुछ समझे हुए था वह बिल्कुल बेममत थी। कद्र व कीमत की चीज दरअसल वह थी जो दिखाई न देने की वजह से उसकी तबज्जोह का मर्कज न बन सकी।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِنْ رَبِّهِ قُلْ إِنَّ اللَّهَ يُخْصِلُ
مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَى الْبِرِّ مَنْ أَتَاهُ ۚ ۝۱۹ الَّذِينَ آمَنُوا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوبُهُمْ
بِذِكْرِ اللَّهِ أَلَا بِذِكْرِ اللَّهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوبُ ۝۲۰ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ
كُونُوا لَهُمْ وَحُسنُ مآبٍ ۝۲۱

और जिन्होंने इंकार किया वे कहते हैं कि इस शख्स पर उसके रब की तरफ से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई। कहो कि अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह करता है और वह रास्ता उसे दिखाता है जो उसकी तरफ मुतवज्जह हो। वे लोग जो ईमान लाए और जिनके दिल अल्लाह की याद से मुतमइन होते हैं। सुनो, अल्लाह की याद ही से दिलों को इत्मीनान हासिल होता है। जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए उनके लिए सुखखबरी है और अच्छा ठिकाना है। (27-29)

हक के दाओ (आह्वानकर्ता) को न मानने की वजह आम तौर पर यह होती है कि लोगों को दाओ के गिर्द महसूस किस्म के करिश्मे नजर नहीं आते। मगर यह ऐन उसी मकाम पर नाकाम होना है जहां आदमी को कामयाबी का सुबूत देना चाहिए। खुदा यह चाहता है कि आदमी

हक को उसके मुजरद (साक्षात) रूप में पहचाने और अपने आपको उसके हवाले कर दे। अब जो शख्स इसरार करे कि वह महसूस करिश्मों की दलील के बगैर नहीं मानेगा, उसका अंजाम इस दुनिया में यही हो सकता है कि खुदा के कानून के मुताबिक कभी उसे हक न मिले। वह हमेशा के लिए हिदायत से महरूम हो जाए।

यह दुनिया दारुल इम्तेहान (परीक्षा-स्थल) है। यहां आदमी सिर्फ 'याद' की सतह पर खुदा को पा सकता है। वह उसे 'मुशाहिदे' (अवलोकन) की सतह पर नहीं पा सकता। जो लोग इस खुदाई मंसूबे पर राजी होंगे वे खुदा को पाएंगे। और जो लोग इस पर राजी न हों वे खुदा को पाने से उसी तरह महरूम रहेंगे जिस तरह नंगी आंख से सूरज को देखने पर इसरार करने वाला सूरज को देखने से।

इस दुनिया में कामयाबी सिर्फ उस शख्स के लिए है जो खुदा के मंसूबे को माने और उसके मुताबिक अपनी जिंदगी को ढाल ले। क्योंकि दुनिया की तख्तीक करने वाला खुदा है न कि कोई इंसान।

كَذَلِكَ أَرْسَلْنَاكَ فِي أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَا أُمَمٌ لِيَتْلُوا عَلَيْهِمُ الذِّكْرَ
أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُونَ بِالرَّحْمَنِ قُلْ هُوَ رَبِّي لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابٌ ۝۳۰

इसी तरह हमने तुम्हें भेजा है, एक उम्मत में जिससे पहले बहुत सी उम्मतें गुजर चुकी हैं, ताकि तुम लोगों को वह पैगाम सुना दो जो हमने तुम्हारी तरफ भेजा है। और वे महरबान खुदा का इंकार कर रहे हैं। कहो कि वही मेरा रब है, उसके सिवा कोई माबूद (पूज्य) नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की तरफ लौटना है। (30)

जब यह दुनिया दारुल इम्तेहान है तो इसका फितरी तकाजा यह है कि हिस्सी (महसूस) निशानियां दिखाने के बाद लोगों का फैसला कर दिया जाए। अब अगर लोगों के मुतालबे पर खुदा फौरन कोई हिस्सी निशानी जाहिर कर दे और इसके बाद भी लोग न मानें तो फौरन वे हलाकत के मुस्तहिक हो जाएंगे। मगर यह खुदाए रहमान व रहीम की खास इनायत है कि वे लोगों के मुतालबे के बावजूद हिस्सी निशानियां जाहिर नहीं करता। बल्कि नसीहत और दलील की जवान में हक का पैगाम पहुंचाता रहता है। इस तरह लोगों को ज्यादा से ज्यादा मोहलत मिलती है कि वे अपनी इस्लाह (सुधार) करके खुदाई रहमतों के मुस्तहिक बन सकें।

ऐसी हालत में दाओ को चाहिए कि वह लोगों के नादान मुतालबे की वजह से घबरा न जाए। वह खुदा के मंसूबे पर राजी रहते हुए लोगों को उसकी तरफ बुलाता रहे।

وَلَوْ أَنَّ قُرْآنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كَلِمَةٌ بِهِ الْمُوتَى بَلَّ
لِللَّهِ الْأَمْرُ جَمِيعًا أَفَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِينَ آمَنُوا أَنْ تَوَاشَّعُوا لِلَّهِ لَهْدَى النَّاسَ
جَمِيعًا وَلَا يَزَالِ الَّذِينَ كَفَرُوا تُصِيبُهُمْ بِمَا صَنَعُوا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيبًا

مِّن دَارِهِمْ حَتَّى يَأْتِيَ وَعْدَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ ۖ وَلَقَدْ جَاءَ
اسْتِزْرَىٰ بِرُسُلٍ مِّن قَبْلِكَ فَآمَنُوا لِلَّذِينَ كَفَرُوا ثُمَّ أَخَذْتَهُمْ فَكَيْفَ
كَانَ عِقَابِ ۖ

और अगर ऐसा कुरआन उतरता जिससे पहाड़ चलने लगते, या उससे जमीन टुकड़े हो जाती या उससे मुर्दे बोलने लगते बल्कि सारा इस्तिन्या अल्लाह ही के लिए है। क्या ईमान लाने वालों को इससे इल्मीनान नहीं कि अगर अल्लाह चाहता तो सारे लोगों को हिदायत दे देता। और इंकार करने वालों पर कोई न कोई आफत आती रहती है, उनके आमाल के सबब से, या उनकी बस्ती के करीब कहीं नाजिल होती रहेगी, यहां तक कि अल्लाह का वादा आ जाए। यकीनन अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करता। और तुमसे पहले भी रसूलों का मजाक उड़ाया गया तो मैंने इंकार करने वालों को ढील दी, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया। तो देखो कैसी थी मेरी सजा। (31-32)

हक को न मानने का अस्त सबब दलील की कमी नहीं बल्कि इंसान की यह आजादी है कि वह चाहे तो माने और चाहे तो न माने। जब तक इंसान को इंकार की आजादी हासिल है वह किसी भी चीज का इंकार करने के लिए उज्र (बहाना) तलाश कर सकता है।

उसके सामने अल्फज में एक दलील लाई जाए तो वह कुछ दूसरे अल्फज बोलकर उसे रद्द कर देगा। कायनात की निशानियों का हवाला दिया जाए तो वह उसकी तरदीद के लिए खुदसाखा तौजीह तलाश कर लेगा। यहां तक कि अगर पहाड़ चलाए जाएं और जमीन फाड़ दी जाए और मुर्दों को जिंदा कर दिया जाए तब भी कोई चीज आदमी को यह कहने से रोक नहीं सकती कि यह तो जादू है।

कभी-कभी ऐसा होता है कि इंकार करने वाला बजाहिर दलील मांगता है। मगर हकीकतन वह मजाक उड़ा रहा होता है। वह यह जाहिर करना चाहता है कि यह शख्स जो चीज पेश कर रहा है वह हक नहीं। अगर वह फिलवाकअ हक होता तो जरूर उसके पास ऐसी दलील होती कि सारे लोग उसे मानने पर मजबूर हो जाते।

खुदा ने लोगों को मोहलत दी है इसकी वजह से लोग बेखौफ हो गए हैं। मगर जब मोहलत खत्म होगी और खुदा लोगों को पकड़ेगा तो आदमी देखेगा कि वह किस कदर बेइस्तिन्या था, अगरचे वह फर्जी तौर पर अपने को खुदमुब्बार समझता रहा।

أَفَكُنْ هُوَ قَائِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۖ وَجَعَلُوا لِلَّهِ شُرَكَاءَ قُلْ
سَمِعُوهُمْ أَمْ تُنَبِّئُونَهُ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ ۚ أَمْ بَيَّاهِدُونَ الْقَوْلَ ۚ بَلْ زُيِّنَ
لِلَّذِينَ كَفَرُوا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوا عَنِ السَّبِيلِ ۚ وَمَنْ يُضِلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ
مِنْ هَادٍ ۖ لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَلِعَذَابُ الْآخِرَةِ أَشَقُّ وَمَا لَهُمْ

مِّنَ اللَّهِ مِنَ وَّاقٍ ۖ

फिर क्या जो हर शख्स से उसके अमल का हिसाब करने वाला है, और लोगों ने अल्लाह के शरीक बना लिए हैं। कहे कि उनका नाम लो। क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज की खबर दे रहे हो जिसे वह जमीन में नहीं जानता। या तुम ऊपर ही ऊपर बातें कर रहे हो बल्कि इंकार करने वालों को उनका फरेब खुशनुमा बना दिया गया है। और वे रास्ते से रोक दिए गए हैं। और अल्लाह जिसे गुमराह करे उसे कोई राह बताने वाला नहीं। उनके लिए दुनिया की जिंदगी में भी अजाब है और आखिरत का अजाब तो बहुत सख्त है। कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला नहीं। (33-34)

मुतालआ बताता है कि कायनात में रिकार्डिंग का निजाम है। आदमी जो कुछ बोलता है या जो कुछ करता है, वह कायनाती इतिजाम के तहत फौरन रिकार्ड हो जाता है। ऐसी हालत में इस कायनात का खुदा किसी ऐसी हस्ती ही को माना जा सकता है जिसके अंदर 'सुनने' और 'देखने' की ताकत हो। मगर इंसानों ने अब तक जितने शरीक फर्ज किए हैं, सब के सब वे हैं जिनके अंदर न सुनने की ताकत है और न देखने की। ऐसी हालत में क्योंकि वे मौजूदा कायनात जैसी दुनिया के खालिक व मालिक हो सकते हैं। जो खुद न सुने वह अपनी मख्बूकत में सुनने का माददा किस तरह पैदा करेगा जो खुद न देखे वह दूसरी चीजों को देखने के कबिल कैसे बनाएगा।

इसी तरह कायनात में इतनी ज्यादा वहदत (एकत्व) है कि वह किसी तरह शिर्क को कुबूल नहीं करती। जिस शरीक का भी नाम लिया जाए, कायनात पूरे वजूद के साथ उसे तस्लीम करने से इंकार कर देगी।

मुकिरीन के लिए उनका मक्र खुशनुमा बना दिया गया है। यहां मक्र से मुराद उनका 'कौल' है जिसका जिक्र इसी आयत में ऊपर मौजूद है। जब भी आदमी हक का इंकार करता है तो उसका जेहन अपने इंकार को जाइज साबित करने के लिए कोई कौल गढ़ लेता है। यह कौल अगरचे बेहकीकत अल्फज के मजमूअे के सिवा और कुछ नहीं होता। मगर जो लोग हक के मामले में ज्यादा संजीदा न हों वे कुछ न कुछ अल्फज बोलकर समझ लेते हैं कि उन्होंने अपने इंकार व एराज (उपेक्षा) को हक बजानिव साबित कर दिया है। चाहे उनके बोले हुए अल्फज उनके अपने जेहन के बाहर कोई कीमत न रखते हों।

इस किस्म के झूठे अल्फज किसी आदमी को सिर्फ मौजूदा दुनिया में सहारा दे सकते हैं। आखिरत में जब हर चीज की हकीकत खुलेगी तो ये खुशनुमा अल्फज इतने बेजग्न हो जाएंगे कि आदमी उन्हें दोहराते हुए भी शर्म महसूस करेगा।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعدَ الْمُتَّقُونَ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ ۖ أُكْهَادُ آيْمٍ وَ
ظُلُمَاتُكَ عُقْبَى الَّذِينَ اتَّقَوْا ۖ وَعُقْبَى الْكَافِرِينَ النَّارُ ۖ

और जन्नत की मिसाल जिसका मुत्तकियों (डर रखने वालों) से वादा किया गया है यह है कि उसके नीचे नहरें बहती होंगी। उसका फल और साया हमेशा रहेगा। यह अंजाम उन लोगों का है जो खुदा से डरें और मुंकिरों का अंजाम आग है। (35)

जन्नत की कीमत तकवा है। यानी अल्लाह की अजमत का इतना शदीद एहसास जो डर बनकर आदमी के दिल में समा जाए। जो लोग दुनिया में खुदा से डरें वही वे लोग हैं जो आखिरत के उन घरों में बसाए जाएंगे जहां आदमी के लिए किसी किस्म का डर न होगा। जिसके चारों तरफ सरसब्ज बागात उनकी अजमत व शान को दोबन्द कर रहे होंगे।

इसके बरअक्स हाल उन लोगों का है जो दुनिया में बेखौफ बनकर रहे। वे आखिरत में अपने आपको आग की दुनिया में पाएंगे।

وَالَّذِينَ اتَّيَهُمُ الْكِتَابُ يَفْرَحُونَ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُنْكِرُ بَعْضَهُ قُلْ إِنَّمَا أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللَّهَ وَلَا أُشْرِكَ بِهِ إِلَيْهِ أَدْعُوا وَإِلَيْهِ مَابٌ ۖ وَكَذَلِكَ أُنْزِلُكَ حُكْمًا عَرَبِيًّا وَلَئِنْ اتَّبَعْتَ أَهْوَاءَهُمْ بَعْدَ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَكَ مِنَ اللَّهِ مِنْ وَلِيٍّ وَلَا وَاقٍ ۖ

और जिन लोगों को हमने किताब दी थी वे उस चीज पर खुश हैं जो तुम पर उतारी गई है। और उन गिरोहों में ऐसे भी हैं जो उसके कुछ हिस्से का इंकार करते हैं। कहो कि मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की इबादत करूं और किसी को उसका शरीक न ठहराऊं। मैं उसी की तरफ बुलाता हूं और उसी की तरफ मेरा लौटना है और इसी तरह हमने उसे एक हुक्म की हैसियत से अरबी में उतारा है। और अगर तुम उनकी ख्वाहिशों की पैरवी करो बाद इसके कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है तो खुदा के मुकाबले मैं तुम्हारा न कोई मददगार होगा और न कोई बचाने वाला। (36-37)

कुरआन आया तो यहूद व नसारा में दो गिरोह हो गए। उनमें जो लोग अल्लाह से डरने वाले थे और हजरत मूसा और हजरत मसीह की सच्ची तालीमात पर कायम थे, उन्होंने कुरआन को अपने दिल की आवाज समझा और खुश होकर उसे कबूल कर लिया। मगर जो लोग अस्वियत (द्वेष) और गिरोहबंदी को दीन समझे हुए थे वे अपने मानूस (परिचित) दायरे से बाहर आने वाली सच्चाई को पहचान न सके और उसके मुखालिफ बनकर खड़े हो गए। अल्लाह से उनकी बेवैफ़ी ने हक की दावत की मुखालिफ्त में भी उन्हें बेवैफ़ बना दिया।

जो शख्स अस्वियत और गिरोहबंदी की बिना पर सच्चाई का मुखालिफ बनता है वह दरअस्तल खुदा को छोड़कर अपनी ख्वाहिशत पर चलता है। ऐसे लोगों की रियायत से हक की दावत में कोई तब्दीली करना दाजी के लिए जाइज नहीं। दाजी के लिए लाजिम है कि वह अपने क़ैल और फ़ैल से बेताग हक पर पूरी तरह जमा रहे। ऐसे लोगों के मुक़ाबले में

उसे इस्तकामत (दृढ़ता) का सुबूत देना है न कि मुसालेहत का।

आदमी के सामने उसकी कबिलेफ़हम ज़बान में हक का इल्म आ जाए। इसके बावजूद वह ख्वाहिशत का पैरोकार बना रहे तो यह बेहद संगीन बात है। क्योंकि यह ऐसा फ़ैल (कृत्य) है जो आदमी को खुदा की मदद से यकसर महरूम कर देता है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَذُرِّيَّةً ۖ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَنْ يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ لِكُلِّ أَجَلٍ كِتَابٌ ۖ يَمْحُو اللَّهُ مَا يَشَاءُ وَيُثَبِّتُ ۖ وَعِنْدَهُ أُمْرُ الْكِتَابِ ۖ

और हमने तुमसे पहले कितने रसूल भेजे और हमने उन्हें वीवियां और औलाद अता किया और किसी रसूल के लिए यह मुमकिन नहीं कि वह अल्लाह की आज्ञा के बग़ैर कोई निशानी ले आए। हर एक वादा लिखा हुआ है। अल्लाह जिसे चाहे मिटाता है और जिसे चाहे बाकी रखता है। और उसी के पास है अस्त किताब। (38-39)

खुदा की तरफ से जितने पैग़म्बर आए वे सब आम इंसानों की तरह एक इंसान थे और दुनियावी तअल्लुकात रखते थे। फिर क्या वजह है कि कौमों ने इसके बावजूद पिछले पैग़म्बरों को माना और अपने समकालीन पैग़म्बर का इसी सबब से इंकार कर दिया। इसकी वजह यह है कि पिछले पैग़म्बरों के साथ अतिरिक्त एक चीज शामिल थी जो समकालीन पैग़म्बर का हसिल न थी। यह अतिरिक्त चीज तारीख़ की अजमत है। कौमों ने तारीख़ी अजमत की बिना पर पिछले पैग़म्बरों को माना और तारीख़ी अजमत से ख़ाली होने की बिना पर समकालीन पैग़म्बर का इंकार कर दिया।

इंसान की यह कमजोरी है कि वह हकीकत को उसके मूल रूप में देख नहीं पाता। ज़िंदा पैग़म्बर के साथ हकीकत मूल रूप में थी। इसलिए इंसान उसे पहचान न सका। तारीख़ के पैग़म्बर के साथ इजाफ़ी (अतिरिक्त) अहमियतें भी शामिल हो चुकी थीं इसलिए उसने उन्हें पहचान लिया और उनका मोअतकिद (आस्थावान) बन गया।

‘उम्मुल किताब’ से मुराद खुदा का वह अस्त नविश्ता (मूल ग्रंथ) है जो खुदा के पास है और जिसमें हिदायत की वे तमाम उसूली बातें लिखी हुई हैं जो खुदा को इंसान से मल्लूब हैं। मुख़लिफ़ पैग़म्बरों पर जो किताबें उतरें वे सब इसी उम्मुल किताब से ली गई थीं। खुदा ने अपनी यह किताब कभी एक ज़बान में उतारी और कभी दूसरी ज़बान में। कभी उसके लिए तमसील का पेराया इख़्तियार किया गया और कभी उसे बराहेरास्त पेराया में बयान किया गया। कभी नाज़िल होने के बाद उसकी हिफ़ज़त की जिम्मेदारी इंसानों पर डाली गई और कभी उसकी हिफ़ज़त की जिम्मेदारी खुद खुदा ने ले ली।

وَإِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ تَوَقَّيْتُكَ وَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ۖ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ۚ

وَاللَّهُ يَحْكُمُ لِمُعَقَّبٍ لِحُكْمِهِ ۖ وَهُوَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۖ وَقَدْ نَكَّرَ الَّذِينَ
مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلَّهِ الْمَكْرُ جَمِيعًا ۖ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۖ وَسَيَعْلَمُ الْكُفْرُ
لِمَنْ عَقَبَى الدَّارِ ۖ

और जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ हिस्सा हम तुम्हें दिखा दें या हम तुम्हें
वफात दे दें, पर तुम्हारे ऊपर सिर्फ पहुंचा देना है और हमारे ऊपर है हिसाब लेना। क्या
वे देखते नहीं कि हम जमीन की तरफ उसे उसके अतराफ (चतुर्दि) से कम करते चले
आ रहे हैं। और अल्लाह फैसला करता है, कोई उसके फैसले को हटाने वाला नहीं और
वह जल्द हिसाब लेने वाला है। जो उनसे पहले थे उन्होंने भी तदबीरों की मगर तमाम
तदबीरें अल्लाह के इख्तियार में हैं। वह जानता है कि हर एक क्या कर रहा है और
मुंकिरीन जल्द जान लेंगे कि आखिरत का घर किस के लिए है। (40-42)

खुदा के दीन को इख्तियार न करने का अंजाम आम तौर पर आखिरत में सामने आता
है। मगर पैगम्बर के मुखातबीन अगर पैगम्बर की दावत का इंकार कर दें तो इसका बुरा
अंजाम उनके लिए मौजूदा दुनिया ही से शुरू हो जाता है।

ताहम इस दुनियावी अंजाम का कोई एक उसूल नहीं। यह मुखलिफ पैगम्बरों के जमाने
में मुखलिफ सूरतों में जाहिर होता रहा है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के
लिए मखसूस मुसालेह की बिना पर खुदा का यह फैसला इस शकल में जाहिर हुआ कि पैगम्बर
के पैरोकारों को पैगम्बर के मुंकिरीन पर गालिब कर दिया गया।

मक्की दौर के आखिरी जमाने में जबकि मक्का के सरदारों ने आपका इंकार कर दिया
था, ऐन उसी वक्त यह हो रहा था कि इस्लाम की दावत धीरे-धीरे मदीना में और मक्का के
बाहरी कबाइल में फैल रही थी। गोया इस्लाम की दावती कुव्वत मक्का के अतराफ (चतुर्दि) को
फतह करती हुई मक्का की तरफ बढ़ रही थी। पैगम्बर मुहम्मद (सल्ल०) के लिए खुदा की
सुन्नत दावती फतहों की सूत में जाहिर हुई।

यहां दावती तदबीर को खुदाई तदबीर कहा गया है। इससे इसकी अहमियत का अंदाजा
होता है। कुश ने जब मक्का से आपको निकाला तो उन्होंने यह समझा था कि उन्होंने आपको
खात्मा कर दिया। उस वक्त आप एक ऐसे शख्स थे जिसकी मआशियात (आर्थिक संसाधन)
बर्बाद हो चुकी थीं। जिसे खुद अपने कबीले की हिमायत से महरूम कर दिया गया था।

कुश यह सब करके अपने तौर पर खुश थे। वे समझते थे कि उन्होंने पैगम्बर के
'मसले' को हमेशा के लिए दफन कर दिया है। मगर वे उस राज को समझ न सके कि दाजी
का सबसे बड़ा हथियार दावत (आह्वान) है और यह वह चीज है जिसे कोई शख्स कभी दाजी
से छीन नहीं सकता। दाजी की दूसरी महरूमियां उसके दाजियाना जोर को और बढ़ा देती हैं,
वह किसी तरह उसे कम नहीं करतीं। चुनांचे ऐन उस वक्त जबकि कुश अपने ख्याल के
मुताबिक पैगम्बर से उसका सब कुछ छीन चुके थे, उसकी दावत चारों तरफ अरब के कबाइल

में फैल रही थी। लोगों के दिल उससे मुखखर (विजित) होते जा रहे थे। यह अमल खामोशी
के साथ मुसलसल जारी था। और फतह मक्का गोया इसी का इतिहाई नुक्ता था। मक्का
वालों ने जिन लोगों को 'दस सौ' समझ कर घर से बेघर किया था वे सिर्फ चन्द साल में 'दस
हजार' बनकर दुबारा मक्का में इस तरह वापस आए कि मक्का वालों को यह हिम्मत भी न
थी कि उन्हें मक्का में दाखिल होने से रोकने की कोशिश करें।

हक की दावत से जिन लोगों के मफ़दात (स्वार्थ) पर ज़द पड़ती है वे उसे ज़े करने
के लिए उसके खिलाफ तदबीरें करते हैं। मगर तमाम तदबीरों का सिरा खुदा के हाथ में है।
वह हर एक के ऊपर पूरा इख्तियार रखता है। खुदा की इस बरतर हैसियत का इब्तिदाई जुहर
इसी मौजूदा दुनिया में हो रहा है। इसका कामिल और इतिहाई जुहर आखिरत में होगा जबकि
अंधे भी उसे देख लें और बहरे भी उसे सुनने लें।

وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَسَتْ مُرْسَلًا ۖ قُلْ كَفَىٰ بِاللَّهِ شَهِيدًا الْبَیِّنِ وَبَیِّنَكُمْ
وَمَنْ عِنْدَهُ عِلْمُ الْكِتَابِ ۖ

और मुंकिरीन कहते हैं कि तुम खुदा के भेजे हुए नहीं हो, कहो कि मेरे और तुम्हारे
दर्मियान अल्लाह की गवाही काफी है। और उसकी गवाही जिसके पास किताब का
इल्म है। (43)

जहिरपरस्त लोग जिस वक्त हक के दाजी में निशानियां न पाकर उसकी सदावत के
बारे में शुबह कर रहे होते हैं, ऐन उसी वक्त मअनवी (अर्थपूर्ण) निशानियां पूरी तरह उसकी
तस्दीक (पुष्टि) के लिए मौजूद होती हैं। सच्चाई अपनी दलील आप है। मगर उसे महसूस
करना सिर्फ उस शख्स के लिए मुमकिन है जो जवाहिर से गुजर कर हक़िक को देखने की
निगाह अपने अंदर पैदा कर चुका हो। वर्ना जिन लोगों की निगाहें जवाहिर में अटकी हुई हों
वे हक को बेदलील समझ कर उसका इंकार कर देंगे। हालांकि ऐन उसी वक्त दलाइल का
अंवार उसकी तस्दीक के लिए उनके करीब मौजूद होगा।

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ إِنَّكَ أَكْبَرُ ۖ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۖ
الرَّسُكْتُبُ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ ۖ بِإِذْنِ
رَبِّهِمْ إِلَى صِرَاطٍ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ ۖ اللَّهُ الَّذِي لَهُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ ۖ وَوَيْلٌ لِلْكَافِرِينَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيدٍ ۖ الَّذِينَ يَسْتَحْيُونَ الْحَيَاةَ
الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَيَصُدُّونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَيَبْغُونَهَا عِوَجًا ۖ أُولَٰئِكَ فِي
ضَلَالٍ بَعِيدٍ ۖ

सूरह-14. इब्राहीम

679

पारा 13

आयतें-52

सूरह-14. इब्राहीम

रुकूअ-7

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।
अलिफ़ लाम रौ। यह किताब है जिसे हमने तुम्हारी तरफ नज़िल किया है ताकि तुम लोगों को अंधेरों से निकाल कर उजाले की तरफ लाओ, उनके ख़ब के हुक्म से खुदाए अजीज (प्रभुत्वशाली) व हमीद (प्रशंसित) के रास्ते की तरफ, उस अल्लाह की तरफ कि आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है सब उसी का है और मुंकिरों के लिए एक सख्त अज़ाब की तबाही है जो कि आखिरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िंदगी को पसंद करते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और उसमें कज़ी (टेढ़) निकालना चाहते हैं। ये लोग रास्ते से भटक कर दूर जा पड़े हैं। (1-3)

ईमान यह है कि आदमी खुदा को एक ऐसी हस्ती की हैसियत से पा ले जो सारी ताकतों का मालिक है और सारी ख़ूबियों वाला भी है। ऐसा वाक्या किसी आदमी के लिए महज एक रस्मी अकीदा (आस्था) नहीं होता। यह किसी आदमी का बेइल्मी की तारीकी से निकल कर इल्म की रोशनी में आना है। यह ग़ैब (अप्रकट) के पर्दे से गुजर कर शुहूद (साक्षात्) के जलवे को देख लेना है। यह दुनिया में रहते हुए आखिरत का इदराक (भाव) कर लेना है। ईमान अपनी हकीकत के एतबार से एक शुज़री याफ़्त है न कि किसी मज़्मूअ अल्फ़ज़ की बेरुह तकरार। खुदा की किताब इसलिए आती है कि आदमी को इस शुज़री दर्जे पर पहुंचा दे।

अल्लाह के इज़ से हिदायत मिलना, बज़ाहिर हिदायत के मामले को अल्लाह की तरफ मंसूब करना है। मगर इस इश़ाद का रुख़ हकीकतन खुद इंसान की तरफ है। 'इज़' से मुराद खुदा का वह मुकर्र कानून है जो उसने इंसान की हिदायत व गुमराही के लिए मुकर्र किया है। इस कानून के मुताबिक आदमी की अपनी संजीदा तलब वाहिद शर्त है जो उसे हिदायत तक पहुंचाती है। इस दुनिया में जिस शख्स को हिदायत मिलती है वह महज किसी दाअी की दाअियाना कोशिशों से नहीं मिलती बल्कि खुदा के कानून के तहत मिलती है। और खुदा का कानून यह है कि हिदायत की नेमत को सिर्फ वह शख्स पाएगा जो खुद हिदायत का तालिब हो। जाती तलब के बग़ैर किसी को हिदायत नहीं मिल सकती।

हिदायत के रास्ते को खुदा ने इतिहाई हद तक साफ और रोशन बनाया है। ज़मीन व आसमान में उसकी निशानियाँ फैली हुई हैं। खुदा की किताब उसके हक में नाक़ाबिले इंकार दलाइल (तर्क) फ़राहम करती है। इंसानी फ़ितरत उसकी सदाक़त की गवाही दे रही है। गोया तमाम बेहतरीन कराइन (संकेत) उसके हक में जमा हैं। ऐसी हालत में जो लोग हिदायत के रास्ते को इख़्तियार न करें वे यकीनी तौर पर दुनियावी मफ़ाद की बिना पर ऐसा कर रहे हैं न कि किसी वाकई सबब की बिना पर। अगरचे ऐसे लोग अपनी रविश को दुरुस्त साबित करने के लिए कुछ 'दलाइल' भी पेश करते हैं मगर ये दलाइल सिर्फ सीधी बात में टेढ़ निकालने का नतीजा होते हैं। वे सिर्फ इसलिए होते हैं कि लोगों की नजर में अपने न मानने का जवाज़ (औचित्य) फ़राहम करें।

ऐसी हालत में हिदायत से महरूम सिर्फ वही शख्स रह सकता है जिसकी मफ़ादपरस्ती (स्वार्थता) और दुनियावी राबत ने उसे बिल्कुल अंधा बहरा बना दिया हो।

पारा 13

680

सूरह-14. इब्राहीम

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا بِلِسَانٍ قَوِيٍّ لِّبَيِّنٍ لَهُمْ قِيَضَ اللَّهُ مَنْ يَشَاءُ وَنَحْنُ عَزِيزٌ الْحَكِيمُ ۝

और हमने जो पैग़म्बर भी भेजा उसकी कौम की ज़बान में भेजा ताकि वह उनसे बयान कर दे फिर अल्लाह जिसे चाहता है भटका देता है और जिसे चाहता है हिदायत देता है। वह ज़बरदस्त है, हक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (4)

खुदा का तरीका यह है कि वह पैग़म्बरों को खुद मदद (संबोधित) कैम के अंदर से उठाता है। ताकि वह लोगों की नफ़िसयात की रियायत करते हुए, उनकी अपनी क़बिलेफ़हम ज़बान में उन्हें हक की तरफ बुलाए। मगर अजीब बात है कि जो चीज़ इंसान की बेहतरी के लिए की गई थी उससे उसने उल्टा नतीजा निकाल लिया। उसने जब देखा कि पैग़म्बर उन्हीं की तरह का एक आदमी है और उनकी अपनी मानूस ज़बान में कलाम कर रहा है तो उन्होंने पैग़म्बर को मामूली समझ कर उसका इंकार कर दिया। जो चीज़ उनकी हिदायत को आसान बनाने के लिए की गई थी उसे उन्होंने अपनी गुमराही का ज़रिया बना दिया।

खुदा ऐसा नहीं करता कि वह लोगों को अपनी तरफ मुतवज्जह करने के लिए शोअबदे (करिश्मे) दिखाए। वह किसी कौम के पास ऐसा पैग़म्बर भेजे जो अनोखी ज़बान या तिलिस्माती उस्तूब (जादुई शैली) में कलाम करके लोगों को अचंभे में डाल दे। खुदा लोगों की अज़ाबपसंदी की ख़ातिर करिश्मे दिखाने के अंदाज़ इख़्तियार नहीं करता। खुदा का तरीका सादगी और हकीकतपसंदी का तरीका है। खुदा ने अपनी दुनिया को हक्क (यथार्थ) की बुनियाद पर क़ायम किया है। और इंसान की हिदायत की स्कीम को भी वह हक्क की बुनियाद पर चलाता है न कि तिलिस्मात की बुनियाद पर।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ وَذَكِّرْهُمْ بِآيَاتِنَا إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُورٍ ۝

और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी कौम को अंधेरों से निकाल कर उजाले में लाओ और उन्हें अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ। बेशक उनके अंदर बड़ी निशानियाँ हैं हर उस शख्स के लिए जो सब्र और शुक्र करने वाला हो। (5)

'अल्लाह की आयात' से मुराद कायनात की वे निशानियाँ हैं जो खुदा की बात को बरहक साबित करती हैं। 'अल्लाह के दिन' से मुराद तारीख़ के वे यादगार वाक़ेयात हैं जबकि खुदा का फैसला ज़ाहिर हुआ और खुदा की खुसूसी मदद से हक (सत्य) ने बातिल (असत्य) के ऊपर फ़तह पाई। एक अगर कायनाती दलील है तो दूसरी तारीखी (ऐतिहासिक) दलील। मगर अजीब बात है कि यही दोनों चीज़ें हमारी दुनिया में सबसे ज़्यादा ग़ैर मौजूद नज़र

सूरह-14. इब्राहीम

681

पारा 13

आती हैं। अल्लाह की आयात को गलत तशरीह व ताबीर (व्याख्या, भाष्य) के पर्दे में छुपा दिया गया है और अल्लाह के दिनों का यह हाल है कि तारीखनिगारी का काम जिन लोगों के हाथ में था उन्होंने इंसानों के दिन तो खूब कलमबंद किए मगर अल्लाह के दिन उनकी किताबों में भ्रमबू रह गए।

ऐसी हालत में किसी खुदा के बंदे के लिए बातिल के अंधेरे से निकलने की सूरत सिर्फ यह है कि वह सब और शुक्र का सुबूत दे।

हक के एतराफ की वाहिद कीमत अपनी बेतराफी है। हक को पाने के लिए अपने आपको खोना पड़ता है। और यह चीज सब के बगैर किसी को हासिल नहीं होती। फिर हक का इदराक आदमी को यह बताता है कि इस कायनात में जो तक्सीम है वह मुन्डम (इनाम करने वाला) और मुन्अम अलैह (इनाम पाने वाला) की है। खुदा देने वाला है और इंसान पाने वाला। इस हकीकते वाक्या की दरयाफ्त के बाद आदमी के अंदर जो सही जच्चा पैदा होता चाहिए उसी का नाम शुक्र है। गोया हकीकत तक पहुंचने के लिए आदमी को सब्र का सुबूत देना पड़ता है। और हकीकत को अपने अंदर उतारने के लिए शुक्र का।

وَإِذْ قَالَ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ أَنجَاكُمْ مِنْ أَيْدِيهِمْ
فَرَعَوْنَ يَسُومُونَكُمْ سُوءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُونَ أَبْنَاءَكُمْ وَيَسْتَحْيُونَ نِسَاءَكُمْ
وَفِي ذَلِكُمْ بَلَاءٌ مِّنْ رَبِّكُمْ عَظِيمٌ ۚ وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ
لَأَزِيدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِي لَشَدِيدٌ ۚ وَقَالَ مُوسَىٰ إِنَّ تَكْفُرًا
أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا فَأِنَّ اللَّهَ لَغَنِيٌّ حَمِيدٌ ۝

और जब मूसा ने अपनी कौम से कहा कि अपने ऊपर अल्लाह के उस इनाम को याद करो जबकि उसने तुम्हें फिरोन की कौम से छुड़ाया जो तुम्हें सख्त तकलीफें पहुंचाते थे और वे तुम्हारे लड़कों को मार डालते थे और तुम्हारी औरतों को जिंदा रखते थे और इसमें तुम्हारे रब की तरफ से बड़ा इम्तेहान था। और जब तुम्हारे रब ने तुम्हें आगाह कर दिया कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं तुम्हें ज्यादा दूंगा। और अगर तुम नाशुक्रि करोगे तो मेरा अजाब बड़ा सख्त है। और मूसा ने कहा कि अगर तुम इंकार करो और जमीन के सारे लोग भी मुंकिर हो जाएं तो अल्लाह बेपरवा है, खूबियों वाला है। (6-8)

इन आयात में हजरत मूसा की जिस तकरीर का हवाला है वह गालिबन आपकी वह तकरीर है जो आपने अपनी वफात से कुछ दिनों पहले सहराए सीना में बनी इज्राईल के सामने फरमाई थी। यह तकरीर मौजूदा बाइबल (किताब इस्तिस्ना) में तप्सील के साथ मौजूद है।

हजरत मूसा की इस मुफस्सल तकरीर का खुलासा यह है कि अगर तुम दुनिया में खुदा

पारा 13

682

सूरह-14. इब्राहीम

वाले बनकर रहो और खुदा की बातों का चर्चा करो तो दुनिया की तमाम चीजें तुम्हारा साथ देंगी। सब कौमों के दर्मियान तुम्हारा रौब कायम होगा। खुदा तुम्हारे दुश्मनों को जेर करेगा। यहां तक कि अगर कभी दरिया तुम्हारे रास्ते में हायल हो तो खुदा हुक्म देगा और दरिया फटकर तुम्हें रास्ता दे देगा, जबकि उसी दरिया में तुम्हारे दुश्मन गर्क हो जाएंगे।

इसके बरअक्स अगर तुम ऐसा न करो तो तुम खुदा की नजर में लानती ठहरोगे, यानी तुम खुदा की रहमतों से दूर हो जाओगे। तुम्हारी महनत की पैदावार दूसरे लोग खाएंगे। तुम्हारे हर काम बिगड़ते चले जाएंगे तुम फिक्री और अमली एतबार से दूसरी कौमों के जेरदस्त हो जाओगे।

खुदा का यह कानून मारुफ मअनों में 'यहूद' के लिए नहीं है बल्कि हामिले किताब (ग्रंथ धारक) कौम के लिए है। जो कौम भी हामिले किताब हो, उसके साथ खुदा का यही मामला है, चाहे वे माजी (अतीत) के हामिलीने किताब हों या हाल के हामिलीने किताब।

الْمُيَاتِكُمْ نَبُؤُا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمٍ نُورٍ وَعَادٍ وَشُعُوبَةٍ ۚ وَلِذِينَ مِنْ
بَعْدِهِمْ لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللَّهُ ۚ جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنَاتِ فَرَدُّوا أَيْدِيَهُمْ
فِي أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَا أُرْسِلْتُمْ بِهِ وَإِنَّا لَفِي شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُونَنَا
إِلَيْهِ مُرِيبٍ ۝

क्या तुम्हें उन लोगों की खबर नहीं पहुंची जो तुमसे पहले गुजर चुके हैं कौमे नूह और आद और समूद और जो लोग इनके बाद हुए हैं, जिन्हें खुदा के सिवा कोई नहीं जानता। उनके पैगम्बर उनके पास दलाइल (स्पष्ट प्रमाण) लेकर आए तो उन्होंने अपने हाथ उनके मुंह में दे दिए और कहा कि जो तुम्हें देकर भेजा गया है, हम उसे नहीं मानते और जिस चीज की तरफ तुम हमें बुलाते हो हम उसके बारे में सख्त उलझन वाले शक में पड़े हुए हैं। (9)

खुदा के जितने रसूल मुखलिफ कौमों में आए सबके साथ एक ही किस्सा पेश आया। हर कौम ने अपने पैगम्बरों की मुखलिफ्त की। हर जगह उनका मुंह बंद करने की कोशिश की गई।

इसकी वजह क्या थी। इसकी वजह उनका 'शक' था। यह शक इसलिए था कि उनके सामने एक तरफ उनका आबाई (पैतृक) दीन था जिसकी पुष्ट पर अकाबिर और अआजिम (महापुरुषों) के नाम थे। दूसरी तरफ पैगम्बर का दीन था जो बजाहिर एक मामूली इंसान के जरिए पेश किया जा रहा था। दलाइल का जोर पैगम्बर के दीन के साथ नजर आता था मगर तारीखी अज्मत और अवामी भीड़ आबाई दीन के साथ दिखाई देती थी। पैगम्बर के मुखातबीन का यह हाल हुआ कि वे दलाइल को रद्द करने की कुव्वत अपने अंदर न पाते थे। और यह भी उनकी समझ में नहीं आता था कि अआजिम और अकाबिर को किस तरह गलत समझ लें। इस दोतरफा सूरतेहाल ने उन्हें शक में मुब्तिला कर दिया। अमलन अगरचे वे आबाई दीन के साथ वाबस्ता रहे मगर अपने कल्ब (दिल) व दिमाग को शक से आजाद

भी न कर सके।

قَالَتْ رُسُلُهُمْ إِنِّي اللّٰهُ شَلَيْ فَاطِر السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بِدْعُوْكُمْ لِيَّغْفِرَ لَكُمْ
مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُخْرِجَكُمْ اِلٰى اَجَلٍ مُّسَمًّى قَالُوْا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا
تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَاؤُنَا فَاتُّوْا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝۱۳

उनके पैगम्बरों ने कहा, क्या खुदा के बारे में शक है जो आसमानों और जमीन को वजूद में लाने वाला है। वह तुम्हें बुला रहा है कि तुम्हारे गुनाह माफ कर दे और तुम्हें एक मुक़रर मुद्दत तक मोहलत दे। उन्होंने कहा कि तुम इसके सिवा कुछ नहीं कि हमारे जैसे एक आदमी हो। तुम चाहते हो कि हमें उन चीजों की इबादत से रोक दो जिनकी इबादत हमारे बाप दादा करते थे। तुम हमारे सामने कोई खुली सनद ले आओ। (10)

इस आयत का तअल्लुक अस्लन कदीम (प्राचीन) कैमों से है। मगर कुरआन की एक खुसूसियत यह है कि इसमें खुदा की अबदी तालीमात को तारीख के सांचे में ढाल कर पेश किया गया है। इसलिए कुरआन में ऐसे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल किए जाते हैं जिनमें मुखातबे अब्दुल की रियायत के साथ बाद के इंसानों की रियायत भी पूरी तरह शामिल हो।

इस आयत में 'फ़तिर' का लफ़्ज़ इसी की एक मिसाल है। फ़तिर के लफ़्ज़ मअना है 'फ़ाज़े वाला'। उम्मी मफ़हूम के लिहाज से फ़तिर का लफ़्ज़ यहां ख़लिक के मअना में इस्तेमाल हुआ है। मगर इसका ख़ालिस लफ़्ज़ी तर्जुमा किया जाए तो वह होगा 'क्या तुम्हें खुदा के बारे में शक है जो जमीन व आसमान का फाड़ने वाला है।'।

लफ़्ज़ी तर्जुम के एतबार से यह आयत मौजूदा जमाने में खुदा के मुक़िरीन के लिए खुदा के वजूद को साबित कर रही है। जदीद तहकीक़त (आधुनिक खोजें) बताती हैं कि जमीन व आसमान का माददा इब्तिदा में एक सालिम गोले की सूरत में था। जिसे सुपर एटम कहा जाता है। मालूम क़ानूनीने फ़ितरत के मुताबिक इसके तमाम अज्जा इतिहाई शिद्दत के साथ अंदर की तरफ जुड़े हुए थे। मौजूदा वसीअ कायनात इसी सुपर एटम में इफ़िज़ार (महाविस्फोट) से वजूद में आई। इस आयत में फ़तिर (फ़ाज़े वाला) का लफ़्ज़ इसी कायनाती वाक़ये की तरफ इशारा कर रहा है जो एक ख़लिक के वजूद का कर्तई सुबूत है। क्योंकि सुपर एटम के अज्जा जो मुकम्मल तौर पर अंदर की तरफ खिंचे हुए थे। उन्हें बाहरी सप्त में मुतहरिक करना अपने आप नहीं हो सकता। लाज़िम है कि इसके लिए किसी ख़ारजी मुदाख़लत (वाह्य हस्तक्षेप) को माना जाए। इसी मुदाख़लत करने वाली ताक़त का दूसरा नाम खुदा है।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ تَحْنُ الْاِبَشَرُ مِثْلَكُمْ وَلَكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلَى
مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهِ وَمَا كَانَ لَنَا اَنْ نَّاتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ

وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝۱۴ وَمَا لَنَا اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ
هَدٰىنَا سُبُلَنَا ۚ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلَى مَا اَذِيْتُمُوْنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُتَوَكِّلُونَ ۝۱۵

उनके रसूलों ने उनसे कहा, हम इसके सिवा कुछ नहीं कि तुम्हारे ही जैसे इंसान हैं मगर अल्लाह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है अपना इनाम फरमाता है और यह हमारे इख़्तियार में नहीं कि हम तुम्हें कोई मोज़िजा (चमत्कार) दिखाएं बग़ैर खुदा के हुक्म के। और इमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। और हम क्यों न अल्लाह पर भरोसा करें जबकि उसने हमें हमारे रास्ते बताए। और जो तकलीफ तुम हमें दोगे हम उस पर सब्र करेंगे। और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (11-12)

पैगम्बरों के मुखातबीन ने जब अपने समकालीन पैगम्बरों को यह कहकर रद्द किया कि 'तुम तो हमारे जैसे एक बशर हो' तो इसकी वजह हकीकतन यह नहीं थी कि वे पैगम्बरी के लिए शैर बशर होने को ज़रूरी समझते थे। इसकी वजह दरअसल वह फर्क था जो उनके अपने तसख़ुर के मुताबिक उन्हें पिछले पैगम्बर और समकालीन पैगम्बर में नज़र आता था।

गुज़रा हुआ पैगम्बर भी अगरचे अपने वक़्त में कैसा ही था जैसा कि समकालीन पैगम्बर। मगर बाद के दौर में गुज़रे हुए पैगम्बरों के पैरोकारों ने उनके गिर्द तिलिस्माती किस्सों का हाला बना दिया। बाद के दौर में पैगम्बरों की शख़्सियतों को ऐसा अफ़सानवी रंग दे दिया गया जो इब्तिदा में उनके यहां मौजूद न था। अब कैमों के सामने एक तरफ़ फ़र्ज़ी शोअबदों करिश्मों वाला पैगम्बर था, दूसरी तरफ़ हकीकी वाक़ेयात वाला पैगम्बर। इस तक्क़ुल में पिछला पैगम्बर पैगम्बरी के लिए मेयारी नमूना बन गया। और जब कैमों ने इस मेयार के एतबार से देखा तो वक़्त का हकीकी पैगम्बर उन्हें माज़ि (अतीत) के अफ़सानवी पैगम्बर से कम नज़र आया। चुनांचे उन्होंने उसे हकीर (तुच्छ) समझ कर नज़अंज़ाज कर दिया।

पैगम्बरों ने अपने मुखातबीन से कहा कि तुम्हारी इन बातों के जवाब में हमारे पास सब्र के सिवा और कुछ नहीं है। तुम शैर बशरियत (अमानव) की सतह पर हिदायत के तालिब हो। और खुदा ने हमें सिर्फ़ बशरियत की सतह पर हिदायत देने की ताक़त अता की है। ऐसी हालत में हम इसके सिवा और क्या कर सकते हैं कि तुम्हारी ईजाओं (यातनाओं) को बर्दाश्त करें और इस सारे मामले को खुदा के हवाले कर दें।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَاۤ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ
مِلْكِنَاۤ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۶ وَلَنُسَكِّنَنَّكُمْ
الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقٰلِى وَخَافَ وَعِيْدٌ ۝۱۷

और इंकार करने वालों ने अपने पैगम्बरों से कहा कि या तो हम तुम्हें अपनी जमीन से निकाल देंगे या तुम्हें तुम्हारी मिल्लत में वापस आना होगा। तो पैगम्बरों के रब ने उन पर 'वही' (ईश्वरीय वाणी) भेजी कि हम इन जालिमों को हलाक कर देंगे। और उनके बाद तुम्हें जमीन पर बसाएंगे। यह उस शरू के लिए है जो मेरे सामने खड़ा होने से डरे और जो मेरी वईद (चेतावनी) से डरे। (13-14)

पैगम्बरों की दावत से उनकी कौमों के दीन पर जद पड़ती थी। वे लोग अपने जिन अफराद को कौम के अकाबिर (बड़ों) का दर्जा दिए हुए थे, पैगम्बरों के तज्जिए (विश्लेषण) में वे छोटे करार पा रहे थे। इस बिना पर वे पैगम्बरों से बिगड़ गए। वे दलाइल से तो उन्हें रद्द नहीं कर सकते थे। अलबत्ता वक्त के निजाम में उन्हें हर किस्म का इख्तियार हासिल था। चुनांचे उनकी मुतकब्बिराना नफिसयात (घमंड-भाव) ने उन्हें समझाया कि पैगम्बर को बेघर और बेजमीन कर दिया जाए। जिस चीज का तोड़ उनके पास दलील की जवान में न था, उसका तोड़ उन्होंने ताकत के जरिए करने का फैसला किया।

जो जमीन आदमी के पास है, वह उसके पास बतौर इस्तेहान है न कि बतौर हक। अगर आदमी यह समझे कि यह खुदा की चीज है जिसे उसने इस्तेहान की गरज से उसकी तहवील (कच्चे) में दिया है तो इससे आदमी के अंदर तवाजोज की नफिसयात पैदा होगी। वह डरेगा कि जिस खुदा ने दिया है वह उसे दुबारा उससे छीन न ले। मगर शाफिल लोग इसे अपना जाती हक समझ लेते हैं। उनका यही एहसास उन्हें जालिम और मुतकब्बिर (घमंडी) बना देता है। पैगम्बर की दावत जब तकमील के मरहले में पहुंचती है तो यह मुखातब कौम के लिए इस्तेहान की मोहलत खत्म होने के हममअना होती है। इसके बाद वे लोग दुनिया को अपने लिए बिल्कुल बदला हुआ पाते हैं। जिन चीजों को वे अपनी चीज समझ कर मुतकब्बिराना मंसूबे बना रहे थे वे चीजें अचानक उनका साथ छोड़ देती हैं। यहां तक कि वह वक्त आता है जबकि जमीन उनसे छीन कर दूसरे लोगों को दे दी जाए जो इनके मुकबले में उसका ज्यादा इस्तहकाक (पात्रता) रखते हों।

وَأَسْتَفْتَحُوا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيدٍ ۖ مِّنْ وَرَائِهِ جَهَنَّمُ وَيُسْقَىٰ مِنْ مَّاءٍ صَدِيدٍ ۖ يَتَجَرَّعُهُ وَلَا يَكَادُ يُسِيغُهُ وَيَأْتِيهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ۚ وَمِن وَرَائِهِ عَذَابٌ غَلِيظٌ ۖ

और उन्होंने फैसला चाहा और हर सरकश, जिद्दी नामुगद हुआ। उसके आगे दोज्ख है और उसे पीप का पानी पीने को मिलेगा वह उसे घूंट-घूंट पीएगा और उसे हलक से मुश्किल से उतार सकेगा। मौत हर तरफ से उस पर छाई हुई होगी। मगर वह किसी तरह नहीं मरेगा और उसके आगे सज़ा अजाब होगा। (15-17)

खुदा के नजदीक किसी आदमी का सबसे बड़ा जुर्म यह है कि उसे खुदा की तरफ बुलाया

जाए और वह जब्बार और अनीद (दंभी) बनकर उसका जवाब दे। ऐसे लोगों के लिए दुनिया में जिल्लत है और आखिरत में ऐसा शदीद अजाब कि वे हर वक्त अपने आपको मौत और हलाकत के किनारे पाएंगे।

जब आदमी किसी के खिलाफ जुल्म और सरकशी का रवैया इख्तियार करता है तो वह किसी बरते पर ऐसा करता है। ये मुखालिफीन अपने आपको 'अकाबिर' (बड़े) के दीन पर समझते थे। इसके मुकबले में पैगम्बर और उसके साथी उन्हें 'असागिर' (छोटे) दिखाई देते थे। उनकी यही नफिसयात थी जिसने उन्हें आमादा किया कि वे पैगम्बर और उसके साथियों के ऊपर हर किस्म के जुल्म को अपने लिए जाइज समझ लें। अपने को 'अकाबिर' से मंसूब करने ही की वजह से वे 'असागिर' के खिलाफ हर किस्म की कारवाइयों के लिए दिलेर हो गए।

مَثَلُ الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادٍ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيحُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ لَّا يَقْدِرُونَ مِمَّا كَسَبُوا عَلَىٰ شَيْءٍ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الصَّلَٰءُ الْبَعِيدُ ۖ أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللَّهَ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ إِنَّ يَشَآئِدُ مِنْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيدٍ ۖ وَمَا ذَٰلِكَ عَلَىٰ اللَّهِ بِعَزِيزٍ ۖ

जिन लोगों ने अपने रब का इंकार किया उनके आमाद उस राख की तरह हैं जिसे एक तूफानी दिन की आंधी ने उड़ा दिया हो। वे अपने किए में से कुछ भी न पा सकेंगे। यही दूर की गुमराही है। क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमानों और जमीन को बिल्कुल ठीक-ठीक पैदा किया है। अगर वह चाहे तो तुम लोगों को ले जाए और एक नई मख्लूक ले आए। और यह खुदा पर कुछ दुश्वार भी नहीं। (18-20)

अरब के जिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इंकार किया वे सब खुदा और मजहब को मानने वाले लोग थे। फिर क्यों वे आपके मुकिर बन गए। इसकी वजह यह थी कि आपकी सतह पर हक अपनी मुजरद (साक्षात) सूरत में जाहिर हुआ था। जबकि वे लोग सिर्फ उस चीज को हक समझते थे जो उनके कौमी बुजुर्गों के जरिए उन्हें मिलता हो। उन्होंने अपने मुसल्लम कौमी बुजुर्गों के दीन को पहचाना, मगर वे 'मुहम्मद बिन अबुल्लाह' के दीन को पहचानने में नाकाम रहे।

जो लोग कौमी रिवायात के जेरेअसर दीन को पाएं उनके यहां भी दीनी मजाहिर मौजूद होते हैं। बल्कि अक्सर उनके यहां दीन की धूम पाई जाती है। ताहम यह सब कुछ महज जाहिरी दीनदारी होती है, दीन की अस्ल हकीकत से इसका कोई तअल्लुक नहीं होता। मगर खुदा को जो चीज मल्लूब है वह हकीकी दीनदारी है न कि जाहिरी हंगामे।

खुदा को वह इंसान मल्लूब है जिसने जाती शुऊर की सतह पर हक को पाया हो। जिसने आलमे गैब में खुदा का मुशाहिदा किया हो। जिसने हक को उसकी मुजरद सूरत में पहचाना

हो और उसका साथ दिया हो। जिसकी रूह खुदा के समुद्र में नहाई हो। जो खुदा की मुहब्बत में तड़पा हो और खुदा के खौफ से जिसकी आंखों ने आंसू बहाए हों।

पहली किस्म के लोगों की दीनदारी ऊपरी दीनदारी है। कियामत की आंधी उसे इसी तरह उड़ा ले जाएगी जिस तरह सतह जमीन की खस व खाशाक (धूल-मिट्टी) तैज हवा में उड़ जाती है। इसके बरअक्स दूसरी किस्म के लोगों का दीन हकीकी दीन है। वह इंसानी वजूद की आखिरी गहराई तक पेवस्त होता है। ऐसे वजूद के लिए आंधी सिर्फ इसलिए आती है कि वह उसकी मजबूती को साबित करे न कि उसे उखाड़ ले जाए।

कायनात का मुतालआ बताता है कि उसकी तखलीक हक्काइक पर हुई है। ऐसी कायनात में सिर्फ हकीकी अमल की वीमत हो सकती है न कि मफरूजे (कल्पनाओं) और खुशगुमानियों की।

وَبَرَزُوا لِلَّهِ جَمِيعًا فَقَالَ الضُّعَفَاءُ لِلَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا
فَهَلْ أَنْتُمْ مُغْنُونَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ قَالُوا الْوَهْدُ بِنَا اللَّهُ
لَهْدَيْنَاكُمْ سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَجْرُنَا أَمْ صَبْرُنَا مَا لَنَا مِنَ مَحْصِنٍ ۝

और खुदा के सामने सब पेश होंगे। फिर कमजोर लोग उन लोगों से कहेंगे जो बड़ाई वाले थे, हम तुम्हारे ताबेअ (अधीन) थे तो क्या तुम अल्लाह के अजाब से कुछ हमें बचाओगे। वे कहेंगे कि अगर अल्लाह हमें कोई राह दिखाता तो हम तुम्हें भी जरूर वह राह दिखा देते। अब हमारे लिए एकसां (समान) है कि हम बेकरार हों या सब्र करें, हमारे बचने की कोई सूरत नहीं। (21)

इंसान, बतौर वाकया अगरचे हर वक्त 'खुदा के सामने' है। मगर मौजूदा दुनिया में आदमी अपने आपको बजाहिर खुदा के सामने नहीं पाता। आखिरत में यह पर्दा हट जाएगा। उस वक्त आदमी देखेगा कि वह इस तरह कामिल तौर पर खुदा के सामने था कि उसकी कोई चीज खुदा से छुपी हुई नहीं थी।

दुनिया में जो लोग हक को नजरअंदाज करते हैं उनका सबसे बड़ा सहारा उनके मफरूजा (काल्पनिक) अकाबिर (बड़े) होते हैं। चाहे वे मुर्दा अकाबिर हों या जिंदा अकाबिर। छोटे जो कुछ करते हैं अपने बड़ों के बल पर करते हैं। आखिरत में जब ये लोग अपने आपको बिल्कुल बेबसी की हालत में पाएंगे तो वे अपने बड़ों से कहेंगे कि दुनिया में हम तुम्हारी रहनुमाई पर एतमाद किए हुए थे, अब यहां भी तुम हमारी कुछ रहनुमाई करो।

इसके जवाब में उनके बड़े अपने छोटों से कहेंगे कि आज का दिन तो इसीलिए आया है कि वह हमारे बेरहनुमा होने को बेनकाब करे। फिर अब हम तुम्हें क्या रहनुमाई दे सकते हैं। हमारी रहनुमाई तो महज वक्ती फरेब थी जो पिछली दुनिया में ख़त्म हो गई। अब तो यही है कि तुम भी अपने भटकने का नतीजा भुगतो और हम भी अपनी गुमराही का नतीजा भुगतें। हम चाहें या न चाहें, बहरहाल अब हमारा इसके सिवा कोई और अंजाम नहीं।

وَقَالَ الشَّيْطَانُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللَّهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ وَمَا كَانَ لِي عَلَيْكُمْ مِنْ سُلْطَانٍ إِلَّا أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِي فَلَا تَلُمُونِي وَلَوْلَا أَنْفُسُكُمْ مَا آتَاكُمْ بِضُرٍّ خَلْتُكُمْ وَمَا أَنْتُمْ بِبُصْرٍ خَلْتُكُمْ
كَفَرْتُ بِمَا أَشْرَكْتُمُونِ مِنْ قَبْلُ إِنَّ الظَّالِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

और जब मामले का फैसला हो जाएगा तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था और मैंने तुमसे वादा किया तो मैंने उसकी खिलाफवर्जी की। और मेरा तुम्हारे ऊपर कोई जोर न था। मगर यह कि मैंने तुम्हें बुलाया तो तुमने मेरी बात को मान लिया पस तुम मुझे इल्जाम न दो, और तुम अपने आपको इल्जाम दो। न मैं तुम्हारा मददगार हो सकता हूँ और न तुम मेरे मददगार हो सकते हो। मैं खुद इससे बेजार हूँ कि तुम इससे पहले मुझे शरीक ठहराते थे। बेशक जालिमों के लिए दर्दनाक अजाब है। (22)

खुदा की दुनिया वाक्यात की दुनिया है न कि कल्पनाओं की दुनिया। यहां शैतान के वादे पर उटना यह है कि आदमी गैर हकीकी बुनियादों पर अपनी जिंदगी की तामीर करना चाहे।

आदमी हक के दाओ को नजरअंदाज कर दे और दूसरे-दूसरे कारनामे दिखा कर हक का अलमबरदार (ध्वजावाहक) होने का क्रेडिट ले। वह आखिरत के लिए अमल न करे और खुदसाखा मफरूजों के तहत यह उम्मीद कायम कर ले कि उसकी नजात हो जाएगी। वह खुदा के अहकाम के मुताबिक जिंदगी न गुजारे और यह यकीन कर ले कि उसका नाम अपने आप खुदा के महबूब बंदों में लिख लिया जाएगा। यह सब शैतान के वादों पर भरोसा करना है। और आखिरत में आदमी जान लेगा कि सिर्फ खुदा का वादा सच्चा वादा था। और बाकी तमाम वादे झूठे भरोसे थे जो कभी पूरे होने वाले नहीं।

खुदा की दुनिया में गैर खुदा से उम्मीद कायम करना शिर्क है। इसलिए जो लोग खुदाई हकीकतों को नजरअंदाज करते हैं और गैर खुदाई उम्मीदों पर अपनी जिंदगी का महल खड़ा करना चाहते हैं। वे गोया खुदा के साथ दूसरी चीजों को खुदा का शरीक ठहरा रहे हैं। ये दूसरी चीजें पैसले के दिन उनका कुछ भी सहारा न बन सकेंगी।

وَادْخُلِ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ يُحْيِيهِمْ فِيهَا سَلَامٌ ۝

और जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए वे ऐसे बागों में दाखिल किए जाएंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वे अपने रब के हुक्म से हमेशा रहेंगे। उसमें उनकी मुलाकात एक दूसरे पर सलामती होगी। (23)

मुलाक़त के वक्त अस्सलामु अलैकुम कहना महज एक मुआशिरती रस्म नहीं। यह कल्बी तअल्लुक की एक जहिरी अलामत है। दुनिया का अस्सलामु अलैकुम भी अपनी हकीकत के एतबार से यही है और आखिरत का अस्सलामु अलैकुम भी मजीद इजाफे के साथ यही।

जो लोग दुनिया में इस तरह रहे कि उनके अंदर एक दूसरे के लिए खैरखाही के जज्बात भरे हुए थे। जो शिकायतों को नजरअंदाज करके एक दूसरे से मुहब्बत करना जानते थे। जो दूसरे के लिए हमेशा वे अल्फ़ाज बोलते थे जिसमें उसका एतराफ और एहताराम शामिल हो। जो दूसरे के लिए वही चीज पसंद करते थे जो अपने लिए पसंद करते थे। जिनके सीने में दूसरों के लिए सलामती के चशमे उबलते थे और जिनकी आंखें दूसरे की भलाई को देखकर ठंडी होती थीं। यही वे लोग हैं जो जन्नत की नफीस दुनिया में बसाए जाने के अहल ठहरेंगे। दुनिया में भी उनका यह हाल था कि जब वे अपने भाइयों से मिलते तो उनके लिए उनकी मुहब्बत और खैरखाही 'अस्सलामु अलैकुम' की सूरत में टपकती थी। आखिरत में यही चीज और ज्यादा लतीफ और खालिस बनकर अपने जन्नती पड़ोसियों के बारे में उनकी जबानों से निकलेगी।

الْمُتْرَكِيْنَ ضَرْبِ اللّٰهِ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ وَ
فَرْعُهَا فِي السَّمَاءِ ۝ تُؤْتِيْ كُلَّ شَيْءٍ رِّزْقًا رَّيْبًا وَيَضْرِبُ اللّٰهُ
الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝ وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيثَةٍ كَشَجَرَةٍ
خَبِيثَةٍ اجْتُثِّلَتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَالَهَا مِنْ قَرَارٍ ۝

क्या तुमने नहीं देखा, किस तरह मिसाल बयान फरमाई अल्लाह ने कलिमा-ए-तय्यिबा (शुभ बात) की। वह एक पाकीजा दरख्त की मानिंद है जिसकी जड़ जमीन में जमी हुई है। और जिसकी शाखें आसमान तक पहुंची हुई हैं। वह हर वक्त पर अपना फल देता है अपने रब के हुक्म से और अल्लाह लोगों के लिए मिसाल बयान करता है ताकि वे नसीहत हासिल करें। और कलिमा-ए-खबीसा (अशुभ बात) की मिसाल एक खराब दरख्त की है जो जमीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए। उसे कोई सबात (दृढ़ता) न हो। (24-26)

मैज़्ज़ा दुनिया में अल्लाह तआला ने मुक़ल्लिफ हकीकतों की जहिरी तमसीलात कायम की हैं। शजर-ए-तय्यिबा (अच्छा दरख्त) एक एतबार से मोमिन की तमसील है।

दरख्त की यह अजीब खुसूसियत है कि वह पूरी कायनात को अपना गिजाई दस्तरख़्बान बनाता है और इस तरह बीज से तरक्की करके एक अजीम दरख्त की सूरत में जमीन के ऊपर खड़ा हो जाता है। दरख्त जमीन से पानी और मअदनियात (खनिज) और नमकियात (लवण) लेकर बढ़ता है। इसी के साथ वह हवा और सूरज से अपने लिए गिजा हासिल करता है। वह नीचे से भी खुराक लेता है और ऊपर से भी।

यही मोमिन का मामला भी है। आम दरख्त अगर मादूदी (भौतिक) दरख्त है तो मोमिन

शुज़री दरख्त। मोमिन एक तरफ दुनिया में खुदा की तख़्लीकात (सृष्टि) और उसके निजाम को देखकर इबरात और नसीहत हासिल करता है। दूसरी तरफ 'ऊपर' से उसे मुसलसल खुदा का फैज़ान पहुंचता रहता है। वह मख़्बूअत से भी अपने लिए इजाफ़ा ईमान की खुराक हासिल करता है और ख़ालिक से भी उसकी क़ुरबत और मुलाक़त बराबर जारी रहती है।

दरख्त हर मौसम में अपने फल देता है। इसी तरह मोमिन हर मौके पर वह सही रवैया जाहिर करता है जो उसे जाहिर करना चाहिए। मआशी (आर्थिक) तंगी हो या मआशी फराखी, खुशी का लम्हा हो या ग़म का। शिकायत की बात हो या तारीफ की। जोरआवरी की हालत हो या बेजोरी की। हर मौके पर उसकी जवान और उसका किरदार वही रद्देअमल जाहिर करता है जो खुदा के सच्चे बंदे की हैसियत से उसे जाहिर करना चाहिए।

दूसरी मिसाल शजर-ए-खबीसा (झाड़ झंकाड़) की है। उसे देखकर ऐसा मालूम होता है कि कायनात से उसे बिल्कुल बरअक्स किस्म की खुराक मुहय्या की जा रही है जिसके नतीजे में उसके ऊपर काटे उगते हैं। उसकी शाखों में कड़वे और बदमजा फल लगते हैं। उसके पास कोई शख्स जाए तो वह बदबू से उसका इस्तकबाल करता है। ऐसे दरख्त को कोई पसंद नहीं करता। वह जहां उगे वहां से उसे उखाड़ कर फेंक दिया जाता है।

यही मामला ग़ैर मोमिन का है। वह जमीन में एक ग़ैर मलूब वजूद की हैसियत से उगता है। कायनात अपनी तमाम बेहतरीन निशानियों के बावजूद उसके लिए ऐसी हो जाती है जैसे यहां उसके लिए न कोई दलील है और न कोई नसीहत। खुदा का फैज़ान अगरचे हर वक्त बरसता है मगर उसे उसमें से कोई हिस्सा नहीं मिलता। उसके किरदार और मामलात में इसका इन्हार नहीं होता।

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ فِي الْاٰخِرَةِ وَ يُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۝

अल्लाह ईमान वालों को एक पक्की बात से दुनिया और आखिरत (परलोक) में मज्ज़ा करता है। और अल्लाह जालिमों को भटका देता है। और अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (27)

'खुदा अहले ईमान को कलिमा तौहीद के जरिए दुनिया में भी साबित कदम रखता है और आखिरत में भी।' दुनिया में साबित कदम रहने से मुराद अपनी जिंदगी के हर मोड़ पर खैर और अमले सालेह (नेक अमल) की रविश पर कायम रहना है। आखिरत में साबित कदम रहने से मुराद यह है कि कब्र के सवाल व जवाब के वक्त वे कामयाब रहेंगे।

इंसान हर लम्हा इस्तेहान की हालत में है। उस पर तरह-तरह के पसंदीदा और नापसंदीदा अहवाल आते हैं। इन मौकों पर सही खुदाई रविश पर सिर्फ वे लोग कायम रहते हैं जो अपने अंदर 'दरख्ते ईमान' उगा चुके हों। वे पेश आने वाली सूरतेहाल में उस सहीतरीन रद्देअमल का सुबूत देते हैं जो खुदा की मर्जी के मुताबिक उन्हें देना चाहिए। इसके बरअक्स जिस आदमी की शख्सियत झाड़ झंकाड़ की मानिंद उगी हो वह हर तजर्बे में कड़वाहट का सुबूत

देता है। वह हर मौके पर कांटा और बदवू साबित होता है।

दोनों किसम के इंसान जब कब्र के मरहले में आखिरी तौर पर जांचे जाएंगे तो जो शजर-ए-तय्यिबा था वह शजर-ए-तय्यिबा साबित होकर जन्नत के बाग में दाखिल कर दिया जाएगा। और जो शजर-ए-खबीसा था उसके साथ ऐसा मामला होगा गोया वह दुनिया से सिर्फ इसलिए उखाड़ा गया था कि जहन्नम का ईंधन बनने के लिए जहन्नम की आग में फेंक दिया जाए।

الْمُتَرَالِي الَّذِينَ بَدَّلُوا نِعْمَتَ اللَّهِ كُفْرًا وَأَحَلُّوا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۖ جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا وَبِئْسَ الْقَرَارُ ۖ وَجَعَلُوا لِلَّهِ أَدَاءَ الْيَضْلُوعِ عَنْ سَبِيلِهِ قُلْ تَمَتَّعُوا فَإِن مَصِيرَكُمْ إِلَى النَّارِ ۝

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत के बदले कुफ्र किया और जिन्होंने अपनी कौम को हलाकत के घर में पहुंचा दिया, वे उसमें दाखिल होंगे और वह कैसा बुरा ठिकाना है। और उन्होंने अल्लाह के मुकाबिल ठहराए ताकि वे लोगों को अल्लाह के रास्ते से भटका दें। कहो कि चन्द दिन फायदा उठा लो, आखिरकार तुम्हारा ठिकाना दोख है। (28-30)

इन आयात का इब्तिदाई खिताब कुरैश के सरदारों से है। मगर इसके उम्मी इतिबाक (चरितार्थता) में वे तमाम लीडर शामिल हैं जो हक के इंकार की मुहिम की सरदारी करते हैं।

किसी कौम के बड़े वही लोग बनते हैं जिन्हें खुसूसी नेमतें और मवाकेअ (अवसर) हासिल हों। इन नेमतों और मवाकेअ का सहीतरीन इस्तेमाल यह है कि जब उनके सामने हक की दावत उठे तो वे अपने तमाम वसाइल के साथ उसकी जानिब खड़े हों और उसकी पूरी मदद करें। जो चीजें खुदा की दी हुई हैं उन पर सबसे ज्यादा हक खुदा का है न कि किसी और का।

मगर अक्सर हालात में मामला इसके बरअक्स होता है। ऐसे लोग न सिर्फ यह कि हक को कुबूल नहीं करते बल्कि उसके खिलाफ उठने वाली तहरीक की कयादत करते हैं। इसकी वजह यह है कि अपने से बाहर उठने वाले हक को कुबूल करना गोया अपने आपको उसके मुकाबले में छोटा करना है। और ऐसा बहुत कम होता है कि वे लोग उस पर राजी हो जाएं जिन्हें किसी वजह से माहौल में बड़ाई का दर्जा मिल गया हो।

इंसान को एक खुदा चाहिए। एक ऐसी हस्ती जिसे वह अपनी जिंदगी में सबसे बड़ा मकाम दे सके। चुनांचे जब भी कोई शख्स लोगों की तवज्जोह खुदाए वाहिद से हटाता है तो इसका नतीजा यह होता है कि लोगों की तवज्जोह किसी गैर खुदा की तरफ मायल हो जाती है। खुदा को छोड़ना हमेशा गैर खुदा को अपना खुदा बनाने की कीमत पर होता है। मजीद यह कि खुदा से लोगों को हटाने वाले किसी गैर खुदा में फर्जी तौर पर वह आला सिफात साबित करते हैं जो सिर्फ खुदा में पाई जाती हैं। क्योंकि जब तक गैर खुदा में वे आला सिफात साबित न की जाएं लोग उसकी तरफ मुतवज्जह नहीं हो सकते। यही वजह है कि आदमी जब एक खुदा की

परस्तिश छोड़ता है तो वह इसके बाद लाजिमी तौर पर तवह्हुमपरस्ती में पड़ जाता है। खुदा को छोड़ने का वाहिद बदल इस दुनिया में तवह्हुमपरस्ती (अंधविश्वास) है।

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِينَ اسْتَوَيْتُمُوهَا الصَّلَاةُ وَيَتَّقُوا ۖ مَا رَزَقْنَاهُمْ سِرًّا وَلَا نَبِيًّا ۖ مَنْ قَبْلُ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمُ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خِلَالٍ ۝

मेरे जो बंदे ईमान लाए हैं उनसे कह दो कि वे नमाज कायम करें और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से खुले और छुपे खर्च करें इससे पहले कि वह दिन आए जिसमें न खरीद व फरोख्त होगी और न दोस्ती काम आएगी। (31)

आदमी के ऊपर जब कोई मुसीबत आती है तो वह उससे बचने की हर मुमकिन कोशिश करता है। अगर उसके कुछ साथी हैं तो वह साथियों का जोर इस्तेमाल करता है। और अगर दौलत है तो दौलत को उसकी राह में खर्च करता है। अपने को बचाने की तड़प आदमी को मजबूर करती है कि वह इन दोनों चीजों की तरफ वैड़े।

नमाज और इंसफ (अल्लाह की राह में खर्च) हकीकतन आखिरत के मसले के बारे में आदमी के इसी एहसास का दुनियावी इज्हार हैं। नमाज गोया आखिरत की हैलनाकी की याद करके खुदा की पनाह की तरफ भागना है ताकि उसकी मदद से वह अपने आपको बचाए। इसी तरह दुनिया में खुले और छुपे खर्च करना गोया अपनी कमाई को आखिरत की मद में देना है ताकि वह आखिरत की मुसीबत से छुटकारा हासिल करने का जरिया बने।

आखिरत में वही आदमी सहारा पाएगा जिसने दुनिया में खुदा का सहारा पकड़ा हो। आखिरत में वही आदमी छुटकारा हासिल करेगा जिसने दुनिया में उसकी खातिर अपने दाएं बाएं खर्च किया हो। जो लोग दुनिया में ऐसा न कर सकें वे आखिरत में सहारे के लिए दौड़ेंगे मगर वहां वे कोई सहारा न पाएंगे। वे आखिरत में खर्च करना चाहेंगे मगर उनके पास कुछ न होगा जिसे फिदया देकर वे वहां की मुसीबतों से नजात हासिल करें।

اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهِ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهَارَ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآبِّينَ ۖ وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۖ وَاتَّكَمُمْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ فَاسْأَلُوهُ وَإِنْ تُعَدُّوا نِعْمَتَ اللَّهِ لَا تَحْصُوهَا ۚ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَظَلُومٌ كَفَّارٌ ۝

अल्लाह वह है जिसने आसमान और जमीन बनाए और आसमान से पानी उतारा। फिर उससे मुत्तलिफ फल निकाले तुम्हारी रोजी के लिए और कश्ती को तुम्हारे लिए मुख़्ख़र (अधीनस्थ) कर दिया कि समुद्र में उसके हुक्म से चले और उसने दरियाओं को तुम्हारे लिए मुख़्ख़र किया। और उसने सूरज और चांद को तुम्हारे लिए मुख़्ख़र

कर दिया कि बराबर चले जा रहे हैं और उसने रात और दिन को तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया। और उसने तुम्हें हर चीज़ में से दिया जो तुमने मांगा। अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम गिन नहीं सकते। वेशक इंसान बहुत बेइसाफ और बड़ा नाशुक्रा है। (32-34)

मौजूदा दुनिया इतिहाई हेरतनाक हद तक खुदा की गवाही दे रही है। वसीअ खला में सितारों और सय्यारों (ग्रहों) की गर्दश, पानी के जरिए जमीन पर ज़िन्गी और रिककी फ़ाहमी, सुष्की और तरी और फजा पर इंसान को यह कुदरत होना कि वह उनमें अपनी सवारियां दौड़ाए, दरियाओं और पहाड़ों के जरिए जमीन का इंसान के मुवाफिक़ हो जाना, सूरज और चांद के जरिए मौसमों का और रात और दिन का इतिजाम, सब कुछ इससे ज्यादा अजीम है कि इन्हें लफ्ज़ों में बयान किया जा सके। इंसान और कायनात में इतनी कामिल मुताबिक़त (अनुकूलता) है कि इंसान को हर कबिले कयास (अनुमान योग्य) या नाकबिले कयास ज़रूरत पेशगी तौर पर यहां बड़फ़रात (बहुलता से) मौजूद है।

ये तमाम चीज़ें इतनी ज्यादा अजीब हैं कि आदमी को हिला दें और उसे बंदगी के जन्मे से सरशार कर दें इसके बावजूद ऐसा क्यों नहीं होता कि कायनात को देखकर आदमी के अंदर इस्तेजाब (विस्मय) की कैफ़ियत पैदा हो। ख़ालिके कायनात के तसव्वुर से उसके बदन के रंगटे खड़े हो जाएं। इसकी वजह यह है कि आदमी पैदा होते ही कायनात को देखता है, देखते-देखते वह उसे एक आम चीज़ मालूम होने लगती है। इसमें उसे कोई अनोखापन नजर नहीं आता।

मज़ीद यह कि इस दुनिया में आदमी को जब कोई चीज़ मिलती है तो वह बज़ाहिर उसे असबाब के तहत मिलती हुई नजर आती है। इस बिना पर वह समझ लेता है कि जो चीज़ उसे मिली है वह उसकी अपनी महनत और सलाहियत की बिना पर मिली है। यही वजह है कि आदमी के अंदर देने वाले खुदा के लिए शुक्र का जन्मा पैदा नहीं होता।

इंसान की यही वह ग़फ़लत है जिसे यहां बेइसाफी और नाशुक्रगुजारी से ताबीर (परिभाषित) किया गया है।

وَاذْكُرْ اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ رَٓبَّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَاَجْنُبْنِي وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ۚ رَبِّ اِنَّهُمْ اضْلٰكُنْ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِیْ فَاِنَّهٗ مِنِّیْ ۚ وَمَنْ عَصٰنِیْ فَاِنَّكَ عَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝

और जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे रब, इस शहर को अमन वाला बना। और मुझे और मेरी औलाद को इससे दूर रख कि हम बुतों की इबादत करें। ऐ मेरे रब इन बुतों ने बहुत लोगों को गुमराह कर दिया। पस जिसने मेरी पैरवी की वह मेरा है। और जिसने मेरा कहा न माना तो तू बख़्शने वाला महरबान है। (35-36)

हज़रत इब्राहीम के जमाने तक मुक्कों और कौमों का यह हाल हो चुका था कि हर तरफ शिर्क का दौर दौरा था। सूरज चांद और दूसरे मज़ाहिर फ़ितरत इंसान की परस्तिश का मौजूद

बने हुए थे। कदीम जमाने में ज़िंदगी की तमाम सरगर्मियों पर शिर्क का इस तरह ग़लबा हुआ कि इंसानी नस्लों में शिर्क का तसलसुल कायम हो गया। बज़ाहिर यह नामुमकिन नजर आने लगा कि लोगों को शिर्क की फजा से निकाल कर तौहीद के दायरे में लाया जा सके। उस वक्त खुदा के हुक्मे ख़ास के तहत हज़रत इब्राहीम इराक से निकल कर अरब के सहारा में आए जो तमदुन (संस्कृति) से दूर बिल्कुल ग़ैर आबाद इलाका था। आपने अगल-थलग माहौल में अपनी बीवी हाजरा और अपने बच्चे इस्माईल को बसाया। ताकि यहां वक्त के मुशिकाना तसलसुल से कटकर एक नई नस्ल तैयार हो। जो आज्ञादाना फजा में परवरिश पाकर अपनी सही फ़ितरत पर कायम हो सके। हज़रत इब्राहीम का कलाम दुआ के अंदाज़ में इसी रूख़स हकीक़त को ज़हिर कर रख है।

बनू इस्माईल को शुशुक और ग़ैर आबाद बयावान में बसाने से खुदा का मंसूबा यही था, अब यहां के जिन लोगों ने तौहीद (एकेश्वरवाद) को अपने दिल की आवाज़ बनाया वे गोया बाग़े इब्राहीम की सही पैदावार थे। इसके बरअक्स जिन लोगों ने दुबारा शिर्क का तरीका इख़्तियार कर लिया वे उस बाग़ की नाकिस पैदावार करार पाएंगे।

رَبَّنَا اِنِّیْ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِیْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِی زَرْعٍ عِنْدَ بَیْتِكَ الْحَرَامِ رَبَّنَا لِيُقِیْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِیْ اِلَیْهِمْ وَاَرْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرِیْنَ لَعَلَّهُمْ یَشْكُرُوْنَ ۝

ऐ हमारे रब, मैंने अपनी औलाद को एक बेखेती की वादी में तेरे मोहतरम घर के पास बसाया है। ऐ हमारे रब ताकि वे नमाज़ कायम करें। पस तू लोगों के दिल उनकी तरफ मायल कर दे और उन्हें फलों की रोजी अता फरमा। ताकि वे शुक्र करें। (37)

क़ैम (प्राचीन) मक्का जहां बनू इस्माईल बसाए गए वहां की पहाड़ी और सहाराई दुनिया गोया खुदा की मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) की कुदरती तर्बियतगाह थी। दूसरी तरफ वहां इंसानी तामीरात के एतबार से वाहिद कबिले लिहाज निशान अल्लाह का काबा था। एक तरफ फ़ितरत का माहौल इंसान के अंदर खुदा की याद उभारने वाला था। इसके बाद अपने क़रीब उसे जो नुमायां चीज़ नजर आती थी वह हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल की बनाई हुई पत्थरों की मस्जिद थी जिसमें दाख़िल होकर वह खुदा की याद में मशगूल हो जाए।

फिर इस माहौल में बनू इस्माईल को मौजिजाती तौर पर ज़मज़म के जरिए पानी मुह्य्या किया गया। इसी के साथ उनके लिए यह इतिजाम किया गया कि ऐसी पैदावार से उन्हें रिख़्त मिले जो उनके कदमों के नीचे पैदा नहीं होता। यह गोया उन्हें शाफ़िर (कृतज्ञ) बनाने का खुसूसी एहतिमाम था। ग़ैर मामूली नेमत से आदमी के अंदर शुक्र का ग़ैर मामूली जन्मा उभरता है। और यही वह हिक्मत है जो हज़रत इब्राहीम की इस दुआ में छुपी हुई थी कि सहारा में उन्हें फलों की रोजी दे।

رَبَّنَا إِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِي وَمَا نُعْلِنُ وَمَا يَخْفَى عَلَى اللَّهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْأَرْضِ
وَلَا فِي السَّمَاءِ ۝ الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي وَهَبَ لِي عَلَى الْكِبَرِ إِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ ۝ إِنَّ
رَبِّي لَسَمِيعٌ الدُّعَاءِ ۝ رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۝ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ
دُعَاءَ ۝ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ۝

ऐ हमारे रब, तू जानता है जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ हम जाहिर करते हैं। और अल्लाह से कोई चीज छुपी नहीं, न जमीन में और न आसमान में। शुक्र है उस खुदा का जिसने मुझे बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक दिए। वेशक मेरा रब दुआ का सुनने वाला है। ऐ मेरे रब, मुझे नमाज कायम करने वाला बना। और मेरी औलाद में भी। ऐ मेरे रब मेरी दुआ कुबूल कर। ऐ हमारे रब, मुझे माफ फरमा और मेरे वालिदेन को और मोमिनीन को, उस रोज जबकि हिसाब कायम होगा। (38-41)

हजरत इब्राहीम की इस दुआ में वे तमाम जज्बात झलक रहे हैं जो एक सच्चे बंदे के अंदर खुदा को पुकारते हुए उमड़ते हैं। उसकी बंदगी जोर करती है कि वह खुदा के सामने अपनेइज्ज (निर्वलता) का इकरार करे। जो कुछ मांगे जरूरतमंदी की बुनियाद पर मांगे न कि इस्त्फा (अधिकार) की बुनियाद पर। एक तरफ वह मिली हुई नेमतों का एतराफ करे और दूसरी तरफ अदब के तमाम तकाजों के साथ अपनी दरखास्त पेश करे। वह इकरार करे कि खुदा देने वाला है और इंसान पाने वाला।

वह अपने रब से यह तौफीक मांगे कि वह दुनिया में उसका परस्तार बनकर रहे। इसी की दरखास्त वह अपने लिए भी करे और अपने अहले खानदान के लिए भी और इसी की दरखास्त तमाम मोमिनीन के लिए भी। दुआ के वक्त उसके सामने जो सबसे बड़ा मसला हो वह दुनिया का न हो बल्कि आखिरत का हो जहां अबदी तौर पर आदमी को रहना है।

इन आदाब के साथ जो दुआ की जाए वह पैगम्बराना दुआ है और ऐसी दुआ अगर सच्चे दिल से निकले तो वह जरूर खुदा के यहां कुबूलियत का दर्जा हासिल करती है।

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظَّالِمُونَ ۚ إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ
فِيهِ الْأَبْصَارُ ۝ مَهْطِعِينَ مُقْنِعِي رُءُوسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ
وَأَفِذَتْهُمْ أَهْوَاءُ ۝

और हरगिज मत ख्याल करो कि अल्लाह इससे बेखबर है जो जालिम लोग कर रहे हैं। वह उन्हें उस दिन के लिए ढील दे रहा है जिस दिन आंखें पथरा जाएंगी। वे सिर उठाए हुए भाग रहे होंगे। उनकी नजर उनकी तरफ हटकर न आएगी और उनके दिल बदहवास होंगे। (42-43)

आदमी के सामने हक आता है तो वह उसका मुखालिफ बनकर खड़ा हो जाता है। वह उसके मुक़बले में ऐसी बेखुफ़ी का मुजाहिरा करता है जैसे कि उससे ज्यादा बहादुर दुनिया में और कोई नहीं।

मगर यही हक जो मौजूदा दुनिया में 'दाओ' की सतह पर जाहिर होता है वह आखिरत में 'खुदा' की सतह पर जाहिर होगा। उस दिन ऐसे लोगों की सारी बहादुरी जाती रहेगी। आखिरत का हौलनाक मंजर देखकर उनका यह हाल होगा कि जब उनकी निगाहें उठेंगी तो वे उठी की उठी रह जाएंगी, पलक झपकने की नौबत भी नहीं आएगी। वे सर उठाए हुए तेजी से मैदाने हशर की तरफ भाग रहे होंगे। और उनके दिल दहशत की वजह से उड़ रहे होंगे।

وَأَنزِلْ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُولُ الَّذِينَ ظَلَمُوا رَبَّنَا أَخْرِجْنَا إِلَى أَجَلٍ
قَرِيبٍ نُّجِبْ دُعَاؤَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ۚ أَوَلَمْ تَكُونُوا أَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلِ مَا لَكُم
مِّنْ زَوَالٍ ۝ وَسَكَنْتُمْ فِي مَسْكِنِ الَّذِينَ ظَلَمُوا أَنفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُم كَيْفَ
فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْآمَثَالَ ۝ وَقَدْ مَكَرُوا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللَّهِ مَكْرُهُمْ وَإِنْ
كَانَ مَكْرُهُمْ لِيَرْزُولَ مِنْهُ الْجِبَالُ ۝

और लोगों को उस दिन से डरा दो जिस दिन उन पर अजाब आ जाएगा। उस वक्त जालिम लोग कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमें थोड़ी मोहलत और दे दे, हम तेरी दावत(आह्वान) कुबूल कर लेंगे और रसूलों की पैरवी करेंगे। क्या तुमने इससे पहले कसमें नहीं खाई थी कि तुम पर कुछ ज्वाल (पतन) आना नहीं है। और तुम उन लोगों की बस्तियों में आबाद थे जिन्होंने अपने जानों पर जुल्म किया। और तुम पर खुल चुका था कि हमने उनके साथ क्या किया। और हमने तुमसे मिसालें बयान कीं। और उन्होंने अपनी सारी तदबीरें (युक्तियां) कीं और उनकी तदबीरें अल्लाह के सामने थीं। अगरचे उनकी तदबीरें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जाएं। (44-46)

आदमी का हाल यह है कि एक दिन पहले तक भी वह अपने अंजाम का एहसास नहीं करता। उसे अगर कोई कुव्वत या हैसियत हासिल हो तो वह इस तरह अकड़ता है गोया कि उसकी हैसियत कभी उससे छिनने वाली नहीं। वह खुदा की दावत (आह्वान) को ठुकराता है और भूल जाता है कि वह जिन चीजों के बल पर उसे ठुकरा रहा है वे सब खुदा की ही दी हुई हैं। उसके सामने दलाइल आते हैं मगर वह उन पर ध्यान नहीं देता। माजी के सरकशों का अंजाम उसके सामने होता है मगर वह समझता है कि जो कुछ हुआ वह सिर्फ दूसरों के लिए था। खुद उसके अपने लिए कभी ऐसा होने वाला नहीं।

मौजूदा दुनिया में जिन लोगों को मवाकेअ (अवसर) हासिल हैं वे हक को नजरअंदाज करने में फख्र महसूस करते हैं। मगर मौत के बाद जब वे अपनी सरकशी का अंजाम देखेंगे

सूरह-14. इब्राहीम

697

पारा 13

तो उन्हें अपने माजी पर इस कद्र शर्म आएगी कि वे चाहेंगे कि अगर उन्हें दुबारा मोहलत मिले तो वे मौजूदा दुनिया में आकर खुद अपनी तरदीद (खंडन) करें। और उस चीज को मान लें जिसका इससे पहले उन्होंने फख्वा तौर पर इंकार कर दिया था।

हक की मुखलिफ्त खुदा की मुखलिफ्त है। जिस हक के साथ खुदा हो उसकी मुखलिफ्त करने वाले हमेशा नाकाम रहते हैं, चाहे वे उसके खिलाफ इतनी बड़ी तैयारियों के साथ आए हों जो पहाड़ को हिलाने के लिए भी काफी साबित हो।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللَّهَ مُخْلِفًا وَعْدَهُ رُسُلُهُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ ۝ يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمُوتُ وَبَرَزُوا لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝ وَتَكْرَى الْمَجْرِمِينَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝ سَرَابِيلُهُمْ مِنْ قَطَرَانٍ وَأَعْشَىٰ وُجُوهُهُمُ النَّارُ ۝ لِيَجْزِيَ اللَّهُ كُلَّ نَفْسٍ تَمَا كَسَبَتْ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ۝ هَذَا بَلَاءٌ لِلنَّاسِ وَ لِيُنذِرَ رُوَاهُ وَلِيَعْلَمُوا أَنَّمَا هُوَ اللَّهُ وَاحِدٌ وَلِيَذَّكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ ۝

पस तुम अल्लाह को अपने पैगम्बरों से वादाखिलाफी करने वाला न समझो। वेशक अल्लाह जबरदस्त है, बदला लेने वाला है। जिस दिन यह जमीन दूसरी जमीन में से बदल जाएगी और आसमान भी। और सब एक जबरदस्त अल्लाह के सामने पेश होंगे। और तुम उस दिन मुजरिमों को जंजीरों में जकड़ा हुआ देखोगे। उनके लिबास तारकोल के होंगे। और उनके चेहरों पर आग छाई हुई होगी ताकि अल्लाह हर शख्स को उसके किए का बदला दे। वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। यह लोगों के लिए एक एलान है और ताकि इसके जरिए से वे डरा दिए जाएं। और ताकि वे जान लें कि वही एक माबूद (पूज्य) है और ताकि दानिशमंद (प्रबुद्ध) लोग नसीहत हासिल करें। (47-52)

पैगम्बर खुदा के दीन की गवाही अपनी कामिल सूरत में देता है। इसलिए पैगम्बर के साथ खुदा की नुसरत (मदद) भी अपनी कामिल सूरत में आती है। बाद के पैरोकार जितना-जितना पैगम्बर के नमूने पर पूरे उतरेंगे उतना-उतना वे खुदा की नुसरत के मुतहिक होते चले जाएंगे।

आज इंसान जमीन पर ऐसा महसूस करता है जैसे वह खुशकी और तरी का मालिक हो। वह फज्रों और ख़लाओं (अंतरिक्ष) को कंट्रोल कर सकता है। वह इख्तियार रखता है कि यहां के वसाइल को जिस तरह चाहे इस्तेमाल करे और जिस तरह चाहे इस्तेमाल न करे। मगर ये सब कुछ सिर्फ इसलिए है कि खुदा ने इस्तेहान की मुद्दत तक जमीन व आसमान को इंसान के लिए मुसख़्खर (अधीनस्थ) कर रखा है। इस्तेहान की मुद्दत खत्म होते ही हालात यकसर बदल जाएंगे। इसके बाद जमीन भी दूसरी जमीन होगी और आसमान भी दूसरा आसमान। इंसान अचानक अपने को एक और ही दुनिया में पाएगा।

जहां आदमी अपने आपको हुक्मरां समझता है वहां सारी हुक्मत सिर्फ खुदा के लिए हो

पारा 14

698

सूरह-15. अल-हिज्र

चुकी होगी। जहां हर चीज उसके हुक्म के ताबेअ थी वहां हर चीज उसकी ताबेदारी करना छोड़ देगी। मौजूदा दुनिया में जो लोग बड़े बने हुए थे वे उस दिन बेबस मुजरिम के रूप में नजर आएंगे। जो लिबास आज जिस्म को जीनत (सज्जा) देता है वह उस दिन ऐसा हो जाएगा जैसे जिस्म के ऊपर तारकोल फेर दी गई हो। पुररौनक चेहरे उस दिन आग में झुलसे हुए होंगे। और यह सब कुछ उन लोगों के साथ होगा जो दुनिया में खुदा का बंदा बनकर रहने पर राजी न हुए। जिन्होंने खुदा की तरफ से होने वाले एलान को नजरअंदाज किया।

हकीकत का हकीकत होना काफी नहीं है कि आदमी उसे मान ले। हकीकत को मानने के लिए जरूरी है कि आदमी खुद भी उसे मानना चाहे। जो शख्स हकीकत के मामले में संजीदा हो, जो खाली जेहन होकर उसे सुने वही हकीकत को समझेगा, वही हकीकत का सही इस्तकबाल करने में कामयाब होगा।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تَسْتَغْوِي وَتَسْتَوِي ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُبِينٍ ۝ رَبِّمَا يَوْمَ الَّذِينَ كَفَرُوا وَلَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ۝ ذَرْهُمْ يَأْكُلُوا وَيَتَمَتَّعُوا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَعْلُومٌ ۝ مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُونَ ۝

आयतें-99

सूरह-15. अल-हिज्र

रुकूअ-6

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है। अलिफ० लाम० रा०। ये आयतें हैं किताब की और एक वाजेह (सुस्पष्ट) कुआन की। वह वक्त आया जब इंकार करने वाले लोग तमन्ना करेंगे कि काश वे मानने वाले बने होते। उन्हें छोड़ो कि वे खाएं और फायदा उठाएं और ख्याली उम्मीद उन्हें भुलावे में डाले रखे, पस आइंदा वे जान लेंगे। और हमने इससे पहले जिस बस्ती को भी हलाक किया है उसका एक मुफ़र्र वक्त लिखा हुआ था। कोई कैम न अपने मुफ़र्र वक्त से आगे बढ़ती और न पीछे हटती। (1-5)

दुनिया में इंसान को जो आजादी मिली हुई है वह सिर्फ इस्तेहान की मुद्दत तक के लिए है। यह एक बहुत नाजुक सूरतेहाल है। अगर आदमी वाकई तौर पर इसे सोचे तो वह ऐसा महसूस करेगा कि जो मुद्दत कल खत्म होने वाली है वह गोया आज खत्म हो चुकी है। यह ख्याल उसे हिलाकर रख देगा। मगर आदमी सिर्फ 'आज' में जीता है, वह 'कल' पर ध्यान नहीं देता। उसके सामने हकीकत खोली जाती है मगर वह खुशफहमियों में मुब्तिला होकर रह जाता है। वह खुदसाखा तौर पर कुछ फर्जी सहारे तलाश कर लेता है और समझता है कि ये सहारे फैसले के वक्त उसके काम आएंगे।

सूरह-15. अल-हिज्र

699

पारा 14

मगर गफलत और खुशगुमानी का तिलिस्म उस वक्त टूट जाता है जब मुद्दत खत्म होती है और खुदा के फरिश्ते उसके पास आ जाते हैं ताकि उसे इस्तेहान की दुनिया से निकाल कर अंजाम की दुनिया में पहुंचा दें।

उस वक्त उसे वे मौके याद आने लगते हैं जबकि उसने एक सच्ची दलील को झूठे अल्फज के जरिए रद्द करने की कोशिश की थी। जब उसने जमीर की आवाज को छोड़कर अपनी ख्वाहिशात की पैरवी की थी। जब उसने खुदा के दाओं में खुदा की झलकियां पाने के बावजूद ज़ाती पिंदार की खातिर उसे नजरअंदाज कर दिया था। जब वह देखेगा कि मेरी कोई तदबीर मेरे काम नहीं आई तो वह कहेगा कि काश मैंने वह न किया होता जो मैंने किया। काश मैं 'मुकिर' का तरीका इस्तिथार करने के बजाए 'मुस्लिम' का तरीका इस्तिथार करता।

وَقَالُوا يَا أَيُّهَا الَّذِي نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۚ لَوْ مَا تَتَّبِعُنَا بِالْمَلَائِكَةِ إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ۝ مَا نُنْزِلُ الْمَلَائِكَةَ إِلَّا بِالحَقِّ وَمَا كَانُوا إِذَا مُنْظَرِينَ ۝

और ये लोग कहते हैं कि ऐ वह शख्स जिस पर नसीहत उतरी है तू बेशक दीवाना है। अगर तू सच्चा है तो हमारे पास फरिश्तों को क्यों नहीं ले आता। हम फरिश्तों को सिर्फ फैसले के लिए उतारते हैं और उस वक्त लोगों को मोहलत नहीं दी जाती। (6-8)

पैगम्बर के मुखातबीन ने पैगम्बर के ऊपर दीवानगी का शुबह किया। इसकी वजह क्या थी। इसकी वजह पैगम्बर की दावत थी जिसका मतलब यह था कि 'मैं खुदा का नुमाइंदा हूं। जो शख्स मेरी बात मानेगा वह कामयाब होगा और जो शख्स नहीं मानेगा वह नाकाम होकर रह जाएगा।'।

मगर ये मुखातबीन अमलन जो कुछ देख रहे थे वह इसके बरअक्स था। उनका अपना यह हाल था कि उन्हें वक्त के राइज निजाम में सरदारी और पेशवाई का मक़म हसिल था। दूसरी तरफ पैगम्बर एक ग़ैर रवाजी दीन का दाओं होने की वजह से राइज निजाम में बेहिसियत और अजनबी बना हुआ था। इस फर्क की बिना पर मुखातबीन को यह कहने की जुरअत हुई कि तुम हमें दीवाना मालूम होते हो। हर किस्म की दुनियावी खूबियां तो खुदा ने हमें दे रखी हैं और तुम कहते हो कि कामयाबी तुम्हारे लिए है और तुम्हारा साथ देने वालों के लिए।

मगर यह उनके जविय-ए-नज़र (दृष्टिकोण) का फर्क था। वे अपनी चीजों को 'इनाम' के तौर पर देख रहे थे। हालांकि ये तमाम चीजें सिर्फ 'आजमाइश' का सामान हैं जो मौजूदा दुनिया में किसी को वक्ती तौर पर दी जाती हैं।

वे ये भी कहते थे कि तुम्हारे दावे के मुताबिक तुम्हारे पास खुदा के फरिश्ते आते हैं तो ये फरिश्ते हमें क्यों नहीं दिखाई देते। यह भी जविय-ए-नज़र के फर्क की बिना पर था। पैगम्बर के पास जो फरिश्ता आता है वह 'वही' (प्रकाशना) का फरिश्ता होता है जो खुदा का कलाम पैगम्बर तक पहुंचाता है। इसके अलावा खुदा के वे फरिश्ते भी हैं जो इसलिए आते हैं

पारा 14

700

सूरह-15. अल-हिज्र

कि वे हकीकत को लोगों के सामने बेनकाब कर दें। मगर वे दावत (आह्वान) की तक्मील के बाद आते हैं और जब वे आते हैं तो यह फैसला करने का वक्त होता है न कि ईमान की तरफ बुलाने का।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلُ الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحٰفِظُونَ ۝

यह याददिहानी (किताब) हम ही ने उतारी है और हम ही इसके मुहाफिज़ (संरक्षक) हैं। (9)

कुरआन को खुदा ने उतारा है और वही उसकी हिफज़त करने वाला है। नुज़ुले कुरआन के वक्त इस इर्शाद का बराहारास्त खिताब कुरैश से था। मगर वसीअतर मअनों में यह पूरी इंसानियत के लिए एक चैलेन्ज था। इस तरह सातवीं सदी ईसवी से लेकर कियामत तक के इंसानों के सामने एक ऐसा कतरई मेयार रख दिया गया जिसके ऊपर जांच कर वे देख सकें कि कुरआन वाकई खुदा की किताब है या नहीं।

जिस वक्त यह चैलेन्ज दिया गया उस वक्त तमाम जाहिरी इम्कानात इसके सरासर ख़िलाफ थे। किसी निजई (विवादित) किताब को मुस्तकिल तौर पर महफूज़ रखने के लिए ताक़तवर जमाअत दरकार है। और नुज़ुले कुरआन के वक्त उसके हमिलीन (धारक) अपने दुश्मनों के मुकाबले में बिल्कुल कमजोर हैसियत रखते थे। काग़ज और प्रेस का दौर भी दुनिया में नहीं आया था जिसने मौजूदा जमाने में किसी किताब की हिफज़त को बहुत आसान बना दिया है। किताब जैसी एक चीज को महफूज़ रखने के लिए उसकी ज़बान को महफूज़ रखना भी लाजिमी तौर पर जरूरी था, जबकि तारीख़ बताती है कि कोई ज़बान कभी मुस्तकिल तौर पर बाकी नहीं रहती। कुरआन मौजूदा साइंसी दौर से बहुत पहले रिवायती (परम्परागत) दौर में आया। ऐसी हालत में इसके जिंदा और महफूज़ रहने के लिए जरूरी था कि उसके मजामीन अबदी (सर्वांगीण) जांच में पूरे उतरें।

इन तमाम चैलेन्जों को मुक़बला करते हुए कुरआन पूरी तरह महफूज़ (सुरक्षित) रहा। और आज भी वह पूरी तरह महफूज़ है। यह इस बात का कतरई सुबूत है कि यह खुदा की किताब है। डेढ़ हजार साल पहले के दौर में तैयार की जाने वाली कोई भी किताब इस तरह ज़िंदा और महफूज़ नहीं जिस तरह कुरआन आज ज़िंदा और महफूज़ है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِي شِعْبِ الْأَوَّلِينَ ۝ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ۝ كَذٰلِكَ نَسْخُكُهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝ لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِينَ ۝ وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَابًا مِّنَ السَّمَاءِ فَظَلُّوا فِيهِ يَعْرُجُونَ ۝ لَقَالُوا إِنَّمَا سُكَّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ۝

और हम तुमसे पहले गुजरी हुई कौमों में रसूल भेज चुके हैं। और जो रसूल भी उनके पास आया वे उसका मज़क़ उड़ते रहे। इसी तरह हम यह (मज़क़) मुजस्मिन् के दिलों

में डाल देते हैं। वे इस पर ईमान नहीं लाएंगे। और यह दस्तूर अगलों से होता आया है। और अगर हम उन पर आसमान का कोई दरवाजा खोल देते जिस पर वे चढ़ने लगते तब भी वे कह देते कि हमारी आंखों को धोखा हो रहा है, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है। (10-15)

हर दौर में खुदा के पैगम्बरों का मजाक उड़ाया गया है। इसकी वजह यह थी कि लोगों ने बतौर खुद जो फर्जी मेयार किसी को खुदा का नुमाइंदा करार देने के लिए बना रखे थे, उस पर उनके पैगम्बर पूरे नहीं उतरते थे। इस मेयार के एतबार से पैगम्बर उन्हें कमतर नजर आता था। इसलिए लोगों ने पैगम्बरों को इस्तहजा (मज़ाक) का विषय बना लिया।

किसी नई हकीकत को पाने के लिए जरूरी है कि आदमी खुले जेहन के साथ सोचने और खालिस वाक्यात की बुनियाद पर राय कायम करने के लिए तैयार हो। जो लोग सच्चाई का इंकार करते हैं वे अक्सर इसलिए ऐसा करते हैं कि सच्चाई उन्हें अपने मानूस (परिचित) मेयार के एतबार से अजनबी मालूम होती है। यह मानूस मेयार लम्बे अर्से के बाद उनके दिल में ऐसा रच बस जाता है कि उससे बाहर निकल कर सोचना उनके लिए नामुमकिन हो जाता है। वे आखिर वक्त तक भी अपने मानूस दायरे से बाहर की सच्चाई को पहचान नहीं पाते।

कौमों के इसी मिजाज का नतीजा था कि मोजिजे को देखकर भी लोग ईमान नहीं लाए।

जिस शख्सियत के बारे में उनके जाहिरी हालात की बिना पर उनका यह जेहन बन गया था कि यह एक मामूली आदमी है वह फिर भी उनकी नजर में मामूली ही रहा। बाद को अगर उसने कोई खारिके आदत (अस्वाभाविक) चीज दिखाई तो चूँकि दूसरे पहलुओं के एतबार से वह बजाहिर अब भी उनके लिए ग़ैर अहम था, उन्होंने समझ लिया कि यह कोई जादू या नजरबंदी है। न कि हकीकतन उसके खुदा के नुमाइंदा होने का सुक़्त।

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّظِيرِينَ ۖ وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ رَجِيزٍ ۖ إِلَّا مِنْ شَرِّكَ السَّمْعِ فَاتَّبَعَهُ شَهَابٌ مُبِينٌ ۖ

और हमने आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के लिए उसे रौनक दी। और उसे हर शैतान मर्दूद से महफूज किया। अगर कोई चोरी छुपे सुनने के लिए कान लगाता है तो एक रोशन शोला उसका पीछा करता है। (16-18)

कायनात में बेशुमार सितारे फैले हुए हैं। मगर ये सितारे मज्मूओं (संग्रह) की सूरत में हैं। हर एक मज्मूए को एक कहकशां कहा जाता है। हो सकता है कि बुरुज से मुराद ये कहकशाएं हों।

‘जयन्नानाह लिन्नाज़िरीन’ मेंसादा तौर पर सिर्फ ‘जिनत’ (मैम्रे) मुराद नहीं है बल्कि आसमान का वह हैरानकुन मंजर मुराद है जो रात के वक्त उसका होता है। रात को जब बादल और गर्द व गुबार न हों, खुले मैदान में खड़े होकर आसमान की तरफ नजर डालें तो वसीअ आसमान में जगमगाते हुए सितारों का मंजर इतना हैरानकुन हद तक शानदार होता है कि आदमी उसे देखकर खुदा की अज्मत व जलाल के एहसास में डूब जाए।

जो लोग पैगम्बर से कहते थे कि आसमान से फरिश्ता उतरता हुआ हमें दिखाओ उनसे कहा गया कि तारों भरे आसमान का वह मंजर जो हर रोज तुम्हारे सामने खोला जाता है क्या वह तुम्हारे शुऊर को जगाने और तुम्हारे दिलों को पिघलाने के लिए कम है कि तुम दूसरे मेजिज़त का तक्ज़ज़ करते हो।

जमीन पर इंसान के साथ शैतान भी बसाए गए हैं। यहां शयातीन को पूरी आजादी है कि वे जिधर चाहे जाएं और जिस तरह चाहें लोगों को बहकाएं। मगर जमीन से मावरा (परे) जो खुदा की दुनिया है उसमें शयातीन की परवाज के लिए नाकाबिले उबूर (अलांधनीय) रुकावटें कायम कर दी गई हैं। वे एक ख़ास हद से आगे उसके अंदर दाख़िल नहीं हो पाते।

وَالْأَرْضُ مَكْدُونُهَا وَالْفَيِّنُ فِيهَا سَرَوَاتِي ۖ وَابْتَنَّا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مُّؤَزُّونٍ ۖ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعَايِشَ ۖ وَمَنْ لَسْتُمْ لَهُ بِرَازِقِينَ ۖ

और हमने जमीन को फैलाया और उस पर हमने पहाड़ रख दिए और उसमें हर चीज एक अंदाजे से उगाई। और हमने तुम्हारे लिए उसमें मईशत (जीविका) के असबाब बनाए और वे चीजें जिन्हें तुम रोजी नहीं देते। (19-20)

भौगोलिक अध्ययन बताता है कि जमीन इब्तिदा में खुश्क गोले की सूरत में थी फिर वह फटी जिसकी वजह से समुद्र की गहराइयां पैदा हुईं और उनमें पानी जमा हो गया। इन गहराइयों को संतुलित रखने के लिए जमीन पर जगह-जगह ऊंचे पहाड़ उभर आए।

इसके बाद जमीन पर नवातात (वनस्पति) और हैवानात वजूद में आए और खूब फैले। उनमें से हर एक के अंदर बढ़ने की लामहदूद सलाहियत (असीम क्षमता) है मगर उन्हें देखने से साफ मालूम होता है कि हर एक का एक अंदाजा मुकर्रर है। हर चीज बढ़ते-बढ़ते एक ख़ास हद पर रुक जाती है, वह उससे आगे नहीं जाने पाती।

मसलन पौधों और दरख़्तों में अपनी नस्ल बढ़ाने की इतनी ज्यादा इस्तेदाद (सामर्थ्य) है कि अगर किसी एक पौधे को उसकी अंदरूनी इस्तेदाद के एतबार से बिला रोक टोक बढ़ने दिया जाए तो चन्द साल के अंदर सारी सतहे जमीन पर हर तरफ बस वही पौधा नजर आएगा। किसी दूसरी चीज के लिए यहां कोई जगह बाकी न रहेगी। मगर ऐसा मालूम होता है कि कोई ज़ब्रदस्त नाज़िम (व्यवस्थापक) है जो हर एक पर कंट्रोल कायम किए हुए है।

यही मामला हैवानात का है। उनके अंदर भी अफजाइशे नस्ल की लामहदूद सलाहियत है। मगर हर एक की तादाद एक हद पर पहुंच कर रुक जाती है। इसी तरह हैवानात में अपनी जसामत बढ़ाने की इस्तेदाद इतनी ज्यादा है कि एक पतिंगे को बढ़ने दिया जाए तो वह हाथी के बराबर हो जाए। मगर कुदरती कंट्रोल एक ख़ास हद पर उसकी जसामत को रोक देता है। अगर चीजें अपनी हद पर न रुकें तो जमीन पर इंसान की रिहाइश नामुमकिन हो जाए।

इंसान को अपनी मईशत (जीविका) और तमददुन (संस्कृति) के लिए बेशुमार चीजें दरकार हैं। ये सारी चीजें ऐन हमारी जरूरत के मुताबिक जमीन पर मुहय्या कर दी गई हैं।

इन तमाम चीजों की फ़ाहमी और हर एक की बका (अस्तित्व) का इतिजाम ख़ुदा की तरफ़ से है। अगर हमें उन्हें उनका रिज़क देना हो तो हमारे लिए उनका हुसूल नामुमकिन हो जाए।

وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنْزِلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۚ وَأَرْسَلْنَا
الرِّيحَ كَوَاقِحٍ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَاسْقَيْنَاكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ بِخَازِنِينَ

और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़जाने हमारे पास न हों और हम उसे एक मुअय्यन (निर्धारित) अंदाज़ के साथ ही उतारते हैं। और हम ही हवाओं को बारआवर (वर्षा लाने वाली) बनाकर चलाते हैं। फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं फिर उस पानी से तुम्हें सैराब करते हैं। और तुम्हारे वश में न था कि तुम उसका ज़ख़ीरा जमा करके रखते। (21-22)

हदबंदी का उसूल कायनात की तमाम चीज़ों में राज़ है। हवा एक हद के अंदर चलती है, हालांकि ख़ुदा कभी-कभी दिखाता है कि वह आंधी भी बन सकती है। सूरज एक ख़ास फ़ासले पर है। अगर वह उससे ऊपर चला जाए तो ज़मीन बर्फ़ की तरह जम जाए। सूरज नीचे आ जाए तो ज़मीन जलती हुई भट्टी बन जाए। ज़मीन की कशिश निहायत मौजूद मिक्दार में है। अगर ज़मीन की जसामत दुगना होती तो उसकी कशिश इतनी बढ़ जाती कि बोझ की वजह से आदमी के लिए ज़मीन पर चलना मुश्किल होता। और अगर ज़मीन की जसामत मौजूदा जसामत से आधे के बराबर कम होती तो उसकी कशिश इतनी घट जाती कि आदमी और उसके मकानात हल्केपन की वजह से ज़मीन पर ठहर न सकते। यही हाल उन तमाम चीज़ों का है जिनके दर्मियान इंसान रहता है। हर चीज़ का एक अंदाज़ा मुक़र्र है वह न उससे घटता है और न उससे बढ़ता है।

ज़मीन पर इंसान और तमाम जीवधारियों की ज़िंदगी का इहिसार पानी पर है। ज़ेज़मीन पानी के ज़ख़िरों लेकर फ़जई बादलों तक पानी की फ़ाहमी का निज़ाम इतने अजीब और इतने अजीम पैमाने पर है जिसका कायम करना हरगिज़ इंसान के बस में नहीं। इस अजीब और अजीम इतिजाम को ख़ुदा मुसलसल ऐन इंसानी ज़रूरत के मुताबिक़ कायम किए हुए है।

इंसान एक बेहद नाज़ुक मख़्लूक है। उसके माहिल में कोई फ़र्क़ उसकी पूरी हस्ती को तह व बाला कर देने के लिए काफी है। ऐसी हालत में बेशुमार अज्जा (अवयवों) की एक कायनात, लातादाद इस्कानात का हा मिल होने के बावजूद, ऐन उसी मख़्लूस इस्कानी अंदाज़ पर कायम है जो इंसान जैसी एक मख़्लूक के लिए मुनासिब है। यह एतदाल और तनासुब (संतुलन) हरगिज़ इतफ़की नहीं हो सकता। यकीनन इसका कोई ज़वरदस्त ख़लिक और नाजिम है। ऐसी हालत में जो शख्स ख़ुदा को न माने या ख़ुदा को मान कर उसका शरीक ठहराए वह सिर्फ़ अपने ग़लत होने का सुबूत देता है न कि अक्कीदए तौहीद के ग़लत होने का।

وَإِلَّا لَنَحْنُ مُعْتَبَرُونَ ۚ وَنُفِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ ۚ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ
وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِينَ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ إِنَّهُ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۝

और बेशक हम ही ज़िंदा करते हैं और हम ही मारते हैं। और हम ही बाकी रह जाएंगे और हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं और तुम्हारे पिछलों को भी जानते हैं। और बेशक तुम्हारा रब उन सबको इकट्ठा करेगा। वह इल्म वाला है, हिक्मत (तत्त्वदर्शिता) वाला है। (23-25)

दुनिया में इंसान को बसाना, फिर यहां से उसे उठा लेना दोनों ख़ुदा की तरफ़ से होता है। अगर यह इंसान की मर्जी से होता तो वह कभी यहां न आ सकता और आने के बाद कभी यहां से वापस न जाता। इसी से यह भी साबित है कि इंसान की पैदाइश से पहले भी ज़मीन व आसमान ख़ुदा के थे और इसके बाद भी वे ख़ुदा के रहेंगे।

ज़मीन पर अनगिनत चीज़ें हैं। मगर हर एक की एक इफ़ि़ादियत (विशिष्टता) है। हर चीज़ वही ख़ास और निश्चित किरदार अदा करती है जो उसे अदा करना चाहिए। इससे साबित होता है कि ज़मीन का ख़लिक एक-एक चीज़ का इफ़ि़ादी इल्म रखता है। वह हर चीज़ को उसके अपने ख़ुसूसी काल में लगाए हुए है। यहां तक कि एक आदमी के हाथ के अंगूठे पर जो निशान होता है वह भी तमाम दूसरे इंसानों से बिल्कुल मुख़्तलिफ़ होता है। एक शख्स के अंगूठे का निशान फिर कभी किसी दूसरे इंसान के साथ दोहराया नहीं जाता।

ऐसे कादिर और बाख़बर ख़ुदा के लिए इसमें क्या मुश्किल है कि वह हर आदमी का अलग-अलग हिसाब ले और हर एक के साथ वही मामला करे जिसका वह फ़िलवाक़अ (तस्तुतः) मुक्तहिक़ है।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَبٍّ مَسْنُونٍ ۖ وَالْجَنّ خَلَقْنَاهُ
مِنْ قَبْلُ مِنْ تَارِ السُّجُومِ ۝

और हमने इंसान को सने हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया और इससे पहले ज़िन्नो को हमने आग की लपट से पैदा किया। (26-27)

इंसान का वजूद दो चीज़ों से मुक्कब है। एक जिस्म और दूसरे रूह। जिस्म तमामतर ज़मीनी माद्यों से बना है। इंसानी जिस्म का तज्जिया बताता है कि वह उन्हीं अज्जा की तरकीब से बना है जिसे आम तौर पर पानी और मिट्टी कहते हैं गोया जिस्म के एतबार से इंसान सरासर एक बेहयात (निर्जीव) और बेशुऊर वजूद का नाम है। मगर जब ख़ुदा उसके अंदर अपने पास से रूह डाल दे तो अचानक यही जिस्म ऐसी सलाहियतों (क्षमताओं) का हा मिल बन जाता है जो मालूम कायनात में किसी दूसरी मख़्लूक को हासिल नहीं।

यहां दूसरी मख़्लूक वह है जिसे ज़िन्न कहते हैं। जिन इंसान के हरीफ़ (प्रतिपक्षी) हैं। ज़िन्न आग के शोले से बनाए गए हैं। गोया कि वे ऐन अपनी पैदाइश के एतबार से जलाने वाली मख़्लूक हैं। जिस तरह मिट्टी वाली ज़मीन अपने आपको आग वाले सूरज से दूर रखती है ताकि वह जल न जाए। इसी तरह इंसान को चाहिए कि वह अपने आपको ज़िन्नो से बचाए। वर्ना वे उसे अख़्लाकी और दीनी एतबार से जला डालेंगे।

وَاذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَكِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِّن صَلْصَالٍ مِّن حَمَإٍ مَسْنُونٍ ﴿١﴾
فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي فَقَعُوا لَهُ سَاجِدِينَ ﴿٢﴾ فَسَجَدَ الْمَلَكُ كُلُّهُمْ
أَجْمَعُونَ إِلَّا ابْنُ سَاطَانَ قَالَ إِن يَكُن مَعَهُ السَّجْدُ لِلَّهِ قَالَ يَا بَلَدُ لَيْسَ
مَا لَكَ أَتَسْكُنُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ ﴿٣﴾ قَالَ لِمَ أَكُنُ لِمَنْ لَا يَسْجُدُ لَيْسَ خَلْقْتُهُ مِن
صَلْصَالٍ مِّن حَمَإٍ مَسْنُونٍ ﴿٤﴾

और जब तेरे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं सने हुए गारे की सूखी मिट्टी से एक बशर (इंसान) पैदा करने वाला हूँ। जब मैं उसे पूरा बना लूँ और उसमें अपनी रूह में से फूँक दूँ तो तुम उसके लिए सज्दे में गिर पड़ना। पस तमाम फरिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान), कि उसने सज्दा करने वालों का साथ देने से इंकार कर दिया। खुदा ने कहा ऐ इब्लीस, तुझे क्या हुआ कि तू सज्दा करने वालों में शामिल न हुआ। इब्लीस ने कहा कि मैं ऐसा नहीं कि बशर को सज्दा करूँ जिसे तूने सने हुए गारे की सूखी मिट्टी से पैदा किया है। (28-33)

इब्लीस ने सज्दा न करने की वजह बजाहिर यह बताई कि इंसान मेरे मुकाबले में कमतर है। मगर हकीकत यह है कि इसकी वजह खुद इब्लीस का अपना एहसास कमतरी था। वह यह देखकर जल उठा कि मैं पहले से कायनात में हूँ और मुझे यह इज्जत नहीं मिली कि तमाम मख्लूकात से मुझे सज्दा कराया जाए। और इंसान जो अभी पैदा किया गया है उसे तमाम मख्लूकात से सज्दा कराया जा रहा है। उसने इंसान को सज्दा करने से इंकार कर दिया। 'इंसान मुझसे कमतर है' का मतलब यह है कि सज्दे का मुस्तहिक दरअसल मैं था फिर ग़ैर मुस्तहिक की इज्जत अफ़ज़ाई को मैं क्यों तस्लीम करूँ।

यही घमंड और हसद तमाम इज्तिमाई खराबियों की जड़ है। मौजूदा दुनिया में ऐसे मौके इंसान के सामने बार-बार आते हैं। जो शख्स ऐसे मौके पर जलन की नपिसयात में मुब्तिला न हो उसने फरिश्तों की पैरवी की और जो शख्स जलन का शिकार हो जाए वह गोया शैतान का पैरोकार बना।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ﴿٥﴾ وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ﴿٦﴾
قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ﴿٧﴾ قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ﴿٨﴾ إِلَى يَوْمِ
الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ﴿٩﴾

खुदा ने कहा तू यहां से निकल जा क्योंकि तू मरदूद (धुत्कारा हुआ) है, और बेशक तू पर सज़ा (बदले के दिन) तक लानत है। इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब, तू मुझे

उस दिन तक के लिए मोहलत दे जिस दिन लोग उठाए जाएंगे। खुदा ने कहा, तुझे मोहलत है उस मुक़रर वक़्त के दिन तक। (34-38)

इंसान की तख़लीक के बाद वाक़्यात ने जो रुख़ इख़्तियार किया उसने शैतान को मुस्तक़िल तौर पर इंसान का दुश्मन बना दिया। अब क़ियामत तक के लिए आदमी शैतान की ज़द में है। इंसान के लिए सबसे ज़्यादा क़बिले लिहाज बात यह है कि वह शैतान के फ़रेब से चौकन्ना रहे। मौजूदा दुनिया में यही वह मक़ाम है जहां इंसान की कामयाबी का फैसला भी हो रहा है और उसी मक़ाम पर उसकी नाकामी का भी।

قَالَ رَبِّ بِأَعْوَجَاتِنِي أَزِيدُنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَا غُورِيَّاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿١٠﴾
عِبَادُكُمْ مِنْهُمْ الْمُخْلَصِينَ ﴿١١﴾

इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे रब, जैसे तूने मुझे गुमराह किया है इसी तरह मैं ज़मीन में उनके लिए मुजय्यन (दिलक़शी) करूंगा और सबको गुमराह कर दूंगा। सिवा उनके जो तेरे चुने हुए बंदे हैं। (39-40)

इब्लीस के सामने एक आजमाइशी सूरतेहाल आई। उसमें वह शिकस्त खा गया। अब उसके लिए सही तरीका यह था कि वह अपनी हार मान ले। मगर इसके बजाए उसने यह किया कि खुद खुदा पर इल्जाम देने लगा कि उसने जो कुछ किया मुझे गुमराह करने के खातिर किया। जिस वाक़ये से उसकी अपनी कमजोरी साबित हो रही थी उसे उसने चाहा कि खुदा के ऊपर डाल दे। अपनी शिकस्त का ज़िम्मेदार दूसरों को करार देना इसी शैतानी राह की पैरवी है।

इब्लीस ने इंसान को सज्दा न करने का सबब यह बताया कि इंसान को मिट्टी से बनाया गया है और मुझे आग से। इसकी कोई माकूल वजह नहीं है कि मिट्टी के मुकाबले में आग को फज़ीलत क्यों हासिल हो। मगर इब्लीस के अपने ज़ेहनी ख़ाने में खुदसाख़्ता तसव्वुर के तहत यह हुआ कि मिट्टी हकीर (तुच्छ) चीज़ बन गई और आग़ अफ़ज़ल चीज़। इसी का नाम तज़ईन (मनमोहकता) है। यह एक नपिसयाती चीज़ है न कि कोई अक्सी चीज़। इब्लीस ने अपनी ग़लती मानने के बजाए यह फैसला किया कि वह दूसरों से भी वही ग़लती कराए। वह खुद जिस नपिसयाती कमजोरी का शिकार हुआ है, उसी नपिसयाती कमजोरी में तमाम इंसानों को मुब्तिला कर दे।

इब्लीस ने कहा कि तेरे मुंतख़ब बंदों के अलावा सबको मैं गुमराह करूंगा। ये खुदा के मुंतख़ब बंदे कौन हैं। ये वे लोग हैं जो खुदा के मुकाबले में सीधी राह पर आ चुके हों। यानी बंदगी की राह। बअत्मज़े दीगर, खुदा के मुक़बले में अपनी हैसियते वाक़ई के एतराफ़ की राह।

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ۚ إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ۚ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ۚ لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ لِّكُلِّ بَابٍ مِنْهُمْ جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ۙ

अल्लाह ने फरमाया, यह एक सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुंचता है। वेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा जोर नहीं चलेगा। सिवा उनके जो गुमराहों में से तेरी पैरवी करें। और उन सबके लिए जहन्नम का वादा है। उसके सात दरवाजे हैं। हर दरवाजे के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं। (41-44)

सिराते मुस्तकीम की तशरीह मुजाहिद और हसन और कतादा से यह मरवी है कि इससे मुराद हक का रास्ता है जो अल्लाह की तरफ निकलता है और उसी पर खत्म होता है। अगर आदमी शिर्क की राह चले तो वह राह खुदा तक नहीं पहुंचेगी बल्कि शरीकों तक पहुंचेगी। वह अगर सरकशी का तरीका इस्तिथार करे तो उसकी मंजिल आदमी का अपना वजूद होगा न कि खुदा। अगर वह बेक़ैद होकर जिंदगी गुजारे तो वह मुजालिफ सन्तों में भटकेगा। उसका सफर खुदा पर खत्म नहीं हो सकता।

मगर जब आदमी सिर्फ खुदा को अपना मर्कजे तवज्जोह बनाता है और उसी को सब कुछ समझ कर अपनी जिंदगी को खुदा के रुख पर चलाता है तो बिल्कुल कुदरती बात है कि उसका सफर खुदा की तरफ जारी हो और बिलआखिर वह खुदा तक पहुंच जाए। खुदा कादिर है और इंसान आजिज। इसलिए खुदा और बंदे के दर्मियान एक ही सही निस्वत है और वह अबदियत (बंदगी) की निस्वत है। अबदियत की रविश इस्तिथार करना खुदा के साथ अपनी सहीतरीन निस्वत को पा लेना है। जिस शख्स की निस्वत खुदा के साथ कायम हो जाए उस पर शैतान का जोर नहीं चलता। और जिसने खुदा के साथ अपनी निस्वत कायम न की उसकी निस्वत शैतान के साथ कायम हो जाती है। फिर वह शैतान के मश्वरों पर चलने लगता है। यहां तक कि वहीं पहुंच जाता है जहां बिलआखिर शैतान को पहुंचना है।

जहन्नम जो शैतान और उसके साथियों का आखिरी ठिकाना है। उसके सात दर्जे हैं। जहन्नमी लोग अपने आमाल के फर्क के लिहाज से सात बड़े गिरोहों में तक्सीम किए जाएंगे और उसके मुताबिक जहन्नम के सात तबकों में से किसी एक तबके में जगह पाएंगे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۖ أَدْخُلُوهُمْ بِسَلَامٍ ۚ أَمِينٌ ۚ وَكَرَعَتْ مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غَلٍّ إِخْوَانًا عَلَى سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ ۚ لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا نَصَبٌ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ ۚ نَبِيُّ عِبَادِي أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ ۚ وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ ۚ أَلَيْسَ

वेशक डरने वाले बागों और चशमों (स्रोतों) में होंगे। दाखिल हो जाओ इनमें सलामती और अमन के साथ। और उनके सीनों की कुदूरतें (मन-मुटाव) हम निकाल देंगे, सब भाई-भाई की तरह रहेंगे तख्ज़ों पर आमने सामने। वहां उन्हें कोई तकलीफ नहीं पहुंचेगी और न वे वहां से निकाले जाएंगे। मेरे बंदों को खबर दे दो कि मैं बख्शने वाला रहमत वाला हूं और मेरी सजा दर्दनाक सजा है। (45-50)

जन्नत की जिंदगी बेखूफ जिंदगी होगी। उसके मुस्तहिक वे लोग करार पाएंगे जिन्होंने दुनिया में खुदा का खूफ किया। दुनिया में खुदा का खूफ आखिरत की बेखूफी की कीमत है।

आपस की रंजिशें दो किस्म की होती हैं। एक सरकशी की वजह से, दूसरी गलतफहमी की वजह से। सरकशी की बिना पर रंजिश और इनाद (दुराव) पैदा होना सबसे बड़ी इज्तिमाई बुराई है। अहले इमान को उसे दुनिया ही में खत्म कर लेना चाहिए। जो लोग इसे दुनिया में खत्म न करें वे आखिरत में जहन्नम का खतरा मोल ले रहे हैं।

दूसरी रंजिश वह है जो गलतफहमी की वजह से पैदा होती है। वह कभी खत्म हो जाती है और कभी तरफैन (पक्षों) के इख़लास के बावजूद आखिर वक्त तक बाकी रहती है। यह दूसरी किस्म की रंजिश आखिरत में मुकम्मल तौर पर खत्म हो जाएगी। क्योंकि आखिरत हकीकतों के काफिल जूरा की दुनिया है। जब तमाम हकीकतें बेमक़ब होकर सामने आ जाएंगी तो एक मुख़्तस आदमी के लिए कोई वजह बाकी न रहेगी कि वह क्यों अपने भाई के खिलाफ ख़ामख़ाह रंजिश रखे।

जन्नत की जिंदगी इतनी लतीफ और नमीस जिंदगी है कि मौजूदा दुनिया में इसका तसख़ुर नहीं किया जा सकता। ताहम मौजूदा दुनिया की लज्जतें और खुशियां आने वाली लज्जतों और खुशियों की दुनिया का एक इब्तिदाई तआरुफ हैं। हर आदमी समझ सकता है कि जिस जन्नत का तआरुफ इतना लज्जत हो वह खुद कितनी ज़्यादा लज्जत होगी।

मौजूदा दुनिया में कोई शख्स बिलफर्ज हर किस्म की लज्जतें जमा कर ले तब भी तरह-तरह की नाखुशगवारियां उसकी हर लज्जत को बेमअना बना देती हैं। मगर जन्नत एक ऐसी जगह है जिसकी लज्जतें हर किस्म की नाखुशगवारियों से पाक होंगी। हदीस में आया है कि अहले जन्नत से कहा जाएगा कि अब तुम हमेशा सेहतमंद रहोगे और कभी बीमार न होगे अब तुम हमेशा जियोगे और कभी न मरोगे। अब तुम हमेशा जवान रहोगे और कभी बूढ़े न होगे। अब तुम हमेशा यहां रहोगे तुम्हें यहां से कभी जाना न होगा।

وَنَبِّئُهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ ۖ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ ۚ قَالُوا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ۚ قَالَ أَبَشَّرْتُمُونِي عَلَى أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فِيمَ تَبَشِّرُونِ ۚ قَالُوا ابْشُرْكَ بِالْحَقِّ فَلَاتَكُنْ مِنَ الْقَانِطِينَ ۚ قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ ۚ

यह हलाकत कहा हुई। यह उनकी उसी दुनिया में हुई जिसे वे अपनी दुनिया समझे हुए थे। जहां की हर चीज उन्हें अपनी साथी और मददगार दिखाई देती थी। खुदा जब हुक्म देता है तो ऐन वही नक्शा आदमी के लिए हलाकत का नक्शा बन जाता है जिसे वह अपने लिए

कामयाबी का नक्शा समझे हुए था। जिस महल के अंदर अपने आपको पाकर आदमी फसल करता है उस महल को इस तरह खंडहर कर दिया जाता है जैसे कि वह एक मलबा था जो आदमी के सिर पर पटक दिया गया।

وَجَاءَ أَهْلَ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿٦٧﴾ قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ ﴿٦٨﴾ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَلَا تُخْزَوْنَ ﴿٦٩﴾ قَالُوا أَوَلَمْ نُنْهَكَ عَنِ الْعَالَمِينَ ﴿٧٠﴾ قَالَ هَؤُلَاءِ بَنِيَّ إِن كُنْتُمْ فَعِلِينَ ﴿٧١﴾

और शहर के लोग खुश होकर आए। उसने कहा ये लोग मेरे महमान हैं, तुम लोग मुझे रुसवा न करो। और तुम अल्लाह से डरो और मुझे जलील न करो। उन्होंने कहा, क्या हमने तुम्हें दुनिया भर के लोगों से मना नहीं कर दिया। उसने कहा ये मेरी बेटियां हैं अगर तुम्हें करना है। (67-71)

कौमे लूत की बस्ती (सदूम) में जो फरिश्ते आए वे निहायत खूबसूरत नौजवान की सूरत में आए। यह गोया फह्लाशी (अश्लीलता) में डूबी हुई उस कौम की जांच का आखिरी पर्चा था। चुनांचे ये लोग अपनी बड़ी हुई सरकशी की बिना पर उन नौजवानों पर टूट पड़े। वे हस्वे आदत उनके साथ बदकारी करना चाहते थे। मगर उन्हें मालूम न था कि वे जिन्हें पुरकशिश नौजवान समझ रहे हैं वे दरअस्त अजाब के फरिश्ते हैं जो सिर्फ इसलिए आए हैं कि उन्हें हमेशा के लिए जलील करके छोड़ दें।

‘मेरी बेटियां’ से मुराद कौम की बेटियां हैं। हजरत लूत ने जब देखा कि जालिम लोग मना करने के बावजूद महमानों पर टूट पड़ रहे हैं तो आपने उनसे कहा कि खुदारा, मेरे महमानों के मामले में मुझे रुसवा न करो। अगर तुम्हें कुछ करना है तो ये कौम की लड़कियां हैं इनमें से जिससे चाहो निकाह कर लो।

لَعَنُوكَ إِيمًا لِّغِي سَكْرَتِهِمْ يَمْهُونَ ﴿٧٢﴾ فَآخَذَهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ ﴿٧٣﴾ فَجَعَلْنَا عَلَيْهِمْ سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ ﴿٧٤﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّلْمُتَوَسِّلِينَ ﴿٧٥﴾ وَإِنَّهَا لَبِسَبِيلٍ مُّقِيمٍ ﴿٧٦﴾ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿٧٧﴾

तेरी जान की कसम, वे अपनी सरमस्ती में मदहोश थे। पस दिन निकलते ही उन्हें चिंघाड़ ने पकड़ लिया। फिर हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उन लोगों पर कंकर के पत्थर की बारिश कर दी। बेशक इसमें निशानियां हैं ध्यान करने वालों के लिए। और यह बस्ती एक सीधी राह पर वाकेअ (स्थिति) है। बेशक इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए। (72-77)

कौमे लूत का यह हाल क्यों हुआ कि वे सरकशी में आपे से बाहर हो गए। इसकी वजह यह

थी कि उन्होंने मामले को हजरत लूत की निस्वत से देखा। चूंकि वे हजरत लूत के मुकाबले में ताकतवर थे। इसलिए उन्होंने समझा कि हम जो चाहें करें। कोई हमारा कुछ बिगाड़ने वाला नहीं।

अगर वे मामले को अल्लाह की निस्वत से देखते तो सूरतेहाल बिल्कुल बरअक्स होती। अब उन्हें मालूम होता कि उनकी सरकशी सरासर मजहकाखेज (हास्यास्पद) है। क्योंकि खुदा के मुकाबले में किसी भी ताकतवर की कोई हैसियत नहीं। चुनांचे ऐन सुबह को उन पर कड़क चमक का शदीद तूफान आया। खुदा ने हवाओं को हुक्म दिया और उन्होंने कौमे लूत की बस्तियों (सदूम और अमूर) पर कंकरियों की बारिश शुरू कर दी। कौम की कौम थोड़ी देर में तबाह होकर रह गई।

इस वाकये में गौर करने वालों के लिए यह नसीहत है कि इस दुनिया में किसी का सम्बन्ध (सामना) हकीकतन इंसान से नहीं बल्कि खुदा से है। अगर आदमी इस हकीकत को जान ले तो उसकी सारी सरकशी खत्म हो जाए।

وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ ظَالِمِينَ ﴿٧٨﴾ فَاتَّقَتْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمْ لِبَايِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿٧٩﴾ وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحِجْرِ الْمُرْسِلِينَ ﴿٨٠﴾ وَإَتَيْنَهُمُ آيَاتِنَا فَكَانُوا عَنْهَا مُعْرِضِينَ ﴿٨١﴾ وَكَانُوا يُخَيِّتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا آمِنِينَ ﴿٨٢﴾ فَآخَذْتَهُمُ الصَّيْحَةُ مُضْطَرِبِينَ ﴿٨٣﴾ فَمَا أَغْنَى عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿٨٤﴾

और ऐका वाले यकीनन जालिम थे। पस हमने उनसे इतिक्काम लिया। और ये दोनों बस्तियां खुले रास्ते पर वाकेअ (स्थिति) हैं। और हिज्र वालों ने भी रसूलों को झुठलाया। और हमने उन्हें अपनी निशानियां दीं। मगर वे उससे मुंह फेरते रहे और वे पहाड़ों को तराशकर उनमें घर बनाते थे कि अमन में रहें। पस उन्हें सुबह के वक्त सज़ा आवाज ने पकड़ लिया। पस उनका किया हुआ उनके कुछ काम न आया। (78-84)

असहाबे ऐका से मुराद हजरत शुऐब की कौम है। उस कौम का अस्त नाम बनी मदयान था। ये लोग मौजूदा तबूक के इलाके में आबाद थे। असहाबे हिज्र से मुराद कौमे समूद है जिसकी तरफ हजरत सालेह मबउस्त हुए। यह इलाका मौजूदा मदीना के शुमाल में वाकेअ था।

असहाबे ऐका की सरकशी ने उन्हें न सिर्फ शिर्क में मुब्तिला किया बल्कि उन्हें बदतरीन अज़्बाकी जराइम तक पहुंचा दिया। हजरत शुऐब की याददिहानी के बावजूद उन्होंने सबक नहीं लिया तो खुदा ने जमीन को हुक्म दिया। इसके बाद यह हुआ कि जो जमीन उनके लिए गहवार-ए-ऐश बनी हुई थी वही उनके लिए गहवार-ए-अजाब बन गई।

कौमे समूद संग तराशी के फन में माहिर थे। उन्होंने पहाड़ों को काट कर उन्हें शानदार घरों में तब्दील कर दिया था। वे समझते थे कि उन्होंने अपनी हिफाजत का आखिरी इतिजाम कर लिया है। जब उन्होंने खुदा की पुकार को नजरअंदाज कर दिया तो खुदा ने हुक्म दिया और उनके अजीम मकानात उनके लिए अजीम कब्रों में तब्दील हो गए।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ ۖ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ ۝

और हमने आसमानों और जमीन को और जो कुछ उनके दर्मियान है हिक्मत (तत्वदर्शिता) के बगैर नहीं बनाया और बिलाशुबह कियामत आने वाली है। पस तुम खूबी के साथ दरगुजर (क्षमा) करो। बेशक तुम्हारा रब सबका खालिक (स्रष्टा) है, जानने वाला है। (85-86)

जमीन व आसमान का मुतालआ बताता है कि यह पूरा निजाम हददर्जे हिक्मत के साथ बनाया गया है। यहां हर चीज ठीक वैसी ही है जैसा कि उसे होना चाहिए। इस पूरे निजाम में सिर्फ ईसान है जो खिलाफे हकीकत रवैया इख्तियार करता है। ईसान और कायनात में यह तजद (अन्तर्निष्ठ) तक्ज करता है कि वह ख़त्म हो। क़ियामत का अक़ीदा इस एतबार से ऐन अक़ी और मतिक्की (तर्कपूर्ण) अक़ीदा है। क्योंकि क़ियामत के सिवा कोई और चीज नहीं है जो इस तजद को ख़त्म करने वाली हो।

दावते इल्लल्लाह के अमल का एक अहम जुज 'एराज' है। यानी मुख़तब जब ग़ैर मुतअल्लिक बहस और झगड़ा छेड़े तो उसके साथ मशगूल होने के बजाए उससे अलग हो जाना। एराज का उसूल इख्तियार किए बग़ैर दावत का काम मुअस्सिर तौर पर नहीं किया जा सकता।

एराज की मस्लेहत यह है कि मदऊ हमेशा दाओ (आह्वानकर्ता) से ग़ैर मुतअल्लिक झगड़े छेड़ता है। अब अगर दाओ यह करे कि हर ऐसे मौके पर मदऊ से लड़ जाए तो ग़ैर मुतअल्लिक उमूर पर टकराव तो ख़ूब होगा मगर अस्त दावती काम बग़ैर हुए पड़ा रह जाएगा।

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا مِنَ الْمَثَانِ وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ ۝ لَا تَتَدَنَّ عَيْنُكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَاهُ أَزْوَاجًا فَهُمْ ۖ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ ۖ وَخَفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ ۖ وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ ۖ كَمَا أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ ۚ الَّذِينَ جَعَلُوا الْقُرْآنَ عِضِينَ ۖ فَوَرَّكَ لَسْتُ لَكُمْ أَجْمَعِينَ ۖ عَمَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝

और हमने तुम्हें सात मसानी और कुरआने अजीम अता किया है। तुम इस दुनिया की मताअ (सुख-सामग्री) की तरफ आंख उठाकर न देखो जो हमने उनमें से मुक्तालिफ लोगों को दी है और उन पर ग़म न करो और ईमान वालों पर अपने शफ़क़त (स्नेह) के बाजू झुका दो और कहो कि मैं एक खुला हुआ डराने वाला हूं। इसी तरह हमने तक्सीम करने वालों पर भी उतारा था जिन्होंने अपने कुरआन के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। पस तेरे रब की कसम, हम उन सबसे जरूर पूछेंगे, जो कुछ वे करते थे। (87-93)

सात मसानी से मुराद सूरह फ़तिहा है। सूरह फ़तिहा पूरे कुरआन का ख़ुतासा (सार) है और बक़िया कुरआन उसकी तफ़सील। यह कुरआन बिलाशुबह जमीन व आसमान की सबसे बड़ी नेमत है। इसका हिदायतनामा होना इसके मानने वालों के लिए आखिरत की कामयाबी की ज़मानत है। और इसका आखिरी किताब होना लाज़िम ठहराता है कि जरूर इसे अपने मुख़लिफ़ (विरोधियों) पर ग़लबा हासिल हो। क्योंकि अगर ग़लबा न हो तो वह आखिरी किताब की हैसियत से बाकी नहीं रह सकती।

दाओ (आह्वानकर्ता) को चाहिए कि जो लोग ईमान नहीं लाते उन्हें सोच कर वह मायूस न हो। बल्कि जो लोग ईमान लाए हैं उन्हें देखकर मुतमइन हो और उनकी दिलजोई और तर्वियत में पूरी तवज़ोह सर्फ़ करे।

कुरआन को टुकड़े-टुकड़े करने से मुराद तौरात को टुकड़े-टुकड़े करना है। यहूद ने अपनी आसमानी किताब को अमलन दो हिस्सों में बांट रखा था। उसकी जो तालीम उनकी ख़्वाहिशात के खिलाफ़ होती उसे वे छोड़ देते और जो उनकी ख़्वाहिशों के मुताबिक़ होती उसे ले लेते। पहली किस्म की आयतों उनके यहां सिर्फ़ तक्ज़ुस (पावनता) के ख़ाने में पड़ी रहतीं। उन पर वे न ज्यादा ध्यान देते और न उन्हें ज्यादा फ़ैलाते। अलबत्ता दूसरी किस्म की आयतों की वे ख़ूब इशाअत (प्रसार) करते। बअल्फ़ज दीगर उन्होंने किताबे ख़ुदावदी को अपने मफ़्फ़ (हिताओं) के ताबेअ बना लिया था न कि ख़ुदाई अहक़ाम के ताबेअ।

किसी चीज को पाने के दो दर्जे हैं। एक है उसके अज्जा (अंशों) को पाना। दूसरा है उसे उसकी कुल्ली हैसियत में पाना। दरख़्त को जब आदमी उसकी कुल्ली हैसियत में पहचान ले तो वह कहता है कि यह दरख़्त है। लेकिन अगर वह उसे उसकी कुल्ली हैसियत में न पहचाने तो वह तना और शाख़ और पत्ती और फूल और फल का जिक़र करेगा। वह उस वाहिद (एक) लफ़्ज़ को न बोल सकेगा जिसके बोलने के बाद उसके तमाम मुतफ़रिफ़ (विभिन्न) अज्जाएँ अस्त में जुड़कर वहदत (एकत्व) की शक्ल इख़्तियार कर लेते हैं।

यही मामला ख़ुदा की किताब का है। ख़ुदा की किताब में बहुत से मुतफ़रिफ़ अहक़ाम हैं। इसी के साथ उसका एक एक कुल्ली और मर्कज़ी नुक्ता है। जो लोग ख़ुदा की किताब में गुम हों वे ख़ुदा की किताब को उसकी कुल्ली हैसियत में पा लेंगे। इसके बरअक्स जो लोग ख़ुद अपने आप में गुम हों वे ख़ुदा की किताब को देखते हैं तो ख़ुदा की किताब उन्हें बस मुक्तालिफ़ और मुतफ़रिफ़ अहक़ाम का मज्मूआ दिखाई देती है। वे उनमें से अपने ज़ैक़ और हालात के मुताबिक़ कोई जुज ले लेते हैं और उस पर इस तरह जोर सर्फ़ करने लगते हैं जैसे कि बस वही एक चीज सब कुछ हो।

दरख़्त की जड़ में पानी देने से पूरे दरख़्त में पानी पहुंच जाता है। इसी तरह जब ख़ुदा की किताब के कुल्ली और मर्कज़ी पहलू को जिंदा किया जाए तो उसके जिंदा होते ही बक़िया तमाम अज्जा लाज़िमी तौर पर जिंदा हो जाते हैं। इसके बरअक्स अगर किसी एक जुज को लेकर उस पर जोर दिया जाए तो उसकी जाहिरी धूम तो मच सकती है मगर उससे दीन का हकीक़ (उत्थान) नहीं होता। क्योंकि उसे जिंदागी मर्कज़ी पहलू के जिंदा होने से मिलती और वह सिरे से जिंदा ही नहीं हुआ।

सूरह-15. अल-हिज्र

715

पारा 14

فَاصْدَعْ بِبَأْتِهِمْ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُبْشِرِينَ ۝ إِنَّا كُنْهِكَ الْمُسْتَعْرِضِينَ ۝
الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝ وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ
يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ ۝ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ ۝
وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ ۝

पस जिस चीज का तुम्हें हुक्म मिला है उसे खोलकर सुना दो और मुशिकों से एराज (उपेक्षा) करो। हम तुम्हारी तरफ से उन मजाक उड़ाने वालों के लिए काफी हैं जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को शरीक करते हैं। पस अनकरीब वे जान लेंगे। और हम जानते हैं कि जो कुछ वे कहते हैं उससे तुम्हारा दिल तंग होता है। पस तुम अपने रब की हम्द (प्रशंसा) के साथ उसकी तस्बीह करो। और सज्दा करने वालों में से बनो और अपने रब की इबादत करो। यहां तक कि तुम्हारे पास यकीनी बात आ जाए। (94-99)

मौजूदा दुनिया में हर आदमी को बोलने और करने की छूट मिली हुई है। इसलिए दाजी जब खुदा की तरफ बुलाने का काम शुरू करता है तो दूसरों की तरफ से तरह-तरह की बेमअना बातें कही जाती हैं। लोग मुखलिफ किस्म के गैर मुतअल्लिक मसले छेड़ देते हैं। ऐसे मौकों पर दाजी के लिए लाजिमी है कि वह इन तमाम बातों के मुक़ाबले में एराज (उपेक्षा) का तरीका इस्तिआर करे। अगर वह ऐसे मौकों पर लोगों से लड़ने लगे तो वह हक की दावत के मुस्बत (सकारात्मक) काम को अंजाम नहीं दे सकता।

इस दुनिया में हक के दाजी के लिए एक ही सकारात्मक तरीका है। वह यह कि वह उलझने वालों से न उलझे। और जो हक उसे मिला है उसका वह पूरी तरह एलान कर दे। हर उस बात को वह खुदा के हवाले कर दे जिससे निपटने की ताकत वह अपने अंदर न पाता हो। दुनिया के नामुवाफिक हालात जब उसे सताएं तो वह आखिरत की तरफ अपनी तवज्जोह को फेर दे। इंसानों की उदासीनता जब उसे तंगदिल करे तो वह खुदा की याद में मशगूल हो जाए।

सच्चे दाजी का हाल यह होता है कि जब उस पर गम की कोई हालत तारी होती है तो वह हमहतन खुदा की तरफ मुतवज्जह हो जाता है। जो चीज वह इंसानों से न पा सका उसे वह खुदा से पाने की कोशिश करता है। नमाज में खुदा के सामने खड़े होने से उसे तस्कीन मिलती है। आंखों से आंसू बहाकर उसके दिल का बोझ हल्का होता है। खुदा के साथ सरगोशियों में मशगूल होकर वह महसूस करता है कि उसने वह सब कुछ पा लिया जो उसे पाना चाहिए था।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ إِنَّا نَحْنُ اللَّهُ وَبَعْدَ السَّاعَةِ ۝ إِنَّا نَحْنُ اللَّهُ وَبَعْدَ السَّاعَةِ ۝ إِنَّا نَحْنُ اللَّهُ وَبَعْدَ السَّاعَةِ ۝
إِنِّي أَمْرُ اللَّهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوهُ سُبْحَنَهُ وَتَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝ يُنَزِّلُ الْمَلَائِكَةَ
بِالرُّوحِ مِنْ أَمْرِهِ عَلَىٰ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ ۚ إِنَّ أَنْذَرَكُمْ إِلَهُ إِلَّا أَنَا ۚ فَاتَّقُونِ ۚ خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ تَعَالَىٰ عَمَّا يُشْرِكُونَ ۝

पारा 14

716

सूरह-16. अन-नहल

आयतें-128

सूरह-16. अन-नहल

रुकूअ-16

(मक्का में नाजिल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

आ गया अल्लाह का फैसला, पस उसकी जल्दी न करो। वह पाक है और बरतर है उससे जिसे वे शरीक ठहराते हैं। वह फरिश्तों को अपने हुक्म की रूह के साथ उतारता है अपने बंदों में से जिस पर चाहता है कि लोगों को खबरदार कर दो कि मेरे सिवा कोई इबादत के लायक नहीं। पस तुम मुझसे डरो। उसने आसमानों और जमीन को हक के साथ पैदा किया है। वह बरतर है उस शिकर से जो वे कर रहे हैं। (1-3)

दीन की हकीकत यह है कि इंसान खुदा की हस्ती और कायनात में उसकी कारफमाई को इस तरह जान ले कि एक खुदा की जात ही उसे सब कुछ नजर आने लगे। उसी से वह डरे और उसी से वह हर किस्म की उम्मीद रखे। एक खुदा उसके कल्ब (दिल) व दिमाग की तमाम तवज्जोहात का मर्कज बन जाए।

यही अल्लाह को इलाह (पूज्य) बनाना और उसकी इबादत करना है। इंसानों के अंदर यही कैफियत पैदा करने के लिए तमाम पैगम्बर इस दुनिया में आए। जो लोग इस अबदियत (बंदगी) का सुबूत दें वे फैसले के दिन कामयाब ठहरेंगे। जो लोग इसके खिलाफ चलें वे फैसले के दिन नामुराद हो जाएंगे। यह फैसला आम इंसानों के लिए कियामत में होगा। मगर पैगम्बर के मुखातबीन के लिए वह इसी दुनिया में शुरू हो जाता है।

कायनात में मुकम्मल वहदत (एकत्व) है और इसी के साथ मुकम्मल मक्सदियत भी। कायनात की वहदत इससे इंकार करती है कि यहां एक खुदा के सिवा किसी और को तवज्जोह का मर्कज बनाना किसी के लिए जाइज हो। और इसकी मक्सदियत तक्जिज करती है कि उसका खात्मा एक वामअना अंजाम पर होना चाहिए न कि बेमअना अंजाम पर। गोया कायनात का निजाम बयकवक्त तौहीद की दलील भी फराहम करता है और आखिरत की दलील भी।

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ تُطْفَةٍ ۖ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُبِينٌ ۝ وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا
لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرْجَوْنَ
وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۝ وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا بِلِغِيهِ إِلَّا
بِشِقِّ الْأَنْفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَوْفٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيرَ
لِتَرْكَبُوهَا وَزِينَةً وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝

उसने इंसान को एक बूंद से बनाया। फिर वह यकायक खुल्लम खुल्ला झगड़ने लगा और उसने चौपायों को बनाया उनमें तुम्हारे लिए पोशाक भी है और खुराक भी और दूसरे फायदे भी, और उनमें से खाते भी हो। और उनमें तुम्हारे लिए रैनक है, जबकि

शाम के वक्त उन्हें लाते हो और जब सुबह के वक्त छोड़ते हो और वे तुम्हारे बोझ ऐसे मकामात तक पहुंचाते हैं जहां तुम सज़ा महनत के बग़ैर नहीं पहुंच सकते थे। बेशक तुम्हारा ख बड़ा श्रेष्ठ (करुणामय) महरबान है। और उसने घोड़े और ख़च्चर और गधे पैदा किए ताकि तुम उन पर सवार हो और जीनत (साज-सज्जा) के लिए भी और वह ऐसी चीज़ें पैदा करता है जो तुम नहीं जानते। (4-8)

इंसान का आग़ाज एक हकीर मादूदा से होता है। मगर इंसान जब बड़ा होता है तो वह खुदा को मद्देमुकाबिल बनने की कोशिश करता है। वह खुदा की कायनात में बेखुदा बनकर रहना चाहता है। अगर इंसान अपनी इब्तिदाई हकीकत को नजर में रखे तो कभी वह ज़मीन में सरकशी का रवैया इख़्तियार न करे।

इंसान को मौजूदा दुनिया में जो नेमतें हासिल हैं उनमें से एक चौपाए हैं। यह गोया कुदरत की जिंदा मशीनें हैं जो इंसान की मुख़लिफ़ ज़रूरियात फ़राहम करने में लगी हुई हैं। ये चौपाए घास और चारा खाते हैं। और उन्हें इंसानी ख़ुराक के लिए गोशत और दूध में तब्दील करते हैं। वे अपने जिस्म पर बाल और ऊन निकालते हैं जिनसे आदमी अपने पोशाक बनाता है। वे इंसान को और उसके सामान को एक जगह से उठाकर दूसरी जगह पहुंचाते हैं। इन चौपायों का गल्ला आदमी के असासे में शामिल होकर उसकी हैसियत और शान में इज़ाफ़ा करता है।

‘और खुदा ऐसी चीज़ें पैदा करता है जिन्हें तुम नहीं जानते’ इससे मुराद वे फायदे हैं जो चौपायों के अलावा दूसरे जराये से हासिल होते हैं। इन दूसरे जराये का एक हिस्सा कदीम जमाने में भी इंसान को हासिल था। और इनका बड़ा हिस्सा मौजूदा जमाने में दरयाफ्त करके इंसान इनसे फायदा उठा रहा है। मिसाल के तौर पर जानवर की जगह मशीन।

दुनिया में इंसान के लिए जो बेशुमार नेमतें हैं वे इंसान ने खुद नहीं बनाई हैं बल्कि वे खुदा की तरफ से उसके लिए मुहय्या की गई हैं। इससे जाहिर होता है कि इस दुनिया का ख़ालिक एक महरबान ख़ालिक है। इसका तक्ज़ज़ है कि इंसान अपने ख़ालिक का शुक्रगुज़र बने और उसका वह हक़ अदा करे जो मोहसिन होने की हैसियत से उसके ऊपर लाज़िम आता है।

وَعَلَى اللَّهِ قَصْدُ السَّبِيلِ وَمِنْ أَجَائِرِ وَلَوْ شَاءَ لَهَدَىٰكُمْ أَجْمَعِينَ ﴿٩﴾

और अल्लाह तक पहुंचती है सीधी राह। और कुछ रास्ते टेढ़े भी हैं और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता। (9)

एक जगह से दूसरी जगह सफर करने के लिए कोई निश्चित सड़क होती है जो सीधी मंजिल तक पहुंचाती है। सवारियां अपनी मंजिले मक्सूद् के मुताबिक इन्हीं सीधी सड़कों पर चलती हैं। ताहम इन सड़कों के अलावा अतराफ में भी रास्ते और पगडंडियां होती हैं। अगर कोई शख्स इन विभिन्न रास्तों को रास्ता समझ कर उन पर चल पड़े तो वह कभी अपनी मल्लूबा मंजिल तक नहीं पहुंच सकता। वह अस्ल मंजिल के दाएं बाएं भटक कर रह जाएगा।

यही मामला खुदा तक पहुंचने का भी है। खुदा ने इंसान को वाजेह तौर पर बता दिया है कि वह कौन सा रास्ता है जो उसे खुदा तक पहुंचाने वाला है। यह रास्ता तौहीद और तकवा का रास्ता है। जो शख्स इस रास्ते को इख़्तियार करेगा वह खुदा तक पहुंचेगा और जो शख्स दूसरे रास्तों पर चलेगा वह इधर-उधर भटक जाएगा। वह कभी अपने रब तक नहीं पहुंच सकता।

दुनिया में हर चीज़ खुदा के मुकर्रर किए हुए रास्ते पर चलती है। खुदा अगर चाहता तो इसी तरह इंसान को भी एक मुकर्रर रास्ते का पाबंद बना देता। मगर इंसान का तख़्ज़ीकी मंसूबा दूसरी अशया (चीज़ें) के तख़्ज़ीकी मंसूबे से मुख़लिफ़ है। दूसरी अशया से सिर्फ़ पाबंदी मल्लूब है। मगर इंसान से जो चीज़ मल्लूब है वह इख़्तियारी पाबंदी है। इसी इख़्तियारी पाबंदी का मौका देने का यह नतीजा है कि कोई शख्स सच्चे रास्ते पर चलता है और कोई उसे छोड़कर खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) राहों में भटकने लगता है।

هُوَ الَّذِي أَنزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً لَّكُمْ مِنْهُ شَرَابٌ وَمِنْهُ شَجَرٌ فِيهِ تُسِيمُونَ ﴿١٠﴾ يُثْبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُونَ وَالنَّخِيلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١١﴾

वही है जिसने आसमान से पानी उतारा, तुम उसमें से पीते हो और उसी से दरख़्त होते हैं जिनमें तुम चराते हो। वह उसी से तुम्हारे लिए खेती और जैतून और खजूर और अंगूर और हर किस्म के फल उगाता है। बेशक इसके अंदर निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (10-11)

बादल ऊपर फज़ा से पानी बरसाते हैं और नीचे ज़मीन पर उससे निहायत बामअना किस्म के नतीजे जाहिर होते हैं। ‘ज़मीन व आसमान’ का इस तरह हमआहंग (अंतरंग) होकर अमल करना वाजेह तौर पर यह साबित करता है कि जो खुदा आसमान का है वही खुदा ज़मीन का भी है।

कायनात के मुख़लिफ़ हिस्सों के दर्मियान कामिल हमआहंगी है। यह हमआहंगी इस बात का कतई सुबूत है कि सारी कायनात का ख़ालिक व मालिक सिर्फ़ एक है। कायनात के मौजूदा ढांचे में एक से ज्यादा खुदा की कोई गुंजाइश नहीं। और जब ख़ालिक व मालिक हकीकतन सिर्फ़ एक खुदा है तो उसके सिवा दूसरी जिस चीज़ को भी माबूदियत (पूज्यता) का दर्जा दिया जाएगा वह सरासर बेबुनियाद होगा।

وَسَخَّرَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنَّجْمُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿١٢﴾ وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٣﴾

और उसने तुम्हारे काम में लगा दिया रात को और दिन को और सूरज को और चांद को और सितारे भी उसके हुक्म से मुसलसल (अधीनस्थ) हैं। बेशक इसमें निशानियां हैं अक्लमंद लोगों के लिए। और जमीन में जो चीजें मुत्तलिफ़ किस्म की तुम्हारे लिए फैलाई, बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सबक हासिल करें। (12-13)

सूरज, चांद सितारे वसीअ खला में इतिहाई सेहत के साथ मुसलसल गर्दिश करते हैं। जमीन में तरह-तरह की मख्लूकत (हैवानात, नबानात, जमादात) वेशुमार तादाद में पाई जाती हैं। पहले में अधीनता का पहलू नुमायां है। और दूसरे में बहुरूपता का पहलू। एक मंजर खुदा की कुदरत के बेपनाह होने को याद दिलाता है। दूसरा मंजर खुदाई सिफात के अनगिनत होने को।

ये मनाजिर इतने हैरतनाक हैं कि जो शख्स उन्हें नजर ठहराकर देखे वह उनसे मुतअस्सिर हुए बगैर नहीं रह सकता। इन चीजों में उसे खुदा की अज्मत और उसकी रबूबियत दिखाई देगी। वह ज़हिरी वाक़ेयात के अंदर छुपे हुए ग़ैबी हक़िक को दर्याफ्त करेगा। वह मख्लूकत को देखकर ख़ालिक की मअरफ़त (अन्तर्ज्ञान) में डूब जाएगा।

وَهُوَ الَّذِي سَخَّرَ الْبَحْرَ لَنَا كُؤَامِنَهُ لِحِمَا طَرِيقًا وَتَسْتَخْرِجُؤَامِنَهُ حَلِيَةً تَلْبَسُوهَا وَتَرَى الْفُلَ الْكَبِيرَ مَوَاقِفٍ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ⑭

और वही है जिसने समुद्र को तुम्हारे काम में लगा दिया ताकि तुम उसमें से ताजा गोश्त खाओ और उससे जेवर निकालो जिसे तुम पहनते हो और तुम कश्तियों को देखते हो कि उसमें चीरती हुई चलती हैं और ताकि तुम उसका फ़ल (अनुग्रह) तलाश करो और ताकि तुम शुक्र करो। (14)

समुद्र में लोहे का टुकड़ा डालें तो फौरन डूबकर पानी की तह में चला जाएगा। मगर जब इसी लोहे को जहाज की शकल दे दी जाए तो वह भारी बोझ लिए हुए समुद्र में तैरने लगता है और एक मुल्क से दूसरे मुल्क में पहुंच जाता है।

यह खुदा का ख़ास कानून है जिसके जरिए उसने समुद्र जैसी मुहीब (भयावह) मूक को इंसान के लिए कारआमद बना रखा है। इसी तरह समुद्र के अंदर हैरतनाक इंतजाम के तहत मछली की सूरत में ताजा गोश्त तैयार किया जाता है और उसके अंदर इंसानी जीवन (साज-सज्जा) के लिए कीमती मोती बनते हैं।

खुदा के लिए दुनिया के इंतजाम की दूसरी सूरतें भी मुमकिन थीं। मसलन ऐसा हो सकता था कि जमीन पर समुद्र न हों। या इंसान जिस तरह खुश्की पर चलता है उसी तरह वह समुद्र में चलने लगे। मगर खुदा ने ऐसा नहीं किया। इसका मक़सद आदमी के अंदर शुक्रगुजारी का जज्बा पैदा करना था। आदमी जब अपने पैरों से समुद्र में न चल सके और कश्ती और जहाज पर बैठे तो निहायत आसानी से समुद्र को उबूर (पार) करने लगे तो उसे

देखकर कुदरती तौर पर आदमी के अंदर शुक्र का जज्बा उभर आता है। वह सोचता है कि जिस समुद्र को मैं अपने कदमों के जरिए पार नहीं कर सकता था, खुदा ने कश्ती और जहाज के जरिए उसे पार करने का इंतजाम कर दिया। वह फज्ज जिसमें मैं खुद नहीं उड़ सकता था, उसमें हवाई जहाज के जरिए निहायत तेज रफ्तारी के साथ उड़ने की सूरत पैदा कर दी। इस किस्म के फ़र्क़ कुदरत के निजाम में इसीलिए रखे गए हैं कि वे इंसान के शुक्र को जगाएं और उसके अंदर अपने रब के लिए शुक्र और एहसानमंदी का जज्बा पैदा करें।

وَالْفَى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِي أَنْ تَمِيدَ بِكُمْ وَأَنْهَارًا وَسُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ⑮
وَعَلَّمَتْهُوَ بِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُونَ ⑯

और उसने जमीन में पहाड़ रख दिए ताकि वह तुम्हें लेकर डगमगाने न लगे और उसने नहरें और रास्ते बनाए ताकि तुम राह पाओ। और बहुत सी दूसरी अलामतें (चिह्न) भी हैं, और लोग तारों से भी रास्ता मालूम करते हैं। (15-16)

यहां दो चीजों का जिक्र है। पहाड़ उभार कर जमीन पर तवाजु (संतुलन) क़यम करने का। और जमीन व आसमान में ऐसी अलामतें (चिह्न) क़यम करने का जो लोगों के लिए रास्ता मालूम करने का काम दें।

भौगोलिक अध्ययन बताता है कि जमीन में जब गहराइयां पैदा हुईं और उनमें पानी जमा होकर समुद्र बने तो जमीन हिलने लगी। इसके बाद खुश्की पर ऊंचे पहाड़ उभर आए। इस तरह दोतरफ़ अमल के नतीजे में जमीन पर तवाजु (संतुलन) क़यम हो गया। अगर जमीन की सतह पर यह तवाजु न होता तो इंसान के लिए यहां ज़िंदगी नामुमकिन या कम से कम सख़्त दुश्वार हो जाती।

इसी तरह इंसान को अपने सफर और यातायात के लिए अलामतों की जरूरत है जिनकी मदद से वह सप्त को पहचाने और भटके बगैर अपनी मंजिल पर पहुंच जाए। इसका इंतजाम भी यहां कामिल तौर पर मौजूद है। कदीम जमाने का इंसान दरियाओं और सितारों जैसी चीजों से अपने रास्ते पहचानता था। अब वह मकनातीसी आलात (चुंबकीय उपकरणों) की मदद से अपना रास्ता और दूसरी जरूरी बातें मालूम करता है। खुश्की और तरी, तथा फज्जों और ख़लाओं (अंतरिक्ष) में तेज रफ़्तार परवाज़ इसी की मदद से मुमकिन होती हैं। अगर इस किस्म की अलामतें मौजूद न हों तो इंसानी सरगमियां इतिहाई हद तक सिमट कर रह जाएं।

أَفَنَنْ يَخْلُقُ كَمَنْ لَا يَخْلُقُ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ ⑰ وَإِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللَّهِ لَا تُحْصُوهَا إِنَّ اللَّهَ لَعَفُورٌ رَحِيمٌ ⑱ وَاللَّهُ يَعْلَمُ مَا تُسْرُونَ وَمَا تَعْلَنُونَ ⑲

फिर क्या जो पैदा करता है वह बराबर है उसके जो कुछ पैदा नहीं कर सकता, क्या तुम सोचते नहीं। अगर तुम अल्लाह की नेमतों को गिनो तो तुम उन्हें गिन न सकोगे,

बेशक अल्लाह बख्शने वाला, महरबान है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो तुम जाहिर करते हो। (17-19)

दुनिया में जितनी चीजें हैं उनमें से किसी के अंदर तख्लीक (अदम से वजूद में लाने) की ताकत नहीं। इससे साबित है कि दुनिया अपनी खालिक आप नहीं है। उसका खालिक वही हो सकता है जिसके अंदर यह ताकत हो कि एक चीज जो मौजूद नहीं है उसे मौजूद कर दे। इसलिए एक खुदा का अक्रीदा ऐन फितरी है। कायनात की तौजीह एक ऐसे खुदा को माने बगैर नहीं हो सकती जिसके अंदर तख्लीक की सलाहियत कामिल दर्जे में पाई जाए।

मुशिरकीन ने खुदा के सिवा जितने खुदा के शरीक गढ़े हैं। या मुकिरीन ने खुदा को छोड़कर जिन दूसरी चीजों को खुदा का बदल बनाने की कोशिश की है उनमें से कोई भी नहीं जिसके अंदर जाती तख्लीक (निजी रचनाशीलता) की सलाहियत हो। यही वाक्या यह साबित करने के लिए काफी है कि शिर्क और इल्हाद (नास्तिकता) के गढ़े हुए तमाम खुदा सरासर फर्जी हैं। क्योंकि जिसके अंदर तख्लीकी कुव्वत न हो उसके मुत्तअल्लिक यह दावा करना सरासर बेबुनियाद है कि वह एक मौजूद कायनात का खुदा है। जो खुद जाती वजूद न रखता हो वह किस तरह दूसरी चीज को वजूद दे सकता है।

खुदा को अपने बंदों से सबसे ज्यादा जो चीज मल्लूब हैं वह उसकी नेमतों पर शुक्रगुजारी है। अगरचे खुदा की नेमतें इससे ज्यादा हैं कि कोई शख्स भी उनका वाकई शुक्र अदा कर सके। मगर खुदा बेनियाज (निस्पृह) है। वह ज्यादा नेमत के लिए थोड़ा शुक्र भी कुबूल कर लेता है। ताहम यह शुक्र हकीकी शुक्र होना चाहिए न कि महज रस्मी क्रिस्म की हम्दखानी (स्तुतिगान)।

وَالَّذِينَ يَذُنُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ ۖ أَمْوَئٌ
غَيْرُ أَحْيَاءٍ ۖ وَمَا يَشْعُرُونَ ۖ أَيَّانَ يُبْعَثُونَ ۚ إِنَّهُمْ إِلَى اللَّهِ وَاحِدٌ ۚ فَالَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ قُلُوبُهُمْ مُنْكَرَةٌ وَهُمْ مُسْتَكْبِرُونَ ۖ لَا جَرَمَ
أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِينَ ۝

और जिन्हें लोग अल्लाह के सिवा पुकारते हैं वे किसी चीज को पैदा नहीं कर सकते और वे खुद पैदा किए हुए हैं। वे मुर्दा हैं जिनमें जान नहीं और वे नहीं जानते कि वे कब उठाए जाएंगे। तुम्हारा माबूद (पूज्य) एक ही माबूद है मगर जो लोग आखिरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल मुँकर हैं और वे तकबुर (घमंड) करते हैं अल्लाह यकीनन जानता है जो कुछ वे छुपाते हैं और जो कुछ वे जाहिर करते हैं। बेशक वह तकबुर करने वालों को पसंद नहीं करता। (20-23)

अक्सर शिर्क की सूरत यह होती है कि पिछले बुजुर्गों को मुकद्दस और मुकर्रब मान कर लोग उनकी परस्तिश करने लगते हैं। हालांकि यह परस्तिश सरासर अहमकाना होती है। जिन

दफन हुए बुजुर्गों की बड़ी-बड़ी कब्रें बनाकर लोग उनसे मुरादें मांगते हैं वे खुद मुर्दा हालत में आलमे बरजख में पड़े होते हैं। उन्हें खुद अपने बारे में भी मालूम नहीं होता कि वे कब उठाए जाएंगे, कुजा यह कि वे किसी दूसरे की मदद करें।

‘वे तकबुर करते हैं’ का मतलब यह नहीं कि वे खुदा से तकबुर (घमंड) करते हैं। जमीन व आसमान के खालिक से तकबुर की जुरअत कौन करेगा। इससे मुराद दरअसल खुदा के दाअी से तकबुर है न कि खुद खुदा से तकबुर। अल्लाह का जो बंदा तौहीद का दाअी बनकर उठता है वह दुनियावी एतबार से अपने मुखातबीन के मुकाबले में हमेशा कम होता है। क्योंकि मुखातब रवाजी मजहब का हामी होने की वजह से वक्त के नक्शे में ऊंचा दर्जा हासिल किए हुए होता है जबकि हक का दाअी ‘नए दीन’ का अलमबरदार होने की बिना पर इन दर्जात व मकामात से महरूम होता है। वह मुखातबीन को अपने मुकाबले में माददी एतबार से कमतर नजर आता है। चुनांचे उनके अंदर बरतरी की नफिसयात पैदा हो जाती है। वे उसकी बात को बेवजन समझ कर उसे नजरअंदाज कर देते हैं।

ऐसे लोगों का केस अगरचे तकबुर (घमंड) का केस होता है लेकिन वे उसे उसूली और नजरियाती केस बनाकर पेश करते हैं। मगर अल्लाह को लोगों की अंदरूनी नफिसयात का हाल खूब मालूम है। अल्लाह उनकी अस्त हकीकत के एतबार से उसके साथ सुलूक करेगा न कि उनकी जाहिरी बातों के एतबार से।

وَلَا ذَاقِيلَ لَهُمْ ۖ مَا ذَا آتَزَلْ رَبُّكُمْ ۚ قَالُوا ۖ سَاطِئِرُ الْآوَالِينَ ۖ لِيَحْمِلُوْا
أَوْزَارَهُمْ كَالِئِذِهِمُ الْقِيَمَةُ ۚ وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّوْهُمْ ۖ بَغَيْرِ عِلْمٍ
الْأَسَاءِ مَا يَرْزُقُونَ ۝

और जब उनसे कहा जाए कि तुम्हारे रब ने क्या चीज उतारी है तो कहते हैं कि अगले लोगों की कहानियां हैं, ताकि वे कियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे उठाएं और उन लोगों के बोझ में से भी जिन्हें वे बगैर किसी इल्म के गुमराह कर रहे हैं। याद रखो बहुत बुरा है वह बोझ जिसे वे उठा रहे हैं। (24-25)

रवायात में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जब मक्का में नुबुव्वत का दावा किया और इसकी खबर धीरे-धीरे अरब के दूसरे कबाइल में पहुंची तो वे मुलाकात के वक्त मक्का के सरदारों से पूछते कि जिस शख्स ने नुबुव्वत का दावा किया है उसके बारे में तुम्हारी क्या राय है। इसके जवाब में मक्का के सरदार कोई ऐसी बात कह देते जिससे आपकी शख्सियत और आपके कलाम के बारे में लोग शक में मुब्तिला हो जाएं। (तफसीर मज़हरी)

इसका एक तरीका यह है कि बात को बिगड़े हुए अल्फज में बयान किया जाए। मसलन कुआन मैफ़ाबरोका जोज़िफ़ है उसके मुत्तअल्लिक वे पिछले फ़ाबरोका इतिहास का लफ़्ज़ भी बोल सकते थे मगर उसे उन्होंने ‘पिछले लोगों के किस्से कहानियों’ का नाम दे दिया। हक की दावत से लोगों को इस तरह फेरना या मुशतबह (संदिग्ध) करना खुदा के नजदीक

बदतरीन जुर्म है। ऐसे लोगों को कियामत के दिन दुःख अजाब होगा। क्योंकि वे न सिर्फ खुद गुमराह हुए बल्कि दूसरों को गुमराह करने का जरिया भी बने।

قَدْ نَكَرَ الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَنَّ اللَّهَ بُنِيَائَهُمْ مِنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ
السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَأَتَاهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ ۖ ثُمَّ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ يُخْرِجُهم وَيَقُولُ بَيْنَ يَدَيْهِمْ أَتَى الَّذِينَ كُنْتُمْ تَشَاقُقُونَ فِيهِمْ قَالِ
الَّذِينَ أَوْفُوا الْعَهْدَ إِن الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوءَ عَلَى الْكَافِرِينَ ۝

उनसे पहले वालों ने भी तदबीरों कीं। फिर अल्लाह उनकी इमारत पर बुनियादों से आ गया। पस छत ऊपर से उनके ऊपर गिर पड़ी और उन पर अजाब वहां से आ गया जहां से उन्हें गुमान भी न था। फिर कियामत के दिन अल्लाह उन्हें रुखा करेगा और कहेगा कि वे मेरे शरीक कहां हैं जिनके लिए तुम झगड़ा किया करते थे। जिन्हें इल्म दिया गया था वे कहेंगे कि आज रुखाई और अजाब मुंकिरों पर है। (26-27)

जो लोग झूठी बुनियादों पर बड़ाई का मकाम हासिल किए हुए हैं, वे जब किसी हक की दावत को उठता हुआ देखते हैं तो उन्हें अपने मकाम के लिए खतरा महसूस होने लगता है। वे अपने मकाम के लिए (सुरक्षा) के लिए यह तदबीर करते हैं कि हक की दावत के खिलाफ ऐसी फितनाअगेज बातें फैलाते हैं जिससे अवाग उसके बारे में मुशतबह हो जाएं और उसके गिर्द जमा न हो सकें।

मगर हक की दावत के खिलाफ ऐसे लोगों की तदबीरें कभी कामयाब नहीं होतीं। हक के मुखालिफीन अपनी जिन बुनियादों पर भरोसा कर रहे थे ऐन वही बुनियादें इस तरह कमजोर साबित होती हैं कि उनकी छत उनके ऊपर गिर पड़ती है। कभी ऐसा होता है कि कोई कुदरती जलजला उनकी बुनियादों को हिलाकर उनकी तामीरात को उनके ऊपर गिरा देता है। कभी उनके अवाग उनका साथ छोड़कर हक की सफों में शामिल हो जाते हैं। और इस तरह वे अपने मददगारों को खोकर मजबूर हो जाते हैं कि हक की दावत के आगे हथियार डाल दें। यह अंजाम अपनी आखिरी और तक्मीली सूरत में कियामत में सामने आएगा। जबकि मुंकिरीन अपनी अबदी जिल्लत को देखेंगे और कुछ न कर सकेंगे।

الَّذِينَ تَتَوَكَّلُ عَلَى الْمَلِكِ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ مِنْ
سُوءٍ ۚ بَلَىٰ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۖ فَادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ
خَالِدِينَ فِيهَا فَلَيْسَ مَثْوًى الْمُتَكَبِّرِينَ ۝

जिन लोगों को फरिश्ते इस हाल में वफ़त (मौत) देंगे कि वे अपनी जानों पर जुल्म कर

रहे होंगे तो उस वक्त वे सिर डाल देंगे कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे, हां बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते थे। अब जहन्नम के दरवाजों में दाखिल हो जाओ। उसमें हमेशा हमेशा रहो। पस कैसा बुरा ठिकाना है तकबुर (घमंड) करने वालों का। (28-29)

तकबुर (घमंड) सबसे बड़ा जुर्म है। खुदा इंसान की हर गलती माफ कर देगा मगर वह तकबुर को माफ नहीं करेगा।

तकबुर के इजहार की दो बड़ी सूरतें हैं। एक तकबुर वह है जो आम बंदों के दर्मियान जाहिर होता है। एक आदमी ताकत, दौलत और दीगर साजोसामान में अपने को दूसरे के मुकाबले में ज्यादा पाता है, इस बिना पर वह उससे तकबुर करने लगता है।

दूसरा ज्यादा शदीद तकबुर वह है जो हक के दाओं के साथ किया जाता है। खुदा का एक बंदा खुदा के सच्चे दीन की दावत लेकर उठता है। अब जो लोग झूठे दीन की बुनियाद पर बड़ाई का मकाम हासिल किए हुए हैं, वे महसूस करते हैं कि उनके ऊपर इसकी जद पड़ रही है। वे सच्चे दीन के मेयार पर बेकीमत करार पा रहे हैं। यह देखकर वे बिफर उठते हैं। और हक के दाओं को मुतकब्बिराना नफिसयात (घमंड-भाव) के साथ नजरअंदाज कर देते हैं।

आदमी जब किसी के मुकाबले में तकबुर करता है तो इसलिए करता है कि वह समझता है कि वह उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। मगर जब मौत के फरिश्ते आएंगे और उसे बेबस कर देंगे, उस वक्त उसे मालूम होगा कि मामला किसी इंसान का नहीं बल्कि खुदा का था, इंसान किसी दूसरे इंसान के मुकाबले में ताकतवर हो सकता है मगर खुदा के मुकाबले में कौन ताकतवर है। खुदा के फरिश्ते जब इंसान को अपने कब्जे में लेते हैं तो उस वक्त हर आदमी हथियार डाल देता है। मगर अल्लाह का सच्चा बंदा वह है जो उस मौके के आने से पहले खुदा के आगे हथियार डाल दे।

وَقِيلَ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا إِذَا أَنْزَلْ رَبُّكُمْ قَوْلًا خَيْرًا لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا فِي هَذِهِ
الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۚ وَلِكُلِّ أُمَّةٍ خَيْرٌ وَلِنَعْمَدَارُ الْمُتَّقِينَ ۖ جَنَّتٌ عَدْنٌ
يَدْخُلُونَهَا يُجْرَى مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُمْ فِيهَا مَا يَشَاءُونَ ۚ كَذَلِكَ يَجْزِي
اللَّهُ الْمُتَّقِينَ ۝ الَّذِينَ تَتَوَكَّلُ عَلَى الْمَلِكِ طَائِفِينَ يَقُولُونَ سَلَامٌ عَلَيْكُمْ
ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝

और जो तकवा (ईश-परायणता) वाले हैं उनसे कहा गया कि तुम्हारे रब ने क्या चीज उतारी है तो उन्होंने कहा कि नेक बात। जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भी भलाई है और आखिरत का घर बेहतर है और क्या खूब घर है तकवा वालों का। हमेशा रहने के बाग हैं जिनमें वे दाखिल होंगे, उनके नीचे से नहरें जारी होंगी। उनके लिए वहां सब कुछ होगा जो वे चाहें, अल्लाह परहेजगारों को ऐसा ही बदला देगा। जिनकी रूह फरिश्ते इस हालत में कब्ज करते हैं कि वे पाक हैं। फरिश्ते कहते हैं तुम पर

सलामती हो, जन्नत में दाखिल हो जाओ अपने आमाल के बदले में। (30-32)

जो लोग किन्न (अहं, बड़ाई) की नफिसयात में मुब्तिला हों वे खुदा की बात सुनते हैं तो उनका जेहन उल्टी सन्त में चलने लगता है। इस बिना पर वे उससे नसीहत नहीं ले पाते। मगर जिस शख्स के दिल में अल्लाह का डर हो वह खुदा की बात को पूरी आमादगी के साथ सुनेगा। ऐसे शख्स के लिए अल्लाह का कलाम मअरफत (अन्तर्ज्ञान) का जरिया बन जाता है। उसे इसके अंदर हकीकत की झलकियां दिखाई देने लगती हैं।

जन्नत की सिफत यह है कि वहां वह सब कुछ है जो इंसान चाहे। यह ऐसी चीज है जो कभी किसी इंसान को, यहां तक कि बड़े-बड़े बादशाहों को भी हासिल न हो सकी। मौजूदा दुनिया में इंसान की महदूदियत (सीमितता) और खारजी हालात की ना मुवाफिकत (प्रतिकूलता) की बिना पर कभी ऐसा नहीं होता कि इंसान जो कुछ चाहता है उसे हासिल कर ले। यह तसव्वुर कि 'जन्नत में वह सब कुछ होगा जो इंसान चाहेगा' इतना पुरकैफ (आनंदमय) है कि इसकी खातिर जो कुर्बानी भी देनी पड़े वह यकीनन हल्की है।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرٌ رَّبِّكَ كَذَلِكَ فَعَلَ
الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللَّهُ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿٣٠﴾
فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا عَمِلُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهٖ يَسْتَهْزِءُونَ ﴿٣١﴾

क्या ये लोग इसके मुंतिजर हैं कि उनके पास फरिश्ते आएंगे या तुम्हारे रब का हुक्म आ जाए। ऐसा ही इनसे पहले वालों ने किया। और अल्लाह ने उन पर जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद ही अपने ऊपर जुल्म कर रहे थे। फिर उन्हें उनके बुरे काम की सजाएं मिलीं। और जिस चीज का वे मजाक उड़ते थे उसने उन्हें घेर लिया। (33-34)

खुदा की बात इंसान के सामने अव्वलन दलाइल (तर्कों) के जरिए बयान की जाती है। यह दावती मरहला होता है। अगर वह दलाइल के जरिए न माने तो फिर वह वक्त आ जाता है जबकि इफिरादी मौत या इज्तिमाई कियामत की सूरत में उसे लोगों के सामने खोल दिया जाए।

आदमी के सामने अगर खुदा की बात दलाइल के जरिए आए और वह उसे नजरअंजाम कर दे तो गोया वह उस दूसरे मरहले का इतिजार् कर रहा है जबकि खुदा और उसके फरिश्ते जाहिर हो जाएं और आदमी उस बात को जिल्लत के साथ मानने पर मजबूर हो जाए जिसे उसे इज्जत के साथ मानने का मौअद दिया गया था मगर उसने नहीं माना।

وَقَالَ الَّذِينَ أَشْرَكُوا لَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا عَلِمْنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ نَحْنُ
وَلَا آبَاؤُنَا وَلَا أَحَرَمَتُنَا مِنْ دُونِهِ مِنْ شَيْءٍ كَذَلِكَ فَعَلَ الَّذِينَ مِنْ
قَبْلِهِمْ فَهَلْ عَلَى الرَّسُولِ إِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِينُ ﴿٣٢﴾

और जिन लोगों ने शिर्क किया वे कहते हैं, अगर अल्लाह चाहता तो हम उसके सिवा किसी चीज की इबादत न करते, न हम और न हमारे बाप दादा, और न हम उसके बगैर किसी चीज को हराम ठहराते। ऐसा ही इनसे पहले वालों ने किया था, पस रसूलों के जिम्मे तो सिर्फ साफ्साफ पहुंचा देना है। (35)

ग्राफित इंसान अपने हक से इहिराफ को जाइज साबित करने के लिए जो बातें करता है उसमें से एक बात यह है कि जब इस दुनिया में हर चीज खुदा की मर्जी से होती है तो हमारा मौजूदा अमल भी खुदा की मर्जी से है। उसकी मर्जी न होती तो हम ऐसा कर ही न पाते। अगर वाकई खुदा को हमारे काम पसंद न होते तो वह हमें ऐसा काम करने क्यों देता। फिर तो ऐसा होना चाहिए था कि जब भी हम उसकी मर्जी के खिलाफ कोई काम करें तो वह फौरन हमें रोक दे।

यह बात आदमी सिर्फ इसलिए कहता है कि वह हक नाहक के मामले में संजीदा नहीं होता। अगर वह संजीदा हो तो फौरन उसकी समझ में आ जाए कि उसे मौजूदा अमल की जो छूट है वह इन्तेहान की वजह से है न कि खुदा की पसंद की वजह से।

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الصَّغَاوَاتِ
فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللَّهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلَالَةُ فَبُذِّلُوا فِي
الْأَرْضِ فَأَنْظِرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿٣٦﴾ إِنَّ تَحْرُصَ عَلَى هُدَاهُمْ
فَإِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ يُضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَاصِرِينَ ﴿٣٧﴾

और हमने हर उम्मत में एक रसूल भेजा कि अल्लाह की इबादत करो और तमात (बड़े हुए उपद्रवी) से बचो, पस उनमें से कुछ को अल्लाह ने हिदायत दी और किसी पर गुमराही साबित हुई। पस जमीन में चल फिरकर देखो कि झुठलाने वालों का अंजाम क्या हुआ। अगर तुम उसकी हिदायत के हरीस (लालसा रखने वाले) हो तो अल्लाह उसे हिदायत नहीं देता जिसे वह गुमराह कर देता है और उनका कोई मददगार नहीं। (36-37)

खुदा ने कहीं बराहेरास्त अपने पैगम्बर भेजे और कहीं पैगम्बर के नायब और नुमाइंद के जरिए बिलवास्ता तौर पर अपना पैगाम पहुंचाने का इतिजाम किया। उन तमाम लोगों ने इंसान को जिस चीज की तत्कीन की वह यही थी कि इबादत का हक सिर्फ एक खुदा को है। शैतान इस इबादत से इंसान को फेरने की कोशिश करता है, इसलिए आदमी को चाहिए कि वह शैतानी तर्गीबात से बचे। वरना वह आदमी को झूठे माबूदों की परस्तिश के रास्ते पर डाल देगा।

हिदायत अगरचे वाजेह है। मगर उसे कुबूल करने या न करने का इहिसार तमाभतर इस बात पर है कि आदमी उसके बारे में कितना संजीदा है। जो शख्स हिदायत पर संजीदगी के साथ गौर करेगा उसे उसकी सदाकत को पाने में देर नहीं लगेगी। मगर जो शख्स इसके बारे में संजीदा न हो वह मामूली-मामूली बातों पर अटक कर रह जाएगा। ऐसा आदमी कभी हक को नहीं पा सकता।

وَأَفْسُوا بِاللَّهِ جَهْدَ آيَاتِهِمْ لَا يَبْعَثُ اللَّهُ مَنْ يَمُوتُ بَلَى وَعَدًا عَلَيْهِمْ
حَقًّا وَلَكِنْ أَكْثَرُ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۖ لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي يُخْتَلَفُونَ فِيهِ
وَلِيَعْلَمَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَهُمْ كَانُوا كَذِبِينَ ۖ إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ
أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝

और ये लोग अल्लाह की कसमें खाते हैं, सख्त कसमें कि जो शख्स मर जाएगा अल्लाह उसे नहीं उठाएगा। हां, यह उसके ऊपर एक पक्का वादा है, लेकिन अक्सर लोग नहीं जानते। ताकि उनके सामने उस चीज को खोल दे जिसमें वे इस्तेलाफ (मतभेद) कर रहे हैं और इंकार करने वाले लोग जान लें कि वे झूठे थे। जब हम किसी चीज का इरादा करते हैं तो इतना ही हमारा कहना होता है कि हम उसे कहते हैं हो जा तो वह हो जाती है। (38-40)

मौजूदा दुनिया कुछ इस ढंग से बनी है कि यहां हक और नाहक इस तरह साबित नहीं हो पाते कि किसी के लिए इंकार की गुंजाइश बाकी न रहे। यहां आदमी हर दलील को काटने के लिए कुछ अल्फाज पा लेता है। हर साबितशुदा चीज को मुशतबह (संदिग्ध) करने के लिए वह कोई न कोई बात निकाल लेता है।

यह बात कायनात के मिजाज के सरासर खिलाफ है। माददी उलूम (भौतिक ज्ञानों) में आदमी के लिए मुमकिन होता है कि वह कतई नताइज तक पहुंच सके। इसी तरह यह भी जरूरी होना चाहिए कि इंसानी मामलात में कतई हक्काइक खुलकर सामने आ जाएं। यही वह काम है जो कियामत में अंजाम पाएगा। शाह अब्दुल कादिर देहलवी लिखते हैं 'इस जहान में बहुत बातों का शुबह रहा। किसी ने अल्लाह को माना और कोई उसका मुक़िर रहा तो दूसरा जहान होना लाजिम है कि झगड़े तहकीक हों। सच और झूठ जुदा हो और मुत्तीअ (आज्ञाकारी) और मुक़िर अपना किया जाए।'

وَالَّذِينَ هَاجَرُوا فِي اللَّهِ مِنْ بَعْدِ مَا ظَلَمُوا لَنَبُوءَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا
حَسَنَةً وَلَآجَرُ الْآخِرَةِ الْكَبِيرُ ۖ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ۝ الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَلَى
رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ۝

और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए अपना वतन छोड़ा, बाद इसके कि उन पर जुल्म किया गया, हम उन्हें दुनिया में जरूर अच्छा ठिकाना देंगे और आखिरत का सवाब तो बहुत बड़ा है, काश वे जानते। वे ऐसे हैं जो सत्र करते हैं और अपने ख पर भरोसा रखते हैं। (41-42)

अक्सर मुफ़स्सरीन ने इस आयत को उन 80 सहाबा से मुतअल्लिक माना है जो मक्का में इस्लाम के मुख़ालिफीन की ज्यादतियों का निशाना बन रहे थे और बिलआखिर अपना वतन छोड़कर हबश चले गए। यह वाक्या मदीना की हिजरत से पहले मक्की दौर में पेश आया।

हक के मामले में हमेशा दो गिरोह होते हैं। एक वह जो हक को इतनी अहमियत न दें कि उसकी खातिर मिली हुई चीजों को छोड़ दें या अपनी जिंदगी का नक्शा बदल लें। दूसरे वे लोग जो हक को इस तरह इख़्तियार करते हैं कि वही उनके नजदीक सबसे अहम चीज बन जाता है। वे उसकी खातिर हर तकलीफ को सहने के लिए तैयार रहते हैं। वे हक को अपना अहमतरीन मसला बना लेते हैं। वे हर दूसरी चीज को छोड़ सकते हैं मगर हक को नहीं छोड़ सकते।

जाहिर है कि दोनों किस्म के गिरोहों का अंजाम एकसां (समान) नहीं हो सकता। जिन लोगों ने हक को अपनी जिंदगी में अहमतरीन मक़ाम दिया वे खुदा की अबदी नेमतों के मुस्तहक़ ठहरें। और जिन लोगों ने हक को नज़अंदाज किया उन्हें खुदा भी नज़अंदाज कर देगा। वे खुदा के यहां कोई इज्जत का मक़ाम नहीं पा सकते। और न वे खुदा की नेमतों में हिस्सेदार बन सकते।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رَجَالًا نُوْحِي إِلَيْهِمْ فَسَاءَ مَا يَكُونُ لَكُمْ أَنْ تُنْتَهَوْا
لَا تَعْلَمُونَ ۖ بِالْبَيِّنَاتِ وَالزُّبُرِ ۖ وَأَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ
إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ۝

और हमने तुमसे पहले भी आदमियों ही को रसूल बनाकर भेजा, जिनकी तरफ हम 'वही' (प्रकाशना) करते थे, पस अहले इल्म से पूछ लो अगर तुम नहीं जानते। हमने भेजा था उन्हें दलाइल (स्पष्ट प्रमाणों) और किताबों के साथ। और हमने तुम पर भी याददिहानी (अनुस्मृति) उतारी ताकि तुम लोगों पर उस चीज को वाजह कर दो जो उनकी तरफ उतारी गई है और ताकि वे ग़ौर करें। (43-44)

'अहले इल्म' से मुराद यहां अहले किताब हैं। या वे लोग जो पिछली उम्मतों और पिछले पैगम्बरों के तारीखी हालात का इल्म रखते हैं। जो चीज उनसे पूछने के लिए फरमाई गई है वह यह नहीं है कि हक क्या है और नाहक क्या। बल्कि यह कि पिछले जमानों में जो पैगम्बर आए वे इंसान थे या ग़ैर इंसान। मक्का वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इंसान होने को इस बात की दलील बनाते थे कि आप खुदा के पैगम्बर नहीं हैं। उनसे कहा गया कि जिन कौमों में इससे पहले पैगम्बर आते रहे हैं (मसलन यहूद) उनसे पूछ कर मालूम कर लो कि उनके यहां जो पैगम्बर आए वे इंसान थे या फरिश्ते।

पैगम्बर सिर्फ 'याददिहानी' के लिए आता है, यह याददिहानी अस्लन दलाइल के जरिए होती है। ताहम यह भी जरूरी है कि पैगम्बर अपने आपको इस मामले में पूरी तरह संजीदा साबित करे। अगर एक शख्स लोगों को जन्नत और जहन्नम से बाख़बर करे और इसी के साथ

वह ऐसे कामों में मशगूल हो जो जन्नत और जहन्नम के मामले में उसे ग़ैर संजीदा साबित करते हों तो उसका दावती काम लोगों की नजर में मजाक बनकर रह जाएगा।

ताहम दावत (आह्वान) चाहे कितने ही आला दर्जे पर और कितने ही कामिल अंदाज में पेश कर दी जाए उससे वही लोग फायदा उठाएंगे जो खुद भी उस पर ध्यान दें। जो लोग ध्यान न दें वे किसी भी हालत में हक की दावत से फ़ैज़याब नहीं हो सकते।

أَفَأَمِّنَ الَّذِينَ مَكَرُوا السَّيِّئَاتِ أَنْ يَخْسِفَ اللَّهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُونَ^{٤٩} أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِي تَقْلُيبِهِمْ فَبَاءَهُمْ
بِعُجْزِهِمْ^{٥٠} أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلَى تَخَوُّفٍ فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوفٌ رَحِيمٌ^{٥١}

क्या वे लोग जो बुरी तदबीर कर रहे हैं वे इस बात से बेफ़िक्र हैं कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा दे या उन पर अज़ाब वहां से आ जाए जहां से उन्हें गुमान भी न हो या उन्हें चलते फिरते पकड़ ले तो वे लोग खुदा को आजिज नहीं कर सकते या उन्हें अंदेशे की हालत में पकड़ ले। पस तुम्हारा ख़ाफ़ि (करुणामय) और महरबान है। (45-47)

यह आयत मक्की दौर के आखिरी ज़माने की है जबकि मक्का के मुखालिफ़ीन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कल्ल की साजिशें कर रहे थे। पैग़म्बर खुदा की ज़मीन पर खुदा का नुमाईदा होता है। इसलिए पैग़म्बर के ख़िलाफ़ इस किस्म में साजिश करना ऐसे ही लोगों का काम हो सकता है जो खुदा की पकड़ से बिल्कुल बेख़ौफ़ हो चुके हों।

हालांकि खुदा इंसान के ऊपर इतना ज्यादा काबूपाफ़ता है कि वह चाहे तो इंसान को ज़मीन में धंसा दे या जिस मक़म को आदमी अपने लिए महफूज़ समझे हुए है वहीं से उसके लिए एक अज़ाब फट पड़े। या खुदा ऐसा करे कि लोगों की सरगर्मियों के दौरान उन्हें पकड़ ले, फिर वे अपने आपको उससे बचा न सकें। खुदा यह भी कर सकता है कि वह इस तरह उन्हें पकड़े कि वे ख़तरे को महसूस कर रहे हों और उसके लिए पूरी तरह बेदार हों।

गरज खुदा हर हालत में इंसान को पकड़ सकता है। अगर वह लोगों को शरारतें करते हुए देखता है और इसके बावजूद वह उन्हें नहीं पकड़ता तो लोगों को बेख़ौफ़ नहीं होना चाहिए। क्योंकि यह उसकी इम्तेहान की मस्तेहत है न कि उसका इज्ज (निर्बलता)।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى مَا خَلَقَ اللَّهُ مِنْ شَيْءٍ يَتَفَتَّحُونَ ظُلُومَ عَنِ الْيَمِينِ وَالشِّمَالِ
سُجَّدًا لِلَّهِ وَهُمْ دَاخِرُونَ^{٥٢} وَلِلَّهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ مِنْ دَابَّةٍ وَالْمَلَائِكَةِ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ^{٥٣} يَخَافُونَ رَبَّهُمْ
مِنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ^{٥٤}

٥٤
٥٣
٥٢

क्या नहीं देखते कि अल्लाह ने जो चीज़ भी पैदा की है उसके साथे दाईं तरफ़ और बाईं तरफ़ झुक जाते हैं, अल्लाह को सज्दा करते हुए, और वे सब आजिज (नम्र) हैं। और अल्लाह ही को सज्दा करती हैं जितनी चीज़ें चलने वाली आसमानों और ज़मीन में हैं। और फ़रिश्ते भी और वे तकबुर (घमंड) नहीं करते। वे अपने ऊपर अपने ख़व से डरते हैं और वही करते हैं जिसका उन्हें हुक्म मिलता है। (48-50)

इंसान एक ऐसी दुनिया में सरकशी करता है जिसमें उसके चारों तरफ़ उसे ताबेदारी का सबक दिया जा रहा है। मिसाल के तौर पर माददी अजसाम (वस्तुओं) के साथे। एक चीज़ जो खड़ी हुई हो, उसका साया ज़मीन पर पड़ जाता है। इस तरह वह सज्दे को मुमस्सल (प्रतिरूपित) कर रहा है। वह तमसीली अंदाज में बताता है कि इंसान को किस तरह अपने ख़ालिक के आगे झुक जाना चाहिए।

फ़रिश्ते अगरचे इंसान को नज़र नहीं आते। मगर अज़ीम कायनात का इस क़द मुनज़़म होकर चलना साबित करता है कि इसे चलाने के लिए खुदा ने अपने जो कारिंदे मुकर्रर किए हैं वे इतिहाई ताक़तवर हैं। ये फ़रिश्ते ग़ैर मामूली ताक़तवर होने के बावजूद खुदा के हददर्जा मुतीअ (आज्ञाकारी) हैं। अगर वे हददर्जा मुतीअ न हों तो कायनात का निजाम इस दर्जे सेहत और यकसानियत के साथ मुसलसल चलता हुआ नज़र न आए।

ऐसी हालत में इंसान के लिए सही रवैया इसके सिवा और कुछ नहीं हो सकता कि वह अपने आपको खुदा की इताअत में दे दे, वह मुकम्मल तौर पर उसका फ़रमांवरदार बन जाए।

وَقَالَ اللَّهُ لَا تَتَّخِذُوا إِلَهِينَ اثْنَيْنِ إِتِمَّا هُوَ إِلَهُ وَاحِدٌ فَإِلَٰهِي
فَأَرْهَبُونِ^{٥٥} وَلَهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّينُ وَاصْبَاءُ أَعْيُنِ
اللَّهُ تَتَّقُونَ^{٥٦}

और अल्लाह ने फ़रमाया कि दो माबूद (पूज्य) मत बनाओ। वह एक ही माबूद है तो मुझ ही से डरो और उसी का है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। और उसी की इताअत (आज्ञापालन) है हमेशा। तो क्या तुम अल्लाह के सिवा औरों से डरते हो। (51-52)

पैग़म्बरों के जरिए खुदा ने इंसान को इससे डराया है कि वह एक माबूद (पूज्य) के सिवा दूसरे माबूद अपने लिए बनाए। इस कायनात का माबूद सिर्फ़ एक है। उसी से आदमी को डरना चाहिए। उसे सिर्फ़ उसी की ताबेदारी (आज्ञापालन) करना चाहिए।

अगर आदमी को इस बात का सही इदराक हो जाए कि खुदा ही इंसान का और तमाम मौजूदात का ख़ालिक व मालिक है। उसी पर उसकी ज़िंदगी का सारा दारोमदार है तो इस इदराक के लाज़िमी नतीजे के तौर पर जो कैफ़ियत आदमी के अंदर पैदा होती है उसी का नाम तक्वा है।

ज़मीन व आसमान में खुदा ही की दाइमी (स्थायी) इताअत है। यहां हर चीज़ मुकम्मल तौर

जूम पर गिरफ्त की एक शक्ति यह है कि जैसे ही कोई शख्स जूम करे फौरन उसे पकड़

सूरह-16. अन-नहल

733

पारा 14

कर सख्त सजा दी जाए। मगर खुदा का यह तरीका नहीं। अगर खुदा ऐसा करे तो जमीन पर कोई चलने वाला बाकी न रहे। खुदा ने हर शख्स और हर कौम को एक मुक़रर मोहलत दी है। उस मुद्दत तक वह हर एक को मौका देता है कि वह अपने जमीन (अन्तरात्मा) की अम्न से या ख़ारजी तंबीहात (वाह्य चेतावनियों) से चौकन्ना हो और अपनी इस्लाह कर ले। इस्लाह करते ही लोगों के पिछले तमाम जराइम माफ़ कर दिए जाते हैं। वे ऐसे हो जाते हैं कि जैसे उन्होंने अभी नई जिंदगी शुरू की हो।

मोहलत के दौरान न पकड़ना जिस तरह खुदा ने अपने ऊपर लाजिम किया है इसी तरह उसने यह भी अपने ऊपर लाजिम किया है कि मोहलत के ख़त्म होने के बाद वह लोगों को जरूर पकड़े। मोहलत ख़त्म होने के बाद किसी को मज्बूद (अतिरिक्त) मौका नहीं दिया जाता, न फ़र्द को और न कौम को।

وَيَجْعَلُونَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُونَ وَتَصِفُ السُّنَنُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى
لَا جُورَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَانَّهُمْ مُّفْرَطُونَ ﴿٦١﴾

और वे अल्लाह के लिए वह चीज ठहराते हैं जिसे अपने लिए नापसंद करते हैं और उनकी जवानें झूठ बयान करती हैं कि उनके लिए भलाई है। निश्चय ही उनके लिए दोज़ख़ है और वे जरूर उसमें पहुंचा दिए जाएंगे। (62)

इंसानी गुमराहियों की बहुत बड़ी वजह खुदा की खुदाई का कमतर अंदाजा करना है। अक्सर ग़लत अकाइद इसीलिए बने कि खुदा को उससे कम समझ लिया गया जैसा कि वह हकीकतन है। यहां तक कि लोगों का हाल यह है कि जो चीजें कमतर समझ कर वे खुद अपने लिए पसंद नहीं करते (मसलन बेटियां या अपनी सम्पत्ति में किसी अजनबी की शिरकत) उसे भी वे खुदा के लिए साबित करने लगते हैं।

खुदा के इसी कमतर अंदाजे का नतीजा है कि लोग खुदा पर अक़ीदा रखते हुए खुदा से बेख़ौफ़ रहते हैं। वे निहायत मामूली-मामूली चीजों के बारे में यह अक़ीदा बना लेते हैं कि वे उन्हें खुदा की क़ुरबत (समीपता) दे देंगी। और आख़िरत की तमाम नेमतें उनके हिस्से में लिख दी जाएंगी। जो चीज एक आम इंसान को भी खुश नहीं कर सकती उसके मुतअल्लिक यह अक़ीदा बना लिया जाता है कि वह खुदा को खुश कर देगी। इस किस्म की कोई हरकत ग़लती पर सरकशी का इजाफ़ा है जिसे खुदा कभी माफ़ नहीं कर सकता।

ثُمَّ لَقَدْ اَرْسَلْنَا اِلٰى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمٰلَهُمْ فَهُوَ
وَلِيُّهُمْ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيمٌ ﴿٦٢﴾ وَمَا اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ
لَهُمُ الَّذِي خْتَلَفُوْا فِيْهِ وَهُدًى وَرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُوْنَ ﴿٦٣﴾

खुदा की क़सम हमने तुमसे पहले मुख़्तलिफ़ कौमों की तरफ़ रसूल भेजे। फिर शैतान

पारा 14

734

सूरह-16. अन-नहल

ने उनके काम उन्हें अच्छे करके दिखाए। पस वही आज उनका साथी है और उनके लिए एक दर्दनाक अजाब है। और हमने तुम पर किताब सिर्फ़ इसलिए उतारी है कि तुम उन्हें वह चीज खोल कर सुना दो जिसमें वे इत्तेलाफ़ (मत-भिन्नता) कर रहे हैं और वह हिदायत और रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं। (63-64)

रसूल की दावत जब उठती है तो सुनने वाले महसूस करते हैं कि यह उनके रवाजी मजहब से टकरा रही है। अब चूंकि वे उस रवाजी मजहब से मानूस (भिन्न) होते हैं और उससे उनके बहुत से मफ़ादात वाबस्ता हो चुके होते हैं इसलिए वे चाहते हैं कि उससे लिपटे रहें। उस वक़्त शैतान उन्हें ऐसे ख़ूबसूरत अल्फ़ाज समझा देता है जिससे वे पैग़म्बर के दीन को छोड़ने और रवाजी दीन पर कायम रहने को दुरुस्त साबित कर सकें।

आदमी अगर रसूल की बात को सीधी तरह मान ले तो यह खुदा को अपना साथी बनाना है। इसके बरअक्स अगर वह ख़ूबसूरत तावीलात (हीलों-बहानों) का सहारा ले तो यह शैतान को अपना साथी बनाना होगा।

पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को भेजकर खुदा ने यह इतिज़ाम किया था कि लोग मजहबी इत्तेलाफ़ात (मत-भिन्नता) के जंगल के दर्मियान खुदा के सच्चे रास्ते को मालूम कर सकें। यही सूरतेहाल आज भी बाकी है। एक शख्स खुदा के रास्ते की तलाश में हो और वह मुख़्तलिफ़ मजहबों का मुतालआ करे तो वह यकीनन ज़ेहनी इतिशार में पड़ जाएगा। क्योंकि मजहबों की जो तालीमात आज मौजूद हैं उनमें बाहम सख्त इत्तेलाफ़ात हैं। चुनांचे हक़ के मुतलाशी की समझ में नहीं आता कि वह किस चीज को सही समझे और किस चीज को ग़लत।

ऐसी हालत में पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का लाया हुआ दीन खुदा के बंदों के लिए रहमत है क्योंकि दूसरे अदयान (धर्मों) के बरअक्स, आपका दीन एक महफूज़ दीन है। वह तारीख़ी एतबार से पूरी तरह मुस्तनद है। इस बिना पर पूरा एतमाद किया जा सकता है कि आपने जो दीन छोड़ा वही वह हकीकी दीन है जो खुदा को अपने बंदों से मलूब है।

وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَآءً فَاحْيٰى بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَمَعُوْنَ ﴿٦٤﴾

और अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उससे जमीन को उसके मुर्दा होने के बाद जिंदा कर दिया। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (65)

बारिश और नबातात (वनस्पति) का निज़ाम अपने अंदर बहुत बड़ा सबक रखता है। मुख़्तलिफ़ अवामिल (कारक) की मुतहदा कारफ़रमाई से पानी के कतरे फिज़ में जाकर दुबारा जमीन पर बारिश की सूत में बरसते हैं। फिर यह बारिश हैरतअम्नज़ तौर पर जमीन पर सब्ज़ा उगाने का सबब बनती है।

इस वाक्य में एक तरफ़ यह सबक है कि इस कायनात में चारों तरफ़ खुदा की कारफ़रमाई है। अगर यहां कई खुदाओं की कारफ़रमाई होती तो कायनात की मुख़्तलिफ़ तमन्ना

सूरह-16. अन-नहल

735

पारा 14

इस तरह हमआहंग होकर मुशतरका (साझा) अमल नहीं कर सकती थीं। कायनात के निजाम की वहदानियत (एकत्व) वाजह तौर पर इसका सुबूत है कि उसका ख़ालिक व मालिक सिर्फ एक है न कि एक से ज्यादा।

दूसरा सबक यह है कि खुदा की क़ुदरत इतनी अजीम है कि वह मुर्दा जिस्म में ज़िंदगी पैदा कर सकती है। वह सूखी हुई चीजों में हरियाली, रंग, खुशबू और मजा का बाग उगा सकती है।

पहले वाक्य में तौहीद का सुबूत है और दूसरा वाक्या तमसील के रूप में बता रहा है कि इसी तरह इंसानी रूहों के लिए भी एक खुदाई बारिश है, और वह 'वही' (ईश्वरीय वाणी) है। जो शख्स अपनी मुर्दा और सूखी हुई रूह को नई ज़िंदगी देना चाहे, उसे अपने आपको खुदाई 'वही' की बारिश में नहलाना चाहिए।

وَأَنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۚ سَتَقِيكُمْ مِمَّا فِي بُطُونِهِ مِنْ بَيْنِ فَرْثٍ
وَدَمٍ لَبَنًا خَالٍ سَائِغًا لِلشَّارِبِينَ ۝ وَمِنْ ثَمَرَاتِ النَّخِيلِ وَالْأَعْنَابِ
تَتَّخِذُونَ مِنْهُ سَكَرًا وَرِزْقًا حَسَنًا ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝

और बेशक तुम्हारे लिए चौपायों में सबक है। हम उनके पेटों के अंदर के गोबर और खून के दर्मियान से तुम्हें ख़ालिस दूध पिलाते हैं, खुशगवार पीने वालों के लिए और खजूर और अंगूर के फलों से भी। तुम उनसे नशे की चीजें भी बनाते हो और खाने की अच्छी चीजें भी। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो अक्ल रखते हैं। (66-67)

दूध देने वाले जानवरों में यह अजीब खुसूसियत है कि वे जो कुछ खाते हैं वह एक तरफ उनके अंदर गोबर और खून बनाता है, दूसरी तरफ इसी के दर्मियान से दूध जैसा कीमती तरल भी बनकर निकलता है जो इंसान के लिए बेहद कीमती गिजा है। यही हाल दरख्तों का है। उनके अंदर मिट्टी और पानी जैसी चीजें दाखिल होती हैं और फिर उनके अंदरूनी निजाम के तहत वे रसदार फल की सूरत में शाखों में लटक पड़ती हैं।

ये वाक्यात इसलिए हैं कि वे लोगों को खुदा की याद दिलाएं। आदमी इन में खुदा की क़ुदरत की झलकियां देखने लगे, यहां तक कि उसका यह एहसास इतना बढ़े कि वह पुकार उठे कि खुदाया तू जो गोबर और खून के दर्मियान से दूध जैसी चीज निकालता है, मेरी नामुवाफ़िक़ हालत के अंदर से मुवाफ़िक़ नताइज ज़ाहिर कर दे। तू जो मिट्टी और पानी को फल में तब्दील कर देता है, मेरी बेक़ीमत ज़िंदगी को बाक़ीमत ज़िंदगी बना दे।

'तुम उनसे नशे की चीज भी बनाते हो और रिक़े हसन भी' इसमें इस हकीक़त की तरफ इशारा है कि दुनिया में खुदा ने जो चीजें पैदा की हैं उनका सही इस्तेमाल भी है और उनका ग़लत इस्तेमाल भी। खजूर और अंगूर को उसकी क़ुदरती हालत में खाया जाए तो वह सेहतबख़्श गिजा है जिससे जिस्म और अक्ल को तवानाई (ऊर्जा) हासिल होती है। इसके बरअक्स अगर इंसानी अमल से उसे नशे में तब्दील कर दिया जाए तो वह जिस्म को भी नुक्सान पहुंचाती है और अक्ल को भी बिगाड़ देने वाली है।

पारा 14

736

सूरह-16. अन-नहल

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُونَ ۖ ثُمَّ كُلِي مِنْ كُلِّ الثَّمَرَاتِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۚ يَخْرِجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ ۚ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝

और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर 'वही' (प्रकाशना) किया कि पहाड़ों और दरख्तों और जहां टट्टियां बांधते हैं उनमें घर बना। फिर हर किस्म के फलों का रस चूस और अपने रब की हमवार की हुई राहों पर चल। उसके पेट से पीने की चीज निकलती है, इसके रंग भिन्नभिन्न हैं, इसमें लोगों के लिए शिफ़ा (आरोग्य) है। बेशक इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो ग़ौर करते हैं। (68-69)

शहद की मक्खी खुदा की क़ुदरत का एक हैरतनाक शाहकार है। वह रियाजयाती क़वानीन (गणितीय नियमों) की पाबंदी करते हुए इतिहाई मेयारी किस्म का छत्ता बनाती है। फिर ख़ास मंसूबाबंद अंदाज में फूलों का रस चूस कर लाती है। उसे एक कामिलतरीन निजाम के तहत छत्तों में जख़ीरा करती है। फिर ऐन क़वानीने सेहत के मुताबिक शहद जैसी कीमती चीज तैयार करती है जो इंसान के लिए गिजा भी है और इलाज भी। यह सब कुछ इतने अजीब और इतने मुनज़्जम अंदाज में होता है कि इस पर मोटी-मोटी किताबें लिखी गई हैं फिर भी इसका बयान मुकम्मल नहीं हुआ।

शहद का यह मोजिजाती कारख़ाना तमाम इंसानी कारख़ानों से ज्यादा पेचीदा और ज्यादा कामयाब है। ताहम बजाहिर वह ऐसी मक्खियों के ज़रिए चलाया जा रहा है जिन्होंने इस फन की कहीं तालीम नहीं पाई। यहां तक कि उन्हें अपने आमाल का जाती शुऊर भी हासिल नहीं। इससे साबित होता है कि कोई काम लेने वाला है जो अपनी छुपी हिदायतों के ज़रिए मक्खियों से यह सब कुछ काम ले रहा है। शहद की मक्खियों को अगर कोई देखने वाला देखे तो वह उनकी हैरानकुन हद तक बामअना सरगर्मियों में खुदा की कारफरमाई का ज़िंदा मुशाहिदा करने लगेगा।

शहद की मक्खी की मिसाल देने का एक पहलू यह भी है कि जिस तरह शहद की मक्खी जबरदस्त महनत के ज़रिए फूलों का रस चूस कर शहद बनाती है जिसमें लोगों के लिए गिजा और शिफ़ा है। इसी तरह अल्लाह के बंदों को चाहिए कि वे कायनात में ग़ौरोफ़िक़ के ज़रिए हिक़मत की चीजें हासिल करें जो उनकी रूह की गिजा भी हों और उनकी अख़्लाकी बीमारियों का इलाज भी। जो चीज शहद की मक्खी के लिए 'रस' है वही इंसान की सतह पर पहुंच कर 'मअरफ़त' बन जाती है।

وَاللَّهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفَّاكُمْ وَمِنْكُمْ مَنْ يُدْرِكُ إِلَىٰ آرْزَلِ الْعُمَرِ لَكُمْ
لَا يَعْلَمُ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ۝

सूरह-16. अन-नहल

737

पारा 14

और अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया, फिर वही तुम्हें वफात (मौत) देता है। और तुम में से कुछ वे हैं जो नाकारा उम्र तक पहुंचाए जाते हैं कि जानने के बाद वे कुछ न जानें। वेशक अल्लाह इल्म वाला है, कुदरत वाला है। (70)

जिंदगी का मजहर जो जमीन पर है उसके कई पहलू इंसान के सामने आते हैं। एक शख्स नहीं था इसके बाद वह दुनिया में मौजूद हो गया, फिर हर एक मरता है मगर सबका एक वक्त नहीं। कोई बचपन में मरता है, कोई जवानी में और कोई बुढ़ापे में। फिर यह मंजर भी अजीब है कि उम्र की आखिरी हद पर पहुंच कर अकल और इल्म और ताकत आदमी से बिल्कुल रखत हो जाते हैं। इंसान मौजूदा जमीन पर बजाहिर आजाद है मगर उसे अपनी किसी चीज पर कोई इख्तियार नहीं।

यह सब इसलिए होता है ताकि इंसान को बताया जाए कि इल्म और कुदरत दोनों सिर्फ खुदा का हिस्सा हैं। इंसानी जिंदगी में मजबूरी किस्म के जो वाक्यात पेश आते हैं उनमें इंसान का अपना कोई दखल नहीं। वह उनमें कोई तब्दीली करने पर कादिर नहीं। इससे साबित होता है कि जो कुछ हो रहा है वह किसी और करने वाले के जरिए हो रहा है। बचपन से मौत तक इंसान की जिंदगी यह गवाही देती है कि यहां सारा इल्म भी सिर्फ खुदा के लिए है और सारी कुदरत भी सिर्फ खुदा के लिए। इंसान की मजबूरी कादिर मुत्लक (सर्वशक्तिमान) खुदा की मौजूदगी का सुबूत है।

وَاللَّهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ فَمَا الَّذِينَ فُضِّلُوا بِرَأْدٍ
رِزْقِهِمْ عَلَى مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيهِ سَوَاءٌ أَفَبِنِعْمَةِ اللَّهِ
يَجْحَدُونَ^{٧١}

और अल्लाह ने तुम में से कुछ को कुछ पर रोजी में बढ़ाई दी है। पर जिन्हें बढ़ाई दी गई है वे अपनी रोजी अपने गुलामों को नहीं दे देते कि वे इसमें बराबर हो जाएं। फिर क्या वे अल्लाह की नेमत का इंकार करते हैं। (71)

यहां एक सादा सी मिसाल के जरिए इस अकीदे को गलत साबित किया गया है कि खुदा के कुछ शरीक हैं। और उसने अपने इख्तियारात का कुछ हिस्सा अपने उन शरीकों को दे दिया है। वह मिसाल यह कि दुनिया में रोजी की तक्सीम यकसां (समान) नहीं है। आम तौर पर देखने में आता है कि किसी के पास बहुत ज्यादा होता है और किसी के पास इतना कम होता है कि वह ज्यादा वाले के यहां नौकर और गुलाम बनने पर मजबूर हो जाता है। अब कोई भी ज्यादा वाला ऐसा नहीं करता कि अपनी दौलत अपने नौकरों में बांट दे और इस तरह अपना और नौकरों का फर्क मिटाकर यकसां हो जाए। फिर खुदा के बारे में यह मानना कैसे सही हो सकता है कि उसने अपने इख्तियारात दूसरों को तक्सीम कर दिए हैं।

कोई शख्स अपनी बढ़ाई का आप इंकार नहीं करता। फिर जो बात एक इंसान भी पसंद

पारा 14

738

सूरह-16. अन-नहल

नहीं करता, हालांकि उसके पास कोई जाती असासा (सम्पत्ति) नहीं, इस बात को खुदा क्यों पसंद करेगा जिसके पास जो कुछ है वह उसका अपना जाती है। किसी दूसरे का दिया हुआ नहीं। हमीकत यह है कि इस किस्म के तमाम अकीदे खुदा की हस्ती की नफी कर रहे हैं। वे खुदा को और खुदा की सतह पर पहुंचा रहे हैं जो किसी हाल में मुमकिन नहीं।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِينَ
وَحَفَدَةً وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُونَ وَبِنِعْمَتِ اللَّهِ
هُمْ يَكْفُرُونَ^{٧٢} وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِنَ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَلَا يَسْتَطِيعُونَ^{٧٣} فَلَا تَضُرُّهُمُ اللَّهُ الْأَمْثَالُ^{٧٤}
إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ^{٧٥}

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम ही में से बीवियां बनाई और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किए और तुम्हें सुथरी चीजें खाने के लिए दीं। फिर क्या ये वातिल (असत्य) पर ईमान लाते हैं और अल्लाह की नेमत का इंकार करते हैं। और वे अल्लाह के सिवा उन चीजों की इबादत करते हैं जो न उनके लिए आसमान से किसी रोजी पर इख्तियार रखती हैं और न जमीन से, और न वे कुदरत रखती हैं। पर तुम अल्लाह के लिए मिसालें न बयान करो। वेशक अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (72-74)

इंसान एक ऐसी मजबूरी है जिसकी बेखुमार जरूरतें हैं। इन तमाम जरूरतों का इतिजाम निहायत कामिल सूरत में दुनिया के अंदर मौजूद है।

आदमी को भूख प्यास लगती है तो यहां खाने पीने की बेहतरीन चीजें इफरात के साथ मौजूद हैं। आदमी को शख्सी सुकून के लिए बीवी दरकार है तो यहां ऐन उसके तकाजों मुताबिक मुसलसल औरतें पैदा की जा रही हैं। आदमी के सामने अपनी नस्ल की बका का मसला है तो यहां उसके लिए बेटे और पोते की पैदाइश का निजाम भी मौजूद है।

यह सब कुछ खुदा की तरफ से है। मगर हर जमाने में इंसान ने यह गलती की कि खुदा की इन नेमतों को और खुदा की तरफ मंसूब कर दिया। मुशिरक लोग उन्हें खुदा के सिवा देवी देवताओं या जिंदा मुर्दा हस्तियों की तरफ मंसूब करते हैं। और जो मुल्हिद (नास्तिक) हैं वे उन्हें कवानीने फितरत के अधि अमल का नतीजा करार देते हैं। नेमतों का यह निजाम इसलिए था कि उसे देखकर आदमी के अंदर शुक्र-खुदावंदी का जब्बा उमड़े। मगर खुदसाख्ता कपोल-कल्पनाओं की बिना पर यह निजाम उसके लिए सिर्फ कुफ्रे-खुदावंदी की गिज़ देन का जरिया बन गया।

अक्सर एतकादी गुमराहियां मिसालों की वजह से पैदा होती हैं। मसलन इंसान के बेटे-बेटियां हैं तो इसी पर कयास करके समझ लिया गया कि खुदा की भी बेटे-बेटियां हैं। दुनिया में बड़े लोगों के यहां कुछ अफराद होते हैं जो मुकर्रब और सिफारिशी होते हैं। इसे मिसाल

बनाकर फर्ज कर लिया गया कि खुदा के दरबार में भी कुछ कुबत वाले हैं और खुदा के यहां उनकी सिफारिशें चलती हैं।

इस किस्म की तमसीलात से शिर्क और गुमराही की अक्सर किस्में पैदा होती हैं। मगर यह ख़ालिक को मख़्बूक के ऊपर क्यास करना है जो सरासर जहालत है। ख़ालिक हर एतबार से मख़्बूक से मुख़लिफ है। मख़्बूक की कोई मिसाल ख़ालिक पर चसपां नहीं होती। मिसाल के जरिए बात को समझाना बजाए खुद ग़लत नहीं। मगर मिसाल उसी वक्त कारआमद है जबकि आदमी को अस्ल और तशबीह (उपमा) दोनों का इल्म हो। इंसान जब खुदा की हक्कीकत को नहीं जानता तो कैसे वह उसके मुताबिक कोई मिसाल ला सकता है।

ضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا عَبْدًا لَّيْقَدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَمَنْ رَزَقْنَاهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَجَهْرًا هَلْ يَسْتَوِي الْحَمْدُ لِلَّهِ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾

और अल्लाह मिसाल बयान करता है एक गुलाम ममलूक की जो किसी चीज पर इस्त्रियार नहीं रखता, और एक शख्स है जिसे हमने अपने पास से अच्छा रिस्क दिया है, वह उसमें से पोशीदा और एलानिया खर्च करता है। क्या ये एकसां (समान) होंगे। सारी तारीफ अल्लाह के लिए है, लेकिन उनमें अक्सर लोग नहीं जानते। (75)

मुश्रिकाना तमसीलात की ग़लती वाजेह करने के लिए यहां एक सादा और आम मिसाल दी गई है। एक शख्स है जिसके पास हर किस्म के असबाब हैं और वह उनका जाती मालिक है। वहीं दूसरा शख्स है जो किसी भी चीज का जाती मालिक नहीं। ये दोनों आदमी एक दूसरे से नौई (मौलिक) तौर पर मुख़लिफ हैं। इसलिए एक की मिसाल दूसरे पर कभी चसपां नहीं होगी। फिर खुदा और बंदे में यह नौई फर्क तो अपने कमाल पर पहुंचा हुआ है। ऐसी हालत में कैसे मुमकिन है कि इंसान के वाक्यात से खुदा पर मिसाल कायम की जाए। इस कायनात में खुदा और दूसरी चीजों के दम्भियान जो तक्सीम है वह ख़ालिक और मख़्बूक की तक्सीम है न कि खुदा और शरीके खुदा की। खुदा की हस्ती वह हस्ती है जो हर किस्म के कमालात का जाती सरचश्मा (स्रोत) है। जो हर किस्म की नेमतों का तनहा बख़्शने वाला है। इस कायनात में सबसे ज्यादा ख़िलाफे वाकिआ बात यह है कि खुदा के सिवा किसी और के लिए वे चीजें फर्ज की जाएं जिनमें कोई भी उनका शरीक नहीं।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا تَجْلِينِ أَحَدُهُمَا أَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلَى شَيْءٍ وَهُوَ كَلٌّ عَلَى مَوْلَاهُ أَيْنَمَا يُوَجِّههُ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ هَلْ يَسْتَوِي هُوَ وَمَنْ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَهُوَ عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ﴿٧٦﴾

ع
٧٦

और अल्लाह एक और मिसाल बयान करता है कि दो शख्स हैं जिनमें से एक गूंगा है, कोई काम नहीं कर सकता और वह अपने मालिक पर एक बोझ है। वह उसे जहां भेजता है वह कोई काम दुरुस्त करके नहीं लाता। क्या वह और ऐसा शख्स बराबर हो सकते हैं जो इंसाफ की तालीम देता है और वह एक सीधी राह पर है। (76)

ऊपर आयत नम्बर 75 में खुदा के मुक़ाबले में शरीकों का बेहकीकत होना बताया गया था। अब आयत 76 में रसूल के मुक़ाबले में उन हस्तियों का बेहकीकत होना वाजेह किया जा रहा है जिनके बल पर आदमी रसूल की हिदायत को नजरअंदाज करता है।

पैगम्बर को खुदा अपनी खुसूसी तवज्जोह के जरिए उस शाहराह की तरफ रहनुमाई करता है जो हक की शाहराह है और जो बराहेरास्त खुदा तक पहुंचाने वाली है। पैगम्बर और उसके साथी इस शाहराह पर खुद चलते हैं और दूसरों को भी उसकी तरफ रहनुमाई देते हैं। दूसरी तरफ वे लोग हैं जो पैगम्बर के रास्ते के सिवा दूसरे रास्तों की तरफ बुलाते हैं। उनकी मिसाल अंधे बहरे की है। उनके पास कान नहीं कि वे खुदा की आवाजों को सुनें, उनके पास आंख नहीं कि उसके जरिए खुदा के जलवों को देखें। उनके अंदर वह कल्ब व दिमाग नहीं कि वे कायनात में फैली हुई खुदाई निशानियों को पा लें।

समअ व बसर व फुआद (सुनना, देखना, दिल) इसलिए दिए गए थे कि इनके जरिए आदमी मख़्बूकात के आइने में ख़ालिक का जलवा देखे। मगर इंसान ने इनका इस्तेमाल यह किया कि वह खुद मख़्बूकात में अटक कर रह गया।

وَاللَّهُ غَيَّبَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٧٧﴾

और आसमानों और जमीन की पोशीदा (छुपी) बातें अल्लाह ही के लिए हैं और कियामत का मामला बस ऐसा होगा जैसे आंख झपकना बल्कि इससे भी जल्द। बेशक अल्लाह हर चीज पर क़दिर है। (77)

आलमे जहिर के पीछे एक ग़ैबी निजाम है। यह ग़ैबी निजाम खुदा का कायम किया हुआ है। अपनी महदूदियत की वजह से अगरचे हम इस ग़ैबी निजाम को नहीं देखते मगर खुद इस ग़ैबी निजाम पर हमारी हर चीज बिल्कुल खुली हुई है। खुदा ग़ैब में रहकर हर आन अपनी दुनिया की हर छोटी बड़ी चीज को देख रहा है। उसे हर बात का सहीतरीन अंदाजा है। खुदा जब फैसला करेगा कि अब इंसान के इप्तेहान की मुद्दत तमाम हो चुकी है, ऐन उस वक्त वह इशारा करेगा और इसके बाद पलक झपकते में मौजूदा निजाम यकलख़्त टूट जाएगा। और नया निजाम बिल्कुल मुख़लिफ बुनियादों पर कायम होगा ताकि हर एक को उस अस्ल मक़ाम पर पहुंचा दिया जाए जहां वह बाएतबार वाकिआ था न कि उस मक़ाम पर जहां वह मसनूई (बनावटी) तौर पर अपने आपको बिठाए हुए था।

وَاللَّهُ أَخْرَجَكُمْ مِنْ بُطُونِ أُمَّهَاتِكُمْ لَا تَعْلَمُونَ شَيْئًا وَجَعَلَ لَكُمُ
السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۗ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٧٩﴾

और अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माँओं के पेट से निकाला, तुम किसी चीज को न जानते थे।
और उसने तुम्हारे लिए कान और आंख और दिल बनाए ताकि तुम शुक्र करो। (78)

इंसान जब पैदा होता है तो वह बिल्कुल आजिज और बेसमझ बच्चा होता है। मगर बड़ा
होकर वह उन हैसतओज कुव्वतों का मालिक बन जाता है जिन्हें कान और आंख और अकल
कहते हैं। यह भी मुमकिन था कि आदमी जिस रोज पैदा हो उसी रोज उसके अंदर वे तमाम
सलाहियतें मौजूद हों जो बड़ी उम्र को पहुंचकर उसके अंदर पैदा होती हैं।

मगर ऐसा नहीं किया गया। सिर्फ इसलिए कि इंसान के अंदर श्रुत का जब्बा पैदा हो।
अव्वलन वह अपनी इब्तिदाई बेबसी की हालत को देखे और फिर यह देखे कि बाद को किस
तरह वह एक तरक्कीयापता हालत को पहुंच गया है। यह देखकर वह खुदा की मिली हुई
नेमत का एहसास करे और खुदा की एहसानमंदी के जब्बे से सरशार हो जाए।

किसी आदमी के अंदर यह कैफियत सिर्फ उस वक्त पैदा हो सकती है जबकि वह खुदा
की दी हुई कुव्वतों को सही तौर पर इस्तेमाल करे। उसके कान और आंख और दिल बस
जाहिरी दुनिया में अटक कर न रह जाएं बल्कि वे उसके लिए ऐसे रोशनदान बन जाएं जिनके
जरिए झांक कर कोई शख्स गैब की झलकियों को देख लेता है।

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرَاتٍ فِي جَوْ السَّمَاءِ مَا يُمَسِّكُهُنَّ إِلَّا اللَّهُ ۚ إِنَّ
فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ ﴿٨٠﴾ وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّنْ بُيُوتِكُمْ
سَكَنًا وَجَعَلَ لَكُم مِّنْ جُلُودِ الْأَنْعَامِ بُيُوتًا تَسْتَخِفُّونَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ
وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۚ وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَا أَثَاثًا وَمَتَاعًا
إِلَىٰ حِينٍ ﴿٨١﴾

क्या लोगों ने परियों को नहीं देखा कि आसमान की फजा में मुसल्लख (अधीनस्थ) हो
रहे हैं। उन्हें सिर्फ अल्लाह थापे हुए है। बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए
जो ईमान लाएं। और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को सुकून का मकाम बनाया
और तुम्हारे लिए जानवरों की खाल के घर बनाए जिन्हें तुम अपने कूच के दिन और
कयाम के दिन हल्का पाते हो। और उनकी ऊन और उनके रूएँ और उनके बालों से
घर का सामान और फायदे की चीजें एक मुद्दत तक के लिए बनाई। (79-80)

परियों का फजा में उड़ना कुदरत की एक अजीब मंसूबाबंदी के तहत मुमकिन होता है।
परवाज के मकसद के लिए परियों की निहायत मौजू बनावट, जिसकी मशीनी नकल हवाई
जहाज की सूरत में की गई है। जमीन के ऊपर हवा जो परियों के लिए ऐसी ही है जैसे कश्ती
के लिए समुद्र। जमीनी कशिश की वजह से हवा का मुसलसल जमीन के ऊपर कायम रहना
वगैरह। ये आला इतिजामात अगर न हों तो फजा में परियों का उड़ना मुमकिन न हो सके।

इस वाक्ये को गहरी नजर से देखा जाए तो आदमी को ऐसा मालूम होगा कि गोया वह
खुदा को अपनी कायनात में अमल करते हुए देख रहा है। वह तख्तीकी निजाम के अंदर
उसके खालिक को पा जाएगा। वह मसूआत (रचनाओं) के दर्मियान सानेअ (रचयिता) का
जलवा देख लेगा।

यही मामला खुद इंसान का है। घर आदमी के लिए सुकून का मकाम है। लेकिन घर
कैसे बनता है। खुदा के बहुत से इतिजामात हैं जिनकी वजह से जमीन पर एक घर का कयाम
मुमकिन होता है। वे तमाम तामीरी अज्जा जिनके जरिए एक मकान बनता है, पेशगी तौर पर
हमारी दुनिया में रख दिए गए हैं। जमीन में निहायत मुनासिब मिक्दार में कुव्वते कशिश
(गुरुत्वाकर्षण शक्ति) है जिसकी वजह से मकानात जमीन की सतह पर जमे खड़े होते हैं।
ऐसा न हो तो एक हजार मील फी घंटा की रफ्तार से दौड़ती हुई जमीन के ऊपर मकानात
उड़ जाएं। इसी तरह वे चीजें जिनसे आदमी हल्के फुल्के खेमे बनाता है और वे चीजें जिनमें
यह सलाहियत है कि इंसान के लिबास की सूरत में ढल जाएं और उसकी जीनत (सज्जा) का
और मौसमों में उसकी जिस्मानी हिफाजत का काम दें।

इस तरह की तमाम चीजें इसलिए हैं कि आदमी के अंदर अपने रब की नेमतों पर श्रुत
का जब्बा पैदा हो, वह उसकी अम्मत व कुदरत के एहसास से उसके आगे गिर पड़े।

وَاللَّهُ جَعَلَ لَكُم مِّمَّا خَلَقَ ظِلَالًا وَجَعَلَ لَكُم مِّنَ الْجِبَالِ أَنْبَاءًا وَجَعَلَ
لَكُم سَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيلَ تَقِيكُمُ الْبَأْسَ ۚ كَذَلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهُ
عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُونَ ﴿٨٢﴾

और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीजों की साये बनाए और तुम्हारे लिए
पहाड़ों में छुपने की जगह बनाई और तुम्हारे लिए ऐसे लिबास बनाए जो तुम्हें गर्मी से
बचाते हैं और ऐसे लिबास बनाए जो लड़ाई में तुम्हें बचाते हैं। इसी तरह अल्लाह तुम
पर अपनी नेमतें पूरी करता है ताकि तुम फरमांबरदार बनो। (81)

छत का और दूसरी चीजों को साया कितनी अहमियत रखता है, इसका अंदाजा उस वक्त
होता है जबकि आदमी अपने आपको किसी ऐसे सहारा में पाए जहां किसी किस्म का कोई साया
न हो। सूरज की हददर्जा हिसाबी हरात (तापमान) का यह नतीजा है कि एक मामूली आड़ भी
हमें साया दे देता है। हालांकि अगर सूरज की हरात मौजूदा हरात से ज्यादा होती, जो यकीनी

तौर पर मुमकिन थी, तो हमारे तमाम सायादार घर आग की भट्टी में तब्दील हो जाते। पहाड़ जैसी सख्त चट्टानों में ऐसे शिगाफ होना जहां आदमी अपनी पनाहगहें बना सके। दुनिया में ऐसी चीजें मौजूद होना जो बारीक रेशों में ढलकर आदमी को उसके जिस्म के बचाव के लिए लिबास दें। इस किस्म की चीजें आदमी जैसी मख्बूक के लिए इतनी अहम हैं कि अगर वे न होती तो जमीन पर न इंसान का वजूद होता और न किसी इंसानी तहजीब का।

यह मअरफत बयकवक्त आदमी के अंदर दो चीजें पैदा करती है। एक, खुदा के लिए एहसानमंदी का जज्बा, क्योंकि वही है जिसने आदमी को ऐसी कीमती नेमतें दीं, दूसरे, अदेशे का जज्बा, क्योंकि खुदा अगर अपनी नेमतों को वापस ले ले तो इसके बाद आदमी के पास इनकी तलाफी (क्षतिपूर्ति) की कोई सूरत नहीं। ये एहसासात जब आदमी के अंदरून को इस तरह जगा दें कि वह अपने रब के सामने गिर पड़े तो इसी का नाम इबादत है।

فَإِن تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاءُ الْمُبِينُ ۝ يَعْرِفُونَ نِعْمَتَ اللَّهِ ثُمَّ يُنْكِرُونَهَا وَأَكْثَرُهُمُ الْكَافِرُونَ ۝

पस अगर वे एराज (उपेक्षा) करें तो तुम्हारे ऊपर सिर्फ साफ-साफ पट्ट्या देने की जिम्मेदारी है। वे लोग खुदा की नेमत को पहचानते हैं फिर वे उसके मुंकिर हो जाते हैं और उनमें अक्सर नाशुक हैं। (82-83)

जो शख्स भी कायनात का मुतालआ करता है, चाहे वह एक आम आदमी हो या एक साइंसदां हो, उस पर ऐसे लम्हात गुजरते हैं, जबकि मख्बूक़ात पर गौर करते हुए उसका जेहन ख़ालिक की तरफ मुंतक़िल हो जाता है। उसे महसूस होने लगता है कि ये हैरतनाक चीजें न तो अपने आप बन गई हैं और न मफरूजा (काल्पनिक) माबूदों ने इन्हें बनाया है। इनका बनाने वाला यकीनन खुदाए बुजुर्ग व बरतर है।

मगर खुदा को मानना लाजिमी तौर पर आदमी की अपनी ज़िंदगी में तब्दीली का तक्काज करता है। वह आदमी से उसकी आजादी छीन लेता है। इसलिए आदमी पर जब यह तजर्बा गुज़रता है तो वक्ती तअस्सुर (प्रभाव) के बाद वह अपने जेहन को इस तरफ से हटा देता है। वह खुदा को पाकर भी खुदा को छोड़ देता है।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا ۖ ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِينَ كَفَرُوا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُونَ ۝ وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ۝

और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उठाएंगे। फिर इंकार करने वालों को हिदायत न दी जाएगी। और न उनसे तौबा ली जाएगी। और जब जालिम लोग अजाब को देखेंगे तो वह अजाब न उनसे हल्का किया जाएगा और न उन्हें मोहलत दी जाएगी। (84-85)

पैगम्बर और पैगम्बर के सच्चे पैरोकारों का कौमों के सामने हक का दाजी बनकर उठना बजाहिर एक मामूली वाक्या मालूम होता है। दुनिया ने आम तौर पर इन वाक्यात को इतना कम अहम समझा है कि एक पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को छोड़कर कोई दूसरा पैगम्बर नहीं जिसका काम उसके समकालीन इतिहास में क़बिले ज़िफ़्र करार पाया हो।

मगर यह काम उस वक्त बेहद अहम और बेहद संगीन बन जाता है जबकि उसे आखिरत से जोड़ कर देखा जाए। क्योंकि आखिरत की अजीम अदालत में यही पैगम्बर और दाजी खुदा के गवाह होंगे और इन्हीं की गवाही पर लोगों के अबदी मुस्तक़बिल का फैसला किया जाएगा। जिन अफ़राद के बारे में गवाह ये कहेंगे कि उन्होंने हक को माना और अपने आपको उसकी इताअत में दिया वे वहां की अबदी दुनिया में जन्मती करार पाएंगे। और जिनके बारे में खुदा के ये गवाह बताएंगे कि उन्होंने हक का इंकार किया और उसकी इताअत (आज्ञापालन) पर राजी नहीं हुए वे अबदी जहन्नम में डाल दिए जाएंगे।

किसी कौम में खुदा के सच्चे दाजी उठें और वह कौम उनकी बात न माने तो यह उसके मुजरिम होने का कतई सुबूत होता है, इसके बाद वह कौम यह कहने का हक खो देती है कि हमें क़ियामत और जन्नत दोज़ख़ की ख़बर न थी, इसलिए हमें आज के दिन की सज़ा से माफ़ रखा जाए।

وَإِذَا رَأَوْا الَّذِينَ اسْتَرَكُوا ۖ شَرَكَاءَهُمْ قَالُوا رَبَّنَا هَؤُلَاءِ شُرَكَائُنَا الَّذِينَ كُنَّا نَدْعُو مِنْ دُونِكَ ۖ فَأَلْقُوا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ ۖ إِنَّكُمْ لَكَاذِبُونَ ۝ وَالْقَوْلُ إِلَى اللَّهِ يَوْمَئِذٍ ۖ السَّلَامُ ۖ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ۝ الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا ۖ فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ۝

और जब मुश्रिक (बहुदेववादी) लोग अपने शरीकों को देखेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे रब, यही हमारे वे शुर्का (ईश्वरत्व के साझीदार) हैं जिन्हें हम तुझे छोड़कर पुकारते थे। तब वे बात उनके ऊपर डाल देंगे कि तुम झूठे हो। और उस दिन वे अल्लाह के आगे झुक जाएंगे और उनकी इफ़्तिरा परदाजियां (गढ़े हुए झूठ) उनसे गुम हो जाएंगी। जिन्होंने इंकार किया और लोगों को अल्लाह के रास्ते से रोका, हम उनके अजाब पर अजाब का इजाफ़ा करेंगे उस फ़साद की वजह से जो वे करते थे। (86-88)

क़ियामत में यह हकीकत आखिरी हद तक खुल जाएगी कि इस कायनात में एक खुदा के सिवा किसी के पास कोई ताक़त नहीं। उस वक्त जब पूजने वाले अपने उन माबूदों को देखेंगे जिन्हें वे पूजते थे तो वे ऐसी बातें कहेंगे जिनसे उनकी बरा-त (विरक्ति) साबित होती हो। गोया कि ये झूठे माबूद धोखा देकर उनसे ग़ैर खुदा की परस्तिश कराते थे। मगर वे माबूद फौरन इसकी

तरदीद करेंगे और कहेंगे कि यह तुम्हारी अपनी सरकशी थी। तुमने खुदा की ताबेदारी से बचने के लिए बतौर खुद झूठे माबूद गढ़े और उनके नाम पर अपने ख़ादिशपरस्ताना मजहब को जाइज साबित करते रहे।

एक वह शख्स है जो हक की दावत को कुबूल नहीं करता। दूसरा वह है जो इसी के साथ दूसरों को भी तरह-तरह से रोकने की कोशिश करता है। पहली रविश अगर गुमराही है तो दूसरी रविश गुमराही की कयादत। गुमराह लोगों को जो अजाब होगा, उसका दुगना अजाब उन लोगों को मिलेगा जो दुनिया में गुमराही की कयादत (नेतृत्व) करते रहे।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِمْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَى هَؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٨﴾

और जिस दिन हम हर उम्मत में एक गवाह उन्हीं में से उन पर उठाएंगे और तुम्हें उन लोगों पर गवाह बना कर लाएंगे और हमने तुम पर किताब उतारी है हर चीज को खोल देने के लिए। वह हिदायत और रहमत और बशाहत (शुभ सूचना) है फरमांवरदारों के लिए। (89)

अल्लाह तआला का तरीका यह है कि किसी कौम पर इंजार व तबशीर (तंबीह और खुशखबरी) का काम खुद उस कौम के किसी मुंतखब फर्द के जरिए अंजाम दिलाता है। यही वजह है कि किसी कौम में जो फैसल आएं वे खुद उसी कौम के एक फर्द थे। अब उम्मत मुस्लिमा को कियामत तक इसी तरह हर कौम के अंदर दावत (आह्वान) व शहादत (सत्य की गवाही) की जिम्मेदारी अंजाम देना है।

यह दुनिया में कौमों को दावत देने वाले आखिरत में कौमों के ऊपर खुदा के गवाह होंगे। उन्हीं की गवाही पर कौम के हर फर्द के लिए सवाब या अजाब का फैसला किया जाएगा।

कुरआन में हर चीज का बयान है। इसका मतलब यह नहीं कि दूसरी आसमानी किताबों में हर चीज का बयान न था। हकीकत यह है कि हर आसमानी किताब जो खुदा की तरफ से आई उसमें हर चीज का बयान मौजूद था। ताहम उस हर चीज का तअल्लुक दुनिया के उलूम व फुनून (ज्ञान-विज्ञान) से नहीं है बल्कि आखिरत की कामयाबी और नाकामी के इल्म से है। वे तमाम चीजें जो आखिरत में किसी को कामयाब या नाकाम बनाने वाली हैं वे सब उसूलों तौर पर कुरआन में बयान कर दी गई हैं। अब जो लोग उससे हिदायत लेंगे, उनके लिए वह एक अजीम नेमत बन जाएगी। और जो लोग उससे हिदायत न लें उनके हिस्से में सिर्फ यह आएगा कि उसका इंकार करके अपनी हलाकत के लिए जवाज (औचित्य) फराहम करें।

إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيتَائِي ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٨﴾

बेशक अल्लाह हुक्म देता है अद्ल (न्याय) का और एहसान (परोपकार) का और काय्यतयों (नातेदारों) को देने का। और अल्लाह रोकता है बेहयाई के कामों और बुराई से और सरकशी से। अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम याददिहानी (अनुस्मरण) हासिल करो। (90)

दुनिया में कोई अल्लाह का बंदा किस तरह रहे, इसका वाजेह बयान इस आयत में मौजूद है। इसकी इसी अहमियत की बिना पर ख़लीफ़-ए-राशिद हज़रत उमर बिन अब्दुल अजीज ने इस आयत को जुमा के हफ्तेवार खुतबे में शामिल किया था।

पहली चीज जिसका एक शख्स को एहतमाम करना है वह अद्ल है। इसका मतलब यह है कि एक शख्स का जो हक दूसरे पर आता है वह उसे पूरी तरह अदा करे, चाहे साहिबे हक कमजोर हो या ताकतवर, और चाहे वह पसंदीदा शख्स हो या नापसंदीदा। हुक्क की अदायगी में सिर्फ हक का लिहाज किया जाए न कि दूसरे एतबारात का।

दूसरी चीज एहसान है। इससे मुराद यह है कि हुक्क की अदायगी में आली जर्मी का तरीका अपनाया जाए। इंसाफ के साथ मुख्त को जमा किया जाए। कानूनी दायरे से आगे बढ़कर लोगों के साथ फय्याजी (सहृदयता) और हमदर्दी का रवैया इख्तियार किया जाए। आदमी के अंदर यह हौसला हो कि मुमकिन हद तक वह अपने लिए अपने हक से कम पर राजी हो जाए, और दूसरे को उसके हक से ज्यादा देने की कोशिश करे।

तीसरी चीज संबधियों को देना है। इसका मतलब यह है कि आदमी जिस तरह अपने बीबी बच्चों की जरूरत को देखकर तड़प उठता है और उसे पूरा करता है, इसी तरह वह दूसरे करीबी लोगों की जरूरत के बारे में भी हस्सास हो। हर साहिबे इस्तेदाद शख्स अपने माल पर सिर्फ अपना और अपने घर वालों ही का हक न समझे बल्कि अपने रिस्तेदारों के हुक्क अदा करने को भी वह अपनी जिम्मेदारी में शामिल करे। इसके बाद आयत में तीन चीजों से मना फरमाया गया है।

पहली चीज फहृश है। इसके मुराद खुली हुई अख़्लाकी बुराईयां हैं। यानी वे बुराईयां जिनका बुरा होना खुद अपने जमीर के तहत हर आदमी को मालूम होता है। और लोग आम तौर पर उसे शर्मनाक समझते हैं।

दूसरी चीज मुन्कर है। मुन्कर मारुफ का उल्टा है। मारुफ उन अच्छी बातों को कहते हैं जिन्हें हर मुआशिरे में अच्छा समझा जाता है। इसके बरअक्स मुन्कर से मुराद वे नामाकूल काम हैं जो आम अख़्लाकी मेयार के खिलाफ हैं। इसमें वे तमाम चीजें शामिल हैं जिन्हें इंसान आम तौर पर बुरा जानते हैं और जिन्हें कुबूल करने से इंसान की फितरत इंकार करती है।

तीसरी चीज बगी है। इसके मअना हैं हद से तजावुज करना। इसमें हर वह सरकशी दाखिल है जबकि आदमी अपनी वाकई हद से गुजर कर दूसरे शख्स पर दस्तदराजी करे। वह किसी की जान या माल या आबरू लेने के लिए उसके ऊपर नाहक कार्रवाईयां करे। वह अपने जोर व असर को नाजाइज फयदा उठाने के लिए इस्तेमाल करने लगे।

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩٠﴾ وَلَا تَكُونُوا

كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَا تَتَّخِذُونَ أَيَّامَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُونَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَى مِنْ أُمَّةٍ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ اللَّهُ بِهِ وَيَكَيِّبُنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩١﴾

और तुम अल्लाह के अहद (वचन) को पूरा करो जबकि तुम आपस में अहद कर लो। और कसमों को पक्का करने के बाद न तोड़ो। और तुम अल्लाह को जामिन भी बना चुके हो। बेशक अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। और तुम उस औरत की मानिंद न बनो जिसने अपना महनत से काता हुआ सूत टुकड़े-टुकड़े करके तोड़ दिया। तुम अपनी कसमों को आपस में फसाद डालने का ज़रिया बनाते हो महज इस वजह से कि एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए। अल्लाह इसके ज़रिए से तुम्हारी आजमाइश करता है और वह क़ियामत के दिन उस चीज़ को अच्छी तरह तुम पर ज़ाहिर कर देगा जिसमें तुम इस्तेलाफ (मत-भिन्नता) कर रहे हो। (91-92)

सूत कातना महनत के ज़रिए बिखरे हुए रेशों का यकज्जा करना है। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि इंसान के लिए कारआमद चीज़ें तैयार हों। अब अगर कोई मर्द या औरत दिन भर महनत करके सूत काते और फिर शाम के वक्त अपने काते हुए सूत को पारा-पारा कर दे तो उसकी सारी महनत बेनतीजा होकर रह जाएगी।

यही मामला उन लोगों का है जो आपस में एक मुआहिदा (समझौता) करें और फिर एक या दूसरा फ़रीक (पक्ष) किसी माकूल सबब के बग़ैर उसे तोड़ डाले। काते हुए सूत का ख़्वामख़्वाह बिखेरना अपनी महनत को अकारत करना है। इसी तरह किए हुए मुआहिदे को तोड़ डालना उस पूरे अमल को बातिल करना है जिसके नतीजे में बाहमी इस्तेफ़ाक का एक मामला वजूद में आया था।

मौजूदा दुनिया में एक आदमी दूसरे आदमियों के साथ मिलकर ज़िंदगी गुज़ारता है। हर आदमी को अपना काम दूसरे बहुत से आदमियों के दर्मियान करना होता है। इस बिना पर इज्तिमाई ज़िंदगी में बाहमी एतमाद की बहुत ज्यादा अहमियत है। इसी इज्तिमाई ज़िंदगी को कायम करने की खातिर बार-बार एक इंसान और दूसरे इंसान के दर्मियान मुआहिदे और कौल व करार वजूद में आते हैं, कभी कसम खाकर और कभी कसम के बग़ैर। अब अगर लोग ऐसा करें कि मुआहिदों को हकीकी जवाज (औचित्य) के बग़ैर तोड़ डालें तो इज्तिमाई ज़िंदगी में फसाद फैल जाए और किसी किस्म की तामीर मुमकिन न रहे।

ख़ुदा के नाम पर मुआहिदे की दो सूत्रें हैं। एक यह कि बाक़यदा कसम के अल्फ़ाज अदा करके किसी से कोई अहद किया जाए। दूसरे यह कि कसम के अल्फ़ाज न बोले जाएं ताहम जो मुआहिदा किया गया है उसमें ख़ुदा का हवाला भी किसी पहलू से शामिल हो। ऐसी तमाम सूरतों में अहद करने वाले गोया ख़ुदा को इस मामले का गवाह या जामिन बनाते हैं। ऐसे मुआहिदे जिनमें ख़ुदा का नाम भी शामिल किया गया हो उन्हें तोड़ना और भी ज्यादा बुरा है क्योंकि इसका मतलब यह है कि जब आदमी को दूसरों के ऊपर अपना एतबार कायम करना था तो उसने

ख़ुदा के नाम को इस्तेमाल किया और जब उस पर नफ़स या मफ़ाद के तक्ज़े ग़ालिब आए तो उसने ख़ुदा को नज़रअंदाज़ कर दिया।

अफ़राद या कौमों के दर्मियान जो मुआहिदे होते हैं उनकी दो सूत्रें हैं। एक यह कि वे उसूलों के ताबेअ हों। दूसरे यह कि वे मफ़ादात के ताबेअ हों। क़दीम ज़माने में और आज भी आम हालत यह है कि जब मुआहिदा करने में कोई फ़ायदा नज़र आए तो मुआहिदा कर लिया। और जब तोड़ना मुफ़ीद मालूम हुआ तो उसे तोड़ दिया। इसके बरअक्स इस्लाम की तालीम यह है कि मुआहिदों को शरई और अख़लाकी उसूलों के ताबेअ रखा जाए।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَكِنْ يُخِصُّ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَلَسْتُمْ لَنْ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾

और अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही उम्मत बना देता लेकिन वह बेराह कर देता है जिसे चाहता है और हिदायत दे देता है जिसे चाहता है और ज़रूर तुमसे तुम्हारे आमाल की पूछ होगी। (93)

दुनिया में इस्तेलाफ़ात (मत-भिन्नताएं) हैं। हक़ और नाहक एक दूसरे से अलग नहीं होते। इसकी वजह ख़ुदा का वह मंसूबा है जिसके तहत उसने मौजूदा दुनिया को बनाया है। और वह मंसूबा इम्तेहान है।

मौजूदा दुनिया में इंसान को जांच की गरज से रखा गया है। यह मक़सद इसके बग़ैर पूरा नहीं हो सकता था कि हर आदमी को मानने और न मानने की आज़ादी हो। यहां तक कि उसे यह भी आज़ादी हो वह हक़ को नाहक साबित करे और नाहक को हक़ के रूप में पेश करे। अगर यह मस्लेहत न होती तो ख़ुदा तमाम इंसानों को उसी तरह अपने हुक्म का पाबंद बना देता जिस तरह वह बकिया कायनात को अपने हुक्म का पाबंद बनाए हुए है।

यह सूरतेहाल क़ियामत तक के लिए है। क़ियामत के दिन खुल जाएगा कि किसने अपनी समझ को सही तौर पर इस्तेमाल किया और किसने अपने मफ़ाद (स्वार्थ) के खातिर सच्चाई को नज़रअंदाज़ किया। उस वक्त ख़ुदा हर एक के साथ वह मामला करेगा जिसका उसने मौजूदा इम्तेहानी मरहले में अपने को अहल साबित किया था।

وَلَا تَتَّخِذُوا أَيَّامَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ فَتَرَبَّكُمُ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٩٤﴾ وَلَا تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللَّهِ ثَمَنًا قَلِيلًا إِنَّمَا عِنْدَ اللَّهِ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٩٥﴾

और तुम अपनी कसमों को आपस में फ़ेव का ज़रिया न बनाओ कि कोई क़दम ज़मने के बाद फिसल जाए और तुम इस बात की सजा चखो कि तुमने अल्लाह की राह से

सूरह-16. अन-नहल

749

पारा 14

रोका और तुम्हारे लिए एक बड़ा अजाब है। और अल्लाह के अहद (वचन) को थोड़े फायदे के लिए न बेचो। जो कुछ अल्लाह के पास है वह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो। (94-95)

कसम खाकर मुआहिदा (समझौता) करना पुख्ता मुआहिदे की आखिरी सूरत है। इस एतबार से इस आयत के तहत तमाम मुआहिदे आ जाते हैं।

अगर मुसलमान ऐसा करें कि वे दूसरों से मुआहिदाती मामले करें और फिर किसी हकीकी सबब के बगैर महज मफ़द के खातिर उन्हें तोड़ दें तो इससे माहिल में मुसलमानों की अज़्ज़ाकी साख़ ख़त्म हो जाएगी। और नतीजतन उनका यह अमल लोगों को अल्लाह की राह से रोकने का जरिया बन जाएगा। मुफ़र्रिसर इब्ने कसीर लिखते हैं कि जब मुक़िरे इस्लाम देखेगा कि मुसलमान ने मुआहिदा किया और फिर उसने उससे बेवफ़ाई की तो उसे दीने इस्लाम पर एतमाद बाकी न रहेगा और इसकी वजह से वह ख़ुदा के दीन में दाख़िल होने से रुक जाएगा।

अहद को ग़ैर शरई तौर पर तोड़ने का वाक़या हमेशा इसलिए पेश आता है कि आदमी को यह नजर आने लगता है कि अगर वह मुआहिदे को तोड़ दे तो उसे फ़ुलां दुनियावी फ़ायदा हासिल हो जाएगा। मगर मोमिन की नजर आख़िरतपसंदाना नजर होती है। जब भी उसका नफ़्स इस किस्म की तहरीक करता है तो वह अपने नफ़्स को यह कहकर दबा देता है कि मुआहिदा तोड़ने में अगर दुनिया का फ़ायदा है तो मुआहिदा न तोड़ने में आख़िरत का फ़ायदा। और दुनिया के फ़ायदे के मुक़बले में आख़िरत का फ़ायदा यकीनन ज्यादा बड़ा है।

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللَّهِ بَاقٌ وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِينَ صَبَرُوا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٤﴾ مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أَنشَىٰ وَهُوَ مُؤْمِرٌ فَلَنُحْيِيَنَّاهُ حَيٰوةً طَيِّبَةً وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿٩٥﴾

जो कुछ तुम्हारे पास वह ख़त्म हो जाएगा और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बाकी रहने वाला है। और जो लोग सब्र करेंगे हम उनके अच्छे कामों का अज़्र (प्रतिफल) उन्हें जरूर देंगे। जो शरूस् कोई नेक काम करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो तो हम उसे ज़िंदगी देंगे, एक अच्छी ज़िंदगी। और जो कुछ वे करते रहे उसका हम उन्हें बेहतरीन बदला देंगे। (96-97)

ख़ुदा के दाजी का साथ देना रवाज्याफ़ता मजहबी निज़ाम को छोड़कर ग़ैर रवाजी मजहब के साथ अपने आपको वाबस्ता करना है। इस तरह का इक्दाम हमेशा आदमी के लिए मुश्किलतरीन होता है। इसमें उस फ़ायदे को नज़रअंदाज करना होता है जो इंसानों से मिल रहा है। और उस फ़ायदे की तरफ़ बढ़ना होता है जो ख़ुदा से मिलने वाला है।

इस किस्म का पैसला करने के लिए वाहिद चीज जो दरकार है वह 'सब्र' है। यानी यह बर्दाश्त कि आदमी कल के फ़ायदे के खातिर आज का नुक़सान ग़वारा कर सके। यह

पारा 14

750

सूरह-16. अन-नहल

सलाहियत कि आदमी नज़र आने वाली चीज़ के मुक़बले में उसे ज्यादा अहमियत दे सके जो नज़र नहीं आती। यह हैसला कि आदमी कुर्बानी की कीमत पर किसी चीज़ को इज़्तिहार करे न कि महज़ पैसी नफ़ की कीमत पर। ख़ुदा के जो बंदे इस उलुलअज़्मी (संक्रय) का सुक़ूत दें यकीन वे इस काबिल हैं कि ख़ुदा उन्हें अपनी आलातरीन नेमतों से नवाजे।

जो अफ़राद बेआमेज़ (विशुद्ध) हक़ का साथ देने की वजह से मुक़बल (स्थापित) निज़ाम में नुक़सान उठाते हैं। उन्हें लोग समझ लेते हैं कि वे बर्बाद हो गए। मगर ख़ुदा का वादा है कि वह उन्हें उनकी कुर्बानियों का भरपूर मुआवजा देगा। मौत के बाद की अबदी (चिरस्थायी) दुनिया में वह उन्हें निहायत बेहतर ज़िंदगी से नवाजेगा। जिन चीज़ों को उन्होंने वक़ती तौर पर खोया है, उन्हें वह ज्यादा बेहतर शक़ल में अबदी तौर पर दे देगा।

ख़ुदा का यह वादा औरतों के लिए भी इसी तरह है जिस तरह वह मर्दों के लिए है। ख़ुदा के यहां जज़ा के मामले में औरत और मर्द की कोई तक्सीम नहीं।

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ﴿٩٦﴾ إِنَّهُ لَيْسَ لَهُ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ ﴿٩٧﴾ إِنَّهَا سُلْطٰنُهُ عَلَى الَّذِينَ يَتَوَكَّلُونَ وَالَّذِينَ هُمْ بِهِ مُشْرِكُونَ ﴿٩٨﴾

पस जब तुम कुरआन को पढ़ो तो शैतान मर्दूद से अल्लाह की पनाह मांगो। उसका जोर उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान वाले हैं और अपने रब पर भरोसा रखते हैं। उसका जोर सिर्फ़ उन लोगों पर चलता है जो उससे तअल्लुक रखते हैं, और जो अल्लाह के साथ शिर्क करते हैं। (98-100)

कुरआन को पढ़ने की दो सूरते हैं। एक, अपनी नसीहत के लिए पढ़ना। दूसरे, दावत (आह्वान) की खातिर दूसरों के सामने पेश करना, चाहे कुरआन के अल्फ़ज़ दोहराए जाएं या उसके मताल्लिब (भावार्थ) बयान किए जाएं। दोनों सूरतों में जरूरी है कि आदमी शैतान के मुक़बले में ख़ुदा की पनाह मांगे। पनाह चाहने का मतलब सिर्फ़ कुछ मुक़र्रह अल्फ़ज़ की तकरार नहीं बल्कि अपने आपको शुऊरी तौर पर मुसल्लह करना है ताकि शैतान का हमला बेअसर होकर रह जाए।

शैतान हर वक़्त आदमी की घात में है। वह कुरआन के अल्फ़ज़ के मफ़हूम (भावार्थ) को उसके वक़री के ज़ेह्न में बदल देता है। और जो चीज़ मल्ल (मूल पाठ) में न हो उसे तफ़सीर में शामिल करा देता है। इसी तरह शैतान दाजी और मदऊ के दर्मियान ऐसे फ़ितने उभारता है जिसके नतीजे में दावत (आह्वान) का अमल रुक जाए।

ताहम शैतान को ख़ुदा ने सिर्फ़ बहकाने और वरग़लाने की आजादी दी है। उसे यह ताक़त् नहीं दी कि वह किसी को बजोर गुमराही के रास्ते पर डाल दे। जो लोग ख़ुदा से अपना ज़ेहनी राबता कायम किए हुए हों उन पर उसका कुछ बस नहीं चलता। अलबत्ता जो लोग ख़ुदा से ग़ाफ़िल हों और शैतान की बातों पर ध्यान दें उनके ऊपर शैतान मुसल्लत हो जाता है और फिर जिधर चाहता है उधर उन्हें ले जाता है।

وَلَا تَبَدَّلْنَا آيَةً مَّكَانَ آيَةٍ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُنْزِلُ قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مُفْتَرٍ
بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٠٣﴾ قُلْ نَزَّلَهُ رُوحُ الْقُدُسِ مِنْ رَبِّكَ بِالْحَقِّ
لِيُثَبِّتَ الَّذِينَ آمَنُوا وَهُدًى وَبُشْرَى لِلْمُسْلِمِينَ ﴿١٠٤﴾

और जब हम एक आयत की जगह दूसरी आयत बदलते हैं, और अल्लाह खूब जानता है जो कुछ वह उतारता है, तो वे कहते हैं कि तुम गढ़ लाए हो। बल्कि उनमें अक्सर लोग इल्म नहीं रखते। कहे कि इसे रूहुल कुदस (पवित्र आत्मा) ने तुम्हारे रब की तरफ से हक के साथ उतारा है ताकि वह ईमान वालों को साबित कदम रखे और वह हिदायत और खुशखबरी हो फरमांबरदारों के लिए। (101-102)

कुरआन एक दावती किताब है। इसके मुखलिफ हिस्से 23 साल के अर्से में थोड़ा-थोड़ा करके उतरते रहे। दावत व तर्बियत के मुसालेह के तहत कुछ अहकाम में तदरीज (क्रम) का तरीका भी इस्तिथार किया गया (मसलन पहले यह हुक्म आया कि मुखलिफों के मुकाबले में सन्न करो। इसके बाद यह हुक्म आया कि उनसे जंग करो।)

इस किस्म की 'तब्दीलियों' को लेकर मुखलिफीन यह कहते कि कुरआन खुदा की किताब नहीं। यह मुहम्मद की अपनी तस्नीफ (कृति) है जिसे उन्होंने खुदा की तरफ मंसूब कर दिया है। अगर वह खुदा की तरफ से होती तो उसमें कभी इस किस्म की तब्दीलियां न होतीं।

मुखलिफीन अगर कुरआन के मामले में संजीदा होते और तब्दीली के वाक्ये को सही रुख से देखते तो इसमें उन्हें तदरीज फिलअहकाम (आदेशों में क्रम) की हिक्मत नजर आती। मगर जब उन्होंने इसे गलत रुख से देखा तो तब्दीली का वाकया उन्हें इंसानी इल्म की कमी का नतीजा नजर आया। जिस चीज में उनके लिए तस्दीक (प्रमाण) का सामान छुपा हुआ था उसे उन्होंने अपने लिए इफ्तिरा (गढ़ना) का जरिया बना लिया।

कुरआन को हक के साथ उतारा गया है। यहां हक से मुराद खुदा का ख़ालिस और बेआमेज (विशुद्ध) दीन है। जो लोग सच्चाई के तालिब हों और मिलावटी दीनों में इत्मीनान न पाते हों, उनके लिए कुरआनी दीन में अपनी तलाश का जवाब भी है और उनकी तस्कीने कत्ब का सामान भी।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهُ بَشَرٌ لِّسَانُ الَّذِي يُلْحِدُونَ إِلَيْهِ
أَتَجْعَلُونَ هَذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُبِينٌ ﴿١٠٥﴾ إِنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ
لَا يَهْدِيهِمُ اللَّهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١٠٦﴾ إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِينَ
لَا يُؤْمِنُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ ﴿١٠٧﴾

और हमें मालूम है कि ये लोग कहते हैं कि इसे तो एक आदमी सिखाता है। जिस शख्स की तरफ वे मंसूब करते हैं। उसकी जवान अजमी (गैर-अरबी) है और यह

कुरआन साफ अरबी जवान है। बेशक जो लोग अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं लाते, अल्लाह उन्हें कभी राह नहीं दिखाएगा और उनके लिए दर्दनाक सजा है। झूठ तो वे लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर ईमान नहीं रखते और यही लोग झूठे हैं। (103-105)

मक्का में कुछ अजमी (गैर-अरबी) गुलाम थे। उनके नाम तपसीर की किताबों में हैं, यसार आइश, यईश वौरह आए हैं। इस जिन्न में सलमान फारसी का नाम भी लिया गया है जो बाद को मुसलमान हो गए। ये गुलाम या यहूदी थे या नसरानी। इस बिना पर वे कदीम आसमानी मजाहिब, यहूदियत और नसरानियत के बारे में मालूमात रखते थे। इनमें से किसी की कभी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुलाकात हो जाती थी। इस तरह की मुलाकातों को बुनियाद बनाकर कुरैश के लीडरों ने कहा कि 'यही अजमी लोग मुहम्मद को कुछ बातें बता देते हैं और वह उन्हें खुदाई कलाम बताकर लोगों के सामने पेश करते हैं।'

यह मजहकाखेज़ बात उन्होंने क्यों कही। इसकी वजह वही आम बुराई है जो हर जमाने में और हमेशा दुनिया में पाई गई है। वह है अपने हमअस (समकालीन) की कीमत को न पहचानना। कुरैश के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक मुआसिर (समकालीन) शख्सियत थे, इसलिए वे आपको पहचानने और आपकी कद्र करने में नाकाम रहे।

इस आयत से मालूम होता है कि जो लोग मुआसिराना नपिसयात के फितने में मुत्तिला हों वे कभी हक को कुबूल करने की तौफ़ीक नहीं पाते। वे हक को मान लेने के बजाए यह करते हैं कि हक के अलमबरदार के खिलाफ झूठी बातें गढ़ते रहते हैं। वे बड़ी-बड़ी हक्कीकतों को नजरअंदाज कर देते हैं। और छोटी-छोटी बातों को लेकर दाजी की शख्सियत को बदनाम करते हैं। वे इसी में मशगूल रहते हैं, यहां तक कि मर कर खुदा की पकड़ के मुस्तहिक बन जाते हैं।

مَنْ كَفَرَ بِاللَّهِ مِنْ بَعْدِ إيمَانِهِ إِلَّا مِنْ أَكْرَهٍ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ
وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللَّهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ
عَظِيمٌ ﴿١٠٨﴾ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الْآخِرَةِ وَأَنَّ اللَّهَ
لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿١٠٩﴾ أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَ
سَمِعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ ﴿١١٠﴾ لَاجِرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ
الْخَسِرُونَ ﴿١١١﴾

जो शख्स ईमान लाने के बाद अल्लाह से मुंकिर होगा, सिवा उसके जिस पर जबरदस्ती की गई हो बशर्ते कि उसका दिल ईमान पर जमा हुआ हो, लेकिन जो शख्स दिल खोलकर मुंकिर हो जाए तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़जब होगा और उन्हें बड़ी सजा होगी। यह इस वास्ते कि उन्होंने आखिरत (परलोक) के मुकाबले में दुनिया की ज़िंदगी को पसंद किया और अल्लाह मुंकिरों को रास्ता नहीं दिखाता। ये वे लोग हैं कि अल्लाह

ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आंखों पर मुहर कर दी। और ये लोग बिल्कुल ग्राफिल हैं। लाजिमी बात है कि अखिरत में ये लोग घाटे में रहेंगे। (106-109)

खुदा के यहां हकीकत का एतबार किया जाता है न कि महज जाहिर का। यही वजह है कि इस्लाम में इंसान के साथ बहुत रियायत की गई है। अगर कोई शख्स दिल से खुदा का सच्चा वफादार हो। मगर सख्त मजबूरी की हालत में अपनी जान बचाने के लिए वकती तौर पर कोई खिलाफे ईमान कलिमा कह दे तो खुदा के यहां इस पर उसकी पकड़ न होगी। मगर वे लोग खुदा के यहां नाक़ाबिले माफी हैं जो अंदर से बदल चुके हों। जो शैतानी शुबहवात या हालात के दबाव से मुतअस्सिर होकर दिल की रिजामंदी से किसी और रास्ते पर चल पड़ें। जब आदमी ईमान के बजाए गैर ईमान की रविश इख़्तियार करता है तो इसकी वजह हमेशा दुनियापरस्ती होती है। वह दुनियावी मफ़ाद को ख़तरे में देखकर गैर मोमिनाना रविश पर चल पड़ता है। अगर वह अखिरत की कद्र व कीमत को समझता तो दुनिया का मफ़ाद उसे इतना हकीर (तुच्छ) नजर आता कि उसे यह बात बिल्कुल लम्ब (घटिया) मालूम होती कि दुनिया की खातिर वह अखिरत को छोड़ दे।

अखिरत के मुक़ाबले में दुनिया के फ़ायदे अगर किसी के नजदीक अहमतर बन जाएं तो इसका लाजिमी नतीजा यह होता है कि वह मामलात को अखिरत के मुक़ाए नजर से सोच नहीं पाता। वह देखता और सुनता है मगर दुनिया की तरफ झुकाव की वजह से चीजों का उखरवी (परलोकवादी) पहलू उसकी निगाहों से ओझल हो जाता है। वह उसी पहलू को देख पाता है जो दुनियावी मसालेह (हितों) से तअल्लुक रखते हों। जो लोग ग़फ़लत के इस मर्तबे को पहुंच जाएं उनके हिस्से में अबदी (चिरस्थायी) नुक़सान के सिवा और कुछ नहीं।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ هَاجَرُوا مِنْ بَعْدِ مَا فُتِنُوا ثَجَّاهِدُوا وَصَبَرُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝ يَوْمَ تَأْتِي كُلُّ نَفْسٍ بُجَادِلٍ عَنْ نَفْسِهَا وَتُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ۝

फिर तेरा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने आजमाइश में डाले जाने के बाद हिजरत (स्थान-परिवर्तन) की, फिर जिहाद किया और कायम रहे तो इन बातों के बाद बेशक तेरा रब बख़्शाने वाला, महरबान है। जिस दिन हर शख्स अपनी ही तरफ़दारी में बोलता हुआ आएगा। और हर शख्स को उसके किए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर जुल्म न किया जाएगा। (110-111)

माहिल पर नाहक का ग़लबा हो उस वक़्त कोई शख्स हक़ को कुबूल कर ले तो वह सख्त आजमाइश में पड़ जाता है। चारों तरफ से माहिल का दबाव जोर करता है कि आदमी दुबारा खाजी दीन की तरफ लौट जाए। ऐसी हालत में अगर वह हक़ पर कायम रहे, वह हर चीज यहां तक कि जायदाद और वतन को छोड़ दे मगर हक़ को न छोड़े तो वह मुहाजिर और मुजाहिद है। और अल्लाह की नजर में बहुत बड़े सवाब का मुस्तहिक है।

दुनिया की आजमाइश में जो चीज हक़ पर साबित कदम रखने वाली है वह सिर्फ अखिरत की याद है। हर आदमी पर बहुत जल्द एक हौलनाक दिन आने वाला है। वह दिन ऐसा सख्त होगा कि आदमी अपने दोस्तों और रिश्तेदारों तक को भूल जाएगा। वहां न कोई शख्स किसी की तरफ से बोल सकेगा और न कोई शख्स किसी का सिफारिशी बनकर खड़ा होगा। अगर आदमी को उस आने वाले दिन का एहसास हो तो उसका यही हाल होगा कि वह हर किस्म का नुक़सान ग़वारा कर लेगा मगर हक़ को कभी न छोड़ेगा।

وَضَرَبَ اللَّهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ آمِنَةً مُطْمَئِنَّةً يَأْتِيهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللَّهِ فَأَذَاقَهَا اللَّهُ لِبَاسَ الْجُوعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوا يَصْنَعُونَ ۝ وَلَقَدْ جَاءَهُمْ رَسُولٌ مِنْهُمْ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظَالِمُونَ ۝

और अल्लाह एक बस्ती वालों की मिसाल बयान करता है कि वे अमन और इत्मीनान में थे। उन्हें उनका रिक्क फ़राहत के साथ हर तरफ से पहुंच रहा था। फिर उन्होंने खुदा की नेमतों की नाशुकी की तो अल्लाह ने उन्हें उनके आमाल के सबब से भूख और ख़ौफ का मजा चखाया। और उनके पास एक रसूल उन्हीं में से आया तो उसे उन्होंने झूठ बताया फिर उन्हें अजाब ने पकड़ लिया और वे जालिम थे। (112-113)

इंसानों की कोई आबादी इत्मीनान की हालत में हो और उसके दर्मियान रिक्क की फरावानी हो। फिर खुदा अपने किसी बंदे को उनके दर्मियान खड़ा करे जो उन्हें हक़ की तरफ बुलाए तो ऐसी हालत में हमेशा दो में से कोई एक सूरत पेश आती है। या तो यह आबादी हक़ को कुबूल करे (अतिरिक्त) खुदाई इनामात की मुस्तहिक बने और अगर वह ऐसा न करे तो फिर यह होता है कि उस पर तरह-तरह के हादसात गुजरते हैं। ये हादसात उसके हक़ में खुदाई अजाब नहीं होते बल्कि खुदाई तंबीहात (चेतावनिया) होते हैं। इनका मक़सद यह होता है कि लोग चौकन्ने हो जाएं। उनकी हस्सासियत (संवेदनशीलता) जागे और वे खुदा के दाओ की पुकार पर लम्बैक कहने के लिए तैयार हो जाएं।

अगर इस किस्म की तंबीहात कारगर न हों तो दावत की तक्मील के बाद दूसरा मरहला यह आता है कि उस कौम को हलाक कर दिया जाए ताकि वह अखिरत के आलम में पहुंच कर अपने अबदी अंजाम को भुगतें।

فَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا ۚ وَاشْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ ۚ إِنَّ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُونَ ۝ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْبَيْتَةَ وَالدَّمَ وَحُمَ الْخَزِيرِ وَمَا أَهْلَ غَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ۝

सो जो चीजें अल्लाह ने तुम्हें हलाल और पाक दी हैं उनमें से खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र करो। अगर तुम उसकी इबादत करते हो। उसने तो तुम पर सिर्फ मुर्दार को हारम किया है और खून को और सुअर के गोشت को और जिस पर गैर-अल्लाह का नाम लिया गया हो। फिर जो शख्स मजबूर हो जाए बशर्ते कि वह न तालिब हो और न हद से बढ़ने वाला, तो अल्लाह बख्शने वाला महरबान है। (114-115)

इस आयत का तअल्लुक रोज़मरह खाने वाली चीजों से है। खुदा ने जो कबिले खुराक चीजें पैदा की हैं, उनमें चन्द मुतअय्यन चीजों को छोड़कर बकिया सब इंसान के लिए हलाल हैं। ताहम कदीम मुशिक इंसान ने यह किया कि खुदा की हलाल की हुई बहुत सी गिजाओं को बतौर खुद अपने लिए हारम कर लिया। जदीद मुलहिद (आधुनिक नास्तिक) इंसान ने इसके बरअक्स यह किया कि खुदा की हारम की हुई बहुत सी गिजाओं को बतौर खुद अपने लिए हलाल ठहरा लिया। यह दोनों चीजें उस रूह (भावना) की कातिल हैं जिसे गिजाई नेमतों के जरिए इंसान के अंदर पैदा करना मक्सूद है।

गिजा इंसान की तमाम जरूरतों में सबसे ज्यादा अहम जरूरत है जिसका हर इंसान को सुबह व शाम तजर्बा होता है। खुदा को यह मल्लूब है कि आदमी जब गिजा का इस्तेमाल करे तो वह उसे खुदा का अतिव्या (देन) समझ कर खाए और उस पर खुदा का शुक्र अदा करे। मगर इंसान ने पूरे मामले को उलट दिया।

कदीम मुशिकाना दौर में उसने इन गिजाओं को देवताओं के साथ मंसूब किया और इस तरह उन्हें खुदा के बजाए देवताओं की याद का जरिया बना दिया। जदीद मुलहिदाना जमाने में यह हुआ है कि इंसान ने सारे मामले को अपनी लज्जेत नफ्स के ताबेअ कर दिया। उसने खुदा की हारम गिजाओं को भी अपने लिए हलाल ठहरा लिया। नतीजा यह हुआ कि खुदा की पैदा की हुई चीजें उसके लिए सिर्फ अपनी लज्जेत का दस्तरख़ान बनकर रह गईं।

मजबूरी की हालत में अगर कोई शख्स खुदा के गिजाई कानून को बदले तो वह नदामत के जज्बे के तहत ऐसा करेगा न कि सरकशी के जज्बे के तहत। इसलिए इससे नपिसयाते इंसानी में कोई ख़राबी पैदा होने का अंदेशा नहीं।

وَلَا تَقُولُوا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هَذَا حَلَالٌ وَهَذَا حَرَامٌ لِّتَعْتَرُوا
عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ إِنَّ الَّذِينَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُونَ ﴿١١٦﴾
قَلِيلٌ وَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿١١٧﴾

और अपनी जबानों के गढ़े हुए झूठ की बिना पर यह न कहो कि यह हलाल है, और यह हारम है कि तुम अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाओ। जो लोग अल्लाह पर झूठी तोहमत लगाएंगे वे फ़लाह (कल्याण, सफलता) नहीं पाएंगे। वे थोड़ा सा फ़ायदा उठा लें, और उनके लिए दर्दनाक अजाब है। (116-117)

इस आयत का तअल्लुक आम कानूनसजी से नहीं है बल्कि गिजाई चीजें में हारम व हलाल मुकर्रर करने से है। इंसान हमेशा यह करता रहा है कि वह खाने की चीजों में कुछ को जाइज और कुछ को नाजाइज ठहराता है। ऐसा या तो तवह्दुमात (अंधविश्वास) के तहत होता है या ख़ाहिशात के तहत। मगर इसे करने वाले इसे मजहब की तरफ़ मंसूब कर देते हैं।

मज्जूर किस्म की तहरीम (अवैधता) व तहलील (वैधता) का यह नुक्सान है कि इससे लोगों में तवह्दुमपरस्ती और ख़ाहिशपरस्ती का मिजाज पैदा होता है। जबकि आदमी के लिए सही बात यह है कि वह दुनिया में खुदापरस्त बनकर रहे।

मौजूदा जिंदगी में इस्तेहान की वजह से इंसान को आजादी हासिल है। तवह्दुमात और ख़ाहिशात को अपना दीन बनाने का मौका मिलने की वजह यही आजादी है। जब इस्तेहान की मुद्दत ख़त्म होगी तो अचानक इंसान पाएगा कि उसके लिए एक ही मुमकिन रास्ता था। यानी खुदापरस्ती को अपना दीन बनाना। इसके अलावा जिन चीजों को उसने अपनाया वह सिर्फ इस्तेहान आजादी का ग़लत इस्तेमाल था न कि उसका कोई जाइज हक़। उस वक़्त उसे वही सजा भुगतनी पड़ेगी जो इस्तेहान में नाकाम होने वालों के लिए मुकद्दर है।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَمَا ظَلَمْنَاهُمْ وَلَكِنْ كَانُوا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ﴿١١٨﴾

और यहूदियों पर हमने वे चीजें हारम कर दी थीं जो हम इससे पहले तुम्हें बता चुके हैं कि हमने उन पर कोई जुल्म नहीं किया बल्कि वे खुद अपने ऊपर जुल्म करते रहे। (118)

यहूद की मजहबी किताबों में कुछ ऐसी खाने की चीजें हारम हैं जो इस्लाम की शरीअत में हारम नहीं की गई हैं। (अन-निसा 160)। इसकी वजह यह नहीं कि खुद खुदा ने दो किस्म के अहक़ाम दिए हैं। यहूद पर भी अस्लन वही गिजाई चीजें हारम ठहराई गई थीं जो यहां (अन नहल, आयत 115) में मज्जूर हैं। मगर बाद को यहूद ने खुदसाख़्ता (स्वनिर्मित) तसब्बुरात के तहत कुछ जाइज चीजों को अपने ऊपर हारम कर लिया। पैम्बरों की फ़हमाइश के बावजूद वे अपने इस खुदसाख़्ता दीन को छोड़ने पर तैयार नहीं हुए।

मजीद यह कि अव्वलन उन्होंने खुदा के हलाल को हारम किया और इस तरह अपने आपको नाहक मुसीबतों में डाला। और फिर जब वे उस हारम पर कायम न रह सके तो अकीदतन उसे हारम समझते हुए अमलन उसे अपने लिए जाइज बना लिया। इस तरह वे दोहरे मुजरिम बन गए।

आदमी अगर किसी खुदसाख़्ता नज़रिये के तहत एक जाइज चीज को अपने लिए नाजाइज बना ले और उसकी ख़ातिर कुर्बानियां देना शुरू करे, तो यह महज अपनी जान पर जुल्म करना होगा न कि खुदा के रास्ते में कुर्बानी पेश करना।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِينَ عَمِلُوا الشُّوْءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَ
أَصْلَحُوا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١١٩﴾

फिर तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने जहालत से बुराई कर ली, इसके बाद तौबा की और अपनी इस्लाह की तो तुम्हारा रब इसके बाद बख्शाने वाला महरबान है। (119)

जब बुराई के साथ सरकशी और तअस्सुब के जज्बात इकट्ठा हो जाएं तो आदमी उससे हटने के लिए तैयार नहीं होता, चाहे उसके अमल को गलत साबित करने के लिए कितने ही दलाइल दिए जाएं। मगर बुराई की दूसरी किस्म वह है जो महज नादानी की वजह से पैदा होती है। आदमी बेखबरी में या नपस से मगलूब होकर कोई गलती कर बैठता है। ऐसे आदमी के अंदर आम तौर पर ढिठाई नहीं होती। जब दलील से उस पर उसकी गलती वाजिह हो जाए तो वह फौरन पलट आता है और दुबारा अपने को सही रवैया पर कायम कर लेता है।

पहली किस्म के लोगों के लिए माफी का कोई सवाल नहीं। मगर दूसरी किस्म के लोगों के लिए यह बशारत (शुभ सूचना) है कि खुदा उन्हें अपनी रहमतों के साये में ले लेगा क्योंकि वह अपने बंदों पर बहुत ज्यादा महरबान है।

إِنَّ إِبْرَاهِيمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِلَّهِ حَنِيفًا وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۖ شَاكِرًا
لِّلنِّعَةِ ۖ أَجْتَبَلَهُ وَهَدَاهُ إِلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ ۖ وَاتَّبَعَهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً
وَوَآلَهُ فِي الْآخِرَةِ لِمِنَّ الصَّالِحِينَ ۖ ثُمَّ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ أَنَّ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيمَ
حَنِيفًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۖ

बेशक इब्राहीम एक अलग उम्मत था, अल्लाह का फरमावरदार, और उसकी तरफ यकसू (एकाग्रचित्त), और वह शिर्क (खुदा के साझीदार बनाना) करने वालों में से न था। वह उसकी नेमतों का शुक्र करने वाला था। खुदा ने उसे चुन लिया। और सीधे रास्ते की तरफ उसकी रहनुमाई की। और हमने उसे दुनिया में भी भलाई दी और आखिरत में भी। वह अच्छे लोगों में से होगा। फिर हमने तुम्हारी तरफ 'वही' (प्रकाशना) की कि इब्राहीम के तरीके की पैरवी करो जो यकसू था और वह शिर्क करने वालों में से न था। (120-123)

हजरत इब्राहीम को कुरआन में खुदा के मल्लूब इंसान के नमूने के तौर पर पेश किया गया है। वह नमूने के इंसान क्यों बने। इसलिए कि वह माहौल के बिगाड़ के विपरीत तनहा ईमान पर कायम रहने वाले इंसान थे। वह अकेले खुदा के लिए खड़े हुए जबकि इस राह में कोई उनका साथ देने वाला न था।

हजरत इब्राहीम पूरी तरह अपने आपको खुदा की पाबंदी में दिए हुए थे। उन्होंने आलमगीर (विश्वव्यापी) मुशिरकाना माहौल में अपने आपको तौहीद (एकेश्वरवाद) के लिए यकसू कर लिया था। वह तमाम चीजों को खुदा की तरफ से मिली हुई चीज समझते थे और उनके लिए उनका दिल खुदा के शुक्र के जज्बे से भरा रहता था। हजरत इब्राहीम के इस कमाले ईमान की वजह से खुदा ने उन पर अपनी हिदायत की राहें खोल दीं और उन्हें पैगम्बरी के लिए चुन लिया ताकि वह दुनिया वालों को खुदा के दीन से आगाह करें।

हजरत इब्राहीम को दुनिया का हसनह (बेहतर) दी गई और आखिरत की बेहतर भी। यह मालूम है कि दुनियावी में हजरत इब्राहीम को न अवाम की भीड़ मिली, न इक्तेदार (सत्ता) का तख्त, और न और कोई दुनिया रौनक की चीज। इसके बावजूद कुरआन की यह गवाही है कि उन्हें खुदा की तरफ से दुनिया की बेहतर मिली थी। इससे मालूम हुआ कि खुदा की नजर में दुनिया की बेहतर न अवामी मकबूलियत का नाम है और न दौलत व हुकूमत का। बल्कि दुनिया की बेहतर खुदा की नजर में अस्लन वही चीजें हैं जिन्हें यहां हजरत इब्राहीम की खुसूसियत के तौर पर बयान किया गया है।

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَكْمُلُ يَنَّهُمْ
يَوْمَ الْقِيَمَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۖ

सब्त उन्हीं लोगों पर आयद किया गया था जिन्होंने उसमें इख्तेलाफ (मतभेद) किया था। और बेशक तुम्हारा रब कियामत के दिन उनके दर्मियान फैसला कर देगा जिस बात में वे इख्तेलाफ कर रहे थे। (124)

हफ्ते का एक दिन तमाम शरीअतों में इज्तिमाई इबादत का दिन रहा है। यहूद उसे सनीचर (सब्त) के दिन मनाते हैं। ईसाई इतवार के दिन। और मुसलमानों को हुकम है कि वे जुमा के दिन इसका एहतिमाम करें।

यहूद के बुजुर्गों ने मूशिगाफियां (कुतकी) करके बतौर खुद सब्त (Sabbath) के लिए नए-नए जवाबित (नियम) बनाए और अपने आपको मसूई पाबंदियों में जकड़ लिया। फिर जब इन पाबंदियों पर अमल करना उन्हें नामुमकिन मालूम हुआ तो अपने बुजुर्गों के तकद्दुस (पवित्रता) की वजह से वे उन्हें रद्द न कर सके। अलबत्ता अमली तौर पर उन्होंने उनके ख़िलाफ चलना शुरू कर दिया।

खुदा के दीन में बाद के आलिमों और बुजुर्गों ने अपनी तशरीहात से जो इख्तेलाफात (मतभेद) पैदा किए उनका फैसला दुनिया में होने वाला नहीं। मगर जब कियामत आएगी तो खुदा बता देगा कि अस्ल आसमानी दीन क्या था और वे क्या चीजें थीं जो लोगों ने अपनी तरफ से इजफा करके दीन में शामिल कर दीं।

أُدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ
أَحْسَنُ إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيلِهِ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ ۖ

अपने रब के रास्ते की तरफ हिकमत (तत्वदर्शिता) और अच्छी नसीहत के साथ बुलाओ और उनसे अच्छे तरीके से बहस करो। बेशक तुम्हारा रब खूब जानता है कि कौन उसकी राह में भटका हुआ है और वह उन्हें भी खूब जानता है जो राह पर चलने वाले हैं। (125)

दावत (आह्वान) का अमल एक ऐसा अमल है जो इतिहाई संजीदगी और ख़ैरख्वाही के जज्बे के तहत उभरता है। खुदा के सामने जवाबदेही का एहसास आदमी को मजबूर करता

सूरह-16. अन-नहल

759

पारा 14

है कि वह खुदा के बंदों के सामने दाजी बनकर खड़ा हो। वह दूसरों को इसलिए पुकारता है कि वह समझता है अगर मैंने ऐसा न किया तो मैं कियामत के दिन पकड़ा जाऊंगा। इस नफिसयात का कुदरती नतीजा है कि आदमी का दावती अमल वह अंदाज इस्त्रियार कर लेता है जिसे हिक्मत, अच्छी नसीहत और अच्छी बहस कहा गया है।

हिक्मत से मुराद दलील व बुरहान (स्पष्ट प्रमाण) है। कोई दावती अमल उसी वक्त हकीमी दावती अमल है जबकि वह ऐसे दलाइल के साथ हो जिसमें मुखातब के जेहन की पूरी रियायत शामिल हो। मुखातब के नजदीक, किसी चीज के साबितशुदा चीज होने की जो शराइत हैं, उन शराइत की तक्मील के साथ जो कलाम किया जाए उसी को यहां हिक्मत का कलाम कहा गया है। जिस कलाम में मुखातब की जेहनी व फिक्री रियायत शामिल न हो वह ग़ैर हकीमानी कलाम है। और ऐसा कलाम किसी को दाजी का मर्तबा नहीं दे सकता।

अच्छी नसीहत उस खुसूसियात का नाम है जो दर्दमंदी और ख़ैरख्वाही की नफिसयात से किसी के कलाम में पैदा होती है। जिस दाजी का यह हाल हो कि खुदा के अज्मत व जलाल (प्रताप) के एहसास से उसकी शख्सियत के अंदर भूचाल आ गया हो जब वह खुदा के बारे में बोलेगा तो यकीनी तौर पर उसके कलाम में अज्मते खुदावंदी की बिजलियां चमक उठेंगी। जो दाजी जन्नत और जहन्नम को देखकर दूसरों को उसे दिखाने के लिए उठे। उसके कलाम में यकीनी तौर पर जन्नत की बहारें और जहन्नम की हौलनाकियां गूंजती हुई नजर आएंगी। इन चीजों की आमेजिश दाजी के कलाम को ऐसा बना देगी जो दिलों को पिघला दे और आंखों को अश्कबार (नम) कर दे।

दावती कलाम की ईजाबी खुसूसियात यही दो हैं हिक्मत और मोअज़ते हसनह (अच्छी नसीहत)। ताहम हमेशा दुनिया में कुछ ऐसे लोग मौजूद रहते हैं जो ग़ैर जरूरी बहस करते हैं। जिनका मकसद उलझाना होता है न कि समझाना समझाना। ऐसे लोगों के बारे में मन्चूरा किस्म का दाजी जो अंदाज इस्त्रियार करता है, उसी का नाम 'अच्छी बहस' है। वह देढ़ी बात का जवाब सीधी बात से देता है वह सज़्ज अल्फ़ज सुनकर भी अपनी ज़बान से नर्म अल्फ़ज निकालता है। वह इल्जाम तराशी के मुक़बले में इस्तदलाल (तर्क) और तज्जिया (विश्लेषण) का अंदाज इस्त्रियार करता है। वह इश्तेआल (उत्तेजना) के उस्तूब के जवाब में सब्र का उस्तूब (शैली) इस्त्रियार करता है।

हक के दाजी की नजर सामने के इंसान की तरफ नहीं होती बल्कि उस खुदा की तरफ होती है जो सबके ऊपर है। इसलिए वह वही बात कहता है जो खुदा की मीजान (तुला) में हकीमी बात ठहरे न कि इंसान की मीजान में।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِي ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُونَ ۝ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الَّذِينَ اتَّقَوْا وَالَّذِينَ هُمْ مُحْسِنُونَ ۝

और अगर तुम बदला लो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हारे साथ किया गया है और अगर तुम सब्र करो तो वह सब्र करने वालों के लिए बहुत बेहतर है और सब्र करो

पारा 15

760

सूरह-16. अन-नहल

और तुम्हारा सब्र खुदा ही की तौफीक से है और तुम उन पर ग़म न करो और जो कुछ तदबीरों वे कर रहे हैं उससे तंग दिल न हो। बेशक अल्लाह उन लोगों के साथ है जो फ़ैहल (ईश-परायण) हैं और जो नेकी करने वाले हैं। (126-128)

यहां दाजी का वह किरदार बताया गया है जो मुख़ालिफ़ीन के मुकाबले में उसे इस्त्रियार करना है। फ़रमाया कि अगर मुख़ालिफ़ीन की तरफ से ऐसी तकलीफ़ पड़े जिसे तुम बर्दाश्त न कर सको तो तुम्हें उतना ही करने की इजाजत है जितना तुम्हारे साथ किया गया है। ताहम यह इजाजत सिर्फ़ इंसान की कमजोरी को देखते हुए बतौर रियायत है। वरना दाजी का अस्ल किरदार तो यह होना चाहिए कि वह मदरू की तरफ से पेश आने वाली हर तकलीफ़ पर सब्र करे। वह मदरू से हिसाब चुकाने के बजाए ऐसे तमाम मामलात को खुदा के ख़ाने में डाल दे।

मुखातब आख़िर हक को न माने। वह उसे मिटाने के दरपे हो जाए तो उस वक्त दाजी को सबसे बड़ी तदबीर जो करनी है वह सब्र है यानी रद्देअमल की नफिसयात या जवाबी कार्रवाइयों से बचते हुए मुस्बत (सकारात्मक) तौर पर हक का पैगाम पहुंचाते रहना। दाजी को अस्लन जो सुबूत देना है वह यह कि वह फ़ित्वाकअ अल्लाह से डरने वाला है। उसके अंदर वह किरदार पैदा हो चुका है जो उस वक्त पैदा होता है जबकि आदमी दुनिया के पर्दों से गुजर कर खुदा को उसकी छुपी हुई अज्मतों के साथ देख ले। अगर दाजी यह सुबूत दे दे तो इसके बाद बकिया मामलों में खुदा उसकी तरफ से काफी हो जाता है। इसके बाद दावत (आह्वान) के मुख़ालिफ़ीन की कोई तदबीर दाजी को नुक्सान नहीं पहुंचा सकती, चाहे वह तदबीर कितनी ही बड़ी क्यों न हो।

दुनिया में दो किस्म के इंसान होते हैं। एक वे जिनकी निगाहें इंसानों में अटकी हुई हों। जिन्हें बस इंसानों की कार्रवाइयां दिखाई देती हों। दूसरे वे लोग जिनकी निगाहें खुदा में अटकी हुई हों। जो खुदा की ताकतों को अपनी आंखों से देख रहे हैं। पहली किस्म के लोग कभी सब्र पर कादिर नहीं हो सकते। ये सिर्फ़ दूसरी किस्म के इंसान हैं जिनके लिए यह मुमकिन है कि वे शिकायतों और तलख़ियों (कटुताओं) को सह लें। और जो कुछ खुदा की तरफ से मिलने वाला है उसके ख़ातिर उसे नजरअंदाज कर दें जो इंसान की तरफ से मिल रहा है।

दाजी को जिस तरह जवाबी नफिसयात से परहेज करना है उसी तरह उसे जवाबी कार्रवाई से भी अपने आपको बचना है। मुख़ालिफ़ीन की साजिशें और तदबीरें बजाहिर डराती हैं कि कहीं वे दावत और दाजी को तहस नहस न कर डालें। मगर दाजी को हर हाल में खुदा पर भरोसा रखना है। उसे यह यकीन रखना है कि खुदा सब कुछ देख रहा है। और वह यकीनन हक की दावत का साथ देकर बातिलपरस्तों को नाकाम बना देगा।

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنَ الْإِنشَاءِ ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَا الَّذِي بَرَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنَ الْإِنشَاءِ ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ

सूरह-17. बनी इस्राईल

761

पारा 15

आयतें-111

सूरह-17. बनी इस्राईल

रुकूअ-12

(मक्का में नज़िल हुई)

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान, निहायत रहम वाला है।

पाक है वह जो ले गया एक रात अपने बंदे को मस्जिदे हराम से दूर की उस मस्जिद तक जिसके माहौल को हमने बाबरकत बनाया है ताकि हम उसे अपनी कुछ निशानियां दिखाएं। बेशक वह सुनने वाला, देखने वाला है। (1)

हिजरत से एक साल पहले मक्का के हालात बेहद सख्त थे। ऐसा मालूम होता था कि इस्लाम की तारीख बनने से पहले खत्म हो जाएगी। ऐन उस वक्त अल्लाह ने पैगम्बरे इस्लाम को एक अजीब निशानी दिखाई। यह निशानी उस हकीकत का महसूस मुजाहिरा था कि इस्लाम की तारीख न सिर्फ यह कि अपनी तक्मील तक पहुंचेगी, बल्कि इसके गिर्द ऐसे अमली हालात जमा किए जाएंगे कि वह अबदी (चिरस्थायी) तौर पर जिया और महफूज रहे। क्योंकि अब इसी को कियामत तक तमाम कौमों के लिए खुदा के दीन का मुस्तनद माखज (प्रमाणिक स्रोत) करार पाना है।

अल्लाह अपने खुसूसी एहतमाम के तहत पैगम्बरे इस्लाम को मक्का से फिलिस्तीन (बैतुल मज्दिस) ले गया। यह जिस्मानी या रूहानी सफर आपके सफरे मेराज की पहली मंजिल थी। यहां बैतुल मज्दिस में पिछले तमाम पैगम्बर भी जमा थे। उन सब ने मिलकर बाजमाअत नमाज अदा की और पैगम्बरे इस्लाम ने आगे खड़े होकर उन सबकी इमामत फरमाई। आपकी इमामत का यह वाक्या गोया उस खुदाई फैसले की एक अलामत था कि पिछली तमाम नुबुव्वतें अब हिदायते इलाही के मुस्तनद माखज (प्रमाणिक स्रोत) की हैसियत से मंसूख कर दी गईं। अब खुदाई हिदायत को जानने के लिए तमाम कौमों को पैगम्बरे इस्लाम के लिए हुए दीन की तरफ रुजूअ करना चाहिए।

इस अहम तकरीब को अंजाम देने के लिए फिलिस्तीन मौजूदगी जगह थी। फिलिस्तीन पिछले अक्सर अबिया की दावत (आह्वान) का मर्कज रहा है। इसलिए खुदा ने अपने इस फैसले के इन्हार के लिए इसी ख़स इलाके का इतिख़ाब फरमाया।

وَاتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ وَجَعَلْنَاهُ هُدًى لِّبَنِي إِسْرَءِيلَ ۖ أَلَّا تَتَّخِذُوا مِنْ دُونِي وَكِيلًا ۖ ذُرِّيَّتِي مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوحٍ إِنَّهُ كَانَ عَبْدًا شَكُورًا ۝

और हमने मूसा को किताब दी और उसे बनी इस्राईल के लिए हिदायत बनाया कि मेरे सिवा किसी को अपना कारसाज (कार्य-साधक) न बनाओ। तुम उन लोगों की औलाद हो जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था, बेशक वह एक शुक्रगुजार बंदा था। (2-3)

इसरा (मेराज) के मजहूर वाक्ये का मतलब यह था कि बन्नी इस्राईल (यहूद) को हमिले

पारा 15

762

सूरह-17. बनी इस्राईल

किताब (ग्रंथ धारक) के मकाम से माजूल कर दिया गया और उनकी जगह बन्नी इस्राईल को किताबे इलाही का हमिल बना दिया गया। यह वाक्या खुदा की सुन्नत के तहत अमल में आया। खुदा इस दुनिया में हक के एलान के लिए किसी तैशुदा गिरोह को मुंतख़ब करता है। यह सबसे बड़ा एज़ाज है जो इस दुनिया में किसी को मिलता है।

ताहम यह इतिख़ाब नस्ल या कौम की बुनियाद पर नहीं है। इसका इस्तहकाक किसी गिरोह के लिए सिर्फ उस वक्स साबित होता है जबकि वह उसके लिए जरूरी अहलियत (योग्यता) का सुबूत दे। अहलियत के खत्म होते ही उसका इस्तहकाक भी खत्म हो जाता है। उम्मेते आदम, उम्मेते नूह, उम्मेते मूसा, उम्मेते मसीह, हर एक के साथ यह वाक्या हो चुका है। आइंदा उम्मत के लिए भी खुदा का कानून यही है, इसमें किसी का कोई इस्तसना (अपवाद) नहीं।

इस मंसब के लिए जो अहलियत दरकार है वह यह कि खुदा के सिवा किसी को वकील (कारसाज) न बनाया जाए। सिर्फ एक खुदा पर सारा भरोसा करके अपने सारे मामलात उसके हवाले कर दिए जाएं।

खुदा को जब आदमी उसकी तमाम अज्मतों और कुदरतों के साथ पाता है तो इसका नतीजा यह होता है कि वह खुदा को अपना वकील (कारसाज) बना लेता है। जिस शख्स को खुदा की हकीकी मअरफ़त हो जाए, उसका हाल यही होगा कि वह इस दुनिया में खुदा को अपना सब कुछ बना लेगा। जो लोग इस तरह खुदा को पा लें वही मौजूदा दुनिया में मोमिनाना जिंदगी गुज़ार सकते हैं। मोमिनाना जिंदगी गुज़ारने के लिए आदमी को तमाम मख़्लूक़ात से ऊपर उठना पड़ता है। और तमाम मख़्लूक़ात से वही शख्स ऊपर उठ सकता है जो सबसे बड़ी चीज़ मख़्लूक़ात (सृष्टि) के ख़ालिक व मालिक को पा ले।

हक की दावत की जिम्मेदारी भी वही लोग सही तौर पर अदा कर सकते हैं जिन्हें खुदा की मअरफ़त का यह दर्जा हासिल हो जाए। हक की दावत के लिए कामिल बेग़र्ज़ और कामिल यकसूई (एकाग्रता) लाजिमी तौर पर जरूरी है। और कामिल बेग़र्ज़ और कामिल यकसूई इसके बग़ैर किसी के अंदर पैदा नहीं हो सकती कि उसकी तमाम उम्मीदें और अंदेशे खुदा से वाबस्ता हो चुके हों, खुदा ही उसका सब कुछ बन चुका हो।

وَقَضَيْنَا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَءِيلَ فِي الْكِتَابِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيرًا ۖ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ أُولَاهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَا أُولِي بَأْسٍ شَدِيدٍ فَجَاسُوا خِلَالَ الدِّيَارِ ۚ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُولًا ۚ ثُمَّ رَدَدْنَاهُمْ أَلْفًا كَثَرًا عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنَاهُمْ بِأَمْوَالٍ وَبَنِينَ وَجَعَلْنَاهُمْ أَكْثَرَ نَفِيرًا ۝

और हमने बनी इस्राईल को किताब में बता दिया था कि तुम दो मर्तबा जमीन (शाम) में ख़राबी करोगे और बड़ी सरकशी दिखाओगे। फिर जब उनमें से पहला वादा आया

तो हमने तुम पर अपने बंदे भेजे, निहायत जोर वाले। वे घरों में घुस पड़े और वादा पूरा होकर रहा। फिर हमने तुम्हारी बारी उन पर लौटा दी और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की और तुम्हें ज्यादा बड़ी जमाअत बना दिया। (4-6)

यहां फसाद से मुराद दीनी बिगाड़ है। जो हजरत मूसा के बाद बनी इस्राईल के दर्मियान जाहिर हुआ। इसके दो दौर हैं। पहले दौर के बिगाड़ की तफसीलात पुराने अहदनामे (ओल्डटेस्टामेंट) में जबूर, यसअयाह, यरमियाह, हज्कीइयल की किताबों में पाई जाती हैं। और दूसरे दौर के बिगाड़ की तफसील हजरत मसीह की जवान से है जो नए अहदनामे (न्यू टेस्टामेंट) में मत्ता और लूका की इंजीलों में मौजूद है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मक्का से उठाकर बैतुल मक्दिस ले जाया गया ताकि 'आपको खुदा की निशानियां दिखाई जाएं' इन निशानियों में से एक निशानी वह तारीख (इतिहास) भी है जो बैतुल मक्दिस से वाबस्ता है।

यह तारीख दरअसल खुदा के एक कानून का जुहूर है। वह कानून यह है कि आसमानी किताब की हामिल कौम अगर किताबे इलाही के हुक्म अदा करे तो उसे (आखिरत की कामयाबी के अलावा) दुनिया में सरफराजी दी जाए। और अगर वह किताब के हुक्म अदा न करे तो उसे दुनिया की जाबिर (दमनकारी) कौमों के हवाले कर दिया जाए जो उसे अपने जुल्म व दमन का निशाना बनाएं। यह गोया एक अलामत है जो इसी दुनिया में बता देती है कि खुदा उस कौम से खुश है या नाखुश।

इस क़सूर का ज़ुल्म (पूर्ववर्ती) हामिलीने किताब (यहूद) पर बार-बार हुआ है जिनमें से दो नुमायां वाक़ेयात का यहां बतौर नसीहत हवाला दिया गया है।

बनी इस्राईल पर अब्बलन खुदा ने यह इनाम किया कि उन्हें फिरऔन के जुल्म से नजात दिलाई और फिर हजरत मूसा के बाद उनके लिए ऐसे हालात पैदा किए कि वे फिलिस्तीन पर कब्जा करके अपनी सल्तनत कायम कर सकें। मगर बाद को यहूद के अंदर बिगाड़ आ गया। एक तरफ वे मुशिक कौमों पर दाजी (आह्वानकर्ता) बनने के बजाए खुद उनके मदद बन गए और उनके असर से मुशिकाना आमांल में मुक्तिला हो गए। दूसरी तरफ वे आपस के इस्तेफा (मतभेद) का शिकार होकर टुकड़े-टुकड़े हो गए।

खुदा की नाफरमानी के नतीजे में बनी इस्राईल पर जो कुछ गुजरा उसमें से एक नुमायां वाक़्या बाबिल (इराक) के बादशाह बनू कदनजर का है। यहूद की कमजोरियों से फायदा उठा कर बनू कदनजर ने फिलिस्तीन पर अपनी बालादस्ती कायम कर ली। इसके बाद उसने खुद यहूद के शाही ख़ानदान में से एक शख्स को अपना नुमाईदा बना दिया कि वह उसकी तरफ से उनके ऊपर हुक्मत करे। मगर यहूद ने इस 'मातहत' को अपने कौमी फख्र के खिलाफ समझा और उसके खिलाफ बगावत के दरपे हो गए। उनके अंदर ऐसे शायर और मुक़र्रि (वक्ता) पैदा हुए जिन्होंने पुरजोश अंदाज में यहूद को उभारना शुरू किया। यहूद के पैगम्बर यरमियाह ने मुतनब्बह किया कि ये सब झूठे लीडर हैं। तुम उनके फरेब में न आओ। तुम

अपनी मौजूदा कमजोरियों के साथ शाह बाबिल के मुकाबले में कामयाब नहीं हो सकते। इसके बजाए तुम ऐसा करो कि शाह बाबिल की सियासी बालादस्ती को तस्तीम करते हुए अपनी दीनी इस्लाह और तामीरी जद्दोजहद में लग जाओ यहां तक की अल्लाह आइंदा तुम्हारे लिए मजीद राहें पैदा कर दे। मगर यहूद ने यरमियाह नबी की नसीहत को नहीं माना। खुशफहम लीडरों की बातों में आकर उन्होंने शाह बाबिल के खिलाफ बगावत कर दी। इसके बाद शाह बाबिल सख्त गजबनाक हो गया। उसने दुबारा 586 ई०पू० में अपनी पूरी ताक़त से फिलिस्तीन पर हमला किया। यहूद की मुकम्मद शिकस्त हुई। शाह बाबिल ने न सिर्फ यहूद को जबरदस्त दुनियावी नुकसान पहुंचाए बल्कि यरोशलम में यहूद के इबादतख़ाने को मुकम्मल तौर पर ढा दिया जो यहूद की अज़मत का आखिरी निशान था।

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ لِيَسُوءَ وُجُوهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَلِيُتَبَرَّؤُا مَا عَصَوْا تَبَرُّؤُا ۚ عَلَىٰ رُبِّكُمْ إِنَّكُمْ عُدْتُمْ عَدُوًّا وَمَجَعْنَا جَهَنَّمَ لِلْكَافِرِينَ حَصِيرًا ۝

अगर तुम अच्छा काम करोगे तो तुम अपने लिए अच्छा करोगे और अगर तुम बुरा काम करोगे तब भी अपने लिए बुरा करोगे। फिर जब दूसरे वादे का वक़्त आया तो हमने और बंदे भेजे कि वे तुम्हारे चेहरे को बिगाड़ दें और मस्जिद (बैतुल मक्दिस) में घुस जाएं जिस तरह उसमें पहली बार घुसे थे और जिस चीज पर उनका जोर चले उसे बर्बाद कर दें। बर्बाद (असंभव) नहीं कि तुम्हारा खब तुम्हारे ऊपर रहम करे। और अगर तुम फिर वही करोगे तो हम भी वही करेंगे और हमने जहन्नम को मुंकिरीन के लिए कैदख़ाना बना दिया है। (7-8)

हादसों के नतीजे में बनी इस्राईल के अंदर रुजूअ इलल्लाह की कैफियत पैदा हुई तो खुदा ने दुबारा उनकी मदद की। इस बार खुदा ने शाह ईरान साइरस (खुसरू) को उठाया। उसने 539 ई०पू० में बाबिल पर हमला किया, और उसकी हुक्मत को शिकस्त देकर उसके ऊपर कब्जा कर लिया। इसके बाद उसने यहूद पर यह महरबानी की कि उन्हें दुबारा बाबिल से उनके वतन फिलिस्तीन जाने की इजाजत दे दी। चुनांचे वे वापस आए और एक अर्से के बाद दुबारा अपना इबादतख़ाना तामीर किया।

ताहम यहूद की नई नस्ल में दुबारा वही बिगाड़ पैदा होने लगा जो उनकी पिछली नस्ल में पैदा हुआ था। इस दर्मियान में उनके अंदर मुक्तलिफ उतार चढ़ाव आए। यहां तक कि उनके दर्मियान हजरत यहया और हजरत मसीह उठे। इन पैगम्बरों ने यहूद की रविश पर तंकीदें कीं। उनकी उस बेदीनी को खोला जो वे दीन के नाम पर कर रहे थे। मगर यहूद इस

तंकीद व तज्जिया का असर कुबूल करने के बजाए बिगड़ गए। यहां तक कि उन्होंने हजरत यहया को कल्ल कर दिया और हजरत मसीह को सूली पर चढ़ाने के लिए तैयार हो गए।

अब दुबारा उन पर खुदा का गजब भड़का। सन् 70 ई० में रूमी बादशाह तीतस (Titus) उठा और उसने यरोशलम पर हमला करके उसे बिल्कुल तबाह व बर्बाद कर डाला।

यहूद की तारीख के ये वाक्यात खुद यहूद के नजदीक भी मुसल्लम (प्रमाणिक) हैं। मगर यहूद जब इन तारीखी वाक्यात का जिक्र करते हैं तो वे उन्हें जालिमों के खाने में डाल देते हैं। मगर कुरआन वाजेह तौर पर इन्हें खुद यहूद के खाने में डाल रहा है। इससे मालूम हुआ कि सियासी हालात हमेशा अख्खाकी हालात के ताबेअ होते हैं। कोई जालिम किसी के ऊपर जुम नहीं करता। बल्कि क़ैम की दीनी और अख्खाकी हालत का बिगाड़ लोगों को यह मौक़ा दे देता है कि वे उसे अपने जुल्म व दमन का निशाना बनाएं।

إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ يَهْدِي لِلَّذِي هِيَ أَقْوَمُ وَيُكْشِرُ الْمُؤْمِنِينَ الَّذِينَ يَعْكُونَ الظُّلُمَاتِ أَنْ لَهُمْ جَزَاءً كَثِيرًا ۖ وَأَنَّ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۖ

बिला शुबह यह कुरआन वह राह दिखाता है जो बिल्कुल सीधी है और वह बशारत (शुभ सूचना) देता है ईमान वालों को जो अच्छे अमल करते हैं कि उनके लिए बड़ा अज़्र (प्रतिफल) है। और यह कि जो लोग आखिरत (परलोक) को नहीं मानते उनके लिए हमने एक दर्दनाक अजाब तैयार कर रखा है। (9-10)

कुरआन तमाम इंसानों को तौहीद की तरफ बुलाता है। यानी एक खुदा को मान कर अपने आपको उसकी इताअत में दे देना। यह एक ऐसी बात है जिससे ज्यादा सहीह, जिससे ज्यादा माकूल और जिससे ज्यादा मुताबिकेफितरत बात कोई और नहीं हो सकती। तौहीद बिला शुबह सबसे बड़ी हकीकत है और इसी के साथ सबसे बड़ी सदाकत (सच्चाई)।

तौहीद की इस हैसियत का तकाज़ा है कि यही तमाम इंसानों के लिए जांच का मेयार हो। इसी की बुनियाद पर किसी को सही करार दिया जाए और किसी को ग़लत। कोई कामयाब ठहरे और कोई नाकाम।

मौजूदा दुनिया में बजाहिर यह मेयार सामने नहीं आता और इसकी बुनियाद पर इंसानों की अमली तक्सीम नहीं की जाती। मगर यह सिर्फ खुदा के कानूने इस्तेहान की वजह से है। इफ़िरादी तौर पर मौत और इज्तिमाई तौर पर कियामत इस मुद्दते इस्तेहान की आखिरी हद है। यह हद आते ही इंसान दो गिरोहों की सूरत में अलग-अलग कर दिए जाएंगे। तौहीद के के रास्ते को इख़्तियार करने वाले अपने आपको जन्नत में पाएंगे और उसे इख़्तियार न करने वाले अपने आपको जहन्नम में।

وَيَذُرُّ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَاءَهُ بِالْخَيْرِ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُولًا ۖ وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ آيَاتَيْنِ فَمَكُونًا آيَةً آتِيلٍ وَجَعَلْنَا آيَةَ الْفَلَاحِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوا فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوا عَدَدَ السِّنِينَ وَالْحِسَابِ وَكُلُّ شَيْءٍ فَصْلَنَاهُ تَفْصِيلًا ۖ

और इंसान बुराई मांगता है जिस तरह उसे भलाई मांगना चाहिए और इंसान बड़ा जल्दबाज़ है। और हमने रात और दिन को दो निशानियां बनाया। फिर हमने रात की निशानी को मिटा दिया और दिन की निशानी को हमने रोशन कर दिया ताकि तुम अम्मेस्वक्फ़ (अनुग्रह) तलाश करो और ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब मालूम करो। और हमने हर चीज को खूब खोलकर बयान किया है। (11-12)

रात और दिन का निजाम बताता है कि खुदा का तरीका यह है कि पहले तारीकी (अंधकार) हो और इसके बाद रोशनी आए। खुदाई नक्शे में दोनों यकसां तौर पर जरूरी हैं। जिस तरह रोशनी में फायदे हैं इसी तरह तारीकी में भी फायदे हैं। दुनिया में अगर रात और दिन का फर्क न हो तो आदमी अपने औम्रत की तक्सीम किस तरह करे। वह अपने काम और आराम का निजाम किस तरह बनाए।

आदमी को ऐसा नहीं करना चाहिए कि वह 'तारीकी' से घबराए और सिर्फ 'रोशनी' का तालिब बन जाए। क्योंकि खुदा की दुनिया में ऐसा होना मुमकिन नहीं। जो आदमी ऐसा चाहता हो उसे खुदा की दुनिया छोड़कर अपने लिए दूसरी दुनिया तलाश करनी पड़ेगी।

मगर अजीब बात है कि यही इंसान की सबसे बड़ी कमजोरी है। वह हमेशा यह चाहता है कि उसे तारीकी का मरहला पेश न आए और फौरन ही उसे रोशनी हासिल हो जाए। इसी कमजोरी का नतीजा वह चीज है जिसे उजलत (जल्दबाज़ी, उतावलापन) कहा जाता है। उजलत दरअसल खुदावंदी मंसूवे पर राजी न होने का दूसरा नाम है। और खुदावंदी मंसूवे पर राजी न होना ही तमाम इंसानी बर्बादियों का अस्ल सबब है।

खुदा चाहता है कि इंसान दुनिया की फ़ैरी लज्जतों पर सब्र करे ताकि वह आखिरत की तरफ अपने सफ़र को जारी रख सके। मगर इंसान अपनी उजलत की वजह से दुनिया की वक्ती लज्जतों पर टूट पड़ता है। वह आगे की तरफ अपना सफ़र तय नहीं कर पाता। आदमी की उजलतपसंदी उसे आखिरत की नेमतों से महरूम करने का सबसे बड़ा सबब है।

यही दुनिया का मामला भी है। दुनिया में भी हकीकी कामयाबी सब्र से मिलती है न कि जल्दबाज़ी से।

यहूद को उनके पैग़म्बर यरमियाह ने नसीहत की कि तुम बाबिल के हुक्मरां के सियासी ग़लबे को फिलहाल तस्लीम कर लो और इब्तिदाई मरहले में अपनी कोशिशों को सिर्फ दावती

और तामीरी मैदान में लगाओ। इसके बाद वह वक्त भी आएगा जबकि अल्लाह तआला तुम्हारे लिए गलबा और इक्तेदार की राहें खोल दे। मगर यहूद की उजलतपसंदी इस पर राजी नहीं हुई। उन्होंने चाहा कि 'तारीकी' के मरहले से गुजरे बगैर 'रोशनी' के मरहले में दाखिल हो जाएं। उन्होंने फौरन शाह बाबिल के खिलाफ सियासी लड़ाई शुरू कर दी। चूंकि खुदा के निजाम में ऐसा होना मुमकिन नहीं था, उनके हिस्से में जिल्लत और रुस्वाई के सिवा और कुछ न आया।

وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنَاهُ طَائِرَهُ فِي عُنُقِهِ وَنُخْرِجُ لَهُ يَوْمَ الْقِيَمَةِ كِتَابًا يَلْقَاهُ مَنشُورًا ۖ اِقْرَأْ كِتَابَكَ كَفَىٰ بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيبًا ۝ مَن اهْتَدَىٰ فَإِنبَاءٌ يَهْتَدِي لِنَفْسِهِ وَمَن ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهِ وَلَوْ لَا تَنَزَّرُ ۖ وَازْرَأْ ۚ وَزُرْنَا آخِرَىٰ وَمَا لَكُم مَّعَدِّينَ حَتَّىٰ نُبْعَثَ رَسُولًا ۝

और हमने हर इंसान की किस्मत उसके गले के साथ बांध दी है। और हम कियामत के दिन उसके लिए एक किताब निकालेंगे जिसे वह खुला हुआ पाएगा पढ़ अपनी किताब। आज अपना हिसाब लेने के लिए तू खुद ही काफी है। जो शख्स हिदायत की राह चलता है तो वह अपने ही लिए चलता है। और जो शख्स बेराही करता है वह भी अपने ही नुकसान के लिए बेराह होता है। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठाएगा। और हम कभी सजा नहीं देते जब तक हम किसी रसूल को न भेजें। (13-15)

कदीम जमाने में तवह्हुमपरस्त (अंधविश्वास) लोग अक्सर चिड़ियों के उड़ने से या सितारों की गर्दिश से या तरह-तरह के फल से अपनी किस्मत का हाल मालूम करते थे। मौजूदा जमाने में जो लोग इस किस्म के तवह्हुमात पर यकीन नहीं रखते वे भी अपनी किस्मत के मामले को किसी न किसी पुरअसरार (रहस्यमयी) सबब के साथ वाबस्ता करते हैं। वे समझते हैं कि कोई न कोई ख़ारजी आमिल (वाह्य कारक) है जो इस सिलसिले में अस्ल प्रभावी हैसियत रखता है।

फरमाया कि तुम्हारी किस्मत न चिड़ियों और सितारों के साथ वाबस्ता है और न किसी दूसरी ख़ारजी चीज से इसका तअल्लुक है। हर आदमी की किस्मत का मामला तमामतर उसके अपने अमल पर मुहसिर है। हर आदमी जो कुछ सोचता या करता है वह उसके अपने वजूद के साथ नक्श हो रहा है। आदमी उसे कियामत के दिन एक ऐसी डायरी की सूत में लिखा हुआ पाएगा जिसमें हर छोटी और बड़ी चीज दर्ज हो।

खुदा ने कौमों के दर्मियान रसूल खड़े किए और किताब उतारी। उसने ऐसा इसलिए किया ताकि लोगों को आने वाले सख्त दिन से पहले उसकी ख़बर हो जाए। अब यह हर आदमी के अपने फैसला करने की बात है कि जिंदगी के अगले मुस्तक़िल मरहले में वह अपना

क्या अंजाम देखना चाहता है। वह हिदायत के तरीके पर चलकर जन्नत में पहुंचना चाहता है या हिदायत के तरीके को छोड़कर जहन्नम में गिरने का सामान कर रहा है।

وَإِذَا أَرَدْنَا أَنْ نُهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيهَا فَفَسَقُوا فِيهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنَاهَا تَدْمِيرًا ۖ وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُونِ مِنْ بَعْدِ نُوحٍ ۖ وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ بِذُنُوبٍ عِبَادِهِ خَبِيرًا بَصِيرًا ۝

और जब हम किसी बस्ती को हलाक करना चाहते हैं तो उसके खुशऐश (सुखभोगी) लोगों को हुक्म देते हैं, फिर वे उसमें नाफरमानी करते हैं। तब उन पर बात साबित हो जाती है। फिर हम उस बस्ती को तबाह व बर्बाद कर देते हैं। और नूह के बाद हमने कितनी ही कौमों हलाक कर दीं। और तेरा खब काफी है अपने बंदों के गुनाहों को जानने के लिए और उन्हें देखने के लिए। (16-17)

किसी कौम की इस्लाह या किसी कौम के बिगाड़ का मेयार उस कौम का सरबरआवुरदह (शीर्ष) तबका होता है। यही तबका सोचने समझने की सलाहियत का मालिक होता है। यही तबका अपने वसाइल (संसाधनों) के जरिए लोगों पर असरअंदाज होने की ताकत रखता है। यही तबका इस कबिल होता है कि वह किसी गिरोह के ऊपर कयद बनने की कीमत अदा कर सके।

यही वजह है कि किसी कौम के सरबरआवुरदह तबके की इस्लाह पूरी कौम की इस्लाह है और किसी कौम के सरबरआवुरदह तबके का बिगाड़ पूरी कौम का बिगाड़। हजतर नूह के जमाने से लेकर अब तक की कौमों का जायजा लिया जाए तो हर एक की तारीख़ इस आम उसूल की सेहत की तस्दीक करेगी।

इसी आम हुक्म में कौम के उन 'बड़ों' का मामला भी शामिल है जो कौम को अपनी क़य़स (नेतृत्व) की शिकारगाह बनाते हैं और इस तरह उसकी ग़लत रहनुमाई करके उसकी हलाकत का सामान करते हैं। वे कौम को हकीकतपसंदी के बजाए जव्वातियत का दर्स देते हैं। उसे मआना के बजाए अल्फ़ाज के तिलिस्म में गुम करते हैं। उसे संजीदगी के बजाए कल्पनाओं की फज में उड़ते हैं। वे उसे हक्क़ का एतराफ करने के बजाए खुशआलियों में जीना सिखाते हैं। खुलासा यह कि वे कौम को खुदा के बजाए ग़ैर खुदा की तरफ मुतवज्जह कर देते हैं।

जब किसी कौम पर इस किस्म के रहनुमा छा जाएं तो यह इस बात की अलामत है कि खुदा के यहां से उस कौम की हलाकत का फैसला हो चुका है। इस किस्म का हर वाक़या खुदा की इजाजत के तहत होता है। और किसी शख्स या कौम का कोई अमल खुदा से छुपा हुआ नहीं है।

सूरह-17. बनी इस्राईल

771

पारा 15

बुढ़ापे को पहुंच जाएं, उनमें से एक या दोनों, तो उन्हें उफ न कहो और न उन्हें झिड़को, और उनसे एहताराम के साथ बात करो। और उनके सामने नमी से इज्ज (सदाशयता) के बाजू झुका दो। और कहो कि ऐ रब इन दोनों पर रहम फरमा जैसा कि इन्होंने मुझे बचपन में पाला। तुम्हारा रब खूब जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है। अगर तुम नेक रहोगे तो वह तौबा करने वालों को माफ कर देने वाला है। (22-25)

खुदा इंसान का सब कुछ है। वह उसका खालिक भी है और मालिक भी और राजिक भी। मगर खुदा ग़ैब में है। वह अपने आपको मनवाने के लिए इंसान के सामने नहीं आता। इसका मतलब यह है कि एक आदमी जब खुदा की बड़ाई और उसके मुकाबले में अपने इज्ज (निर्बलता) का इकरार करता है तो वह महज अपने इरादे के तहत ऐसा करता है न कि किसी ज़हरी दबाव के तहत।

इस एतबार से बूढ़े मां-बाप का मामला भी अपनी नौइयत के एतबार से खुदा के मामले जैसा है। क्योंकि बूढ़े मां-बाप का अपनी औलाद के ऊपर कोई माद्री जोर नहीं होता। औलाद जब अपने बूढ़े मां-बाप के साथ अच्छा सुलूक करती है तो वह अपने आजादाना जेहनी फैसले के तहत ऐसा करती है न कि माद्री दबाव के तहत।

मौजूदा दुनिया में आदमी का अस्ल इस्तेहान यही है। यहां उसे हक और इंसान के रास्ते पर चलना है बग़ैर इसके कि उसे इसके लिए मजबूर किया गया हो। उसे खुद अपने इरादे के तहत वह करना है जो वह उस वक्त करता जबकि खुदा उसके सामने अपनी तमाम ताकतों के साथ ज़हरी हो जाए।

यह इस्तिथाराना अमल इंसान के लिए बड़ा सख्त इस्तेहान है। ताहम अल्लाह तआला ने अपनी रहमते ख़ास से उसे इंसान के लिए आसान कर दिया है। वह इंसान को तानाशाह हाकिम की तरह सख्ती से नहीं जांचता। आदमी अगर बुनियादी तौर पर खुदा का वफ़ादार है तो उसकी छोटी-छोटी ख़ताओं को वह नज़रअंदाज़ कर देता है। इंसान अगर ग़लती करके पलट आए तो वह उसे माफ़ कर देता है चाहे उसने बजाहिर कितना बड़ा जुर्म कर दिया हो।

وَأْتِ ذَا الْقُرْبَىٰ حَقًّا وَالْيَتَامَىٰ وَالسَّبِيلَ وَلَا تَبْذُرْ تَبْذِيرًا
إِنَّ الْمُبْذِرِينَ كَانُوا إِخْوَانَ الشَّيْطَانِ وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهِ كَفُورًا
وَأَمَّا تَعْرِضْ عَنْهُمْ إِبْرَاهِيمَ رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ تَرْجُوهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا
مَّيْسُورًا

और रिश्तेदार को उसका हक़ दो और یتیم को और मुसाफ़िर को। और फ़ज़ूल ख़र्च न करो। बेशक़ फ़ज़ूल ख़र्ची करने वाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा नाशुक्रा है। और अगर तुम्हें अपने रब के फज़ूल (अनुग्रह) के इतिज

पारा 15

772

सूरह-17. बनी इस्राईल

में जिसकी तुम्हें उम्मीद है, उनसे एराज करना (बचना) पड़े तो तुम उनसे नमी की बात कहो। (26-28)

हर आदमी जो कुछ अपनी महनत से कमाता है उसे वह अपने ऊपर ख़र्च करने का हक़ रखता है, ताहम शरीअत का हुक्म है कि वह फ़ज़ूल ख़र्ची से बचे। वह अपने माल को अपनी वाकई ज़रूरतों में ख़र्च करे न कि फ़ज़ूल और नुमाइश के लिए।

दूसरी बात यह कि हर आदमी को चाहिए कि वह अपनी कमाई में दूसरे ज़रूरतमंदों का भी हक़ समझे। चाहे वे उसके रिश्तेदार हों या उसके पड़ोसी हों। मुसाफ़िर हों या और किसी विस्म के हाजतमंद हों।

कभी-कभी ऐसा होता है कि आदमी मोहताज को देने के काबिल नहीं होता। ताहम उस वक्त के लिए भी हुक्म है कि अगर तुम माल देने के काबिल नहीं हो तो अपने ज़रूरतमंद भाई को नर्म बात दो और उससे माफी का कलिमा कहो। क्योंकि वह तुम्हें एक नेकी का मौक़ा देने आया था मगर तुम उस मौक़े को अपने लिए इस्तेमाल न कर सके।

अपने कमाए हुए माल को खुदा की मर्जी के मुताबिक़ ख़र्च करने में वही शख्स कामयाब हो सकता है जो अपने माल को बेफ़ायदा मदों में जाया होने से बचाए। वरना उसके पास माल ही न होगा जिसे वह खुदा के रास्तों में दे। हकीकत यह है कि फ़ज़ूल ख़र्ची शैतान का एक हरबा है जिसके ज़रिए से वह साहिबे माल को इस काबिल नहीं रखता कि वह दूसरे ज़रूरतमंदों के सिलसिले में अपनी जिम्मेदारियों को अदा कर सके।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُولَةً إِلَىٰ عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُومًا
مَّحْسُورًا ۖ إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّهُ كَانَ بِعِبَادِهِ
خَبِيرًا بَصِيرًا

और न तो अपना हाथ गर्दन से बांध लो और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ दो कि तुम मलूम (निंदित) और अज़िज़ (असहाय) बनकर रह जाओ। बेशक़ तेरा रब जिसे चाहता है ज्यादा रिक्क़ देता है। और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है। बेशक़ वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है। (29-30)

इस्लाम हर मामले में एतदाल (मध्यमार्ग) को पसंद करता है। ज्यादाती और कमी से बचकर जो दर्मियानी रास्ता है वही इस्लाम के नजदीक बेहतरीन रास्ता है। चुनांचे यही तालीम ख़र्च के मामले में भी दी गई है कि आदमी न तो ऐसा करे कि इतना बख़ील (कंजूस) हो कि वह लोगों की नज़रों से गिर जाए। और न इतना ज्यादा ख़र्च करे कि इसके बाद बिल्कुल ख़ाली हाथ होकर बैठा रहे। हदीस में इशार्द हुआ है कि जिसने मियानारबी (मध्यमार्ग) इस्तिथार की वह मोहताज नहीं हुआ।

माल के सिलसिले में बेएतिदाली का जेहन अक्सर इसलिए पैदा होता है कि आदमी की

नजर से यह हकीकत ओझल हो जाती है कि देने वाला खुदा है। वही अपने मसालेह (सोच) के तहत किसी को कम देता है और किसी को ज्यादा। हदीस कुदसी में आया है कि मेरे बंदों में कोई ऐसा है जिसके लिए सिर्फ मोहताजी मुनासिब है। अगर मैं उसे ग़नी कर दूँ तो उसके दीन में बिगाड़ आ जाए। और मेरे बंदों में कोई ऐसा है जिसके लिए सिर्फ अमीरी मुनासिब है। अगर मैं उसे फकीर बना दूँ तो उसके दीन में बिगाड़ आ जाए।

وَلَا تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ۖ نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ إِنَّ قَتْلَهُمْ
كَانَ خَطَاً كَبِيرًا ۝ وَلَا تَقْرَبُوا الرِّئْيَاءَ إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا ۝

और अपनी औलाद को मुफ़्तसी के अंश से क़त्ल न करो, हम उन्हें भी रज़्क देते हैं और तुम्हें भी। वेशक उन्हें क़त्ल करना बड़ा गुनाह है। और जिना (व्यभिचार) के करीब न जाओ, वह बेहयाई है और बुरा रास्ता है। (31-32)

ख़ुदा ही ने तमाम जानदारों को पैदा किया है वही उनके रज़्क का इंतजाम करता है। ऐसी हालत में किसी इंसान का किसी को रज़्क की तंगी का नाम लेकर हलाक करना एक ऐसा काम करना है जिसका उससे कोई तअल्लुक न था। जब रज़्क का इंतजाम ख़ुदा की तरफ से हो रहा है तो किसी को क्या हक है कि वह किसी जान को इस अंश से हलाक करे कि वह खाएगी क्या।

‘हम उन्हें भी रज़्क दें और तुम्हें भी’ इन अल्फ़ज़ के ज़रिए इंसान के ज़ेहन को इस मामले में तख़ीब के बजाए तामीर की तरफ मोड़ा गया है। और कीजिए कि जो इंसान मौजूद हैं वे अपना रज़्क किस तरह हासिल कर रहे हैं। वे उसे ख़ुदा के फ़राहमकरदा पैदावारी वसाइल (संसाधनों) पर अमल करके हासिल कर रहे हैं। यही तरीका आईदा आने वाली नस्ल के लिए भी दुरुस्त है। तुम्हें चाहिए कि मजीद (अतिरिक्त) पैदा होने वालों को ख़ुदा के पैदावारी वसाइल में मजीद अमल करने पर लगाओ न कि ख़ुद पैदा होने वालों की आमद को रोकने लगे।

ख़ुदा इंसानों के दरमियान जिन आमांल को मुकम्मल तौर पर ख़त्म करना चाहता है उनमें से एक जिना (व्यभिचार) है। इसीलिए फ़रमाया कि जिना के करीब न जाओ यानी जिना इतनी बड़ी बुराई और ऐसी बेहयाई है कि उसके मुक़दमात (संबंधित चीजों) से भी तुम्हें परहेज करना चाहिए। यहां इस सिलसिले में सिर्फ उसूल हुक्म दिया गया है। इसके तफ़सीली अहकाम आगे सूरह नूर में बयान किए गए हैं।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللَّهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ۚ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُومًا فَقَدْ جَعَلْنَا
لَوْلِيهِ سُلْطَانًا فَلَا يَسْرِفُ فِي الْقَتْلِ إِنَّهُ كَانَ مَنْصُورًا ۝

और जिस जान को ख़ुदा ने मोहतरम ठहराया है उसे क़त्ल मत करो मगर हक़ पर। और

जो शख्स नाहक क़त्ल किया जाए तो हमने उसके वारिस को इज़्तिहार दिया है। पस वह क़त्ल में हद से न गुज़े, उसकी मदद की जाएगी। (33)

हक़के शरई के बग़ैर किसी को क़त्ल करना सरासर ह़राम है। जो शख्स शरई जवाज (औचित्य) के बग़ैर क़त्ल किया जाए वह मज़्मुना क़त्ल हुआ। ऐसी हालत में मक्तूल (मृतक) के औलिया को क़ातिल के ऊपर पूरा इज़्तिहार है। वे चाहें तो उससे किसास (समान बदला) लें। चाहें तो ख़ूबहा (आर्थिक मुआवज़ा) लेकर छोड़ दें। और चाहें तो सिरे से माफ़ कर दें। इस्लामी क़ानून के मुताबिक क़त्ल के मामले में अस्ल मुद्दई मक्तूल के औलिया (वारिस) हैं न कि हुक्मत। हुक्मत का काम सिर्फ यह है कि वह मक्तूल के औलिया की मर्जी को नाफ़िज़ करने में उनकी मदद करे।

क़त्ल इतना भयानक जुर्म है कि हदीस में इशारा हुआ है कि सारी दुनिया का चला जाना अल्लाह के नजदीक इससे कमतर है कि एक मोमिन को नाहक क़त्ल कर दिया जाए। इसके बावजूद मक्तूल मृतक के औलिया को यह हक़ नहीं कि वे क़ातिल से बदला लेते हुए उसके साथ ज़्यादाती करें। मसलन वे क़ातिल के अंग भंग कर दें या क़ातिल के बदले उसके किसी साथी को क़त्ल कर दें, वग़ैरह। मक्तूल के वारिस अगर बदला लेने में ज़्यादाती करें तो यहां हुक्मत उसी तरह उनकी प्रतिरोधी हो जाएगी जिस तरह वह उनके हक़े किसास के मामले में उनकी मददगार हुई थी।

इससे इस्लामी शरीअत की यह रूह मालूम होती है कि कोई शख्स चाहे कितना ही ज़्यादा मज़ूम हो, अगर वह जलम से बदला लेना चाहता है तो वह सिर्फ़ जुर्म के बक्दर बदला ले सकता है। इससे ज़्यादा कोई कार्रवाई करने की इजाजत उसे हरगिज़ हासिल नहीं

وَلَا تَقْرَبُوا مَالَ الْيَتِيمِ إِلَّا بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ حَتَّىٰ يَبْلُغَ أَشُدَّهُ ۚ وَأَوْفُوا
بِالْعَهْدِ ۚ إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُولًا ۝ وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوا
بِالْقِسْطِ أَسِ الْمُسْتَقِيمُ ۚ ذَٰلِكَ خَيْرٌ وَأَحْسَنُ تَأْوِيلًا ۝

और तुम यतीम (अनाथ) के माल के पास न जाओ मगर जिस तरह कि बेहतर हो। यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए। और अहद (वचन) को पूरा करो। वेशक अहद की पूछ होगी। और जब नाप कर दो तो पूरा नापो और ठीक तराजू से तौल कर दो। यह बेहतर तरीका है और इसका अंजाम भी अच्छा है। (34-35)

नाबालिग़ यतीम के सरपरस्त उसके करीबी रिश्तेदार होते हैं। मगर यतीम का माल उन औलिया (संरक्षकों) के हाथ में उस वक्त तक के लिए बतौर अमानत है जब तक कि यतीम आकिल व बालिग़ न हो जाए। औलिया को चाहिए कि वे यतीम के माल को हाथ न लगाएं।

सूरह-17. बनी इस्राईल

775

पारा 15

वेसिर्फ़ उस वक्त उम्मेत्सर्फ़ (व्यय) कर सकते हैं जबकि खुद यतीम की ख़ैरखाही और तरक्की का तक्क़ा हो। और यतीम जैसे ही अपने नाम नुस्सान को समझने के कबिल हो उसका माल पूरी तरह उसके हवाले कर दिया जाए।

अहद (वचन, प्रतिज्ञा) को पूरा करना इंसानी किरदार की अहमतरतीन सफ़त है। जो आदमी एक अहद करे और फिर उसे पूरा न करे वह बिल्कुल बेकीमत इंसान है। बंदों के नज़दीक भी और खुदा के नज़दीक भी।

‘अहद खुदा के नज़दीक कबिले पुरसिश है’ ये अल्फ़ज़ बताते हैं कि जब एक आदमी किसी दूसरे आदमी से अहद करता है तो यह सिर्फ़ दो इंसानों का बाहमी मामला नहीं होता बल्कि इसमें खुदा भी तीसरे फ़रीक (पक्ष) की हैसियत से शरीक होता है। आदमी को अहद तोड़ते हुए डरना चाहिए कि अहद का दूसरा फ़रीक सिर्फ़ एक कमज़ोर इंसान नहीं है बल्कि वह खुदा है जिसकी पकड़ से बचना किसी तरह मुमकिन नहीं।

दुनिया में हर क्रिस्म का कारोबार नाप तौल की बुनियाद पर कायम है। इस सिलसिले में हुक्म दिया गया कि नाप तौल बिल्कुल ठीक रखा जाए और जो चीज दी जाए पूरे नाप तौल के साथ दी जाए।

यह तरीका बयकवक्त अपने अंदर दो पहलू रखता है। एक तरफ़ वह इंसानी अज़मत के मुताबिक है। नाप तौल में फ़र्क करना किरदार की पस्ती है। और नाप तौल में पूरा देना किरदार की बुलन्दी। इसका दूसरा अजीम फ़ायदा यह है कि इससे कारोबार को फ़रोग हासिल होता है। क्योंकि कारोबार की तरक्की की बुनियाद तमामतर एतमाद (विश्वास, भरोसा) पर है और नाप तौल सही देना वह चीज है जिससे किसी शख्स का कारोबारी एतमाद लोगों के दर्मियान कायम होता है।

وَلَا تَقْتُلْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنَّ السَّيِّئَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولَئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُولٌ ۖ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا إِنَّكَ لَن تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَن تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُولًا ۚ كُلُّ ذَلِكَ كَانَ سَيِّئُهُ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوهًا ۝

और ऐसी चीज के पीछे न लगे जिसकी तुम्हें ख़बर नहीं। वेशक कान और आंख और दिल सबकी आदमी से पूछ होगी। और जमीन में अकड़ कर न चलो। तुम जमीन को फाड़ नहीं सकते और न तुम पहाड़ों की लम्बाई को पहुंच सकते हो। ये सारे बुरे काम तेरे ख़ब के नज़दीक नापसंदीदा हैं। (36-38)

कतादा ने कहा है कि ‘मैंने देखा’ मत कहो जबकि तुमने देखा न हो। ‘मैंने सुना’ मत कहो जबकि तुमने सुना न हो। ‘मैंने जाना’ मत कहो जबकि तुमने जाना न हो।

जिस आदमी को इस बात का डर हो कि खुदा के यहां हर बात की पूछ होगी वह कभी बेतहकीक बात अपनी ज़बान से नहीं निकलेगा और न आंख बंद करके बेतहकीक

पारा 15

776

सूरह-17. बनी इस्राईल

बात की पैरवी करेगा। इंसान को चाहिए कि वह कान और आंख और दिमाग़ से वह काम ले जिसके लिए वे बनाए गए हैं और वही बात मुंह से निकाले या अमल में लाए जो पूरी तरह साबित हो चुकी हो। इस हुक्म में तमाम बेबुनियाद चीजें आ गईं। मसलन झूठी गवाही देना, गलत तोहमत लगाना, सुनी सुनाई बातों की बुनियाद पर किसी के दरपे हो जाना, महज़ तअस्सुब (विद्वेष) की बिना पर नाहक बात की हिमायत करना, ऐसी चीजों के पीछे पड़ना जिन्हें अपनी महदूदियत (असमर्थता) की बिना पर इंसान जान नहीं सकता। आंख, कान, दिल बजाहिर इंसान के कब्जे में हैं। मगर ये इंसान के पास बतौर अमानत हैं। इंसान पर लाज़िम है कि वह इन चीजों को खुदा की मंशा के मुताबिक इस्तेमाल करे। वर्ना उनकी बाबत उससे सख़्त बाज़पुर्स होगी।

इंसान एक ऐसी जमीन पर है जिसे वह फाड़ नहीं सकता, वह एक ऐसे माहौल में है जहां ऊंचे-ऊंचे पहाड़ उसकी हर बुलन्दी की नफ़ी कर रहे हैं। यह खुदा के मुकाबले में इंसान की हैसियत का एक तमसीली (प्रतीकात्मक) एलान है। इसका तक्क़ा है कि आदमी दुनिया में मुतकब्बिर (घमंडी) बनकर न रहे। वह इज़्ज़ और तवाजोज़ का तरीका इख्तियार करे न कि अकड़ने और सरकशी करने का।

ذَلِكَ بِمَا أَوَّحَىٰ إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۚ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ ۚ فَتُنْفِقَ فِي جَهَنَّمَ مَكُودًا مَّدْحُورًا ۝

ये वे बातें हैं जो तुम्हारे ख़ब ने हिक्मत (तत्वदर्शिता) में से तुम्हारी तरफ़ ‘वही’ की हैं। और अल्लाह के साथ कोई और माबूद न बनाना, वर्ना तुम जहन्नम में डाल दिए जाओगे, मलामतज़दा (निंदित) और रांदह (टुकराया हुआ) होकर। (39)

ऊपर की आयतों में जो अहकाम दिए गए उन्हें यहां हिक्मत कहा गया है। हिक्मत का मतलब है ठेस हकीकत, दानाई (सूझबूझ) की बात। ये बातें जो यहां बताई गई हैं ये ज़िंदगी के मोहकम हकाइक हैं। इनकी बुनियाद पर दुरुस्त ज़िंदगी की तामीर होती है। और जो इंसानी मुआशिरा इनसे ख़ाली हो उसके लिए खुदा की दुनिया में हलाकत के सिवा और कोई चीज मुसद्दर नहीं। आज भी और आज के बाद की ज़िंदगी में भी।

मज्कूरा बाला नसीहतों का बयान तौहीद से शुरू हुआ था। (आयत नम्बर 22) अब उनका ख़ात्मा भी तौहीद पर किया गया है। (आयत नम्बर 39)। यह इस बात का इशारा है कि तमाम भलाइयों की बुनियाद यह है कि आदमी एक खुदा को अपना खुदा बनाए। वह उसी से डरे और उसी से मुहब्बत करे। खुदा से दुरुस्त तअल्लुक ही में ज़िंदगी की दुरुस्ती का राज छुपा हुआ है। अगर खुदा से तअल्लुक दुरुस्त न हो तो कोई भी दूसरी चीज इंसानी ज़िंदगी के निज़ाम को दुरुस्त नहीं कर सकती। खुदा इंसान का आज़ाज (आरंभ) है और वही उसका इख़्तेताम (अंत) भी।

أَفَأَصْفَكُمْ رَبُّكُمُ بِالْبَنِينَ وَالْمَنَاجِدِ إِنَّا شَاطِئُكُمْ تَقُولُونَ
قَوْلًا عَظِيمًا ۖ وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِي هَذَا الْقُرْآنِ لِيَذَّكَّرُوا وَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا نُفُورًا ۝
قُلْ لَوْ كَانَ مَعَهُ آلِهَةٌ كَمَا يَقُولُونَ إِذْ أَتَا بَنُو إِسْرَءِيلَ عَلَى الْمَوْصِلِ إِلَى دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلَامُ
سُبْحَنَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يَقُولُونَ عُلُوًّا كَبِيرًا ۝ تَسْبِيحُ لَهُ السَّمَوَاتُ السَّبْعُ
وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيهِنَّ وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهِ وَلَكِنْ لَا تَفْقَهُونَ
تَسْبِيحَهُمْ إِنَّهُ كَانَ حَلِيمًا غَفُورًا ۝

क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें बेटे चुनकर दिए और अपने लिए फरिश्तों में से बेटियां बना लीं। वेशक तुम बड़ी सज़ा बात कहते हो। और हमने इस कुरआन में तरह-तरह से बयान किया है ताकि वे याददिहानी (अनुस्मरण) हासिल करें। लेकिन उनकी बेजारी बढ़ती ही जाती है। कहो कि अगर अल्लाह के साथ और भी माबूद (पूज्य) होते जैसा कि ये लोग कहते हैं तो वे अर्श वाले की तरफ जरूर रास्ता निकालते। अल्लाह पाक और बरतर है उससे जो ये लोग कहते हैं। सातों आसमान और जमीन और जो उनमें हैं सब उसकी पाकी बयान करते हैं। और कोई चीज ऐसी नहीं जो तारीफ के साथ उसकी पाकी बयान न करती हो। मगर तुम उनकी तस्बीह को नहीं समझते। बिला शुबह वह हिल्म (उदारता) वाला, बख्शने वाला है। (40-44)

हकीकत इतनी कामिल और मुकम्मल है कि जो भी ख़िलाफ़े वाक्या बात उसके साथ मंसूब की जाए वह फ़ौरन बेजोड़ होकर रह जाती है। इसकी एक मिसाल खुदा के साथ शरीक ठहराने का मामला है।

मुश्रिक लोग अपने मफरूजा शरीकों को खुदा की औलाद कहते हैं मगर यह बात खुद ही अपने दावे की तरदीद (खंडन) है। अगर इन शरीकों को स्त्रीलिंग करार देकर खुदा की बेटियां कहा जाए तो फ़ौरन यह एतराज वाकेअ होता है कि बेटियां खुद मुश्रिकीन के एतराफ के मुताबिक कमजोर सिर्फ (Gender) से तअल्लुक रखती हैं। फिर खुदा ने कमजोर सिर्फ को अपना शरीक बनाना क्यों पसंद किया। कैसी अजीब बात होगी कि खुदा इंसानों को उनकी महबूब औलाद की हैसियत से बेटा दे और खुद अपने लिए बेटियों का इतिखाब करे।

इसके बरअक्स अगर इन शरीकों को बेटा फर्ज किया जाए जो इंसानी तजर्बात के मुताबिक कुव्वत व ताकत की अलामत है तब भी यह बात नाकबिलेफहम है। क्योंकि इस्तेम्नार एक नाकबिले तकसीम चीज है। जब भी किसी निजम में एक से ज्यादा साहिबे ताकत और साहिबे इक्तेदार हों तो उनके दर्मियान लाजिमन कशमकश शुरू हो जाती है।

उनमें से हर एक यह चाहता है कि उसे मुतलक इक्तेदार (सम्पूर्ण सत्ता) मिल जाए। अब अगर कायनात में एक से ज्यादा ताकतवर हस्तियां होतीं तो उनके दर्मियान जरूर इक्तेदार की जंग बरपा हो जाती और कायनात के सारे निजाम में अव्यवस्था व इतिशार पैदा हो जाता। मगर चूंकि कायनात में कोई अव्यवस्था व इतिशार नहीं। इससे साबित हुआ कि यहां दूसरी ऐसी हस्तियां भी मौजूद नहीं जो खुदा के साथ उसकी ताकत में हिस्सेदार हों।

शरीकों को अगर बेटे कहा जाए तब भी वह सूरते वाक्ये से टकराता है और बेटियां कहा जाए तब भी। हकीकत यह है कि कायनात अपने पूरे वजूद के साथ ऐसे हर तसव्वुर को कुबूल करने से इंकार करती है जिसमें खुदा की खुदाई में किसी और को शरीक किया गया हो।

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ جَبَابًا
مُّسْتَوْرًا ۖ وَجَعَلْنَا عَلَى قُلُوبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَفْقَهُوهُ وَفِي آذَانِهِمْ وَقْرًا
وَإِذَا ذُكِّرْتُ رَبِّكَ فِي الْقُرْآنِ وَحْدَهُ وَلَوْ أَعْلَىٰ أَذْبَارِهِمْ نُفُورًا ۝

और जब तुम कुरआन पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के दर्मियान एक छुपा हुआ पर्दा हायल कर देते हैं जो आखिरत को नहीं मानते। और हम उनके दिलों पर पर्दा रख देते हैं कि वे उसे न समझें और उनके कानों में गिरानी (बोझ) पैदा कर देते हैं और जब तुम कुरआन में तंहा अपने रब का जिक्र करते हो तो वे नफरत के साथ पीठ फेर लेते हैं। (45-46)

यहां जिस चीज को 'छुपा हुआ पर्दा' कहा गया है वह दरअस्तल नफिसयाती (मनोवैज्ञानिक) पर्दा है। इससे मुराद वह सूरतेहाल है जबकि आदमी बतौर खुद अपने जेहन में किसी गैर सम्मन्न (सच्चाई) को सदाकत का मक़ाम दे दे। ऐसे शख्स के सामने जब एक ऐसा हक आता है जिसके मुताबिक उसकी मफरूज (मान्य) सदाकतों की नफ्री हो रही हो तो ऐसी बेआमेज (विशुद्ध) दावत उसके लिए नाकबिलेफहम बन जाती है। अपनी मख़सूस नफिसयात की बिना पर उसकी समझ में नहीं आता कि ऐसी दावत भी सच्ची दावत हो सकती है जिसे मानने की सूरत में वह चीज बातिल (असत्य) करार पाए जिसे वह अब तक मुसल्लमा सदाकत (प्रमाणिक सच्चाई) समझे हुए था। वह नई दावत के दलाइल का तोड़ नहीं कर पाता। ताहम अपने मख़सूस जेहन की बिना पर यह मानने के लिए भी तैयार नहीं होता कि यही वह मुतलक सदाकत है जिसे उसे दूसरी तमाम चीजों को छोड़कर मान लेना चाहिए।

बेआमेज (विशुद्ध) सदाकत का एलान हमेशा दूसरी मफरूज (मान्य) सदाकतों की नफ्री (नकार) के हममअना होता है। इसलिए इसे सुनकर वे लोग बिफर उठते हैं जो इसके सिवा दूसरी चीजों या शख्सियतों को भी अम्मत व तक़दुस का मक़ाम दिए हुए हों। उनके अंदर आखिरत की जवाबदेही का यकीन न होना उन्हें ग़ैर संजीदा बना देता है और ग़ैर संजीदा जेहन के साथ कोई बात समझी नहीं जा सकती।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمْعُونَ بِهِ إِذْ يَسْتَمْعُونَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ يُجَوِّى إِذْ يَقُولُ
الظَّالِمُونَ إِنَّ تَتَّبِعُونَ إِلَّا رَجُلًا مَسْحُورًا ۖ أَنْظِرْ كَيْفَ ضَرَبُوا لَكَ الْأَمْثَالَ
فَضَلُّوا فَلَا يَسْتَطِيعُونَ سَبِيلًا ۝

और हम जानते हैं कि जब वे तुम्हारी तरफ कान लगाते हैं तो वे किस लिए सुनते हैं और जबकि वे आपस में सरगोशियां करते हैं। ये ज़ालिम कहते हैं कि तुम लोग तो बस एक सख्त (जादूग्रस्त) आदमी के पीछे चल रहे हो देखो तुम्हारे ऊपर वह कैसी-कैसी मिसालें चसपां कर रहे हैं। ये लोग खोए गए, वे रास्ता नहीं पा सकते। (47-48)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत में दलाइल का जोर इतना ज्यादा था कि अरब के आम लोग इससे मरऊब होने लगे। यह देखकर वहां के सरदारों को खतरा महसूस हुआ कि अगर इन लोगों ने बड़ी तादाद में नए दीन को कुबूल कर लिया तो हमारी सरदारी खत्म हो जाएगी। उन्होंने लोगों को उससे फेरने के लिए एक तदबीर की। उन्होंने कहा कि इस शख्स के कलाम में तुम जो जोर देख रहे हो वह दरअस्तल साहिराना (जादुई) कलाम का जोर है। यह 'अदब' (साहित्य) का मामला है न कि हकीकतन सदाकत का मामला। इस तरह उन्होंने यह किया कि जिस कलाम की अज्मत में लोग सदाकत की झलक देख रहे थे उसे लोगों की नजर में 'कलम के जादू' के हममअना बना दिया।

जो लोग किसी दावत को उसके जौहर की बुनियाद पर न देखें बल्कि इस एतबार से देखें कि वह उनकी हैसियत की तसदीक (पुष्टि) करती है या तरदीद (रद्द), ऐसे लोग कभी सदाकत को पाने में कामयाब नहीं हो सकते।

وَقَالُوا إِذْ أَكُنَّا عِظَامًا وَرُفَاتًا إِنْ أَلْبَعُوثُنَّ خَلْقًا جَدِيدًا ۝ قُلْ كُونُوا
جِبَارَةً أَوْ حِدِيدًا ۖ أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِي صُدُورِكُمْ فَسَيَقُولُونَ مَنْ يُعِيدُنَا
قُلِ الَّذِي فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ فَسَيُنْغِضُونَ إِلَيْكَ رُءُوسَهُمْ وَيَقُولُونَ
مَتَى هُوَ قُلْ عَسَى أَنْ يَكُونَ قَرِيبًا ۖ يَوْمَ يَدْعُوكُمْ فَتَسْتَجِيبُونَ بِحَمْدِهِ
وَتَنْتَوُونَ عَنْ لَبِئْسَ أَقْلِيلًا ۝

और वे कहते हैं कि क्या जब हम हड्डी और रेजा हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से उठाए जाएंगे। कहो कि तुम पत्थर या लोहा हो जाओ या और कोई चीज जो तुम्हारे ख्याल में इनसे भी ज्यादा मुश्किल हो। फिर वे कहेंगे कि वह कौन है जो हमें दुबारा जिंदा करेगा। तुम कहो कि वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया है। फिर वे तुम्हारे

आगे अपना सर हिलाएंगे और कहेंगे कि यह कब होगा, कहो कि अजब नहीं कि उसका वक्त करीब आ पहुंचा हो, जिस दिन खुदा तुम्हें पुकारेगा तो तुम उसकी हमद (प्रशंसा) करते हुए उसकी पुकार पर चले आओगे और तुम यह ख्याल करोगे कि तुम बहुत थोड़ी मुद्दत रहे। (49-52)

इंसान का वजूदे अब्जल वाजेह तौर पर उसके वजूदे सानी को मुमकिन साबित करता है। जो शख्स इंसान की पहली पैदाइश को बतौर वाक्या मानता हो, उसके पास कोई हकीकी दलील नहीं जिससे वह इंसान की दूसरी पैदाइश के इम्कान को न माने। फिर यह कि इंसान की दूसरी पैदाइश, कम से कम उन लोगों के लिए हरगिज हैरत नहीं जो इंसान को पत्थर और लोहा (दूसरे शब्दों में माददी चीजों का मज्मूआ) समझते हैं क्योंकि जिस की कोशिकाएं (Cells) के टूटने के साथ इसी मालूम दुनिया में यह वाक्या हो रहा है कि आदमी का माददी (भौतिक) वजूद मुसलसल खत्म होता है और फिर दुबारा बनता है। हकीकत यह है कि ह्श व नश् (परलोक) इसी वाक्ये को मौत के बाद मानना है जिसका मौत से पहले हम बार-बार तजर्बा कर रहे हैं।

कियामत दरअस्तल उसी दिन का नाम है जबकि ग़ैब का पर्दा फट जाए और खुदा अपनी तमाम ताकतों के साथ बिल्कुल सामने आ जाए। जब ऐसा होगा तो मुकिर भी वही करने पर मजबूर होगा जो आज सिर्फ सच्चा मोमिन कर पाता है। उस वक्त तमाम लोग खुदा के कमालात का इकार करते हुए उसकी तरफ दौड़ पड़ेंगे।

وَقُلْ لِّعِبَادِي يَقُولُوا الَّتِي هِيَ أَحْسَنُ إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ إِنَّ
الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِينًا ۝

और मेरे बंदों से कहो कि वही बात कहें जो बेहतर हो। शैतान उनके दर्मियान फसाद डालता है। वेशक शैतान इंसान का खुला हुआ दुश्मन है। (53)

यह आयत दाओ (आह्वानकर्ता) और मदऊ (संबोधित व्यक्ति) के नाजुक रिश्ते के बारे में है। हुक्म दिया गया है कि मदऊ की तरफ से चाहे कितनी ही सख्त बात कही जाए और कितना ही उत्तेजक मामला किया जाए, दाओ को हर हाल में कौले अहसन (उत्तम बात) का पाबंद रहना है। क्योंकि दाओ अगर जवाबी जेहन के तहत कारवाई करे तो मदऊ के अंदर मजौद नफरत और जिद की नफिसयात उभरेगी। और दाओ और मदऊ के दर्मियान ऐसी कशमकश पैदा होगी कि लोग दाओ की बात को ठंडे जेहन के साथ सुनने के काबिल ही न रहें।

दाओ और मदऊ के अंदर जिद और नफरत की फजा पैदा होना सरासर शैतान की मुवाफिकत में है ताकि वह हक के पैगाम को लोगों के लिए नाकबिले कुकूल बना दे। इसलिए दाओ अगर अपने किसी फेअल (कृत्य) से मदऊ के अंदर जिद और नफरत की नफिसयात

जगाने लगे तो गोया कि उसने शैतान का काम किया, उसने अपने दुश्मन का काम अपने हाथ से अंजाम दे दिया।

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ إِنَّ يَشَاءُ يَحْكُمُ أَوْ إِن يَشَاءُ يُعَذِّبُكُمْ وَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ۖ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيِّنَ عَلَى بَعْضٍ وَآتَيْنَا دَاوُدَ زُبُورًا ۖ

तुम्हारा रब तुम्हें खूब जानता है, अगर वह चाहे तो तुम पर रहम करे या अगर वह चाहे तो तुम्हें अजाब दे। और हमने तुम्हें उनका जिम्मेदार बनाकर नहीं भेजा। और तुम्हारा रब खूब जानता है उन्हें जो आसमानों और जमीन में हैं और हमने कुछ नबियों को कुछ परफ़ात (श्रेष्ठता) दी है और हमने दाऊद को जबूर दी। (54-55)

एक शख्स सच्चे दीन की दावत दे और दूसरा शख्स उसे न माने तो दाजी के अंदर झुंझलाहट पैदा हो जाती है कि यह शख्स कैसा है कि खुली हुई सदाकत को मानने के लिए तैयार नहीं। कभी बात और आगे बढ़ती है और वह एलान कर बैठता है कि यह शख्स जहन्नमी है। इस किस्म का कलाम दाजी के लिए किसी हाल में जाइज नहीं।

एक है हक का पैगाम पहुंचाना। और एक है पैगाम के रद्देअमल के मुताबिक हर एक को उसका बदला देना। पहला काम दाजी (आह्वानकर्ता) का है और दूसरा काम खुदा का। दाजी को कभी यह ग़लती नहीं करना चाहिए कि वह अपने दायरे से गुजर कर खुदा के दायरे में दाखिल हो जाए।

इसी तरह कभी ऐसा होता है कि दाजी और मदऊ के दर्मियान अपने-अपने पेशवाओं की फजीलत की बहस उठ खड़ी होती है। हर एक अपने पेशवा को दूसरे से आला और अफज़ल साबित करने में लग जाता है। इसका नतीजा यह होता है कि जो बहस उसूल के दायरे में रहनी चाहिए वह शख्सियत के दायरे में चली जाती है और तअस्सुबात को जगाकर कुबूले हक की राह में मजीद रुकावट खड़ी करने का सबब बनती है। इस सिलसिले में कहा गया कि यह खुदा का मामला है कि वह किसको क्या दर्जा देता है। तुम्हें चाहिए कि इस किस्म की बहस से बचते हुए अस्ल पैगाम को पहुंचाने में लगे रहो।

قُلْ ادْعُوا الَّذِينَ رَعَيْتُمْ مِنْ دُونِهِ فَلَا يَمْلِكُونَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيلًا ۚ أُولَٰئِكَ الَّذِينَ يَدْعُونَ يَبْتَغُونَ إِلَىٰ رَبِّهِمُ الْوَسِيلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُونَ رَحْمَتَهُ وَيَخَافُونَ عَذَابَ ۚ إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ كَانَ مَحْذُورًا ۖ

कहो कि उन्हें पुकारो जिन्हें तुमने खुदा के सिवा माबूद (पूज्य) समझ रखा है। वे न तुमसे

किसी मुसीबत को दूर करने का इस्लियार रखते हैं और न उसे बदल सकते हैं। जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे खुद अपने रब का कुर्ब (समीप्य) दूँढते हैं कि उनमें से कौन सबसे ज्यादा करीब हो जाए। और वे अपने रब की रहमत के उम्मीदवार हैं। और वे उसके अजाब से डरते हैं। वाकई तुम्हारे रब का अजाब डरने ही की चीज है। (56-57)

इंसान जिन हस्तियों को अल्लाह के सिवा अपना माबूद (पूज्य) बनाता है वे सब वही हैं जो अल्लाह की मख़बूक हैं। मसलन बुर्जुा या फरिश्ते वगैरह। गौर से देखिए तो यह माबूदियत सरासर एकतरफा होती है। इन हस्तियों ने खुद अपने खुदा होने का दावा नहीं किया है। ये सिर्फ दूसरे लोग हैं जो उन्हें माबूद मानकर उनकी तकदीस व ताजीम में लगे हुए हैं।

अगर किसी को हाजिर से ग़ायब तक देखने की नजर हासिल हो और वह पूरी सूरतेहाल पर नजर करे तो वह अजीब मजहकाखेज मंजर देखेगा। वह देखेगा कि इंसान कुछ हस्तियों को बतौर खुद माबूद का दर्जा देकर उनकी परस्तिश कर रहा है। और उनसे मुरादें मांग रहा है। जबकि ऐन उसी वक्त खुद इन हस्तियों का यह हाल है कि वे अल्लाह की अज्मत के एहसास से सहमे हुए हैं और उसकी रहमत व कुरबत की तलाश में हमहतन सरगर्म हैं।

وَأَنَّ مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَمَةِ أَوْ مُعَذِّبُوهَا عَذَابًا شَدِيدًا كَانَ ذَٰلِكَ فِي الْكِتَابِ مَسْطُورًا ۖ

और कोई बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम क़ियामत से पहले हलाक न करें या सख़्त अजाब न दें। यह बात किताब में लिखी हुई है। (58)

अफ़स़ाद के लिए जिस तरह फना का क़ानून है इसी तरह कैमों और बस्तियों के लिए भी फना का क़ानून है। कोई बस्ती चाहे वह कितनी ही मजबूत और पुरानक हो, बहरहाल वह एक दिन ख़त्म होकर रहेगी। चाहे उसकी सूरत यह हो कि वह अपने गुनाह और सरकशी की वजह से पहले हलाक कर दी जाए। या वह बाकी रहे यहाँ तक कि जब आखिरत कायम होने का वक्त आए तो जमीन की तमाम आबादियों के साथ उसे इकट्ठे मिटा दिया जाए।

وَمَا مَنَعَنَا أَنْ نُرْسِلَ بِالْآيَاتِ إِلَّا أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُونَ ۖ وَآتَيْنَا نُوحًا الْبَاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْآيَاتِ إِلَّا تَخْوِيفًا ۖ

और हमें निशानियां भेजने से नहीं रोका मगर उस चीज ने कि अगलों ने उन्हें झुठला दिया। और हमने समूद को ऊंटनी दी उन्हें समझाने के लिए। फिर उन्होंने उस पर जुल्म किया। और निशानियां हम सिर्फ डराने के लिए भेजते हैं। (59)

पैगम्बरों के साथ जो ग़ैर मामूली वाक्यात पेश आते हैं वे दो किस्म के होते हैं। एक वे जो पैगम्बर और आपके साथियों की उम्मी नुसरत के लिए होते हैं। उन्हें ताईद (खुदाई मदद) कहा जा सकता है। दूसरे वे हैं जो मुश्किन के मुतालबे के तौर पर जाहिर किए जाते हैं। इनका पारिभाषिक नाम मोजिजा है। पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) और आपके असहाब के साथ ताईद इलाही के बेशुमार वाक्यात पेश आए। मगर जहां तक फरमाइशी निशानी (मोजिजा) का तअल्लुक है। आपके लिए उन्हें भेजना रोक दिया गया।

इसकी वजह यह है कि हर चीज के कुछ तकाजे होते हैं। जो लोग ग़ैर मामूली निशानी का मुतालबा करें, उनके ऊपर ग़ैर मामूली जिम्मेदारियां भी आयद होती हैं। चुनांचे खुदा का यह कानून है कि जो लोग ग़ैर मामूली निशानी (मोजिजा) देखने के बावजूद ईमान न लाएं उन्हें सख्त अजाब भेजकर नेस्तोनावूद कर दिया जाए। अब चूंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नुबुव्वत का सिलसिला खत्म होने वाला था इसलिए आपकी मुखातब कौम के साथ ऐसा नहीं किया जा सकता था। क्योंकि पूरी तबाही की सूरत में कौम मिट जाती। फिर पैगम्बर के बाद पैगम्बर की नुमाइंदगी के लिए दुनिया में कौन बाकी रहता।

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के मुखातबीन के साथ यह अल्लाह तआला की खास रहमत थी कि उनके मुतालबे के बावजूद उन्हें महसूस मोजिजात नहीं दिखाए गए। अगर ऐसा किया जाता तो अदिशा था कि उनका भी वही सख्त अंजाम हो जो इससे पहले कौम समूद का हुआ।

وَلَوْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلَّا فِتْنَةً
لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ وَنُخَوِّفُهُمْ فَمَا يَزِيدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا
كَبِيرًا

और जब हमने तुमसे कहा कि तुम्हारे रब ने लोगों को घेरे में ले लिया है। और वह रूया (अलौकिक दृश्य) जो हमने तुम्हें दिखाया वह सिर्फ लोगों की जांच के लिए था, और उस दरख्त को भी जिसकी कुरआन में मज्मूत (निंदा) की गई है। और हम उन्हें डराते हैं, लेकिन उनकी बढ़ी हुई सरकशी बढ़ती ही जा रही है। (60)

लोग खुदा के दाओ से अक्सर अपने प्रस्तावित मोजिजे (दिव्य चमत्कार) का मुतालबा करते हैं। हालांकि अगर वे खुले जेहन के साथ देखें तो दाओ की खुसूसी नुसरत की शकल में वह मोजिजा उन्हें दिखाया जा चुका होता है जिसे वे उसकी सदाकत (सच्चाई) को जांचने के लिए देखना चाहते हैं।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुखातबीन आप से महसूस मोजिजात मांग रहे थे। फरमाया कि क्या ये मोजिजे तुम्हारी आंख खोलने के लिए काफी नहीं कि दावत के इब्तिदाई दौर में जब इसकी बजाहिर कोई ताकत नहीं थी, यह एलान किया गया कि खुदा

तुम्हें घेरे में लिए हुए है। यह पेशीनगोई अरब कबीलों में इस्लाम की तोसीअ (प्रसार) से पूरी हो गई। फिर इसकी तक्मील बद्र की फतह और सुलह हुदैबिया के बाद मक्का की फतह की सूरत में हुई।

इसी तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेराज की सुबह को जब यह एलान किया कि आज रात मैं बैतुल हराम से बैतुल मक्सिद तक गया तो लोगों को यकीन नहीं आया। इसके बाद ऐसे अफराद बुलाए गए जो बैतुल मक्सिद को देखे हुए थे और उनके सामने आपने बैतुल मक्सिद की इमारत की पूरी तफसील बयान कर दी।

मगर इन वाक्यात को लोगों ने मजाक में टाल दिया हालांकि वह आपकी सदाकत का मोजिजाती सुबूत था। हकीकत यह है कि अस्ल मसला महसूस मोजिजा दिखाने का नहीं है बल्कि दावत पर संजीदा ग़ौर व फिक्र का है। अगर लोग दावत के बारे में संजीदा न हों तो हर चीज को मजाक की नज़र कर दें। चाहे वह बात बजते-खुद कितनी ही कबिले लिहाज क्यों न हो।

कुरआन में जब डरया गया कि जहन्नम में जम्मूम का खाना होगा (अस साप्मत 62) तो रिवायत में आता है कि अबू जहल ने कहा कि हमारे लिए खजूर और मक्खन ले आओ। जब वह लाया गया तो वह दोनों को मिलाकर खाने लगा और कहा कि तुम लोग भी खाओ यही जम्मूम है। (तप्सीर इन्कशीर)

इसी तरह कुरआन में शजरह मलऊना (बनी इस्राईल 60) का जिक्र है जो जहन्नमियों का खाना होगा। जब कुरआन में यह आयत उतरी तो कुरैश के एक सरदार ने कहा : अबू कव्शा के लड़के को देखो। वह हमसे ऐसी आग का वादा करता है जो पथर तक को जला देगी। फिर उसका गुमान है कि उसके अंदर एक दरख्त उगता है हालांकि मालूम है कि आग जलाने वाली चीज है। (तप्सीर मज़हरी)

وَلَوْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدْوَاِ لِّلْاٰدَمَ فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلٰسَ قَالَۤ اَسْجُدْ مَنْ خَلَقْتُ
طِيْنًاۙ قَالَۤ اَرۡءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِیۡ كَرَّمْتَ عَلٰیۤ ذٰلِکَ اِنۡ اَحۡزَنَۤ اِلٰی یَوْمِ الْقِیَمَةِ
لَاۡخَتَنٰکَۤ ذُرِّیَّتَہٗۤ اِلَّاۤ اَقِلٰۤیًاۙ

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सज्दा करो तो उन्होंने सज्दा किया मगर इब्लीस (शैतान) ने नहीं किया। उसने कहा क्या मैं ऐसे शख्स को सज्दा करूं जिसे तूने मिट्टी से बनाया है। उसने कहा, जरा देख, यह शख्स जिसे तूने मुझ पर इज्जत दी है अगर तू मुझे कियामत के दिन तक मोहलत दे तो मैं थोड़े लोगों के सिवा इसकी तमाम औलाद को खा जाऊंगा। (61-62)

फरिश्ते और इब्लीस का किस्सा बताता है कि मानने वाले कैसे होते हैं और न मानने वाले कैसे। मानने वाले लोग हक को हक के लिहाज से देखते हैं चुनांचे उसे समझने में उन्हें देर नहीं लगती। वे फौरन उसे समझ कर उसे मान लेते हैं। जैसा कि आदम की पैदाइश के

वक्त फरिश्तेनेकिया।

दूसरे लोग वे हैं जो हक को अपनी जात की निस्वत से देखते हैं। शैतान ने यही किया। उसने हक को अपनी जात की निस्वत से देखा। चूँकि आदम को सच्चे का हुक्म आदम को बजाहिर बड़ा बना रहा था और उसे छोटा, उसने ऐसे हक को मानने से इंकार कर दिया जिसे मानने के बाद उसकी अपनी जात छोटी हो जाए।

शैतान ने खुदा को जो चैलेन्ज दिया था उसे सामने रखकर देखिए तो हर वह शख्स शैतान का शिकार नजर आएगा जो हक को इसलिए नजरअंदाज कर दे कि उसे मानने की सूरत में उसकी अपनी जात दूसरे के मुकाबले में छोटी हो जाती है।

قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبَعَكَ مِنْهُمْ فَاِنْ جَهِلْمَ جَزَاؤُكُمْ جَزَاءُ مَوْفُورًا ۝
وَاَسْتَفْزِرُ مَنْ اسْتَطَعَتْ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ ۝ وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ
وَرِجْلِكَ وَاَسْأَلُكُمْ فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ۝ وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ
اِلَّا غُرُورًا ۝ اِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ وَّكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيلًا ۝

खुदा ने कहा कि जा उनमें से जो भी तेरा साथी बना तो जहन्म तुम सबका पूरा-पूरा बदला है। और उनमें से जिस पर तेरा बस चले, तू अपनी आवाज से उनका कदम उखाड़ दे और उन पर अपने सवार और प्यादे (पैदल सेना) चढ़ा ला और उनके माल और औलाद में उनका साझी बन जा और उनसे वादा कर। और शैतान का वादा एक धोखे के सिवा और कुछ नहीं। बेशक जो मेरे बंदे हैं उन पर तेरा जोर नहीं चलेगा और तेरा ख कस्साजी (कार्य-सिधि) के लिए काफी है। (63-65)

‘इंसानों में से जो शख्स शैतान की राह चलेगा’ ये अल्फाज बताते हैं कि मौजूदा दुनिया में इंसान को आजादी हासिल है कि वह चाहे शैतान के रास्ते पर चले या खुदा के बताए हुए रास्ते पर। इसी आजादी के इस्तेमाल में इंसान का अस्ल इम्तेहान है। यहीं कामयाब होकर या तो वह खुदा का इनाम पाता है या नाकाम होकर शैतान के अंजाम का मुस्तहिक बन जाता है।

शैतान को इस दुनिया में आजादी हासिल है कि वह इंसान को अपना साथी बनाए। वह उसके ऊपर अपनी सारी कोशिश इस्तेमाल करे। वह उसके अंदर घुसकर उसके माल व औलाद में शामिल हो जाए। मगर शैतान को किसी भी दर्जे में इंसान के ऊपर कोई इख्तियार नहीं दिया गया है। शैतान के बस में सिर्फ यह है कि वह आवाज और अल्फाज के जरिए लोगों को बहकाए। वह बेवकीफ्त चीजों को ख़ानुमा बनाकर उन्हें अजीम हकीकत के रूप में पेश करे।

आयत में ‘लइ-स ल-क अलैहिम सुलतान’ के अल्फाज बताते हैं कि शैतान इम्कानी

तौर पर इंसान के मुकाबले में ज्यादा ताकतवर है। फिर एक ऐसी दुनिया जहां शैतान अपने तमाम ‘सवार और प्यादे’ के जरिए इंसान के ऊपर हमलाआवर हो वहां उससे बचने का रास्ता क्या है। इसका रास्ता सिर्फ यह है कि इंसान खुदा को हकीकी मअनों में अपना कारसाज बनाए। जो शख्स ऐसा करेगा खुदा उसे इस तरह अपनी हिफाजत में ले लेगा कि शैतान उसके मुकाबले में अपनी तमाम ताकतों के बावजूद आजिज होकर रह जाए।

رَبُّكُمُ الَّذِي يُرِيكُمُ الْفَلَكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ ۚ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ
رَحِيْمًا ۝ وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ تَدْعُوْنَ اِلَّا اِلٰهًا وَّلَا يَنْجِيْكُمْ
اِلَّا الْبَرُّ اَعْرَضْتُمْ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ۝

तुम्हारा ख वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में कश्ती चलाता है ताकि तुम उसका फल (अनुग्रह) तलाश करो। बेशक वह तुम्हारे ऊपर महरबान है। और जब समुद्र में तुम पर कोई आफत आती है तो तुम उन माबूदों (पूज्यों) को भूल जाते हो जिन्हें तुम अल्लाह के सिवा पुकारते थे। फिर जब वह तुम्हें खुश्की की तरफ बचा लाता है तो तुम दुबारा फिर जाते हो, और इंसान बड़ा ही नाशुक्रा है। (66-67)

खुदा ने मौजूदा दुनिया को ख़ास कवानीन (नियमों) का पाबंद बना रखा है, इस बिना पर इंसान के लिए यह मुमकिन होता है कि वह समुद्र में अपना जहाज चलाए और हवा में अपनी सवारियां दौड़ाए। यह सब इसलिए था कि इंसान अपने हक में अपने खुदा की रहमतों को पहचाने और उसका शुक्रगुजार बने। मगर इंसान का हाल यह है कि वह जो कुछ होते हुए देखता है वह समझता है कि उसे बस ऐसा ही होना है। वह एक इरादी (नियोजित) क़ेस को अपने आप हने वाला वाक्या फर्ज कर लेता है। यही वजह है कि इन वाक्यात को देखकर उसके अंदर कोई खुदाई एहसास नहीं जागता।

खुदा की मअरफत इतनी हकीकी है कि वह इंसान की फितरत के अंदर आखिरी गहराई तक पेवस्त है। इसका एक मुजाहिदा उस वक्त होता है जबकि उस पर कोई आफत आ पड़े जिसके मुकाबले में वह अपने आपको बेबस महसूस करे। मसलन अथाह समुद्र में तूफान का आना और जहाज का उसके अंदर फंस जाना। इस तरह के लम्हात में इंसान के ऊपर से उसके तमाम मस्नूई पर्दे हट जाते हैं वह एक खुदा का पहचान कर उसे पुकारने लगता है।

यह वक्ती तजर्बा इंसान को इसलिए कराया जाता है ताकि वह अपनी पूरी जिंदगी को उस पर ढाल ले। वह वक्ती एतराफ को अपना मुस्तक़िल ईमान बना ले। मगर इंसान का यह हाल है कि समुद्र के तूफान में वह जिस हकीकत को याद करता है, खुश्की के माहौल में पहुंचते ही वह उसे भूल जाता है।

खुदा की खुदाई को मानने का नाम तौहीद (एकेश्वरवाद) है और खुदा की खुदाई को न मानने का नाम शिर्क (बहुदेववादी)। इस एतराफ से तौहीद की अस्त हकीकत एतराफ

(स्वीकार) है और शिर्क की अस्ल हकीकत अदम एतराफ (अस्वीकार)। इंसान से उसके खुदा को अस्लन जो चीज मलूब है वह यही एतराफ है। मगर इंसान इतना जालिम है कि वह एतराफ के बक़्द भी खुदा का हक़ देने के लिए तैयार नहीं होता।

أَفَأَمِنْتُمْ أَنْ يَخْشِفَ بِكُمْ جَانِبَ الدِّبْرِ أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ وَكِيلًا ۖ أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُعِيدَ كُمْ فِيهِ تَارَةً أُخْرَىٰ فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِنَ الرِّيحِ فَيَغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ثُمَّ لَا تَجِدُوا لَكُمْ عَلَيْكُمْ نَاصِيَةً ۝

क्या तुम इससे बेदर हो गए कि खुदा तुम्हें खुशकी की तरफ लाकर जमीन में धंसा दे या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आंधी भेज दे, फिर तुम किसी को अपना कारसाज न पाओ। या तुम इससे बेदर हो गए कि वह तुम्हें दुबारा समुद्र में ले जाए फिर तुम पर हवा का सज़ तूफ़ान भेज दे और तुम्हें तुम्हारे इंकार के सबब से ग़र्क कर दे। फिर तुम इस पर कोई हमारा पीछा करने वाला न पाओ। (68-69)

खुदा इंसान को उसकी सरकशी के बावजूद फौरन नहीं पकड़ता। बल्कि उस पर वक्ती आफ़त भेजकर उसे ख़बरदार करता है। मगर इंसान का हाल यह है कि जब आफ़त आती है तो वक्ती तौर पर उसके अंदर एहसास जागता है मगर आफ़त के रुख़्त होते ही उसका एहसास भी रुख़्त हो जाता है। हालांकि बाद को भी वह उतना ही खुदा के कब्जे में होता है जितना कि वह पहले था।

समुद्र के सफर से अगर एक बार वह सलामती के साथ वापस आ गया है तो यह भी मुमकिन है कि उसे दुबारा समुद्र का सफर पेश आए और वह दुबारा उसी आफ़त में घिर जाए जिसमें वह पहले घिरा था। मजीद यह कि खुशकी के ख़तरात समुद्र के ख़तरात से कम नहीं हैं। समुद्र में जो चीज तूफ़ान है खुशकी पर वही चीज ज़लज़ला बन जाती है। फिर वह कौन सा मक़्रम है जहां आदमी कोई ऐसी चीज पा ले जो खुदा के मुक़बले में उसकी तरफ से रोक बन सके।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِي آدَمَ وَحَمَلْنَاهُمْ فِي الدِّبْرِ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنَاهُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَىٰ كَثِيرٍ مِمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيلًا ۝

और हमने आदम की औलाद को इज़्जत दी और हमने उन्हें खुशकी और तरी में सवार किया और उन्हें पाकीजा (पवित्र) चीज़ों का रिक़ दिया और हमने उन्हें अपनी वृत्त सी मज़्ज़त पर पैक़्त (श्रेष्ठता) दी। (70)

दुनिया की तमाम मज़्ज़त में इंसान को ख़ूबसी फ़ज़िलत

(श्रेष्ठता) हासिल है। चांद

और सितारे बेशुऊर मज़्ज़ूक हैं जबकि इंसान शुऊर और इरादे का मालिक है। दरख़्त पर दूसरे जिस तरह चाहते हैं तसर्फ़ करते हैं मगर इंसान खुद दूसरी चीज़ों के ऊपर तसर्फ़ करता है। जानवर सिर्फ़ अपने आज्ञा (अंगों) के जरिए अमल करते हैं मगर इंसान औज़ार और मशीन बनाकर उनके जरिए अपना मक़सद हासिल करता है। दरिया के लिए सिर्फ़ यह मुमकिन है कि वह ढलान के रुख़ पर बहे मगर इंसान बुलन्दियों पर चढ़ता है और बहाव के उल्टे रुख़ पर सफ़र करने की ताक़त रखता है।

इंसान के लिए इस दुनिया में रिज़क का शाहाना इतिजाम किया गया है। दरख़्त के पत्ते सूरज की एनर्जी को केमिकल एनर्जी में तब्दील करते हैं ताकि इससे इंसान की गिजा तैयार हो। जानवर घास खाते हैं ताकि उसे इंसान के लिए दूध और गोशत की शक़ल में लौटाएं। मक्खियां रात दिन सरगर्म रहती हैं ताकि वे दुनिया भर के फूलों का रस चूसकर इंसान के लिए शहद का ज़खीरा जमा करें, वगैरह वगैरह।

इस इनाम का तक्ज़ा था कि इंसान खुदा का शुक्रगुज़ार बने। मगर तमाम मज़्ज़ूक़त में इंसान ही वह मज़्ज़ूक़ है जो सबसे कम खुदा का शुक्र अदा करता है।

يَوْمَ نَدْعُوا كُلَّ أُنَاسٍ بِإِيمَانِهِمْ فَمَنْ أُوْتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَأُولَٰئِكَ يَقْرَءُونَ كِتَابَهُمْ وَلَا يَظْلُمُونَ فِتْنًا ۖ وَمَنْ كَانَتْ فِي هَذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا ۝

जिस दिन हम हर गिरोह को उसके रहनुमा के साथ बुलाएंगे। पस जिसका आमालनामा (कर्म-पत्र) उसके दाएं हाथ में दिया जाएगा वे लोग अपना आमालनामा पढ़ेंगे और उनके साथ जरा भी नाइंसाफी न की जाएगी। और जो शख़्स इस दुनिया में अंधा रहा वह आख़िरत में भी अंधा रहेगा और बहुत दूर पड़ा होगा रास्ते से। (71-72)

दुनिया में हर इंसानी गिरोह अपने रहनुमाओं के साथ होता है। चुनांचे आख़िरत में भी हर गिरोह अपने अपने रहनुमा के साथ बुलाया जाएगा। अच्छे लोग अपने रहनुमा के साथ और बुरे लोग अपने रहनुमा के साथ।

इसके बाद हर एक को उसकी ज़िंदगी का आमालनामा दिया जाएगा। नेक लोगों का आमालनामा उनके दाएं हाथ में और बुरे लोगों का आमालनामा उनके बाएं हाथ में। यह गोया एक महसूस अलामत होगी कि पहला गिरोह खुदा का मक़बूल गिरोह है और दूसरा गिरोह उसका नामक़बूल गिरोह।

आख़िरत में अच्छे और बुरे की जो तक्सीम होगी वह इस बुनियाद पर होगी कि कौन दुनिया में अंधा बनकर रहा और कौन बीना (दृष्टिवान) बनकर। दुनिया में चूँकि खुदा खुद बराहारास्त इंसान से हमकलाम नहीं होता। इसलिए दुनिया की ज़िंदगी में खुदा की बातों को कायनात की ख़ामोश निशानियों और दाजियाने हक़ के अल्फ़ज़ से जानना पड़ता है। जो

सूरह-17. बनी इस्राईल

789

पारा 15

लोग इस बिलवास्ता (परोक्ष) कलाम से मअरफ्त हासिल करें वे खुदा की नजर में 'बीना' लोग हैं। और जो लोग बिलवास्ता कलाम की जबान न समझें और उस वक्त के मुंतजिर हों जब खुदा जाहिर होकर खुद कलाम फरमाएगा वे खुदा की नजर में 'अंधे' लोग हैं। ऐसे लोगों का बराह्रास्त (प्रत्यक्ष) कलाम को सुनना कुछ भी काम न आएगा। वे उस वक्त भी हकीकत से दूर रहेंगे जैसा कि आज उससे दूर पड़े हुए हैं।

وَأِنْ كَادُوا لَيَفْتِنُونَكَ عَنِ الَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَةً وَإِذَا لَا تَأْخُذُ وَكَانَ خُلِيلًا ۖ وَلَوْلَا أَنْ ثَبَّتْنَاكَ لَقَدْ كِدْتَ تَرْكُنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا ذَلِيلًا ۚ وَإِذَا ادَّارَكَ ضَعْفَ الْحَيَاةِ وَضَعْفَ الْمَمَاتِ ثَمَّ لَا تَجِدُكَ عَلَيْنَا وَصِيرًا ۚ

और करीब था कि ये लोग फितने में डाल कर तुम्हें उससे हटा दें जो हमने तुम पर 'वही' (प्रकाशना) की है ताकि तुम उसके सिवा हमारी तरफ ग़लत बात मंसूब करो और तब वे तुम्हें अपना दोस्त बना लेते। और अगर हमने तुम्हें जमाए न रखा होता तो करीब था कि तुम उनकी तरफ कुछ झुक पड़ें। फिर हम तुम्हें ज़िंदगी और मौत दोनों का दोहरा (अजाब) चखाते। इसके बाद तुम हमारे मुकाबले में अपना कोई मददगार न पाते। (73-75)

मक्का में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत (आह्वान) का अस्ल नुक्ता यह था कि खुदा सिर्फ एक है और उसके सिवा जिन बुतों को तुम पूजते हो वे सब बातिल (झूठे) हैं। अहले मक्का अगरचे एक बड़े खुदा का इकरार करते थे मगर इसी के साथ वे दूसरे खुदाओं को भी मानते थे।

ये दूसरे खुदा कौन थे। ये उनके बुजुर्ग और अकाबिर थे। जिन्हें वे मुकद्दस समझते थे और उनकी मूर्तियां बनाकर उनके सामने झुकना शुरू कर दिया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तौहीद की दावत से बुजुर्गों के इस अक्रीदे पर ज़द पड़ती थी। चुनांचे वे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इस मुसालेहत के लिए कहते थे कि हम आपके माबूद को मानेंगे, शर्त यह है कि आप हमारे माबूदों को बुरा कहना छोड़ दें।

इस दुनिया में वह शख्स फ़ौरन लोगों की नजर में मब्रूज (अप्रिय) हो जाता है जो ऐसी बात कहे जिसकी ज़द लोगों के बड़ों पर पड़ती हो। इसके बरअक्स लोगों के दर्मियान महबूब बनने का सबसे आसान तरीका यह है कि ऐसी बात कहो जिसमें सब लोग अपने-अपने बुजुर्गों की तस्दीक पा रहे हों। मगर पैगम्बर का तरीका यह है कि सच्चाई का खुला एलान किया जाए। इसकी परवाह न की जाए कि किस बुजुर्ग पर इसकी ज़द पड़ती है और किस पर नहीं पड़ती।

दावती अमल से अस्ल मक्सूद हकीकत का कामिल एलान है। इसीलिए एलान के मामले में किसी कमी या रियायत की इजाजत नहीं है। पैगम्बर या ग़ैर पैगम्बर, जो भी हक की दावत

पारा 15

790

सूरह-17. बनी इस्राईल

के लिए उठे उसे हकीकत का खुला एलान करना है, चाहे इसकी यह कीमत देनी पड़े कि दुनिया में उसका कोई दोस्त बाकी न रहे।

وَأِنْ كَادُوا لَيَسْتَفِزُّوكَ مِنَ الْأَرْضِ لَيُخْرِجُوكَ مِنْهَا وَإِذَا لَا يَلْبَثُونَ خَلْفَكَ إِلَّا قَلِيلًا ۖ سَنَّةٌ مِّنْ قَدْرِ أَسَلْنَا قَبْلَكَ مَن رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسِتِّنَا تُخْوِيلًا ۚ

और ये लोग इस सरजमीन से तुम्हारे कदम उखाड़ने लगे थे ताकि तुम्हें इससे निकाल दें। और अगर ऐसा होता तो तुम्हारे बाद ये भी बहुत कम ठहरने पाते। जैसा कि उन रसूलों के बारे में हमारा तरीका रहा है जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा था और तुम हमारे तरीके में तब्दीली न पाओगे। (76-77)

जब भी किसी गिरोह में सच्चे दीन की दावत उठती है तो सूरतेहाल यह होती है कि एक तरफ वे लोग होते हैं जो मजहब के नाम पर कायमशुदा गद्दियों के मालिक होते हैं। दूसरी तरफ हक का दाबी होता है जो बेआमेज (विशुद्ध) दीन का नुमाइंदा होने की वजह से वक्त के माहौल में तंहा और बेजोर दिखाई देता है। यह फर्क लोगों को ग़लतफहमी में डाल देता है। वे हक के दाबी को बिल्कुल बेकीमत समझ लेते हैं। यहां तक कि यह चाहते हैं कि उसे अपनी बस्ती से निकाल दें।

ऐसे लोग भूल जाते हैं कि यह जमीन खुदा की जमीन है। यहां किसी खुदा के बंदे के ख़िलाफ़ तख़ीब (प्रतिरोध) का मंसूबा बनाना खुद अपने आपको खुदा की नजर में मुजरिम साबित करना है। खुदा के दाबी को किसी बस्ती से निकालना ऐसा ही है जैसे किसी शहर से उस शख्स को निकाल दिया जाए जिसे वहां हुकूमते वक्त के नुमाइंदे की हैसियत हासिल हो। ऐसे शख्स को बस्ती में न रहने देने का नतीजा बिलआख़िर यह होता है कि बस्ती वाले खुद वहां न रहने पाएं।

आदमी दूसरे को निकालता है हालांकि वह खुद अपने आपको निकाल रहा होता है। आदमी दूसरे को छोटा करना चाहता है हालांकि वह खुद अपने आपको उस मालिके हकीकी की नजर में छोटा कर रहा होता है जिसे हकीकतन यह इख़्तियार है कि वह जिसे चाहे छोटा करे और जिसे चाहे बड़ा कर दे।

اقِمِ الصَّلَاةَ لِذِكْرِ اللَّهِ الشَّمْسِ إِلَى غَسَقِ الْيَلِّ وَقُرْآنَ الْفَجْرِ إِنَّ قُرْآنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا ۚ

नमाज कायम करो सूरज ढलने के बाद से रात के अंधे तक। और ख़ास कर फ़ज़ की फ़िर्त (प्रभात-पाठ)। बेशक फ़ज़ की क़िरात मशहूद (उपस्थित) होती है। (78)

आयत का लफ्जी तर्जुमा यह है : 'कायम करो नमाज को सूरज ढलने से रात के अंधेरे तक' इन अल्फ़ाज़ से बजाहिर यह निकलता है कि दोपहर बाद से लेकर रात का अंधेरा छाने तक मुसलसल नमाज पढ़ी जाती रहे। इसमें शक नहीं कि खुदा की अज्मत और उसके एहसानात का तकाज़ा यही है कि बंदे हर वक़्त उसकी इबादत करते रहें। मगर हदीस की तशरीह ने इस आम हुक्म को ख़ास कर दिया। हदीस ने इस मुश्किल हुक्म को इस तरह आसान कर दिया कि उसने क़ार दिया कि आम औक़ात में लोग सिर्फ़ ज़िफ़्र (याद) की हद तक खुदा से अपना तअल्लुक वाबस्ता रखें और दोपहर से रात तक के औक़ात में चार बार (ज़ुहर, अज़्र, मग़िब, इशा) उसकी इबादत कर लिया करें।

इसी तरह आयत के दूसरे टुकड़े का लफ्जी तर्जुमा यह है : 'और क़ुरआन पढ़ना फ़ज़्र का' इसे भी अगर इसके जाहिरी मफ़हूम में लिया जाए तो इसका मतलब यह निकलेगा कि रोज़ाना सुबह के तमाम औक़ात में क़ुरआन पढ़ा जाता रहे। मगर यहां हदीस की तशरीह ने हमारे लिए आसानी पैदा कर दी। हदीस के मुताबिक़ इस हुक्म का मुतअय्यन (निश्चित) मतलब यह है कि सुबह के वक़्त भी एक नमाज़ अदा की जाए और इस (पांचवीं) नमाज़ का नुमायां पहलू यह हो कि इसमें क़ुरआन की लम्बी तिलावत (पाठ) की जाए।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهِ نَافِلَةً لَّكَ عَسَىٰ أَن يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُودًا ﴿٧٩﴾

और रात को तहज्जुद पढ़ो, यह नफ़ल है तुम्हारे लिए। उम्मीद है कि तुम्हारा रब तुम्हें मक़ामे महमूद (प्रशंसित-स्थल) पर खड़ा करे। (79)

तहज्जुद की नमाज़ की रूह अल्लाह को अपनी मख़सूस तंहाइयों में याद करना है। तहज्जुद के लफ्जी मअना रात की बेदारी के हैं। रात का वक़्त तंहाई और सुकून का वक़्त होता है। रात को जब आदमी एक नींद पूरी करके उठता है तो वह उसके तमाम औक़ात (समयों) में सबसे बेहतर वक़्त होता है। इन लम्हात में आदमी जब खुदा की तरफ़ मुतवज्जह होता है और नमाज़ की सू़रत में हाथ बांधकर खुदा के कलाम को पढ़ता है तो गोया वह अपनी अबदियत (बंदगी) की आखिरी तस्वीर बना रहा होता है। ख़ास तौर पर उस वक़्त जबकि उसका दिल भी उसका साथ दे रहा हो और उसकी शख़्सियत इस तरह पिघल उठी हो कि वह बेकारार होकर आंखों के रास्ते से बह पड़े।

मक़ामे महमूद के लफ्जी मअना है तारीफ़ किया हुआ मक़ाम। इस महमूदियत का एक दुनियावी पहलू है और एक इसका उख़रवी (परलोकवादी) पहलू। उख़रवी पहलू वह है जिसे मुफ़स्सिरन शफ़ाअते कुबरा कहते हैं। जैसा कि हदीस से मालूम होता है, क़ियामत के दिन तमाम अबिया अपने मोमिनीन की शफ़ाअत करेंगे। यह शफ़ाअत गोया उनके मोमिन होने की तस्दीक होगी जिसके बाद उन लोगों को जन्नत में दाख़िल किया जाएगा जिन्हें खुदा जन्नत में दाख़िल करना चाहे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शफ़ाअत सबसे बड़ी

होगी। क्योंकि अपने उम्मतियों की तादाद सबसे ज्यादा होने की वजह से आप सबसे बड़ी तादाद की शफ़ाअत फ़र्माएंगे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महमूदियत का दुनियावी पहलू यह है कि आपके साथ ऐसी तारीख़ जमा हो जाए कि आप तमाम अक़वामे आलम (विश्व-समुदायों) की नज़र में मुसल्लमा (सुस्थापित) तौर पर क़ाबिले सताइश (प्रशंसनीय) और लायके एतराफ़ बन जाएं। खुदा का यह मंसूबा आपके हक़ में मुकम्मल तौर पर पूरा हुआ। आज दुनिया में तमाम लोग आपका एतराफ़ करने पर मजबूर हैं। आपकी नुबुव्वत एक मुसल्लम नुबुव्वत बन चुकी है न कि निजाई (विवादित) नुबुव्वत जैसा कि वह आपके जहूर के इब्तिदाई सालों में थी।

महमूदी नुबुव्वत, दुनियावी एतबार से मुसल्लमा (Established) नुबुव्वत का दूसरा नाम है। यानी ऐसी नुबुव्वत जिसके हक़ में तारीख़ी शहादतें इतनी ज्यादा का मिल तौर पर मौजूद हों कि आपकी शख़्सियत और आपकी तालीमात के बारे में किसी के लिए शुबह की गुंजाइश न रहे। इंसान, खुद अपने मुसल्लमा इल्मी मेयार के मुताबिक़ आपकी हैसियत का एतराफ़ करने पर मजबूर हो जाए। इक़रार व एतराफ़ की आखिरी सू़रत तारीफ़ है इसलिए उसे 'मक़ामे महमूद' कहा गया।

وَقُلْ رَبِّ ادْخُلْنِيْ مَدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مَخْرَجَ صِدْقٍ وَّاَجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ﴿٨٠﴾ وَقُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ اِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ﴿٨١﴾

और कहो कि ऐ मेरे रब मुझे दाख़िल कर सच्चा दाख़िल करना और मुझे निकाल सच्चा निकालना। और मुझे अपने पास से मददगार कुव्वत (शक्ति) अता कर और कह कि हक़ (सत्य) आया और बातिल (असत्य) मिट गया। बेशक़ बातिल मिटने ही वाला था। (80-81)

पैगम्बरे इस्लाम को अरब के सरदार 'मजूम' (निंदित) बना देना चाहते थे। मगर अल्लाह का फैसला था कि आपको 'महमूद' (प्रशंसित) के मक़ाम तक पहुंचाया जाए। इसके लिए अल्लाह का मंसूबा यह था कि मदीना में आपके लिए मुवाफ़िक़ (अनुकूल) हालात पैदा किए जाएं और मक्का से निकाल कर आपको मदीना ले जाया जाए। मदीना में इस्लाम का इक्तेदार (शासन) कायम हो। तब्लीगी कोशिश के ज़रिए मुसलमानों की तादाद ज्यादा से ज्यादा बढ़ाई जाए। यहां तक कि वे लोग मक्का फतह कर लें और बिलआखिर सारा अरब मुसल्लम हो जाए। इस तरह तौहीद की पुश्त पर वह ताकत जमा हो जो मुसलसल अमल के ज़रिए सारी दुनिया से शिर्क़ का ग़लबा ख़त्म कर दे।

यही वह खुदाई मंसूबा था जिसे यहां दुआ की सू़रत में पैगम्बरे इस्लाम को तल्कीन किया गया।

सूरह-17. बनी इस्राईल

793

पारा 15

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْآنِ مَا هُوَ شِفَاءٌ وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۚ وَلَا يَزِيدُ الظَّالِمِينَ
الْآخِسَارَ ۝

और हम कुरआन में से उतारते हैं जिसमें शिफा (निदान) और रहमत है ईमान वालों के लिए, और जालिमों के लिए इससे नुकसान के सिवा और कुछ नहीं बढ़ता। (82)

कुरआन ख़ालिस सच्चाई का एलान है। ख़ालिस सच्चाई जब पेश की जाती है तो उन तमाम लोगों पर इसकी जद पड़ती है जो या तो सच्चाई से ख़ाली हों या मिलावटी सच्चाई लिए हुए हों। अब जो लोग हकीकतपसंद हैं उनके सामने जब ख़ालिस सच्चाई आती है तो वे सच्चाई को मेयार बनाते हैं न कि अपनी जात को। वे अपने आपको सच्चाई पर ढाल लेते हैं न यह कि खुद सच्चाई को अपने ऊपर ढालने लगे। इस तरह उनकी संजीदगी और हकीकतपसंदी उनके कुरआन को उनके लिए रहमत बना देती है।

दूसरे लोग वे हैं जिनके अंदर अपनी बड़ाई का एहसास छुपा हुआ होता है। उनके सामने जब बेआमेज (खुशी) सच्चाई आती है तो अपनी मख़सूस नपिसयात की बिना पर उनका ज़ेहन उल्टे रुख़ पर चल पड़ता है। वे यह नहीं सोच पाते कि 'अगर मैं सच्चाई को इख़्तियार कर लूं तो मैं सच्चा बन जाऊंगा' इसके बजाए वे यह सोचने लगते हैं कि 'अगर मैंने सच्चाई को माना तो मैं छोटा हो जाऊंगा।' वे जाने वाली चीज़ की हिफ़ाजत में रहने वाली चीज़ को छो देते हैं। वे अपनी बड़ाई को कायम रखने की ख़ातिर सच्चाई को छोटा करने पर राजी हो जाते हैं।

وَلَا تَعْبُدُوا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَاضَ ۚ وَتَعْبُدُونِي ۚ وَإِذَا مَسَّهُ الشُّرُّ كَانَ
يُؤْسًا ۚ قُلْ كُلٌّ يَعْمَلُ عَلَى شَاكِلَتِهِ ۚ فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَن هُوَ أَهْدَىٰ سَبِيلًا ۚ

और आदमी पर जब हम इनाम करते हैं तो वह एराज (उपेक्षा) करता है और पीठ मोड़ लेता है। और जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है तो वह नाउम्मीद हो जाता है। कहो कि हर एक अपने तरीके पर अमल कर रहा है। अब तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि कौन ज्यादा ठीक रास्ते पर है। (83-84)

हर इंसान पर ये हालात गुजरते हैं कि जब उसे राहत और फरावानी हासिल होती है तो वह जबरदस्त खुद एतमादी (आत्मविश्वास) का मुजाहिदा करता है। किसी बात को मानने के लिए वह इतना कड़ा बन जाता है जैसे कि वह ऐसा लोहा है जो झुकना नहीं जानता। मगर जब उसके असबाब छिन जाते हैं और उसे इज्ज (निर्बलता) का तजर्बा होता है तो अचानक वह बेहिम्मत हो जाता है। वह मायूसी से निढाल हो जाता है।

मौजूदा दुनिया में हर आदमी अपने बारे में इस तजर्बे से गुजरता है। मगर कोई ऐसा नहीं जो इस तजर्बे में अपनी दरयाप्त कर ले। वह यह सोचे कि दुनिया में जबकि उसे आजादी

पारा 15

794

सूरह-17. बनी इस्राईल

हासिल है वह हक के मुकाबले में इतनी सरकशी दिखा रहा है। मगर उस वक्त उसका क्या हाल होगा जबकि कियामत आएगी और उससे उसका सारा इख़्तियार छीन लेगी। आदमी कितना ज्यादा कमज़ोर है मगर वह कितना ज्यादा अपने को ताक़तवर समझता है।

शाकिला से मुराद ज़ेहनी सांचा है। हर आदमी के हालात और रुझानात के तहत धीरे-धीरे उसका एक ख़ास ज़ेहनी सांचा बन जाता है। वह उसी के ज़ेअसर सोचता है और उसी के मुताबिक उसका नुक्तए नज़र बनता है। मगर सही नुक्तए नज़र (वृष्टिकोण) वह है जो इल्मे इलाही के मुताबिक सही हो और ग़लत वह है जो इल्मे इलाही के मुताबिक ग़लत हो।

यही वह मक़ाम है जहां आदमी का इम्तेहान है। आदमी को यह करना है कि उसके शाकिला ने उसका जो ज़ेहनी ख़ोल बना दिया है वह उस ख़ोल को तोड़े। ताकि वह चीज़ों को वैसा ही देख सके जैसी कि वे हैं। ब-अल्फ़ाज़ दीगर वह चीज़ों को ख़्बानी निगाह से देखने लगे। जो लोग अपने ज़ेहनी ख़ोल में गुम हों, वे भटके हुए लोग हैं। और जो लोग अपने ज़ेहनी ख़ोल से निकल कर खुदाई नुक्तए नज़र को पा लें वही वे लोग हैं जिन्होंने हिदायत पाई।

وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ ۚ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلَّا
قَلِيلًا ۚ

और वे तुमसे रूह (आत्मा) के मुतअल्लिक पूछते हैं। कहो कि रूह मेरे रब के हुक्म से है। और तुम्हें बहुत थोड़ा इल्म दिया गया है। (85)

यहां रूह से मुराद 'वही' इलाही है। अरब के जिन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह सवाल किया, वे 'वही' व इल्हाम के मुक़िर न थे। इस सवाल का रुख़ उनके नजदीक रसूलुल्लाह की बेख़बरी की तरफ़ था न कि हकीकतन अपनी बेख़बरी की तरफ़।

यह वह ज़माना था जबकि रसूलुल्लाह के गिर्द अजमत की तारीख़ नहीं बनी थी। लोगों को आप महज़ एक आम इंसान नज़र आते थे। चूँकि उन्हें यकीन नहीं था कि खुदा का फरिश्ता आपके पास खुदा की 'वही' (ईश्वरीय वाणी) लेकर आता है। इसलिए उन्होंने आपका मज़ाक उड़ने के लिए यह सवाल किया।

ताहम इस सवाल के जवाब में कुरआन में एक अहम उसूली बात बता दी गई। वह यह कि इंसान को सिर्फ 'इल्मे कलील' (अल्पज्ञान) दिया गया है। वह 'इल्मे कसीर' (अधिक ज्ञान) का मालिक नहीं है। इसलिए हकीकतपसंदी का तक्रज़ा यह है कि वह उन सवालात में न उलझे जिन्हें वह अपनी पैदाइशी कम इल्मी की बिना पर जान नहीं सकता।

क़दीम ज़माने में इंसान सिर्फ आंख के ज़रिए चीज़ों को देख सकता था। ताहम वृष्टि प्रयोगों ने बताया कि आंख सिर्फ एक हद तक काम करती है। इसलिए वह सम्पूर्ण अवलोकन के लिए काफ़ी नहीं। मसलन एक चीज़ जो दूर से देखने में एक नज़र आती है, क़रीब से जाकर देखा जाए तो मालूम होता है कि वह दो थीं।

मौजूदा जमाने में आलाती मुतालआ (उपकरणीय अध्ययन) वजूद में आया तो इंसान ने समझा कि आलात (उपकरण) उसकी सीमितता का बदल हैं। आलाती मुतालआ के जरिए चीजों को उनकी आखिरी हद तक देखा जा सकता है। मगर बीसवीं सदी में पहुंच कर इस खुशखबरी का खात्मा हो गया। अब मालूम हुआ कि चीजें उससे ज्यादा पेचीदा और उससे ज्यादा पुरअसरार (रहस्यमयी) हैं कि आलात की मदद से उन्हें पूरी तरह देखा जा सके।

ऐसी हालत में इज्माली इल्म (अल्पज्ञान) पर संतुष्ट होना इंसान के लिए हकीकतपसंदी का तक्कज बन गया है न कि महज अकीदे का तक्कज। हमारी सलाहियेतमहदूद (सीमित) हैं और हमसे मावरा जो आलम है वह लामहदूद, फिर महदूद के लिए किस तरह मुमकिन है कि वह लामहदूद का इहाता कर सके। इंसान की महदूदियत का तक्काज है कि वह बिलवास्ता (परोक्ष) इल्म पर कनाअत (संतोष) करे और बराहेरास्त इल्म में उलझना छोड़ दे। दूसरे शब्दों में तर्क से हासिलशुदा इल्म को भी उसी तरह माकूल (Valid) मान ले जिस तरह वह मुशाहिदे (अवलोकन) से हासिलशुदा इल्म को माकूल मानता है।

وَلَيْنَ شِئْنَا لَنُدْهَبَنَّ بِالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهِ عَلَيْنَا وَكِيلًا ۖ
إِلَّا رَحْمَةً مِن رَّبِّكَ ۚ إِنَّ فَضْلَهُ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيرًا ۖ قُلْ لِّينِ اجْتَمَعَتِ
الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَىٰ أَن يَأْتُوا بِمِثْلِ هَذَا الْقُرْآنِ لَا يَأْتُونَ بِمِثْلِهِ وَلَا يَأْتُونَ
بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيرًا ۖ

और अगर हम चाहें तो वह सब कुछ तुमसे छीन लें जो हमने 'वही' (प्रकाशना) के जरिए तुम्हें दिया है, फिर तुम इसके लिए हमारे मुकाबले में कोई हिमायती न पाओ, मगर यह सिर्फ तुम्हारे रब की रहमत है, बेशक तुम्हारे ऊपर उसका बड़ा फल है। कहो कि अगर तमाम इंसान और जिन्नात जमा हो जाएं कि ऐसा कुरआन बना लाएं तब भी वे इसके जैसा न ला सकेंगे। अगरचे वे एक दूसरे के मददगार बन जाएं। (86-88)

कुरआन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ख़ास-ख़ास औकात (समयों) में उतरता था। इन मख़सूस औकात के अलावा आप खुद भी इस पर कादिर न थे कि कुरआन जैसा कलाम बना सकें। दूसरे वक्तों में आपकी जवान से जो कलाम निकलता था वह हमेशा कुरआन के कलाम से मुख़्तलिफ़ होता था। जब कभी लम्बी मुददत के लिए 'वही' रुकती तो आप बेहद परेशान हो जाते। मगर आपके लिए यह मुमकिन न हो सका कि खुद या किसी की मदद से कुरआन जैसा कलाम बना लें। यह एक हकीकत है कि कुरआन की जवान और आपकी अपनी जवान में बेक़द नुमायां फ़र्क़ होता था। यह फ़र्क़ आज भी हर अरबीदां कुरआन और हदीस की जवान का तक्कबुल (तुलना) करके देख सकता है।

यह वाक्या इस बात का एक वाजिह सुबूत है कि कुरआन मुहम्मद का कलाम नहीं। वह

मुहम्मद के सिवा एक और बरतर जेहन से निकला हुआ कलाम है।

जो लोग कुरआन को इंसानी कलाम कहते थे उनसे कहा गया कि अगर तुम्हारा ख़याल सही है तो बहैसियत इंसान के तुम्हें भी इसकी कुदरत होनी चाहिए। तुम तंहा या दूसरे इंसानों को लेकर कुरआन जैसा कलाम बना कर लाओ। मगर उस वक्त के लोगों में से किसी के लिए मुमकिन न हो सका कि वह इस चैलेन्ज का जवाब दे। बाद के जमाने में भी कोई अदीब या आलिम कुरआन जैसे कलाम का नमूना पेश न कर सका। वाक़्यात बताते हैं कि बहुत से लोगों ने कोशिश की मगर वे सरासर नाकाम रहे। वे कुरआन जैसी एक सूरह भी न बना सके।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِي هَذَا الْقُرْآنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ۚ فَأَبَى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا
كُفُورًا ۖ وَقَالُوا لَنُؤْمِنَ لَكَ حَتَّىٰ تَنْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنْبُوءًا ۖ أَوْ تَكُونُ
لَكَ جَنَّةٌ مِّن نَّجِيلٍ ۖ وَ عَنِ النَّجْدِ الْأَنْهَارِ خَلْجًا تَنْجِيرًا ۖ أَوْ تَسْقِطَ
السَّمَاءُ كَمَا زَعَمَتِ عَلَيْنَا كَسَفًا ۖ أَوْ تَأْتِيَ بِاللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا ۖ أَوْ يَكُونَ
لَكَ بَيْتٌ مِّن زُخْرٍ ۖ أَوْ تَرْقَىٰ فِي السَّمَاءِ وَلَنُؤْمِنَ بِرُفُوقِكَ ۚ حَتَّىٰ تُنْزَلَ
عَلَيْنَا كِتَابًا نَقْرُؤُهُ قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيَ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَسُولًا ۖ

और हमने लोगों के लिए इस कुरआन में हर किस्म का मज़मून तरह-तरह से बयान किया है, फिर भी अक्सर लोग इंकार ही पर जमे रहे और वे कहते हैं कि हम हरगिज तुम पर ईमान न लाएंगे जब तक तुम हमारे लिए जमीन से कोई चश्मा (स्रोत) जारी न कर दो या तुम्हारे पास खज़ूरों और अंगूरों का कोई बाग़ हो जाए, फिर तुम उस बाग़ के बीच में बहुत सी नहरें जारी कर दो। या जैसा कि तुम कहते हो, हमारे ऊपर आसमान से टुकड़े गिरा दो या अल्लाह और फरिश्तों को लाकर हमारे सामने खड़ा कर दो या तुम्हारे पास सोने का कोई घर हो जाए या तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने को भी न मानेंगे जब तक तुम वहां से हम पर कोई किताब न उतार दो जिसे हम पढ़ें। कहो कि मेरा रब पाक है, मैं तो सिर्फ एक बशर (इंसान) हूँ, अल्लाह का रसूल। (89-93)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हक़ का पैग़ाम पेश किया तो आपके मुआसिरीन (समकालीन) ने कहा कि हम तुम्हें उस वक्त मानेंगे जबकि तुम ख़ारिके आदत (दिव्य) करिश्मे दिखाओ। मगर इस किस्म के मुतालबात खुदा के मंसूबए तख़लीक के ख़िलाफ़ हैं। इंसान को खुदा ने बाशुऊर वजूद के तौर पर पैदा किया है। यह सारी कायनात में एक इतिहाई नादिर अतिय्या (अद्वितीय देन) है जो इसलिए दिया गया है कि इंसान जाती शुऊर

के जरिए हक को पहचाने न कि मसहूरकुन (विस्मयकारी) करिश्मों के जरिए।

हकीकत यह है कि मौजूदा दुनिया में इंसान का इस्तेहान 'दलील' की सतह पर हो रहा है। यहां हर आदमी को दलील की जवान में हक को पहचानना और उसे इस्त्रियार करना है। जो लोग दलील की सतह पर हक को न पहचानें वही वे लोग हैं जो बिलआखिर नाकाम और नामुराद रहेंगे।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُؤْمِنُوا إِذْ جَاءَهُمُ الْهُدَى إِلَّا أَنْ قَالُوا أَبَعَثَ اللَّهُ بَشَرًا
رَّسُولًا ۖ قُلْ لَوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلَائِكَةٌ يَتَّبِعُونَ مُطِيعِينَ لَئَلَّأْنَا عَلَيْهِمُ
مِّنَ السَّمَاءِ مَلَكًا رَّسُولًا ۖ قُلْ كَفَى بِاللَّهِ شَهِيدًا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ إِنَّكَ
بِعِبَادِهِ خَيْرٌ بَصِيرًا ۝

और जब उनके पास हिदायत आ गई तो उन्हें इमान लाने से इसके सिवा और कोई चीज रुकावट नहीं बनी कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने बशर (इंसान) को रसूल बनाकर भेजा है। कहे कि अगर जमीन में फरिश्ते होते कि उसमें चलते फिरते तो अलबत्ता हम उन पर आसमान से फरिश्ते को रसूल बनाकर भेजते। कहे कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाही के लिए काफी है। बेशक वह अपने बंदों को जानने वाला, देखने वाला है। (94-96)

इस तरह की आयतों को आज जब आदमी पढ़ता है तो उसे तअज्जुब होता है कि वे कैसे हठधर्म लोग थे जिन्होंने पैगम्बरे आजम (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का इंकार किया। इस तअज्जुब की वजह दरअसल यह है कि आज का एक आदमी मुंकिरीन का तकाबुल (तुलना) 'पैगम्बरे आजम' से करता है। जबकि दौरे अव्वल के मुंकिरीन के सामने जो शख्स था वह एक ऐसा शख्स था जो अभी तक सिर्फ 'मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह' था। वह सारी तारीख उस वक्त मुस्तकबिल (भविष्य) के पर्दे में छुपी हुई थी जिसके बाद दुनिया ने आपको पैगम्बरे आजम की हैसियत से तस्लीम किया।

पैगम्बर अपने जमाने के लोगों को सिर्फ एक 'बशर' नजर आता है। बाद को जब तारीखी तस्दीक़त जमा हो जाती हैं तो लोगों को नजर आता है कि यह वाकई पैगम्बर था। यही वजह है कि हर पैगम्बर के साथ यह वाकया पेश आया कि उसके समकालीन मुखातबीन ने उसका इंकार किया और बाद के लोग उसका एतराफ करने पर मजबूर हुए।

मौजूदा दुनिया में आदमी हालते इस्तेहान में है। इसलिए यह मुमकिन नहीं कि फरिश्तों के जरिए उसे हक से बाख्बर किया जाए। फरिश्तों के जरिए हक से बाख्बर करने का मतलब हकीकत को आखिरी हद तक बेमकाब कर देना है। जब हकीकत को आखिरी हद तक बेमकाब कर दिया जाए तो इसके बाद आदमी का इस्तेहान किस चीज में होगा।

وَمَنْ يَهْدِ اللَّهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ وَمَنْ يُضِلِّ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمُ أَوْلِيَاءَ مِنْ دُونِهِ
وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ عُمِّيًّا وَبُكَمًّا وَطَمًّا مُّأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ
كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنَاهُمْ سَعِيرًا ۚ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِآيَاتِنَا وَقَالُوا إِذَا كُنَّا
عِظَامًا وَرُفَاتًا إِنْآ لَبْعُوثُونَ خَلْقًا جَدِيدًا ۝

अल्लाह जिसे राह दिखाए वही राह पाने वाला है। और जिसे वह बेराह कर दे तो तुम उनके लिए अल्लाह के सिवा किसी को मददगार न पाओगे। और हम कियामत के दिन उन्हें उनके मुंह के बल अंधे और गूंगे और बहरे इकट्ठा करेंगे उनका ठिकाना जहन्नम है। जब-जब उसकी आग धीमी होगी हम उसे मजीद भड़का देंगे। यह है उनका बदला इस सबब से कि उन्होंने हमारी निशानियों का इंकार किया। और कहा कि जब हम हड्डी और रेजा हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा करके उठाए जाएंगे। (97-98)

दुनिया में आदमी अपनी हैसियते माददी के मुताबिक जीता है। आखिरत में वह अपनी हैसियते रूहानी के मुताबिक नजर आएगा। यही वजह है कि जो लोग दुनिया में राह से बेराह हुए वे कियामत में उठेंगे तो अपने आपको अंधा, बहरा, गूंगा पाएंगे। उनका राह से बेराह होना इसलिए था कि उन्होंने आंख और कान और जवान को उस मक्सद में इस्तेमाल नहीं किया जिसके लिए वे उन्हें दिए गए थे। उन्होंने खुदा की निशानियों को नहीं देखा। उन्होंने खुदा के दलाइल को नहीं सुना। उनकी जवान हक की हिमायत में नहीं खुली। वे आंख, कान और जवान रखते हुए हक की निस्वत से बेआंख, बेकान और बेजवान हो गए। मौत के बाद जब वे आलमे हकीकी में पहुंचेंगे तो वहां वे अपने आपको अपनी असली सूरत में पाएंगे न कि उस मस्नूई (कृत्रिम) सूरत में जो हालते इस्तेहान होने की वजह से वक्ती तौर पर उन्हें मौजूदा दुनिया में हासिल थी।

'जब हम रेजा-रेजा हो जाएंगे' कहने वाले एक वे हैं जो जबाने काल (कथन) से यह जुमला दोहराएं। दूसरे वे लोग हैं जो जबाने हाल (व्यवहार) से उसे कहें। ये दूसरे लोग वे हैं जो आंख और कान और जवान को उसके मक्सदे तख्नीक (रचना, उद्देश्य) के खिलाफ इस्तेमाल करें और यह गुमान रखें कि उनका यह अमल बस इसी दुनिया में गुम होकर रह जाएगा, वह आखिरत में पहुंचने वाला नहीं।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللَّهَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلَىٰ أَنْ يَخْلُقَ مِثْلَهُمْ
وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلَ أَرَبِّبٍ فِيهِ ۚ فَاَلَّذِينَ ظَلَمُوا أَلَا نُفُورًا ۝

क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और जमीन को पैदा किया वह इस पर कादिर है कि उनके मानिंद दुबारा पैदा कर दे और उसने उनके लिए एक मुद्दत मुक़र्रर कर रखी है, इसमें कोई शक नहीं। इस पर भी जालिम लोग बेइंकार किए न रहे। (99)

जमीन व आसमान हमारे सामने एक हकीकत के तौर पर मौजूद हैं। हम इनका इंकार नहीं कर सकते। यह मौजूदगी साबित करती है कि यहां कोई जिंदा हस्ती है जो यह ताकत रखती है कि वह पहली बार तख़्तीक (सृजन) करे। वह 'नहीं' से 'है' को वजूद में लाए। फिर जब पहली तख़्तीक मुमकिन है तो दूसरी तख़्तीक क्यों मुमकिन नहीं। हकीकत यह है कि पहली तख़्तीक को मानने के बाद दूसरी तख़्तीक को मानने में कोई इल्मी व अक्ली दलील मानेअ (रुकावट) नहीं रहती।

इतने खुले हुए करीने (तर्क) के बावजूद जो शख्स दुबारा तख़्तीक को न माने वह जालिम है। वह हठधर्मी की जमीन पर खड़ा हुआ है न कि दलील और मावूलीयत की जमीन पर।

قُلْ لَّوْ أَن تُمْ تَمْلِكُونَ خَزَائِنَ رَحْمَةِ رَبِّي إِذًا لَأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ
وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَنُورًا

कहो कि अगर तुम लोग मेरे खर्च की रहमत के खज़ानों के मालिक होते तो इस सूरत में तुम खर्च हो जाने के अदेशे से जरूर हाथ रोक लेते और इंसान बड़ा ही तंग दिल है। (100)

इंसान तंग जर्फवाकेअ हुआ है। वह हर क्रिम के शरफ को अपने लिए या अपने गिरेह के लिए जमा कर लेना चाहता है। अगर नेमतों की तक्सीम इंसान के हाथ में होती तो जिन लोगों के पास दौलत व अज्मत आ गई थी वही नुबुव्वत को भी अपने पास जमा कर लेते। वे उसे दूसरों के पास जाने न देते।

मगर खुदा मामलात को जौहर के एतबार से देखता है न कि गिरोही तअस्सुबात की नजर से। वह तमाम इंसानों पर नजर डालता है। और पूरी नस्ल में जो सबसे बेहतर इंसान होता है उसे नुबुव्वत के लिए चुन लेता है। नुबुव्वत का इंतखाब अगर इंसान करने लगे तो यहां भी वही कैफियत पैदा हो जाए जो इंसानी इदारों में जानिबदारी की वजह से नाअहल इंसानों की भीड़ की सूरत में नजर आती है।

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى تِسْعَ آيَاتٍ فَتَنَّا بَنِي إِسْرَءِيلَ إِذْ جَاءَهُمْ فَقَالَ لَهُ فِرْعَوْنُ إِنِّي لَأَظُنُّكَ يُمُوسَىٰ مَسْحُورًا ۖ قَالَ لَقَدْ عَلِمْتُمَا أَنزَلَ هَؤُلَاءِ

إِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ بِصَآئِرٍ وَآيٍۭ لَّا ظَنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ ۚ مَثْبُورًا ۚ فَأَرَادَ أَن يَسْتَفِيزَهُم مِّنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنَاهُ وَمَنْ مَّعَهُ جَمِيعًا ۚ وَقُلْنَا مِمَّنْ بَعْدَهُ يَبْنِئِ إِسْرَءِيلَ اَسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَاءَ وَعْدُ الْآخِرَةِ ۚ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيفًا ۝

और हमने मूसा को नौ निशानियां खुली हुई दीं। तो बनी इस्राईल से पूछ लो जबकि वह उनके पास आया तो फिरऔन ने उससे कहा कि ऐ मूसा, मेरे ख्याल में तो जरूर तुम पर किसी ने जादू कर दिया है। मूसा ने कहा कि तू खूब जानता है कि उन्हें आसमानों और जमीन के ख ही ने उतारा है, आंखें खोल देखने के लिए और मेरा ख्याल है कि ऐ फिरऔन, तू जरूर शमतजदा (प्रकोपित) आदमी है। फिर फिरऔन ने चाह कि उन्हें इस सरजमीन से उखाड़ दे। पर हमने उसे और जो उसके साथ थे सबको ग़र्क कर दिया। और हमने बनी इस्राईल से कहा कि तुम जमीन में रहो। फिर जब आखिरत का वादा आ जाएगा तो हम तुम सबको इकट्ठा करके लाएंगे। (101-104)

फिरऔन के सामने खुली हुई निशानियां पेश की गईं तो उसने कहा कि यह 'जादू' है। इसका मतलब यह है कि दाजी की तरफ से चाहे कितनी ही ताकतवर दलील और कितनी ही बड़ी निशानी पेश कर दी जाए, इंसान के लिए यह दरवाजा बंद नहीं होता कि वह कुछ अल्फाज बोलकर उसे रद्द कर दे। वह खुदाई निशानी को इंसानी जादू कह दे। वह इल्मी दलील को नाक्सि मुतालआ कहकर टाल दे। वह वजिह कराइन को ग़ैर मावूल कहकर नजरअंदाज कर दे।

हक के मुखलिफिन जब लफ़ी मुखलिफत से हक की आवाज को दबाने में कामयाब नहीं होते तो वे जारिहाना (आक्रामक) कार्रवाइयों पर उतर आते हैं। मगर वे भूल जाते हैं कि यह किसी इंसान का मामला नहीं। बल्कि खुदा का मामला है और कौन है जो खुदा के साथ जारिहियत (आक्रामकता) करके कामयाब हो।

فَرَقْنَاهُ لِتَقْرَأَهُ عَلَى النَّاسِ عَلَىٰ مُكْثٍ وَنَرْسِلُهُ تَتْرِكًا ۝

और हमने कुरआन को हक के साथ उतारा है और वह हक ही के साथ उतरा है। और हमने तुम्हें सिर्फ खुशख़बरी देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है और हमने कुरआन को थोड़ा-थोड़ा करके उतारा ताकि तुम उसे लोगों के सामने ठहर-ठहर कर पढ़ो। और उसे हमने बतदरीज (क्रमवार) उतारा है। (105-106)

कुरआन बेआमेज (विशुद्ध) सच्चाई का एलान है। मगर बेआमेज सच्चाई हमेशा लोगों

के लिए सबसे कम काबिले कुबूल चीज होती है। इस बिना पर अल्लाह तआला ने दाजी पर यह जिम्मेदारी नहीं डाली कि वह लोगों को जरूर मनवा ले। दाजी की जिम्मेदारी यह है कि वह कामिल तौर पर सच्चाई का एलान कर दे।

कुरआन में मुखातब की आखिरी हद तक रियायत की गई है। इसी मस्तेहत की बिना पर कुरआन को ठहर-ठहर कर उतारा गया है। ताकि जो लोग समझना चाहते हैं वे उसे खूब समझते जाएं। वह आहिस्ता-आहिस्ता उनके फिक्र व अमल का जुग बनता चला जाए।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖ اَوْ لَا تُوْمِنُوْا اِنَّ الَّذِيْنَ اَوْثَرُوْا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ
يَخْرُوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۝ وَيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَا اِنْ كُنَّ وَعْدُ رَبِّنَا
لَمَفْعُوْلًا ۝ وَيَخْرُوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَسْكُوْنَ ۝ وَيَزِيْدُ هُمْ خُشُوْعًا ۝

कहो कि तुम इस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ, वे लोग जिन्हें इससे पहले इल्म दिया गया था जब वह उनके सामने पढ़ा जाता है तो वे ठोड़ियों के बल सज्दे में गिर पड़ते हैं। और वे कहते हैं कि हमारा रब पाक है। बेशक हमारे रब का वादा जरूर पूरा होता है। और वे ठोड़ियों के बल रोते हुए गिरते हैं और कुरआन उनका खुशूअ (विनय) बढ़ा देता है। (107-109)

खुदा का कलाम इंसान से इज्ज व तवाजेअ (विनम्रता) का तमज्ज करता है। मगर मौजूदा दुनिया में खुदा अपना कलाम खुद सुनाने नहीं आता। वह एक 'इंसान' की जबान से अपना कलाम जारी कराता है। अब जो लोग अपने अंदर किब्र (अह) की नफिसयात लिए हुए हैं, वे उसके आगे झुकने को एक इंसान के आगे झुकने के समान मान लेते हैं और इस बिना पर उसे मानने से इंकार कर देते हैं।

इसके बरअक्स जो लोग किब्र (अह) की नफिसयात से खाली हों वे खुदा के कलाम को बस खुदा के कलाम की हैसियत से देखते हैं। उन्हें इंसान की जबान से जारी होने वाले कलाम में खुदा की झलकियां नजर आ जाती हैं। वे इसके जरिए खुदा से मरबूत हो जाते हैं। वे खुदा की बड़ाई के मुन्नबले में अपने इज्ज को और अपने इज्ज के मुन्नबले में खुदा की बड़ाई को पा लेते हैं। यह एहसास उनके सीने को पिघला देता है। वे रोते हुए उसके आगे सज्दे में गिर पड़ते हैं।

पहली किस्म के आदमियों के मिसाल कुरैश के सरदारों की है। और दूसरी किस्म के आदमियों की मिसाल अहले किताब के उन मोमिनीन की जो दौरे अव्वल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ईमान लाए थे।

इस आयत में बजाहिर सालिहीन (निक) अहले किताब का जिक्र है। उन्होंने कदीम आसमानी सहीफों में पढ़ा था कि एक आखिरी पैगम्बर आने वाले हैं। जो लोग उन पर ईमान लाएंगे और उनका साथ देंगे वे खुदा की खुसूसी रहमत के मुस्तहिक करार पाएंगे। इस बिना

पर वे उस आखिरी नबी का पहले से इंतजार कर रहे थे। यह इंतजार इतना शदीद था कि जब वह पैगम्बर आया तो उन्होंने फौरन उसे पहचान लिया। उनका यह हाल हुआ कि इस पैगम्बर की लाई हुई किताब (कुरआन) को जब वे पढ़ते तो शिद्दते एहसास से उनकी आंखों से आंसू जारी हो जाते और वे रोते हुए खुदा के आगे सज्दे में गिर जाते।

ताहम यह सिर्फ अहले किताब के एक गिरोह का मामला नहीं है बल्कि वह सारे इंसानों का मामला है। हर इंसान के अंदर खुदा ने पेशगी तौर पर हक की मअरफत रख दी है गोया कि हर इंसान पहले ही से खुदाई सच्चाई का मुंतजिर है। अब जो लोग अपनी इस फितरत को जिंदा रखें उनका वही हाल होगा जो साबिक (पूर्ववर्ती) अहले किताब का हुआ। वे अपनी फितरत के जिंदा शुऊर की बिना पर खुदाई सच्चाई को पहचान लेंगे और दिल की पूरी आमादगी के साथ उसकी तरफ बेताबाना दौड़ पड़ेंगे।

قُلْ اَدْعُوا اللّٰهَ وَاَدْعُوا الرَّحْمٰنَ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى وَلَا تَجْهَرُ بِصَلٰتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَاَبْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ۝ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمَلِكِ وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الدِّنِّ وَّكَبِيْرُهُ تَكْبِيْرًا ۝

कहो कि चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान (कृपाशील) कहकर पुकारो, उसके लिए सब अच्छे नाम हैं। और तुम अपनी नमाज न बहुत पुकार कर पढ़ो और न बिल्कुल चुपके-चुपके पढ़ो। और दोनों के दर्मियान का तरीका इस्तियार करो। और कहो कि तमाम खूबियां उस अल्लाह के लिए हैं जो न औलाद रखता है और न बादशाही में कोई उसका शरीक है। और न कमजोरी की वजह से उसका कोई मददगार है। और तुम उसकी खूब बड़ाई बयान करो। (110-111)

जो लोग सच्चाई को गहराई के साथ पाए हुए नहीं होते। वे हमेशा जाहिरी चीजों में उलझे रहते हैं। कोई कहता है कि खुदा को इस लफ्ज से पुकारना अफजल है और कोई कहता है कि उस लफ्ज से। कोई कहता है कि फुलां इबादती फेअल (कृत्य) जोर से अदा करना चाहिए और कोई कहता है कि धीरे से।

अरब में भी इस किस्म की बहसें मुत्तलिफ अंदाज में जारी थीं। फरमाया कि खुदा को जिस बेहतर नाम से पुकारो वह उसी का नाम है। इसी तरह इबादत के बारे में फरमाया कि खुदा की इबादत की अदायगी का इहिसार न जोर से बोलने पर है और न धीरे बोलने पर। तुम इबादत की अस्ल रूह अपने अंदर पैदा करो और उसकी अदायगी में एतदाल (मध्य मार्ग) से काम लो।

इबादत की रूह यह है कि अल्लाह की बड़ाई का कामिल एहसास आदमी के अंदर पैदा हो जाए। अल्लाह पर ईमान उसके लिए ऐसी कामिल और अजीम हस्ती की दरयाफ्त के